



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 10]

नई विल्सी, शनिवार, मार्च 4, 1972 (फालगुन 14, 1893)

No. 10 NEW DELHI, SATURDAY, MARCH 4, 1972 (PHALGUNA 14, 1893)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या वी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके
(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

शोटिस

(NOTICE)

नीचे लिखे भारत के असाधारण राजपत्र 8 फरवरी 1971 तक प्रकाशित किये गये हैं :—

The undermentioned *Gazettes of India Extraordinary* were published up to the 8th February 1971 :—

शंक (Issue No.)	संख्या और तिथि (No. and Date)	द्वारा आरी किया एवं (Issued by)	विषय (Subject)
1	2	3	4

शून्य

—

ऊपर लिखे असाधारण राजपत्रों की प्रतियाँ प्रकाशन प्रबन्धक, रिविल लाइन्स, विल्सी के नाम मांग-पत्र भेजने पर भेज दी जाएंगी। मांग-पत्र प्रबन्धक के पास इन राजपत्रों की तिथि से दस दिन के भीतर पूर्ण जाने चाहिए।

Copies of the *Gazettes Extraordinary* mentioned above will be supplied on indent to the Manager of Publications, Civil Lines, Delhi. Indents should be submitted so as to reach the Manager within ten days of the date of issue of these *Gazettes*.

बिषय-मुद्दी

भाग I—खंड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई रक्षा मंत्रालय अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	पृष्ठ 251	भाग II—खंड 3 उपखंड (ii)—रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रणालमों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए आदेश और अधिसूचनाएं	721
भाग I—खंड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई रक्षा मंत्रालय अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	—	भाग II—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों और संकलनों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	41
भाग I—खंड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों और संकलनों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	389	भाग III—खंड 1—महालेखा परीक्षक, संघ लोक-सेवा आयोग, रेल प्रशासन, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के अधीन तथा संलग्न कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	343
भाग I—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	—	भाग III—खंड 2—एकस्व कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं और नोटिस	75
भाग II—खंड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	—	भाग III—खंड 3—मुख्य आयुक्तों द्वारा या उनके प्राधिकार से जारी की गई अधिसूचनाएं	21
भाग II—खंड 2—विधेयक और विधेयकों मंबंधी प्रवर र समितियों की रिपोर्टें	—	भाग III—खंड 4—विधिक निकायों द्वारा जारी की गई विविध अधिसूचनाएं जिनमें अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिसें शामिल हैं	869
भाग II—खंड 3 उपखंड (i)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रणालमों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा जारी किए गए विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए साधारण नियम (जिनमें साधारण प्रकार के आदेश, उप-नियम आदि सम्मिलित हैं)	617	भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी संस्थाओं के विज्ञापन तथा नोटिसें पूरक संलेख 10— 26 फरवरी, 1972 को समाप्त होने वाले सप्ताह की महामारी संबंधी साप्ताहिक रिपोर्ट 5 फरवरी, 1972 को समाप्त होने वाले सप्ताह के दौरान भारत में 30,000 तथा उससे अधिक आवादी के शहरों में जन्म तथा बढ़ी बीमारियों से हुई मृत्यु सम्बन्धी आंकड़े	423

CONTENTS

PAGE	PART II—SECTION 3.—SUB-SEC. (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) ..	PAGE
251	PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders notified by the Ministry of Defence ..	721
389	PART III—SECTION 1.—Notifications issued by the Auditor General, Union Public Service Commission, Railway Administration, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India ..	343
—	PART III—SECTION 2.—Notifications and Notices issued by the Patent Offices, Calcutta ..	75
305	PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners ..	21
—	PART III—SECTION 4.—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies ..	869
—	PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies ..	49
617	SUPPLEMENT No. 10— Weekly Epidemiological Reports for week ending 26th February, 1972. Births and Deaths from Principal diseases in towns with a population of 30,000 and over in India during week ending 5th February 1972	413

भाग I—खण्ड 1

(PART I—SECTION 1)

मंत्रालय को छोड़कर भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम व्यायामय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, तथा आदेशों और संकलनों से नम्बनियत अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

मंत्रिमंडल सचिवालय

(कार्मिक विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 4 मार्च 1972

नियम

सं 20/1/72-अ० भा० सं० (1) :—निम्नलिखित सेवाओं में रिक्तियों को भरने के लिए, 1972 में संघ लोक सेवा आयोग द्वारा ली जाने वाली प्रतियोगिता-परीक्षा के नियम, संबंधित मंत्रालयों की ओर भारतीय लेखा-परीक्षा और लेखा सेवा के सम्बन्ध में भारत के नियंत्रक और महानेत्रा परीक्षक की सहमति से, अम जानकारी के लिए प्रकाशित किए जा रहे हैं :—

वर्ग-1

- (1) भारतीय प्रशासन सेवा, और
- (2) भारतीय विदेश सेवा

वर्ग-2

- (1) भारतीय पुलिस सेवा तथा
- (2) दिल्ली, अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह पुलिस सेवा श्रेणी-2

वर्ग-3

- (क) वलास-1 की सेवाएँ :—
- (1) केन्द्रीय सूचना सेवा, (ग्रेड-2) श्रेणी-1
- (2) भारतीय लेखा परीक्षा और लेखा सेवा,
- (3) भारतीय मीमा शुल्क और केन्द्रीय उत्पादन शुल्क सेवा,
- (4) भारतीय रक्षा लेखा सेवा,
- (5) भारतीय आयकर सेवा (वलास-1).
- (6) भारतीय सेवा, श्रेणी-1 (सहायक प्रबंध-अतिकी),
- (7) भारतीय डाक सेवा,
- (8) भारतीय रेलवे लेखा सेवा,
- (9) भारतीय यातायात सेवा और
- (10) मैन्य भूमि नथा मैन्य छावनी सेवा, वलास 1
- (ख) वलास-2 की सेवाएँ :—
- (1) केन्द्रीय गचिवालय सेवा अनुभाग अधिकारी ग्रेड, वलास-2,
- (2) मण्डल मेना मुख्यायर मिविल मेवा, सहायक मिविल गटाफ अधिकारी ग्रेड, श्रेणी 2,

(3) सीमा शुल्क मूल्य निरूपक (एप्रैजूर) सेवा वलास-2,

(4) दिल्ली तथा अंडमान और निकोबार द्वीप मिविल सेवा, वलास-2,

(5) गोआ, दमन तथा दीव सिविल सेवा, वलास-2,

(6) पांडिचेरी सिविल सेवा, वलास-2, तथा

(7) सैन्य भूमि तथा सैन्य छावनी सेवा, वलास-2

उम्मीदवार उपर्युक्त सेवा संवर्गों में से किसी एक या अधिक के लिए परीक्षा में बैठने के लिए आवंदन कर सकता है। (देखिए नियम 4) उसे संबंधित वर्ग/वर्गों के अन्तर्गत आने वाली उन सभी सेवा का, जिनके लिए वह विचार किये जाने का इच्छुक है, अपने आवंदन पत्र में उल्लेख कर देसा चाहिए।

परीक्षा के अंतिम परिणाम की घोषणा होने के 10 दिन के भीतर किसी उम्मीदवार द्वारा वर्ग/वर्गों के अन्तर्गत आने वाली सेवाओं के संबंध में, जिन के लिए वह प्रतियोगिता में भाग ले रहा है, दी गई तरजीह को बदलने के लिए उसकी याचना मंत्रिमंडल मचिवालय (कार्मिक विभाग) में प्राप्त न हो जाये तो उपकी इस प्रकार की तरहजीह बदलने की याचना पर कोई विचार नहीं किया जायेगा।

यदि कोई उम्मीदवार वरीक्षा के लिखित भाग के परिणाम-स्वरूप भारतीय प्रशासन सेवा/भारतीय पुलिस सेवा के लिए व्यक्तित्व जांच के लिए अर्हकता प्राप्त कर लेता है उसे अलग से मंत्रिमंडल मचिवालय (कार्मिक विभाग) को लिखने के लिए कहा जायेगा कि वह अपनी तरजीह के क्रम में विभिन्न राज्यों में आवंदन के लिए किस राज्य के लिए विचार किया जाये।

2. इस परीक्षा के परिणाम के आधार पर भर्ती की जाने वाली रिक्तियों की संख्या का उल्लेख आयोग द्वारा प्रकाशित नोटिस में किया जायेगा। अनुसूचित जातियों और अनुसूचित आदिम जातियों के उम्मीदवार के लिए रिक्तियों का आरक्षण भारत सरकार के द्वारा निर्धारित विधि से किया जायेगा।

अनुसूचित जातियों/आदिम जातियों में अभिप्राय निम्नांकित में उल्लिखित जातियों/आदिम जातियों में से किसी एक में है : संविधान (अनुसूचित जातियों) आदेश, 1950, संविधान (अनुसूचित जातियों) (भाग “ग” राज्य) आदेश, 1951, संविधान, (अनुसूचित आदिम जातियों) आदेश, 1950, तथा संविधान (अनुसूचित आदिम जातियों) (भाग “ग” राज्य) आदेश, 1951, अनुसूचित जातियों/अनुसूचित आदिम जातियों की सूचियां (आ-

शोधन) आदेश, 1956, द्वारा यथा संशोधित, बम्बई, पुनर्गठन अधिनियम, 1960 और पंजाब पुनर्गठन, अधिनियम, 1966 के साथ गठित, संविधान (जम्मू और कश्मीर) अनुसूचित जाति आदेश, 1956, संविधान (अंडमान और निकोबार द्वीप समूह) अनुसूचित आदिम जाति आदेश, 1959, संविधान (दादर और नागर हवेली) अनुसूचित जाति आदेश, 1962, संविधान (दादर और नागर हवेली) अनुसूचित आदिम जाति आदेश, 1962, संविधान (पांडिचेरी) अनुसूचित जाति आदेश, 1964, तथा संविधान (अनुसूचित आदिम जातियों) उत्तर प्रदेश आदेश, 1967। संविधान (गोआ, दमन और दीव) अनुसूचित जाति आदेश, 1968 और संविधान (गोआ, दमन और दीव) आदिम जाति आदेश, 1968 तथा संविधान (नागार्लेड) अनुसूचित आदिम जातियों आदेश, 1970।

3. संघ लोक सेवा आयोग यह परीक्षा नियमों के परिणाम से निर्धारित विधि से लेंगा।

परीक्षा की तारीख और स्थान आयोग द्वारा निर्धारित किए जाएंगे।

4. भारतीय प्रशासन मेवा आदि में भर्ती के लिए ली जाने वाली सम्मिलित प्रतियोगिता परीक्षा को इन तीन वर्गों की सेवाओं को, यानी, (1) भारतीय प्रशासन सेवा और भारतीय विदेश सेवा / (2) भारतीय पुलिस सेवा और दिल्ली तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह पुलिस सेवा और (3) केन्द्रिय मेवाएं, दिल्ली तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह मिलियल मेवा, गोआ, दमन तथा दीव समूह सेवा तथा पांडिचेरी सिविल सेवा के लिए अलग अलग तीन परीक्षाएं समझा जाएंगा।

5. जो उम्मीदवार किसी अनुसूचित जाति या अनुसूचित आदिम जाति का न हो या संघ राज्य क्षेत्र गोवा, दमन तथा दीव का निवासी न हो या कीन्या, उगान्डा, संयुक्त गणराज्य टेन्जानिया (भूतपूर्व टंगानिका और जंजीवार) में न आया हो तो उसे ऊपर नियम 1 में उल्लिखित तीन वर्गों में से प्रत्येक की सेवाओं के लिए प्रतियोगिता परीक्षा में अधिक से अधिक दो बार सम्मिलित होने दिया जायेगा, परन्तु यह प्रतिबन्ध 1961 की परीक्षा में लागू है।

लेकिन किसी उम्मीदवार को, निर्मुक्त आपातकालीन कमीशन प्राप्त /अल्पकालीन सेवा कमीशन प्राप्त अधिकारियों के लिए स्वीकार्य अधिकतम आयु सीमा में छूट के, देखें नियम 7 (ख) नीचे, अधीन संयुक्त प्रतियोगिता परीक्षा में, उम्मीदवार को एक बार संयुक्त प्रतियोगिता परीक्षा में बैठा समझा जाने पर, एक बार से अधिक प्रतियोगिता करने की अनुमति नहीं दी जायेगी, यदि वह एक अथवा अधिक श्रेणियों के लिए प्रतियोगिता करसा है।

नोट :- यदि कोई उम्मीदवार किसी एक अथवा अधिक विधयों में वस्तुतः परीक्षा देना है तो उसे सेवा की प्रत्येक क्षेणी की परीक्षा में बैठा समझा जायेगा, जिसमें आयोग द्वारा उसे प्रविष्ट किया जाता है, संयुक्त परीक्षा में एक बार बैठा समझा जाने पर इस नियम के परन्तुके के अधीन परीक्षा देने की उम्मीदवार को अनुमति दी गई हो।

6. (1) भारतीय प्रशासन सेवा और भारतीय पुलिस सेवा का उम्मीदवार भारत का नागरिक अवश्यक हो।

- (2) अन्य सेवा के उम्मीदवार को या तो
 - (क) भारत का नागरिक होना चाहिए, या
 - (ख) सिक्खिम की प्रजा, या
 - (ग) नेपाल की प्रजा, या
 - (घ) भूटान की प्रजा, या
 - (ङ) ऐसा तिब्बती शरणार्थी जो भारत में स्थायी रूप से रहने की इच्छा से 1 जनवरी, 1962 से पहले भारत आ गया हो, या
 - (च) मूल रूप से ऐसा भारतीय व्यक्ति हो, जो भारत में स्थायी रूप से रहने की इच्छा से पाकिस्तान, बर्मा, लंका और पूर्वी अफ्रीका के कीनिया, उगांडा तथा संयुक्तगणराज्य टेंजानिया (भूतपूर्व टेंगानिका और जंजीवार) देशों से आया हो।

परन्तु ऊपर की (ग), (घ), और (ङ) तथा (च) कोटियों के अन्तर्गत आने वाले उम्मीदवार के पास भारत सरकार द्वारा किया गया पावता (एलिजिविली) प्रभाण पत्र होना चाहिए।

एक और शर्त यह भी है कि उपर्युक्त (ग), (घ) और (ङ) कोटियों के उम्मीदवार भारतीय विदेश सेवा में नियुक्ति के पात्र नहीं माने जाएंगे।

परीक्षा में उस उम्मीदवार को भी बैठने दिया जा सकता है जिसके लिए पावता प्रभाण पत्र आवश्यक हो और उसे सरकार द्वारा आवश्यक प्रभाण पत्र दिए जाने की शर्त के साथ, अनन्तिम (प्रोविजनल) रूप में नियुक्त भी किया जा सकता है।

7. (क) (i) भारतीय प्रशासनिक सेवा, भारतीय विदेश सेवा और वाकी सभी सेवाओं के लिए सिवाय ऊपर के पैरा (I) में उल्लिखित भारतीय पुलिस सेवा और दिल्ली तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह पुलिस सेवा को छोड़कर वाकी सभी सेवाओं में उम्मीदवार के लिए यह आवश्यक है कि उसकी आयु 1 अगस्त 1972 को 21 वर्ष पूरी हो गयी हो तो किन्तु 24 वर्ष की न हुई हो अर्थात् उसका जन्म 2 अगस्त 1948 से पहले और 1 अगस्त 1951 के बाद नहीं हुआ हो।

(ii) भारतीय पुलिस सेवा और दिल्ली तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह पुलिस सेवा के उम्मीदवार के लिए यह आवश्यक है कि उसकी आयु 1 अगस्त 1972 को पूरे 20 साल की हो गई हो किन्तु 24 साल की न हुई हो, अर्थात् उसका जन्म 2 अगस्त 1948 से पहले और 1 अगस्त 1952 के बाद न हुआ हो।

(ग) 24 वर्ष की अधिकतम आयुसीमा में निम्नलिखित श्रेणियों के उन नियुक्त आपातकालीन कमीशन प्राप्त/अल्पकालीन सेवा कमीशन प्राप्त अधिकारियों के मामले में, जिन्होंने सशस्त्र सेनाओं में उनके प्रवरण से पूर्व अपना अध्ययन छोड़ दिया हो और जो सशस्त्र सेनाओं से नियुक्त किये जाने की तारीख पर विहित शैक्षिक अहन्तार्द देखें नियम 8 नीचे, न रखते हो सशस्त्र सेनाओं में उनकी

कुल कमीशन प्राप्त सेवा की सीमा तक, (जिसमें कमीशन कमीशन पश्चात् प्रणिक्षण में स्वतीत की गई अधिक शामिल है) आगामी पूरे वर्ष तक मान कर, छूट दी जा सकेगी।

- (i) 1 नवम्बर 1962 के पश्चात् परन्तु 10 जनवरी 1968 से पूर्व सशस्त्र सेनाओं में आपातकालीन कमीशन प्राप्त/अल्प कालीन सेवा कमीशन प्राप्त ऐसे अधिकारी, जिन्होंने, उनके द्वारा कमीशन-पूर्व प्रणिक्षण में शामिल होने अथवा कमीशन प्राप्त किये जाने (जहाँ केवल कमीशन पश्चात् प्रणिक्षण ही था) के वर्ष के परवर्ती वर्ष में आने वाली 1 अगस्त को 21 वर्ष की आयु प्राप्त न की हो वशतें कि प्रणिक्षण कोई संगत वर्ष की 31 जुलाई का अथवा उससे पूर्व आरम्भ हुआ हो।
- (ii) 1 नवम्बर 1962 के पश्चात् सरन्तु 10 जनवरी, 1968 से पूर्व सशस्त्र सेनाओं में आपातकालीन कमीशन प्राप्त/अल्पकालीन सेवा कमीशन प्राप्त ऐसे अधिकारी, जिन्होंने, उसके द्वारा कमीशन पूर्व प्रणिक्षण में शामिल होने अथवा कमीशन प्राप्त किये जाने के (जहाँ केवल कमीशन पश्चात् प्रणिक्षण ही था) वर्ष के परवर्ती वर्ष में आने वाली 1 अगस्त को 20 वर्ष की आयु प्राप्त न की हो वशतें कि प्रणिक्षण कोई संगत वर्ष की 1 अगस्त अथवा उसके पश्चात् आरम्भ हुआ हो।

नोट 1— इन नियमों के प्रयोजन के लिए “निर्मुक्त” से अभिप्राय

- (i) निर्मुक्त होने के अनुसूचित वर्ष के आधार पर निर्मुक्त,
- (ii) सेना सेवा के कारण अथवा उसके द्वारा अपवर्धित असमर्थता के परिणामरूप अमान्यकरण।

सशस्त्र सेनाओं ने; सेवा की अल्पावधि के दौर के पश्चात् और प्रणिक्षण के दौरान अथवा समाप्ति पर, अथवा वास्तविक सेवा में लिये जाने से पूर्व ऐसे प्रणिक्षण की अवधि समाहित करने के लिए प्रदान किये गये अल्पकालीन सेवा कमीशन के दौरान अथवा समाप्ति पर नहीं, और न ही इसमें कदाचार, अकुशलता अथवा उनके स्वयं के अनुरोध पर निर्युक्त किये गये अधिकारियों के मामले समाहित हैं।

नोट 2— “निर्मुक्त होने के अनुसूचित वर्ष” वाक्यांश से अभिप्राय (i) जहाँ तक इसका संबंध आपातकालीन कमीशन प्राप्त अधिकारियों से है, वह वर्ष है जिसमें भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय द्वारा अनुमोदित योजना तद्द कार्यक्रम के अनुसार उन्हें निर्मुक्त किया जाना है, और

- (ii) जहाँ तक इसका संबंध अल्पकालीन सेवा कमीशन प्राप्त अधिकारियों से है, वह वर्ष है जिसमें अल्पकालीन सेवा कमीशन प्राप्त अधिकारियों का

सामान्य कार्यकाल, तीन अथवा पांच वर्ष यथा-स्थिति समाप्त होना है।

नोट 3— केन्द्रीय सरकार अथवा राज्य सरकार अथवा सरकार के स्वामित्व में के औद्योगिक उपक्रमों के अधीन नियोजित ऐसे इज़्जीनियर तथा डाक्टर, जिनसे अनिवार्य वायित्व योजना के अधीन किसी न्यूनतम विहित अवधि के लिए मण्डल सेनाओं में सेवा करना अपेक्षित हो और जिन्हें ऐसी सेवा की अवधि के दौरान संगत नियमों के अधीन अल्पकालीन सेवा कमीशन प्रदान किया गया हो, आयु की इस छूट के लिए पाल नहीं होंगे।

नोट 4— अस्थायी सर्विस में लिये गये सशस्त्र सेनाओं की वालंटियर रिजर्व सेनाओं के अधिकारी आयु की इस छूट के लिए पाल नहीं होंगे।

(ग) ऊपर निर्धारित ऊपरी आयु में और भी छूट दी जा सकती है।

(i) यदि उम्मीदवार किसी अनुसूचित जाति या अनुसूचित आदिम जाति का हो तो अधिक से अधिक पांच वर्ष,

(ii) यदि उम्मीदवार पूर्वी पाकिस्तान से 1 जनवरी, 1964 को या उसके बाद भारत में आया वास्तविक विस्थापित व्यक्ति हो तो अधिक से अधिक तीन वर्ष,

(iii) यदि उम्मीदवार अनुसूचित जाति अथवा अनुसूचित आदिम जाति का हो और वह 1 जनवरी 1964 को या उसके बाद पूर्वी पाकिस्तान में आया वास्तविक विस्थापित व्यक्ति हो तो अधिक से अधिक आठ वर्ष,

(iv) यदि उम्मीदवार संघ राज्य क्षेत्र पांडिचेरी का निवासी हो तथा उसने कभी कांसीसी के माध्यम से शिक्षा प्राप्त की हो तो अधिक से अधिक तीन वर्ष,

(v) यदि उम्मीदवार अक्टूबर 1964 के भारत श्रीलंका समझौते के अधीन 1 नवम्बर 1964 को या उसके बाद श्रीलंका से वास्तविक रूप से भारतीय व्यक्ति हो, तो अधिक से अधिक आठ वर्ष,

(vi) यदि उम्मीदवार अनुसूचित जाति नथा अनुसूचित आदिम जाति का हो और माथ ही अक्टूबर, 1964 से भारत-श्रीलंका समझौते के अधीन, 1 नवम्बर 1964 को या उसके बाद श्रीलंका से वास्तविक रूप से भारतीय व्यक्ति हो, तो अधिक से अधिक आठ वर्ष,

(vii) यदि उम्मीदवार ओआ, दमन और दीव के संघ राज्य क्षेत्र का निवासी हो, तो अधिक से अधिक तीन वर्ष,

- (viii) यदि उम्मीदवार की जनिया, उगांडा तथा संयुक्त गणराज्य टेंजानिया (भूतपूर्व दंगानिका तथा जंजीवार) से आया हुआ मूल रूप से भारतीय व्यक्ति हो, तो अधिक से अधिक तीन वर्ष,
- (ix) यदि उम्मीदवार 1 जून, 1963 या उसके बाद, बर्मा से वास्तव में प्रत्यावर्तित होकर, भारत में आया हुआ मूल रूप से भारतीय व्यक्ति हो, तो अधिक से अधिक तीन वर्ष,
- (x) यदि उम्मीदवार अनुसूचित जाति अथवा अनुसूचित आदिम जाति का हो और साथ ही 1 जून, 1963 या उसके बाद, बर्मा से प्रत्यावर्तित होकर, भारत में आया हुआ मूल रूप से भारतीय व्यक्ति हो, तो अधिक से अधिक आठ वर्ष,
- (xi) रक्षा सेवाओं के उन कर्मचारियों के मामले में अधिकतम तीन वर्ष तक जो किसी विदेशी शत्रु देश के साथ संघर्ष में अथवा अशांतिग्रस्त क्षेत्र में कौंजी कार्यबाही के दौरान विकलांग हुए तथा उसके परिणामस्वरूप निर्मुक्त हुए, तथा उसके परिणामस्वरूप निर्मुक्त हुए, तथा
- (xii) रक्षा सेवाओं के उन कर्मचारियों के मामले में अधिकतम आठ वर्ष तक जो किसी विदेशी शत्रु देश के साथ संघर्ष में अथवा अशांतिग्रस्त क्षेत्र में कौंजी कार्यबाही के दौरान विकलांग हुए तथा उसके परिणामस्वरूप निर्मुक्त हुए और अनुसूचित जातियों या अनुसूचित आदिम जातियों के हैं।

उपर्युक्त परिस्थितियों का छोड़कर निर्धारित आगे सीमा में किसी में छूट नहीं दी जाएगी।

8. उम्मीदवार के पास परिणिष्ट 1 में उल्लिखित विद्यालयों में में किसी एक को कोई उपाधि होनी चाहिए अथवा उसके पास परिणिष्ट 1-क में उल्लिखित अर्हताओं में से कोई एक अर्हता होनी चाहिए।

नोट 1 :—यदि कोई उम्मीदवार किसी ऐसी परीक्षा में बैठ चुका हो जिसे उत्तीर्ण कर लेने पर यह इस परीक्षा में बैठ सकता है, पर अभी उस परीक्षा के परिणाम की सूचना न मिली हो तो ऐसी स्थिति में वह इस परीक्षा में बैठने के लिए आवेदन कर सकता है। जो उम्मीदवार इस प्रकार की अर्हता परीक्षा (क्वालीफाइंग एज्जेन्यू-नेशन) में बैठना चाहता है, वह भी आवेदन कर सकता है बशर्ते कि अर्हता परीक्षा इस परीक्षा के आरम्भ होने से पहले समाप्त हो जाए। ऐसे उम्मीदवार को, यदि वह अन्य शर्तें पूरी करता हो, तो इस परीक्षा में बैठने दिया जाएगा। परन्तु परीक्षा में बैठने की ऐसी अनुमति अन्तिम मानी जाएगी और यदि वह अर्हता परीक्षा में उत्तीर्ण होने का प्रमाण जन्मी से जल्दी और हर हालत में इस परीक्षा के आरम्भ होने की तारीख से अधिक ने अधिक दो महीने के भीतर प्रस्तुत नहीं करता, तो यह अनुमति रद्द की जा सकती है।

नोट 2 :—विशेष परिस्थितियों में, संघ लोक सेवा अनुसंधान संसोदित की जानी वाली उम्मीदवार को भी परीक्षा में प्रवेश का पात्र मान सकता है जिसके पास उपर्युक्त अर्हताओं में से कोई न हो बशर्ते कि उम्मीदवार ने अन्य संस्थाओं द्वारा भंचालित कोई ऐसी परीक्षा एवं पास की हो जिनके स्तर को देखते हुए आयोग उसको परीक्षा में प्रवेश देना उचित समझे।

नोट 3 :—यदि कोई उम्मीदवार अन्यथा परीक्षा में प्रवेश का पात्र हो किन्तु उसने ऐसे विदेशी विश्वविद्यालय में उपाधि ली हो जो परिणिष्ट 1 में सम्मिलित न हो तो वह भी आयोग को आवेदन कर सकता है और आयोग, यदि उचित समझे तो, उसे परीक्षा में प्रवेश दे सकता है।

9. यदि किसी पिछली परीक्षा के परिणाम के आधार पर किसी उम्मीदवार की नियुक्ति वर्ग 1 (भारतीय प्रशासन सेवा या भारतीय विदेश सेवा) की किसी सेवा में हो जाती है तो वह इस परीक्षा में बैठने का पात्र होगा।

यदि किसी पिछली परीक्षा के परिणाम के आधार पर किसी उम्मीदवार को नियुक्ति नीचे स्तरम् (II) में उल्लिखित किसी सेवा में हो जाती है तो वह केवल उन्हीं सेवाओं के लिए इस परीक्षा में बैठने का पात्र होगा जो उक्त सेवा के सामने नीचे स्तरम् (III) में उल्लिखित है :—

क्रम मं०	जिस सेवा में नियुक्ति हुई	जिन सेवाओं के लिए परीक्षा में बैठने का पात्र है
1	2	3
1	भारतीय प्रूलिम सेवा	(i) वर्ग 1 (भारतीय प्रशासन सेवा और भारतीय विदेश सेवा) (ii) वर्ग III में, केन्द्रीय सेवाएं, कलास-1
2	केन्द्रीय सेवाएं, कलास-I	(i) वर्ग (भारतीय प्रशासन सेवा और भारतीय विदेश सेवा)। (ii) वर्ग II में भारतीय प्रूलिम सेवा।
3	केन्द्रीय सेवाएं कलास-II	(i) वर्ग 1 (भारतीय प्रशासन (जिसमें संघ राज्य क्षेत्रों में सेवा और भारतीय विदेश की सिविल तथा प्रूलिम सेवा) सेवाएं शामिल हैं) (ii) वर्ग II में भारतीय प्रूलिम सेवा (iii) वर्ग III में केन्द्रीय सेवाएं, कलास-1,

10. उम्मीदवारों को आयोग के नोटिस के परिणाम में निर्धारित फीस अवैध घोनी होगी।

11. जो उम्मीदवार स्थायी या अस्थायी रूप में पहले मेरी सरकारी सेवा करता हो, उसे इस परीक्षा में बैठने में पहले अपने विभाग के अध्यक्ष की अनुमति अवश्य नहीं होगी।

12. परीक्षा में बैठने के लिए उम्मीदवार वो पात्रता या अपात्रता के बारे में आयोग का निर्णय अंतिम होगा।

13. किसी उम्मीदवार को परीक्षा में तब तक नहीं बैठने नहीं दिया जाएगा, जब तक कि उसके पास आयोग का प्रवेश प्रमाण पत्र (मर्टिफिकेट आफ एडमिशन) नहीं होगा।

14. यदि कोई उम्मीदवार किसी भी प्रकार से अपनी उम्मीदवारी के लिए पैरवी करने की कोई कोशिश नहीं होती तो उसे परीक्षा में बैठने के लिए अप्रयोग्य घोषित कर दिया जाएगा।

15. यदि किसी उम्मीदवार को आयोग ने किसी दूसरे अधिकार से परीक्षा दिलवाने अथवा जानी या फेर वर्ष में हुए प्रमाण पत्र पेश करने अथवा गलत या झूटा तथ्य प्रस्तुत करने अथवा किसी तथ्य को छिपाने या परीक्षा में गम्भीर होने के लिए कोई अन्य अनियमित या अनुचित उपाय अपनाने, परीक्षा भवन में कोई अनुचित उपाय अपनाने, या अपनाने की चेष्टा करने अथवा परीक्षा भवन में किसी तरह का अनुचित आनंदण करने के फलस्वरूप अपराधी घोषित किये हैं तो उसके विश्व दांडिक अभियोजन के अतिरिक्त निम्नलिखित कार्यवाही की जा सकती हैः—

(क) सदा के लिए अथवा किसी विशेष अवधि के लिए परीक्षा पारित किया जाना;

(i) आयोग द्वारा उम्मीदवारों के लिए आयोजित किसी परीक्षा में मम्मिलित होने अथवा किसी साक्षात्कार में उपस्थित होने से,

(ii) केन्द्रीय सरकार द्वारा सरकार के अंतर्गत नौकरियों के लिए;

(ख) यदि वह पहले से ही सरकार की सेवा में हो तो उचित नियमों के अधीन अनुशासनिक कार्यवाही की जा सकती है।

16. जो उम्मीदवार लिखित परीक्षा में उतने न्यूनतम अर्हता अंक (Qualifying Marks) प्राप्त कर लेता जितने आयोग अपने निर्णय में निश्चित करे, तो उसे आयोग अधिकृतव्य परीक्षा (Personality Test) के इंटरव्यू के लिए बुलाएगा।

17. परीक्षा के बाद, आयोग उम्मीदवारों के द्वारा प्राप्त कुल अंकों के आधार पर योग्यता क्रम से उनकी सूची बनाएगा और उसी क्रम से उन उम्मीदवारों में से जितने लोगों को आयोग सरकार परीक्षा के आधार पर योग्य समझेगा, उनकी हन रिक्तियों पर नियुक्त करने के लिए सिफारिश की जाएगी। यह भर्ती आरक्षित रूप में न होकर परीक्षा के परिणाम के आधार पर होगी।

बारते कि अनुसूचित जातियों/अनुसूचित आदिम जातियों के उम्मीदवार, अनुसूचित जातियों और अनुसूचित आदिम जातियों के लिए आरक्षित रिक्तियां की उग संस्था तक जो सामान्य भावक के आधार पर न भरी जा रहाना है। आरक्षित कोटा की कमी को पूरा करने के लिए शिथिल किये गये मानक द्वारा, इन सेवाओं में नियुक्ति के लिए इन उम्मीदवारों की योग्यता के आधार पर आयोग द्वारा संस्तुत किये जा, सकेंगे, ऐसा कर देते समय परीक्षा में भेगिट के अम से उनके स्थान का ध्यान नहीं रखा जाएगा।

18. प्रत्येक उम्मीदवार को परीक्षाकाल की सूचना किस रूप में और किस प्रकार दी जाए, इसका निर्णय आयोग स्वयं करेगा। आयोग परीक्षाकाल के बाद भी किसी भी उम्मीदवार से पक्षाचार नहीं करेगा।

19. उम्मीदवार द्वारा अपने आवेदन पत्र के समय, विभिन्न सेवाओं के लिए दी गई तरीके पर परीक्षाकाल के आधार पर नियुक्तिया करते समय उचित ध्यान किया जाएगा।

लेकिन शर्त यह है कि यदि किसी उम्मीदवार को किसी पिछली परीक्षा के आधार पर वर्ग I (भा० प्र० से० अथवा भा० वि० से०) के अन्तर्गत आने वाली किसी सेवा में नियुक्ति किया गया है, इस परीक्षा के परिणाम के आधार पर किसी अन्य सेवा में उसकी नियुक्ति पर विचार नहीं किया जाएगा।

एक अन्य शर्त यह है कि यदि किसी उम्मीदवार को किसी पिछली परीक्षा के परिणाम के आधार पर नीचे के कालम (II) में उल्लिखित किसी एक सेवा में नियुक्ति किया गया है तो इस परीक्षा परिणाम के आधार पर उसकी नियुक्ति केवल उन्हीं सेवाओं में की जा सकेगी, जो उस सेवा के मामने कालम (III) में दी गई हैः—

क्रम सं०	मेया जिसमें नियुक्ति की गई	मेया जिसमें नियुक्ति के लिए विचार किया जा सकेगा
----------	----------------------------	---

1	2	3
---	---	---

1 भारतीय पुलिस सेवा	(i) वर्ग I भारतीय प्रशासन सेवा तथा भारतीय विदेश सेवा)
---------------------	---

2 केन्द्रीय सेवाएं क्लास-I	(ii) वर्ग III में दी गई क्लास-I की केन्द्रीय सेवाएं,
----------------------------	--

2 केन्द्रीय सेवाएं क्लास-II	(i) वर्ग I (भारतीय प्रशासन सेवा तथा भारतीय पुलिस सेवा)।
-----------------------------	---

2 केन्द्रीय सेवाएं क्लास-III	(ii) वर्ग II में दी गई भारतीय पुलिस सेवा,
------------------------------	---

1	2	3
---	---	---

- 3 केन्द्रीय सेवाएं, कलास II (i) वर्ग I (भारतीय प्रशासन (जिसमें संघ राज्य क्षेत्र सेवा तथा भारतीय पुलिस में नियुक्ति न करे अथवा नियुक्ति के बाद अगर वह विवाह कर ले तो उससे त्याग पत्र मांग ले, यदि ऐसा करना सेवा की कुशलता बनाए रखने की दृष्टि से आवश्यक हो)
(ii) वर्ग II में दी गई भारतीय पुलिस सेवा,
(iii) वर्ग III में दी गई कलास I की केन्द्रीय सेवाएं।

20. परीक्षा में पास हो जाने से नियुक्ति का अधिकार सब तक नहीं मिलता, जब तक कि सरकार आवश्यक जांच के बाद संतुष्ट न हो जाए, कि उम्मीदवार इसमें नियुक्ति के लिए हर प्रकार से योग्य है।

21. उम्मीदवार को मानसिक और शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ होना चाहिए, और उसमें कोई ऐसा शारीरिक दोष नहीं होना चाहिए जिससे वह संबंधित सेवा के अधिकारी के रूप में अपने कर्तव्यों को कुशलता पूर्वक न निभा सके। यदि सरकार या सक्रम प्राधिकारी द्वारा निर्धारित डाक्टरी परीक्षा के बीच किसी उम्मीदवार के बारे में यह जात हो कि वह इन आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकता है तो उसकी नियुक्ति नहीं की जाएगी। आयोग द्वारा व्यक्तित्व परीक्षा के लिए बुलाए गए उम्मीदवार की डाक्टरी परीक्षा करवाई जा सकती है। डाक्टरी परीक्षा के लिए उम्मीदवार द्वारा चिकित्सा वॉर्ड को कोई फीस नहीं दी जाएगी।

नोट:—बाद में निराश न होना पड़े इसलिए उम्मीदवारों को सलाह दी जाती है कि वे परीक्षा में प्रवेश के लिए आवेदन पत्र भेजने से पहले सिविल सर्जन के स्तर के सरकारी चिकित्सा अधिकारी से अपनी जांच करवाले : नियुक्ति से पहले उम्मीदवारों की किस प्रकार की डाक्टरी जांच होगी और उसके लिए स्वास्थ का स्तर किस प्रकार का होना चाहिए, इसके ब्योरे इन नियमों के परिशिष्ट 4 में दिए गए हैं।

रक्षा सेवाओं के भूतपूर्व विकलांग संनिकों को सेवा(ओं) की आवश्यकताओं के अनुरूप डाक्टरी जांच के स्तर में छूट दी जाएगी।

22. (क) जिसने ऐसी महिला/ऐसे पुरुष से विवाह करने का करार किया हो अथवा विवाह कर लिया हो जिसका पति/जिसकी पत्नी जीवित हो, अथवा

(ख) जिसने जीवित पत्नी/पति के होते हुए किसी अन्य व्यक्ति के साथ विवाह करने का करार किया हो अथवा विवाह कर लिया हो वह उक्त पद पर नियुक्ति का पात्र नहीं होगा/होगी।

परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार इस बात से संतुष्ट हो कि ऐसा विवाह उस व्यक्ति पर अथवा जिससे विवाह किया गया हो उस पर सागू होने वाले वैयक्तिक कानून के अधीन अनुज्ञा है और ऐसा करने के अन्य कारण हैं जो ऐसे व्यक्ति को ऐसे कानून से छूट दे सकती है।

23. भारत सरकार को इस बात की स्वतंत्रता होगी कि वह किसी ऐसी महिला को जो यिवाहित है भारतीय प्रशासनिक सेवा/भारतीय पुलिस सेवा/भारतीय विदेश सेवा में नियुक्ति न करे अथवा नियुक्ति के बाद अगर वह विवाह कर ले तो उससे त्याग पत्र मांग ले, यदि ऐसा करना सेवा की कुशलता बनाए रखने की दृष्टि से आवश्यक हो।

24. उम्मीदवारों की सूचित किया जाता है कि सेवा में भर्ती होने से पहले ही हिन्दी का कुछ ज्ञान होना उन विभागीय परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने की दृष्टि से लाभदायक होगा जो उम्मीदवारों को सेवा में भर्ती होने के बाद देनी पड़ती है।

25. इस परीक्षा के आधार पर जिन सेवाओं में भर्ती की जानी है उनके संभिप्त विवरण परिशिष्ट III में दिये गए हैं।

एस० हबीबुल्ला, अवर सचिव

परिशिष्ट I

भारत सरकार द्वारा अनुमोदित विश्वविद्यालयों की सूची (नियम 8 के अनुसार)

भारतीय विश्वविद्यालय

कोई भी ऐसा विश्वविद्यालय जो भारत के केन्द्रीय या राज्य विधान मण्डल के अधिनियम से निगमित किया गया हो और अन्य पिंडा संस्थाएं जो मंसद् के अधिनियम से स्थापित की गयी हों। अथवा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम 1956 की धारा 3 के अन्तर्गत विश्वविद्यालय मान लिये जाने की घोषणा हो सकी हो।

बर्मा के विश्वविद्यालय

रंगून विश्वविद्यालय I

माडले विश्वविद्यालय I

हंगलैण्ड और बैंगल के विश्वविद्यालय

बर्मिंघम, ब्रिस्टल, कैम्ब्रिज, डर्हम, लीड्स, लिवरपूल, सेंट्रल, मैचेस्टर, आक्सफोर्ड, रीडिंग शाफीलैंड और बैंगल के विश्वविद्यालय।

स्काटलैण्ड के विश्वविद्यालय

एडरबीन, एडिनबर्ग, गलासगो और सेंट एड्यूयूज विश्वविद्यालय।

आयरलैण्ड के विश्वविद्यालय

इलिन विश्वविद्यालय (ट्रिनिटी कालेज)।

नेशनल यूनिवर्सिटी, आयरलैण्ड।

क्वीस यूनिवर्सिटी, बेलफास्ट।

पाकिस्तान के विश्वविद्यालय

पंजाब विश्वविद्यालय।

सिध विश्वविद्यालय।

बंगला देश के विश्वविद्यालय

ঢাকা বিশ্ববিদ্যালয়।

রাজশাহী বিশ্ববিদ্যালয়।

নেपाल का विश्वविद्यालय

निमुक्त विश्वविद्यालय, काठमाडू।

परिशिस्ट I-क

भारत सरकार ने निम्नलिखित योग्यताओं को उनमें से प्रत्येक के मामंगे लिखी डिग्रियों के समकक्ष मान्यता प्रदान की है :—
परीक्षा में प्रवेश पाने के लिए अनुमोदित योग्यताओं की सूची
(नियम ४ के अनुभाव)

१. शास्त्री, भाषी विद्यार्थी, गारणमी।
२. क्रामीसी परीक्षा (Propedemique)
३. उच्च ग्राम शिक्षा की राष्ट्रीय परिषद् (नेशनल कॉमिटी आफ रूरल हायर एज्यूकेशन) से ग्राम सेवाओं में डिप्लोमा।
४. विश्वभारती विश्वविद्यालय का उच्च ग्राम सेवाओं में डिप्लोमा।
५. अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् (आल हंडिया कौसिल फारटेक्निकल एज्यूकेशन) से वाणिज्य में राष्ट्रीय डिप्लोमा।
६. केंद्रीय सरकार के अधीन वरिष्ठ सेवाओं और पदों पर भर्ती के लिए सरकार से मान्यता अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् का इंजीनियरी या प्रौद्योगिकी में राष्ट्रीय डिप्लोमा।
७. श्री अरविन्द अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा केन्द्र, पांडिचेरी का “उच्च पाठ्यक्रम” यदि “पूर्व छात्र” (फुल स्टूडेन्ट) के स्तर में यह पाठ्यक्रम मफलनापूर्वक पूरा किया हो।

८. भारतीय खान विद्यालय, धनबाद, के खनन इंजीनियरी में डिप्लोमा।

९. मानविकी और प्राकृतिक विज्ञानों के क्षेत्र में उपाधि-पत्र यू० ए० स० आर० स० में उच्च प्रौद्योगिक स्थापना में अनुप्रमाणित उपाधि-प्रहृण बिना प्रथम वैज्ञानिक शोध प्रबन्ध का पक्ष लिये हए, परन्तु राज्य की परीक्षाएँ पास की हों।

१०. शास्त्री (अंग्रेजी विषय के साथ) या पृगना शास्त्री या अंग्रेजी सहित अनिश्चित विषयों में विषेष परीक्षा सहित मम्पूर्ण शास्त्री परीक्षा अथवा वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी की वरिष्ठ शास्त्री परीक्षा।

११. गुरुकुल विश्वविद्यालय, कांगड़ी, हरिहार की अलंकार डिग्री।

परिशिस्ट II**खण्ड I****सिखित परीक्षा की रूपरेखा**

सिखित परीक्षा के विषय :—

(क) सिखित परीक्षा

- (i) तीन अनिवार्य विषय (सभी सेवाओं के लिए) निबन्ध, सामान्य अंग्रेजी और सामान्य ज्ञान, प्रत्येक विषय के पूर्णांक १५० होंगे। [नीचे खण्ड-II का उपखण्ड (अ) देखें।]
- (ii) निम्नलिखित खण्ड-II के उपखण्ड (ब) में दिए गए ऐच्छिक विषयों में से चुने गए विषय। सेवा श्रेणी-II को छोड़ (नियम १ और ४ देखें) ज्ञेष सभी सेवाओं के उम्मीदवार, उम्मीदवार के उपबन्ध के अधीन, कुल ६०० अंकों तक के ऐच्छिक विषय ले सकते हैं। भारतीय पुलिस सेवा दिल्ली और हिमाचल प्रदेश पुलिस सेवा श्रेणी-II के लिए उम्मीदवार कुल ४००

अंकों तक के ऐच्छिक विषय ले सकते हैं। इन प्रश्न-पत्रों की स्तर किसी भारतीय विश्वविद्यालय को आनंद डिग्री की परीक्षा के स्तर के लगभग होगा; और (iii) निम्नलिखित खण्ड-II के उपखण्ड (स) में दिए गए अनिश्चित विषयों में से चुने गए विषय। उम्मीदवार के उपबन्ध के अधीन उम्मीदवार भारतीय प्रशार्थनिक सेवा आर भारतीय विदेश सेवा (श्रेणी-I) के लिये कुल ४०० अंकों तक के अतिरिक्त विषय ले सकते हैं। इन प्रश्न-पत्रों का स्तर ऐच्छिक विषय के लिए उप-खण्ड (क-५) में विहित स्तर से ऊचा होगा।

(ख) ऐसे उम्मीदवार जो आयोग द्वारा व्यक्तित्व परीक्षा के साक्षात्कार के लिए [इस परिशिस्ट की सूची के भाग (ग) के अनुसार] बुलाए जाएंगे, उसके लिए नीचे लिखे नम्बर होंगे :

श्रेणी-I

	पूर्णांक
भारतीय प्रशासनिक सेवा	300
भारतीय विदेश सेवा	400
श्रेणी II और	
सभी सेवाएँ	200

(अ) अनिवार्य विषय**[देखिए ऊपर खण्ड (I) का उपखण्ड (क-१)]**

- (1) निबन्ध
- (2) सामान्य अंग्रेजी
- (3) सामान्य-ज्ञान

टिप्पणी :—ऊपर लिखे विषयों का पाठ्य विवरण इस परिशिस्ट की अनुसूची के भाग 'क' में दिया गया है।

(ब) ऐच्छिक विषय**[देखिए ऊपर खण्ड (I) का उपखण्ड (क-२)]**

सेवा श्रेणी-II (नियम १ और ४ देखें) के उम्मीदवार निम्नलिखित विषयों में से किन्हीं दो विषयों को और अन्य सभी सेवाओं के उम्मीदवार किन्हीं विषयों को चुन सकते हैं :—

- (1) शुद्ध गणित
- (2) अनुप्रयुक्त गणित
- (3) सांखियकी
- (4) भौतिकी
- (5) रसायन
- (6) वनस्पति-विज्ञान
- (7) प्राण विज्ञान
- (8) भू-विज्ञान
- (9) भूगोल
- (10) अंग्रेजी माहित्य
- (11) नीचे दी हुई में से एक :—

आसामी, बंगाली, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, कश्मीरी, मलयालम, मराठी, उड़िया, पंजाबी, सिंधी, तमिल, तेलुगु और उर्दू

(12) निम्नलिखित में मेरे पक्ष :		भारतीय प्रणालीक सेवा/भारतीय विदेश सेवा (श्रेणी-1)
अस्त्री, चीनी, फ्रांसीसी, जर्मन, पाली, फ्रारसी, हसी, संस्कृत	200	की प्रतियोगिता में बैठने वाले उम्मीदवार को निम्नलिखित सिपायों में से कोई दो विषय भी अवश्य लेने होंगे :
(13) भारतीय इतिहास	200	पूर्णांक
(14) ब्रिटिश इतिहास	200	200
(15) यूरोपीय इतिहास	200	
(16) विश्व इतिहास	200	200
(17) सामान्य अर्थशास्त्र	200	
(18) राजनीति-विज्ञान	200	200
(19) दर्शन-शास्त्र	200	
(20) मनोविज्ञान	200	200
(21) विधि I	200	
(22) विधि II	200	200
(23) विधि III	200	
(24) अनुप्रयुक्त यांत्रिकी	200	200
(25) समाज शास्त्र	200	
शर्त यह है कि विशेष विषयों पर निम्नलिखित पारंपरियां लागू होंगी :		
(i) किसी भी सेवा के लिए 1, 2 और 3 विषयों में से दो गे अधिक विषय नहीं चुने जा सकते।		
(ii) भारतीय विदेश सेवा के अतिरिक्त अन्य सेवाओं के उम्मीदवार ऊपर सद 12 के अन्तर्गत दी गई भाषाओं में से एक से अधिक न चुने। केवल भारतीय विदेश सेवा के लिए उम्मीदवारों को इन भाषाओं में से कोई दो को चुनने की अनुमति है, लेकिन किसी भी उम्मीदवार को पाली और संस्कृत दोनों चुनने की अनुमति नहीं दी जाएगी।		
(iii) किसी भी सेवा के लिए इतिहास के विषयों 13, 14 15 और 16 में से अधिक नहीं चुने जा सकते। लेकिन किसी भी उम्मीदवार को विश्व इतिहास और यूरोपीय इतिहास दोनों चुनने की अनुमति नहीं दी जाएगी।		
(iv) संख्या 19 और 20 में उल्लिखित विषयों में से एक सेवा के लिए केवल एक ही विषय लिया जा सकता है।		
(v) किसी भी सेवा के लिए विधि के विषयों 21, 22 और 23 में से दो में ज्यादा नहीं चुने जा सकते।		
(vi) सेवा श्रेणी-II के लिए 24 विषय न चुना जाए।		
टिप्पणी :—ऊपर लिखे विषयों का पाठ्य-विवरण इस परिशिष्ट के अनुसूची के भाग 'ख' में दिया गया है।		
(g) अतिरिक्त विषय [देखिए ऊपर खण्ड-I का उपर्युक्त (क iii)]		
(1) (अ) उच्च गणित	200	
अथवा		
(ब) उच्च अनुप्रयुक्त गणित	200	
(2) उच्च भौतिकी	200	
(3) उच्च रसायन	200	
(4) उच्च वनस्पति-विज्ञान	200	
(5) उच्च प्राणी-विज्ञान	200	
(6) उच्च भू-विज्ञान	200	
(7) उच्च भूगोल	200	
(8) अंग्रेजी साहित्य (1798-1935)	200	
(9) (अ) भारतीय इतिहास-I (चत्वर्दशी मीर्य में हृष्ट तक) अथवा	200	
(ब) भारतीय इतिहास-II महात्मा मुगल समाट (1526- 1707)	200	
(स) भारतीय इतिहास-III (1772 से 1950 तक) अथवा	200	
(10) (अ) उच्चतर अर्थशास्त्र अथवा	200	
(ब) उच्चतर भारतीय अर्थशास्त्र	200	
(11) (अ) हाब्ज से आज तक का राजनीतिक सिद्धान्त अथवा	200	
(ब) राजनीतिक संगठन और लोक- प्रशासन अथवा	200	
(ग) अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध	200	
(12) (अ) उच्चतर तत्त्वमीमांसा जिसमें ज्ञान- मीमांसा भी शामिल है। अथवा	200	
(ब) उच्चतर मनोविज्ञान जिसमें प्रायो- गिक मनोविज्ञान भी शामिल है।	200	
(13) (अ) भारत की मंविधान विधि अथवा	200	
(ब) विधि-शास्त्र	200	
(14) (अ) अर्गी माहित्य में प्रतिबिम्बित मध्यमीयन सभ्यता (570-1650 ईस्की) अथवा	200	

(ब) फारमी साहित्य में प्रतिबिम्बन मध्ययुगीन मध्यता (570 ईस्वी— 1650 ईस्वी)	200
अथवा	
(स) प्राचीन भारतीय गम्यता और दर्शनशास्त्र	200
(१५) मानव-विज्ञान	200
(१६) उच्चतर समाज-विज्ञान	200

विशिष्ट अतिरिक्त विषयों के बारे में निम्नलिखित प्रतिवर्द्ध लागू माने जाएंगे :—

- (१) किसी भी उम्मीदवार को भारतीय इतिहास [(९)
(क)] तथा प्राचीन भारतीय मध्यता और दर्शन
[१४ (ग)] दोनों ही विषयों को एक माथ लेने की
अनुमति नहीं दी जाएगी।
- (२) किसी भी उम्मीदवार को यूरोपीय इतिहास [९ (ड)]
तथा अंतर्राष्ट्रीय संबंध [११ (ग)] दोनों विषयों को
एक माथ लेने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

टिप्पणी :—ऊपर दिए गए विषयों का पाठ्य-विवरण इस परिशिष्ट
की अनुसूची के भाग 'ग' में दिया गया है।

खण्ड III

सामान्य

1. (क) ऊपर के खण्ड II के उपखण्ड (क) की मद्दों में
क्रमशः (१) और (३) के अनुमार 'निवंध' तथा 'मामान्य ज्ञान'
के प्रश्न पत्रों के उत्तर अंग्रेजी अथवा संविधान की आठवीं अनुसूची
में उल्लिखित किसी भाषा में दिए जा सकते हैं, अर्थात् असमिया,
बंगला, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, कश्मीरी, मलयालम, मराठी,
उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, सिंधी, तमिल, तेलुगु तथा उर्दू। अंग्रेजी के
अतिरिक्त विकल्प रूप से किसी अन्य भाषा में उत्तर देने वाले उम्मीद-
वारों को वही भाषा दोनों पत्रों के लिए चुननी होगी। विकल्प
सम्पूर्ण पत्र के लिए सारूप होगा न कि उसके किसी अंश के लिए।

(ख) ऊपर के खण्ड II के उपखण्ड (ख) की मद्दों (११)
तथा (१२) के अनुमार भाषाओं के प्रश्न पत्र को छोड़ कर अन्य
सभी विषयों के प्रश्न पत्रों के उत्तर अंग्रेजी में दिए जाने चाहिए।
जब तक कि प्रश्न पत्र में अन्यथा विशिष्ट रूप से दूसरी भाषा में
लिखना अपेक्षित न हो, उन भाषाओं के प्रश्न पत्रों के उत्तर अंग्रेजी
में अथवा संबंधित भाषा में दिए जा सकते हैं।

टिप्पणी I.—ऊपर दिए पैरा I (क) में अंग्रेजी के अतिरिक्त
किसी भाषा में प्रश्न पत्र (ओं) के उत्तर देने के इच्छुक उम्मीदवार
को आवेदन-पत्र के कालम 32 में संबंधित भाषा का नाम संबंधित
प्रश्न पत्र (प्रश्न पत्रों) के सामने देना चाहिए। यदि दिए हुए कालमों
में एक या दोनों प्रश्न पत्रों के संबंध में कोई अंदराज नहीं किया
जाता है तो यह समझा जाएगा कि प्रश्न पत्र/प्रश्न पत्रों के उत्तर
अंग्रेजी में दिए जाएंगे। एक बार दिया गया विकल्प अंतिम समझा
जाएगा, और परिवर्तन अथवा परिवर्धन के लिए कोई अनुरोध नहीं
माना जाएगा।

टिप्पणी II.—ऊपर दिए पैरा I (फ) में संविधान की
आठवीं अनुसूची में दी गई किसी भाषा में विकल्प रूप से प्रश्न-पत्र

प्रश्न पत्रों के उत्तर देने वाले उम्मीदवार अपने उत्तर क्रमशः निम्नलिखित लिपि में देंगे :—	भाषा	लिपि
1. असमिया	असमिया	
2. बंगला	बंगला	
3. गुजराती	गुजराती	
4. हिन्दी	हिन्दी	
5. कन्नड़	कन्नड़	
6. कश्मीरी	कश्मीरी	
7. मलयालम	मलयालम	
8. मराठी	मराठी	
9. उड़िया	उड़िया	
10. पंजाबी	पंजाबी	
11. संस्कृत	संस्कृत	
12. सिंधी	सिंधी	
13. तमिल	तमिल	
14. तेलुगु	तेलुगु	
15. उर्दू	कारसी	

ऊपर पैरा 1 (क) में दिए गये प्रश्न पत्र (प्रश्न पत्रों) के उत्तर देने
के लिए मिथ्या का विकल्प देने वाले उम्मीदवारों को आवेदन पत्र
के कालम 32 में उस विषेष लिपि (देवनागरी या अंग्रेजी) का नाम
लिखना चाहिए जिसमें वे उत्तर लिखेंगे।

2. उम्मीदवार को प्रश्न का उत्तर अपने हाथ से लिखना
होगा। उन्हें किसी भी हालत में उनकी ओर से उत्तर लिखने के
लिए किसी अन्य व्यक्ति की मद्दत लेने की अनुमति नहीं
दी जाएगी।

3. उपरोक्त धारा II की उपधारा (क), (ख) और (ग)
में दिये पत्रों के उत्तर के लिए 3 घंटे का समय दिया जाएगा।

4. आयोग अपने निर्णय से परीक्षा के किसी एक या सभी
विषयों के अर्हक नम्बर (क्वालिफाइंग मार्क्स) निर्धारित कर
सकता है।

5. भारतीय प्रशासनिक सेवा और भारतीय विदेश सेवा
के लिए केवल उन्हीं उम्मीदवारों के दो अतिरिक्त प्रश्न पत्रों को
जांचा और अंकित किया जायगा जो लिखित परीक्षा के अन्य सभी
विषयों में एक निश्चित अल्पाधिकतम स्तर प्राप्त करेंगे जैसा कि
आयोग द्वारा अपने निर्णय से निर्धारित किया जाएगा।

6. यदि किसी उम्मीदार की लिखावट आसानी से पढ़ने
लायक नहीं होगी तो उसे अन्यथा मिलने वाले कुल नम्बरों में से
कुछ नम्बर काट लिये जायेंगे।

7. अनावश्यक ज्ञान के लिए नंबर नहीं दिये जायेंगे।

8. परीक्षा के सभी विषयों में इस बात का विषेष ध्यान
रखा जाएगा कि अभियाक्षण कम-से-गम शब्दों में क्रमबद्ध तथा
प्रभाव पूर्ण ढंग से और ठीक-ठीक की गई है।

9. उम्मीदवारों से तोल और माप की मिट्रिक प्रणाली की जानकारी की आशा की जाती है। प्रश्नों के उत्तर में जहां कही ऐसा आवश्यक हो, तोल और माप की मिट्रिक प्रणाली का ही उपयोग किया जाए।

अनुसूची

भाग—क

[परिशिष्ट II की धारा II की उपधारा (क) के अनुसार]

1. निबन्धः—उम्मीदवारों से अंग्रेजी में एक निबन्ध लिखने की अपेक्षा की जाएगी। चुनाव के लिए कई विषय दिए जाएंगे। उनसे आशा की जाएगी कि वे निबन्ध के विषय की परिधि में ही अपने विचारों को त्रैम से व्यवस्थित करें और संक्षेप में लिखें। प्रभावपूर्ण और ठीक-ठीक भावाभिव्यक्ति वो प्रश्नम दिया जाएगा।

2. सामान्य अंगेजीः—प्रश्न इस प्रकार के होंगे जिनसे उम्मीदवारों के अंग्रेजी भाषा के ज्ञान तथा शब्दों के सुन्दर उपयोग की सामर्थ्य का पता चले। कुछ प्रश्न इस प्रकार के भी रखे जाएंगे जिससे उनकी तकनीकित, उनकी निहितार्थ को ग्रहण कर सकने की सामर्थ्य तथा महत्वपूर्ण और कम महत्व वाले कार्य में अन्तर समझ सकने की योग्यता की परीक्षा हो सके। जैसा कि आमतौर पर होता है संक्षेप सारलेखन के लिए लेखांग दिए जाएंगे। संक्षिप्त एवं प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति के लिए श्रेय दिया जाएगा।

3. सामान्य ज्ञानः—सामायिक, घटनाओं के, और ऐसी बातें जो प्रतिदिन देखते हैं और अनुभव करते हैं, उसके वैज्ञानिक दृष्टि से ज्ञान सहित जिसकी किसी ऐसी शिक्षित व्यक्ति में आशा की जा सकती है जिसने किसी वैज्ञानिक विषय का विशेष अध्ययन न किया हो। इस प्रश्न पत्र में भारत के द्वितीयमान और भूगोल के ऐसे प्रश्न भी होंगे जिनका उत्तर उम्मीदवारों को विशेष अध्ययन के विना ही आना चाहिए। हम प्रश्न पत्र में महात्मा गांधी के उपदेशों से संबंधित प्रश्न भी होंगे।

भाग—ख

[परिशिष्ट II के भाग II के उपभाग (ख) के अनुसार]

1. गुद्ध गणितः—समिलित विषय होंगे (1) वीजगणित (2) अनन्त अनुक्रम और श्रेणियाँ, (3) त्रिकोण मिर्ति, (4) समीकरण के सिद्धान्त, (5) दो या तीन परिमापों के विश्लेषणात्मक रेखा गणित, विश्लेषण और (7) अवकल समीकरण।

(1) श्रीजगणितः—समुच्चयों, मध्य प्रतिच्छेदन, गुणों के अंतर और कोटिपूरक। बेन आरेखों। धनात्मक पूर्ण संख्याओं के गुण वास्तविक संख्या और दशमलव द्वारा उनका निरूपण। सम्मिश्र संख्या। आंग आरेख। कार्तीय गुणनफल, सम्बन्ध, मान-चित्रण। मान चित्रण के हृप में कार्य। तुल्यता संबंध। वर्गों, वर्गों की एकक समाकारिता। उपवर्ग, प्रासादान्य उपवर्ग। नगरेज का प्रमेय। फो बेनियम प्रमेह।

रिंगों और फील्डों की परिभाषाएं और उदाहरण। सूत्र और होमोगफिज्मों के विभाजन। वेक्टर स्थानों।

मारणिकों (जोड़, घटाना, गुणा और मैट्रिक्स का प्रतिलोमन रेखित समघात और असमघात समीकरण। केले-हेमिल्टन प्रमेय)।

असमताएं। समान्तर और गुणवत्तर माध्यों (कोची, स्वंवार्ज, होल्डर और मिनकोस्की की असमताएं।

(2) अनन्त अनुक्रम और श्रेणियाँ:—धारणा की सीमा। अनंत श्रेणियाँ। अमिसारी, अपमारी और दौलनी श्रेणियाँ। कोची के अभिमरणों का सिद्धान्त। तुलना और अनुपात के परीक्षण। गौज की जांच। निर्गंध अमिसरण और श्रेणियों का उपविन्यास।

(3) त्रिकोण मिर्ति:—परिमेय सूची और उसके अनुप्रथांग के लिए डिमोवाइट का प्रमेय। प्रतिलोम गूचीय और अतिपरवलियक फलन। त्रिकोणमिति स्रेणियों के प्रमाण और संकलन। अनंत गुणनफलों के संबंध में साइन के लिए व्यंजक।

(4) समीकरण के सिद्धान्त:—वहृपद समीकरणों के सामान्य गुण। समीकरणों के स्वपान्तरण। धनाकृति और चतुर्धार्त के मूलों की प्रकृति। धनाकृति का गार्डन का हृल। संकल्प के चतुर्धार्त को वर्ग भिन्नों में। मूलों के स्थनन और न्यूनतन का विभाजकों का ढंग।

(5) दो और नीन धातों की वैश्लेषिक रेखागणित:—सरल रेखा, रेखाओं का जोड़, वृत्त, वृत्तों की प्रणाली, वीर्घ वृत्त। पेराबोला, हाइपरबोला, दूसरी श्रेणी के समीकरण का स्तर फाम में बटाना।

मैदानों, सरल रेखाओं, गोला, कोन, शांकवश्रों और उनके स्पर्श रेखा और प्रसामान्य गुणों। (वेक्टर तरीकों के प्रयोग की आज्ञा है।

(6) विश्लेषण:—धारणा की सीमा। सांतत्य, व्युत्पत्ति, एक वास्तविक अंतर के कार्य का अवकलन। सांतत्य कार्यों के गुण। असातत्य के गुण। समांतर मान प्रमेयों। अपरिमित फोर्मों का मूल्यांकन। लागेरेज और कोची के सारण फार्मों के साथ टेलर और मैक्लोरिन के प्रमेय। एक अंतर के कार्य के न्यूनतम और अधिकतम समतलवश्रों, विचित्र बिन्दु वक्त्रों, वक्र अनुरेखण। आवरणों। औशिक विभेदन। एक से अधिक वास्तविक अंतर के काम का अवकलन।

समाकलन के स्तर तरीके। सांतत्य कार्य की स्तरण समकालन-रीमेन की परिभाषा। समाकलन गणित के मूल प्रमेय। समाकलन गणित की प्रथम समांतर मान प्रमेय। चापकलन, भेदकलन, परिक्रमण ठोसों के आयतजा और आधारों और उनके प्रयोगों।

(7) अवकल समीकरणों:—साधारण अवकल समीकरण का बनना। क्रम और मात्रा। रेखागणित संबंधी डी०वाई०एफ० (एक्स, वाई०) के लिए प्रेमेय के पास जाने का प्रदर्शन। प्रथम क्रम रेखाकार और विना रेखाकार समीकरण। विचित्र बिन्दुओं। विचित्र हलों। रेखाकार-अवकल समीकरणों और उनके विशेष गुणों। रेखाकार अवकल समीकरण लगातार गुणांकों के साथ, कोची-यूलर प्रकार के समीकरणों। यथार्थ अवेकल समीकरणों और समांकलन-गुणक को प्रवेश कराने वाले समीकरणों, द्वितीय ऋम के समीकरणों। परद्वितीय और स्वतंत्रतारों का वदलना। हल जब कि एक समाकल जात हो। प्राचलों का विचरण।

2. अनुपश्रृत गणित :—इसमें निम्नलिखित विषय सम्मिलित किये जायेंगे :—

- (1) वेक्टर विश्लेषण
- (2) स्थिति विज्ञान
- (3) गति विज्ञान तथा
- (4) द्रव्यस्थैतिकी ।

1. वेक्टर विश्लेषण :—वेक्टर बीजगणित । अदिशचर (Scalar variable) के वेक्टर फलन का अवकलन । ग्रेडांग कार्तीय में अपमरण तथा कर्ल बेलनाकार तथा गोलीय निर्देशांक तथा उनकी प्राकृतिक व्याख्याएं उच्चतर धात व्युत्पन्न वेक्टर सर्वसमिकाएं तथा वेक्टर सभीकरण । गाउस तथा स्ट्रोक प्रमेय ।

(2) स्थैतिकी :—न्यूटन की यांत्रिकी के मूल नियम । विभीषण प्रमेय । समतलीय स्थैतिकी । कण-निकाय में संतुलन । कार्य तथा स्थितिज ऊर्जा । द्रव्यमान केन्द्र तथा गुरुत्व केन्द्र । घर्षण । सामान्य कैटिनरी । कल्पित कार्य का सिद्धांत । संतुलन का स्थायित्व । तीन विमाओं में बल-संतुलन । गलाकाओं में आवरण तथा स्थितिज ऊर्जा आयाताकार तथा वृत्ताकार यड़स्क, गोलीय कोग, गोल । समस्थितिज पृष्ठ उनके गुण । स्थितिजों के गुण । ग्रीन का ममान स्तर । लौपले तथा पोहणन के सभीकरण ।

(3) गति विज्ञान :—वैग वेक्टर । ओपक्षिक वैग । त्वरण । कोनीय वैग । स्वतंत्रता की कोटि तथा प्रतिबन्ध । सरल रेखात्मक मति । सरल आवर्त मति । स्थचन में गति । प्रक्षयों । प्रतिबंधित गति । कार्य तजाऊर्जा आवेगी वलों के अधीन गति । कैप्लर के नियम । केन्द्रीय वलों के अधीन कक्षाएं । परिवर्ती द्रव्यमान की गति । प्रतिरोध के अधीन गति । जड़त्व के आधारों और गुणनकलों । परिभिन्न और आवेगी वलों के अधीन दृढ़पिंड की दो विमीय गतियाँ । पिंड लोलक ।

(4) द्रवस्थैतिकी :—भारी तलाओं की दाढ़ी गई पद्धति के बदों के अधीन परलों का संतुलन । दाढ़ी का केन्द्र । बक पृष्ठों पर प्रणोद प्लवभन्धन पिंड का संतुलन । स्थायित्व का संतुलन । गैसों की दाढ़ी तथा वायु मृद्ग से संबंधित असम्भाल ।

3. सांख्यिकी

प्रायिकता :—प्रायिकता कि चिर सम्मत और सांख्यिकीय परिभाषाएं । उदाहरणों के साथ प्रायिकता पर सरल प्रमेय । प्रतिबंधी प्रायिकता और सांख्यिकीय स्वतंत्रता । वैय का प्रमेय । संयोगिक विचरणों—असंतत और संतत विचरों में प्रायिकता विचरणों, गणितीय प्रत्याशाएं । टेकेवाइचेक की असमती । वृहत संख्याओं का संताह नियम । केन्द्रीय भीमा प्रमेय का सरल फर्म ।

II. सांख्यिकी तरीके :—संकलन, वर्गीकरण, सारणीयन और विभिन्न प्रकार के सांख्यिकीय आकड़ों का आरेखी निहण ।

सांख्यिकी जा संख्या की धारण, और आवृत्ति वक्र । केन्द्रीय प्रवृत्ति और विश्लेषण के माप । आधूर्णों और संचयी । व्रशम्य और कुकुदत्ता । आधूर्ण—जनक फलन ।

स्तर प्रायिकता वंटनों का अध्ययन —छिपद, विष, हाइपरज्या-मैट्रिक, प्रसामान्य, क्रृण-विपद, आयताकार और सांग सामान्य वंटनों । पियर सोनियन वक्रों की पद्धति का सामान्य विवरण ।

द्विचर बंटन द्विचर प्रसामान्य बंटन के सामान्य गुणों साहचर्य और आसंग के माप । दो या अधिक चरों से सम्बन्धित सहसंबंध और एकधात समाश्रयण । सहसंबंध अनुपात । अंतर्वर्ग सहसंबंध कोटि सहसंबंध । अरेखीय समाश्रयण । विश्लेषण ।

स्वतंत्र हम्मतवक्रों के तरीकों द्वारा वक्र-आसंजन गतिमान माध्यों, वर्ग माध्यों, न्यूनतम वर्गों और आधूर्णों । लांबित बहुपदों और उन के प्रयोगों ।

III. प्रतिवर्द्धीबंटन और सांख्यिकीय अनुमान

आदृच्छिक प्रतिदर्श, सांख्यिक, प्रतिचमन बंटन और मानक-कुटि की धारणाएं ।

स्वतंत्र प्रसामान्य विचरों के माध्य के प्रतिदर्शी बंटन का व्युत्पन्न, एक्स² (X^2) । टी (T) और एफ (F) सांख्यिक, उनके गुणों और प्रयोगों । प्रतिदर्शी माध्यों के प्रतिदर्शी बंटनों का व्युत्पन्न, प्रसरणों और सहसंबंध गुणांक द्विचर प्रसामान्य जनसंख्या से । व्युत्पन्न (बड़े प्रतिदर्शों में) और वियरसोनियन एक्स² (X^2) के प्रयोगों ।

आकलन का सिद्धांत :—अच्छे आकलन की आवश्यकताएं—अनमिनतता, संगति, दक्षता तथा पर्याप्तता । आकलनों के प्रसरण का क्रेमर—राज निम्नपरिवंध । सर्वोत्तम एकधात अनमिनत आकलनों ।

आकलन के तरीके—आधूर्णों के तरीकों के सामान्य विवरणों, अधिकतम संभाविता का तरीका, न्यूनतम वर्गों के तरीके और अधिकतम संभावित आगणकों के विना प्रमाण) के न्यूनतम गुणों का तरीका । विश्वास्यता अंतरालों का सिद्धांत—विश्वास्यता सीमाएं अस्तमन की सरल समस्याएं ।

परिकल्पनाओं की जांच का सिद्धांत:—सरल और संयुक्त परिकल्पनाएं । सांख्यिकीय जांचों और संशय क्षेत्रों । दो प्रकार की कुटियों, मार्थकता का स्तर और परीक्षण की क्षमता ।

सरल परिकल्पना से एक परिमापी से संबंधित के लिए अनुकूलतम संशय-क्षेत्रों । प्रसामान्य जन संख्या से सम्बन्धित सरल परिकल्पनाओं के लिए इस प्रकार के क्षेत्रों की रचना ।

सभावित अनुपात परीक्षणों । माध्य संबंधी परीक्षणों, प्रसरण महसंबंध तथा एकनर और द्विचर प्रसामान्य जासंख्याओं में महसंबंध तथा सामान्यरूप गुणों को सरल अपरिमापीय परीक्षणों—चित्र, रेन, माध्यम, कोटि, और भादृच्छि की करण परीक्षणों ।

सरल वेकल्पिक (विना व्युत्पन्न) के विरुद्ध सरल परिकल्पनाओं का अनुश्रूतिक परीक्षण ।

VI. प्रतिवर्द्धी तकनीकें

प्रतिदर्शी प्रति पूरण गणना प्रतिदर्शी के सिद्धांत । फेमों और प्रतिदर्शी एक के । प्रतिदर्शी और अप्रतिदर्शी कुटियां । अम्बद्ध प्रतिचयन । बहुक्रम और बहुक्ला प्रतिचयन । आकलन के अनुपात और समाश्रयण तरीके । भवरन में अभी हाल ही में बड़े पैमाने पर किये गए सर्वेक्षणों के संदर्भ में प्रतिदर्श सर्वेक्षणों की अभिकल्पना ।

V. प्रयोगों के अभिकल्प

कोणों में निरीक्षणों के लिए विचरों का उपांतरण । प्रयोगात्मक अभिकल्पों के सिद्धांत । पूर्णतः आदृच्छिकृत यादृच्छिकृत व्युत्पन्न तथा लातीनी वर्गकार अभिकल्प । अप्राप्त भूखण्ड तकनीक । 12 S

S=2 (1) 5 [3² & 3³] तथा 3 अभिकल्पों के दीच भ्रम पर पुणज्ञानात्मक प्रयोग। खण्डित भूखण्ड अभिकल्प। भतुलित अपूर्ण अपूर्ण अभिकल्प तथा सरल जालक।

4. भौतिकी

पदार्थ और यांत्रिकी के सामान्यागुण—एकक तथा आयाम। परिभ्रमण गति तथा जड़ता विद्युतिया। स्वाक्षरित तथा अव्याकरण, ग्रहीय गति। भ्रव्यास्थजश तथा आयाम संहस्रबंध, प्रत्यास्थ अपरिवर्तक तथा उनके पारस्परिक संबंध। तल-आतर्लि, केणातत्व। असंपीड्य द्रवों का प्रवहण। तरल तथा वांति द्रव्यों को आलगत्व।

ध्वनि—क्लोत्पादित आवेषन तथा प्रतिफूयन। तरंग गति। आवेषनांक परिवर्तन। दोरक तथा बायुस्तम्भ-आवेषन। वारंवारता-मापन, ध्वनि का प्रवग तथा चुन्धकन। स्वर-ग्राम। प्रशाल-ध्वनि-विज्ञान। पार स्वानिकी।

उष्मा सथा उष्मा-प्रवैगिकी—वातियों का गतिवाद/व्राउन का गतिवाद। बात डेर थीलका स्थिति का समीकार। नापमान की भाष, अपेक्षिक ऊष्मा तथा संवाही ऊष्मा। जूल-यामसन वातियों का प्रभाव तथा तरलन। ऊष्म प्रवैगिकी के नियम। ऊष्म यंत्र। कालकार्य-विकिरण।

प्रकाश—रेखिकीय काशिकी तथा माधारण काशित भहिति। द्रेक्ष तथा अण्डीय। नाथुप प्रतिक्रिय में दोष तथा उनका सुधार प्रकाश का तरंग मिछात। प्रकाश। प्रवेग की माप। प्रकाश में वाधक, व्यारंग तथा अभिक्षेत्र। माधारण मिथोचट्ट-मरंगावनीका के तत्व। रमन प्रभाव।

विधुत तथा चुम्बकस्थ

साधारण मामलों में क्षेत्र तथा शब्दम की गणना। गांस का प्रमेय। विद्युत्मान। पदार्थ के विद्युतीय तथा चुम्बकीय गुण और उनकी माप। विद्युत प्रवाह के कारण चुम्बकीय क्षेत्र। शुद्धारमान। विद्युत के वेग तथा मात्रा की माप। शक्तमान। रोच, प्ररोचता तथा धारता; तथा उनका मापन। तामविद्युत। आकर्ती विद्युद्धाह के तत्व। विद्युज्जितिवा तथा विद्युद्धित। विद्युदंशन। विद्युच्चुम्बक तरंगे। नमोवाणी कपाद दोप तथा उनके ढारा वित्तु तरंगों की साधारण प्रयुक्ति, पारपंण आदान। दुरवीक्षण।

आधुनिक भौतिक के तत्व—विद्युदणु, प्राणु तथा क्लीवाणु के प्राथमिक तत्व। किया-ऊर्जाणु-स्थगंक। परमाणु का ग्रहवत् परमाणु सिछात। क्ष-गणिमत्वां तथा उनके गुण। तेजोंद्विरेता के तत्व तथा आकार एवं अवर्ण रश्मियों के गुण। परमाणुओं की व्याप्ति। सापेक्षता, पुंज्ज तथा ऊर्जा के विशेष सिद्धात के तत्व। विद्वंडन तथा द्राव। ब्राह्मांड रश्मिया।

5. रसायन

अकार्बनिक रसायन—परमाणु की संरचना। रेडिओरग्किटिभता समस्थानिक। तत्वों का कृत्रिम तत्वांतरण। नाभिकीय विद्वंडन। रासायनिक बंधों की प्रकृति। बायुमंडल की अक्षिय गैरों। अपेक्षाकृत अधिक सामान्य और उपशोर्गी तत्वों तथा उनके योगिकों का

रसायन। दुर्लभ मूदा तत्व। हाइड्रोइड, आक्माइड, आकर्ती अम्ल। पर-अम्ल और पर-लवण तथा कार्बाइड। आकार्बनिक संकर। रासायनिक विश्लेषण के मूलभूत सिद्धांत।

कार्बनिक रसायन—पैट्रोलियम और पैट्रोलियम उत्पाद। ऐलिफिटिक यौगिकों के निम्नलिखित वर्गों का रसायन: संतृप्त और असंतृप्त हाइड्रोकार्बन, एल्कोहार, ईथर, एल्डिहाइड, कीटोन मोनो और डाइ-कार्बोसिलिक अम्ल, ईस्टर, प्रतिस्थापित कार्बो-कर्सिलिक आत,। धायरो, नाइट्रो और यायनों गैयिक। ऐमीग यूरिया और यूरीआइड, कार्ब-धातिक यौगिक, मोनोमिकेराइड (संरचना सहित), कार्बोहाइड्राट और प्रोटीन (सामान्य परिचय) सरल एलिक्चरीय यौगिक। विज्ञुति मिछात।

ऐरोमेटिक—बैजीन, नैफथेनीन और ऐन्थ्रामीन तथा उनके मूल्य व्युत्पन्न, कोलतार, आसवन, फिनॉल, एरोमैटिक प्रॉकोहाल, एल्डिहाइड, कीटोन। ऐरोमेटिक अम्ल और हाइड्रोकार्मी अम्ल। त्रिविमविन्यासी बाधा। ऐश्ल-ग्लैम, डाइएजो, एजो और हाइड्रोजो यौगिक। किवनोन। विषम-चक्रीय यौगिक। पाईरोल, पिरिडीन, किवनोलीन, इन्डोल और नील। ऐजो, ड्राइफैनिल मेथेन और पर्येलीन रंजक।

सरल आपायिक पुनर्विन्यास, सामावयता, त्रिविम समावयकता और चलावयतवता। बहुलकीरणह।

भौतिक रसायन—अणुगति सिद्धांत गैरों के गुणधर्म, अवस्था-समीकरण, (बात-डेर-वाल, का, डाइटरिसाइ) क्रान्तिक अवस्था, गैरों का द्रवण। रसायनिक संघटन के सापेक्ष द्रवों के भौतिक गुणधर्म। पारभिक किस्टलिकों।

ऊष्मागतिकी का पहला और मूसरा नियम और इन नियमों का सरल भौतिक तथा रासायनिक प्रक्रमों में अनुप्रयोग। रासायनिक साम्य और द्रव्य-अनुपाती क्रिया का नियम। ला-शाते लिए का नियम। प्रावस्था-नियम और उसका एक-धटक तंत्रों तथा लोह-कार्बन तंत्र में अनुप्रयोग।

अभिक्रिया की दर और कंटट। प्रथम और द्वितीय कोटि की अभिक्रियाएं। शंखला अभिक्रियाएं। प्रकाश रासायनिक अभिक्रियाएं। उत्प्रेरण। अधिशोषण।

विद्युत-अपघटनी वियोजन। आयनिक साम्य। अम्ल-क्षारिक साम्य और सूक्षक। विद्यु-अपघटनी चालकता और उसके अनुप्रयोग। इलैक्ट्रोल-विभव। सैल का विद्युत्वाहक बल। विद्युत्वाहक बल के माप और उनके अनुप्रयोग।

6. बनस्पति-विज्ञान

क्रिटोगैम (बैक्टीरिया और वाइरस सहित) तथा फैनेरोगैम, गियोपकर भारतीय किप्टोगैम और फैनेरोगैम, के विभिन्न भमूहों और उपसमूहों अथवा कुलों और उपकुलों के महत्वपूर्ण तिष्ठपतों के रूप, संरचना, प्रकृति, आर्थिक महत्व, जीवनवृत्त और परस्पर संबंध।

पारदम-फिजियोलॉजी के मूल मिछात और प्रक्रम।

भारत में मिलने वाले शस्य-पौधों के महत्वपूर्ण रोगों का सामान्य ज्ञान और उन रोगों या नियंत्रण तथा उन्मूलन।

परिस्थिति वीं और पादन भूगोल, विशेषतः भारतीय वनस्पति-
ग्रमूह और भारत के वनस्पतिक क्षेत्रों में संबंधित मूलभूत नथ्य।

विकास, वैशिका-विज्ञान, और आनुवंशिकी और पादन-
प्रजनन का मूल ज्ञान।

मानव कल्पण के लिए और विशेषकर खाद्यान्नों, दालों,
फलों, शर्कराओं, स्टार्चों, तेल-बीजों, मसालों, पेयों, तनुओं
तकड़ियों, रवर और पर्याधियों और भंगध तेजों जैसे वनस्पति उत्पादों
में पीधियों, विशेषतः पुष्पी पीधियों, के आर्थिक उपयोग।

वनस्पति विज्ञान से संबंधित ज्ञान के विकास का सामान्य
परिचय।

7. प्राणिविज्ञान

विशेषकर भारतीय संदर्भ आकर्डेटों और कार्डेटों, का वर्गीकरण,
जीव-परिस्थितिकी, अकारिकी, जीवनवृत और संबंध।

अष्टवारण, अनुकूलाल, चलन, भर्ज, घटिर, परिष्वन्तरण,
उवसन, आरमो-रेख्युलेशन, तविकातंत्र, ग्रहियों और पृनक्षणादन
की श्रियात्मक अकारिकी (रूप, संरचना और कार्य)। क्षेत्रकी
भ्रण विज्ञान के तत्व।

विकास:—प्रमाण, वाद और उनकी आधुनिक व्याख्याएं।
मेन्डेलीय आनुवंशिकता, स्ट्रेणन। प्राणी-कोशिका की संरचना।
कोशिका-विज्ञान और आनुवंशिकी के मूलभूत मिद्दांत। अनुकूल
और वितरण।

8. भौतिक, भूविज्ञान और भूआहृति विज्ञान

भौतिक, भूविज्ञान और भूआहृति विज्ञान :—पृथ्वी का उद्भव,
संरचन, गर्भ तथा आयु। भू-अधिनिति और पढ़ाड़ा। समस्थिति।
महाद्वीपों और महासागरों का मद्भाव। महाद्वीपीय विस्थापन।
भूकूप-विज्ञान। ज्वालामुखी-विज्ञान। पृष्ठ एजेन्सियों की भूवैज्ञानिक
क्रिया।

संरचना तथा झेल्ड भू-विज्ञान :—आग्नेय अवमादी और
कायांतरित जैवों की सामान्य संरचनाएं। बलन, भ्रंश, विष्म
विन्यासों, संधियों और क्षेत्रों का अध्ययन। भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण
और भूमापन की विधियों की प्रारम्भिक जानकारी।

क्रिस्टल-विज्ञान और खनिज विज्ञान :—क्रिस्टल हृषि और
नमिति के तत्व, क्रिस्टल-विज्ञान के नियम, क्रिस्टल तंत्र और वर्ग,
क्रिस्टल प्रकृति, यमनलत। विधि प्रक्षेप। खनिजों की भौतिक,
रायायिक और प्रकाशित गुणधर्म। अधिक महत्वपूर्ण शैलकर
तथा आर्थिक खनिजों का हनके गणायनिक और भौतिक गुण-
धर्मों, क्रिस्टल संरचनात्मक और प्रकाशित लक्षणों, परिवर्तनों,
प्राप्ति और व्यावरायिक उपर्योगों के संबंध में अध्ययन।

स्तरित शैल-विज्ञान और जीवाशंय विज्ञान :—स्तरित शैल-
विज्ञान के नियम। भारतीय स्तरित शैल-विज्ञान। भूवैज्ञानिक
अभिलेखों के अर्थ-वैज्ञानिक और कालानुक्रम प्रविभाग। जीवाशंय-
प्रकृति और परिश्वेषण का दंग; जैव विकास पर प्रभाव। अक्षेत्रकी
तथा पादप जीवाशंय।

आर्थिक भूविज्ञान:—अर्थस्थ उत्पत्ति के सिद्धांत, वर्गीकरण,
भूविज्ञान, प्राप्ति, भारत के प्रमुख धात्विक और अधात्विक खनिजों

के शेत्र तथा स्रोत। भारत में खनिज उद्योग। भूभौतिकीय पूर्वेक्षण
और अरम्भ-प्रसाधन के नियम।

शैलविज्ञान : अग्नेय, आवमादी और कायांतरित जैवों का
उद्भव, रचना, संरचना और वर्गीकरण। गामान्य भारतीय जैव
प्रकारों का अध्ययन।

9. भूगोल

संमाच. विशेषतः भारत, का प्राकृतिक और मानव भूगोल।
प्राकृतिक भूगोल के नियम, जिसमें स्थलमण्डल, जलमण्डल और वायु-
मण्डल का विस्तृत अध्ययन करना शामिल है। चक्र संकल्पनाओं
समस्थिति, पर्वत विरचन के प्रकारों, मौसम घटनाओं, महासागर-
जल की वहस्तलीय और अध्रस्तलीय गति, आदि के संबंध में
आधुनिक विचारों का ज्ञान भी है।

मानव भूगोल के नियम, जिसमें संस्कृति, प्रजापति, धर्म आदि
के आधार पर जिन वितरण, वातावरण और जीवन-प्रणाली, जन-
गंख्या उपनिति, जनसंख्या की आवाजाही का विस्तृत अध्ययन करना
भी शामिल है।

10. अंग्रेजी साहित्य

उम्मीदवार से आशा की जाती है कि उन्हें भारत के प्राकृतिक,
मानव और आर्थिक भूगोल का विस्तृत ज्ञान हो।

उम्मीदवारों में आशा की जाएगी, कि उन्हें चौमर से लेकर
महारानी विक्टोरिया के शासन के अन्त तक अंग्रेजी महित्य के
इतिहास का सामान्य ज्ञान हो तथा निम्नलिखित रचनाओं की
कृतियों का विशेष ज्ञान हो।

शेक्सपीयर, मिल्टन, ड्राइडन, जानसन, वर्ड्सवर्थ, कीटूस
डिक्नम्स, टेनिसन, आर्नल्ड तथा हार्डी।

स्वयं पुस्तकें पढ़ने का प्रमाण अपेक्षित होगा।

प्रश्न-पत्र इस प्रकार से बनाए जायेंगे, जिससे उम्मीदवारों
की आलोचनात्मक योग्यता की जांच की जा सके।

**11. असमी, बंगाली, गुजराती, हिन्दी, कश्मीरी,
मलयालम, मराठी, उडिशा, पंजाबी, सिंधी, पमिल, तेलुगु और
उर्दू:**—उम्मीदवारों से यह प्रत्याशा की जाएगी कि भाषा के ज्ञान
और उसके साहित्य को दर्शा सकें। जिन कृतियों में वे संबंध रखते
हैं उनमें से जो सर्वोत्तम समझी जाती है उनका उन्हें प्रत्यक्ष ज्ञान
होना अनिवार्य है, यथापि प्रश्न कम आवश्यक कृत्यों पर भी तैयार
किए जा सकते हैं। उन से यह भी प्रत्याशा की जाएगी कि ऐति-
हासिक, तथा मांस्कृतिक बौद्धिक तथा कलात्मक आदोनतों की
पृष्ठ भूमि का ऐसा ज्ञान रखते हों तथा भाषा-विषयक विकासों का
जिससे उन को साहित्य को समझने में सहायता मिलेगी। प्रश्न
साहित्य इतिहास और भाषा के ऊपर तैयार किए जा सकते हैं।
उम्मीदवारों को अनुवाद। व्याख्या करनी होगी तथा परिच्छेदों पर
टिप्पणी के लिए कहा जा सकता है।

टिप्पणी : मर (11) के अधीन दिए गए विषयों में से किसी
विषय को लेने वाले उम्मीदवारों को संबंधित भाषा में कुछ अथवा

सभी प्रश्नों के उत्तर देने अपेक्षित होंगे। इन भाषाओं के लिए प्रयोग की जाने वाली लिपियां निम्नलिखित हैं :

भाषा	लिपि
1. असमिया	असमिया
2. बंगला	बंगला
3. गुजराती	गुजराती
4. हिन्दी	देवनागरी
5. कन्नड़	कन्नड़
6. कर्मीरी	फारसी
7. मलयालम	मलयालम
8. मराठी	देवनागरी
9. उडिया	उडिया
10. पंजाबी	गुरुमुखी
11. सिंधी	देवनागरी अथवा अरबी
12. सिंगल	तमिल
13. तेलुगु	तेलुगु
14. उर्दू	फारसी

12. अरबी, खीनी, फँसीसी, जम्बन, पाली, फारसी, रुसी, संस्कृत :—उम्मीदवारों को प्रमुख परिनिष्ठित साहित्यकारों का ज्ञान होना अपेक्षित है और उनमें उम्मीदवारों में रचना करने और उभसे अनुवाद करने की योग्यता होनी चाहिए।

विषयी : अरबी, फारसी और संस्कृत लेने वाले उम्मीदवारों से कुछ प्रश्नों के उत्तर, यथास्थिति, अरबी, फारसी या संस्कृत में देने की अपेक्षा की जा सकती है। संस्कृत में लिखे जाने के लिए उत्तर देवनागरी लिपि में लिखे जाने चाहिए।

13. भारतीय इतिहास

चन्द्रगुट मर्याद के शासनकाल से लेकर भारतीय गणतंत्र की स्थापना तक।

प्रष्ट-पत्र में राजनीतिक, संविधानिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक विकास पर भी प्रश्न होंगे।

14. चिटिश इतिहास

अध्याधीन अवधि 1485 से 1945 तक होगी। प्रष्ट-पत्र में राजनीतिक, संविधानिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक विकास पर भी प्रश्न होंगे।

15. यूरोप का इतिहास

अध्याधीन अवधि सन् 1789 से 1945 तक होगी।

प्रष्ट-पत्र में राजनीतिक, राजनियिक आर्थिक और सांस्कृतिक विकास पर प्रश्न शामिल होंगे।

16. विश्व इतिहास : 1789 से 1945 तक।

उम्मीदवारों में आशा की जायेगी कि उन्हें विष्य के राजनीतिक और आर्थिक विकास विशेषणः ब्रूरोप, अमेरिका, सुदूरपूर्व मध्यपूर्व तथा अफ्रीकी महाद्वीप के बारे में गहन ज्ञान हो। सार्वभौमिक महाद्वीप की अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं पर विशेष बल दिया जायेगा।

उम्मीदवारों से यह भी आशा की जायेगी कि उन्हें विज्ञान, साहित्य तथा कला के क्षेत्रों में प्रदर्शित सम्पूर्ण सम्भवता के योगदान में प्रतिविवित सांस्कृतिक विकास का ज्ञान हो।

17. सामान्य अर्थशास्त्र

उम्मीदवारों से आशा की जायेगी कि उन्हें निम्नलिखित विषयों का सामान्य ज्ञान हो :

- (क) आर्थिक विश्लेषण के मिद्दांत, तथा
- (ख) आर्थिक मन्त्रियों का इतिहास।

उनमें अपने मैदानिक ज्ञान को वर्तमान भारतीय आर्थिक समस्याओं के विश्लेषण के लिए प्रयोग करने की अयोग्यता होनी चाहिए।

18. राजनीतिक विज्ञान :—उम्मीदवार में राजनीतिक सिद्धान्त और उसके इतिहास का ज्ञान अपेक्षित है। राजनीतिक भिद्वान्त का तात्पर्य केवल विधान-मिद्दान्त से ही नहीं है अपितु सामान्य राज्य सिद्धान्त से भी है। संविधानक रूपों (प्रतिनिधि सरकार, संघवाद आदि) और केन्द्रीय स्थानीय तथा लोक प्रणाली संबंधी प्रश्न भी पूछे जा सकते हैं। उम्मीदवारों का वर्तमान संस्थाओं की उत्पत्ति और विकास का ज्ञान भी होना चाहिए।

19. दर्शन शास्त्र :—उम्मीदवारों में आशा की जानी है कि उन्हें निम्नलिखित के विशेष संदर्भ सहित पूर्व और पश्चिम के नीति शास्त्र के इतिहास और सिद्धान्त की जानकारी होगी। नैतिक स्तर और उसके अनुप्रयोग की समस्याएं नैतिक निश्चय, नित्यवाद और स्वतन्त्र इच्छाशक्ति, नैतिक व्यवस्था और प्रगति, व्यक्ति समाज और राज्य के बीच संबंध, अपराध और दण्ड के सिद्धान्त तथा नीतिशास्त्र का धर्म से संबंध।

उनसे यह भी आशा की जाती है कि वे निम्नलिखित के विशेष संबंध सहित पश्चिमी दर्शनशास्त्र के इतिहास की जानकारी रखेंगे। दर्शनशास्त्र की प्रकृति और उसका विज्ञान सत्ता धर्म से संबंध, पदार्थ एवं आत्मा, स्थान एवं समय, कारणता एवं विकास तथा मूल्य एवं ईश्वर के सिद्धान्त और ईश्वर, आत्म एवं मुक्ति, एवं कारणता, विकास एवं प्रतीति के मिद्दान्तों के विशेष संदर्भ सहित भारतीय दर्शन (धर्मनिष्ठ और धर्म विरोधी प्रणालियों सहित) का इतिहास।

20. मनोविज्ञान

मनोविज्ञान :—उसका स्वभाव, क्षेत्र एवं अध्ययन की विधियां, मनोविज्ञान में प्रयोगिक विधियां।

मानवीय विकास के कारक :—आनुवंशिक की एवं परिवर्ष।

अभिप्रेरणा भावनाएं एवं संवेदन, उनका स्वभाव एवं विकास, संवेदनों के सिद्धांत, चरित्र का विकास।

संज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ, संवेदन, प्रत्यक्ष ज्ञान, अधिगम, स्मरण और वित्त तथा विस्मरण, और मनन।

प्रभाव एवं योग्यताएँ। संकल्पना और माप, अव्यक्तित्व-स्वभाव निर्धारिक तत्त्व, सिद्धान्त, और मूल्यांकन।

दलगत प्रक्रियाएँ एवं दलगत प्रभाव, समूहगत अव्यवहार, नेतृत्व एवं मनोलब, अभिवृति एवं अपकृति, सामाजिक-परिवर्तन।

अपसामान्यता की संकल्पना, मतःस्ताप और मनोविक्षिप्ति विकारों के मूल्य रूपों की पहिचान एवं कारण, सामाजिक विकृति विज्ञान और बाल-अपराध—कारण और उपाय चिकित्सा विधियां के मूल्य रूप।

विधि I

- विधि शास्त्र : विधि संकलन। विधि के प्रकार; सकारात्मक विधि, न्याय प्रशासन। विधि के स्रोत; विधि के तल जिनमें विधिक अधिकार और कर्तव्य शामिल हैं; दायितायें स्वामित्व के बाबा विधिक अव्यक्तित्व; सम्पत्ति।
- मंविधान विधि : भारत की संविधान विधि जिसमें प्रशासनिक विधि शामिल है, त्रिटिया मंविधान के मूल सिद्धांत।
- टार्ड्स विधि जिसमें टार्ड्स के लिये राज्य की दायिता शामिल है।
- दांडिक विधि (भारतीय दंड संहिता)।
- माध्य विधि: सूसंगति और प्रकल्पनायें: माध्य के प्रकार मौखिक और लेख्य माध्य प्राथमिक और माध्यमिक माध्य: प्रमाण-भार विवंधन; अदालती नोटिस।

विधि II

- मंविदा विधि के सामान्य सिद्धांत (भारतीय मंविदा अधिनियम की धारा 1 से 75 तक)।
- भारतीय मंविदा अधिनियम के विशेष मंदर्भ में क्षति पूति विधि गारंटी गिरवी और एजेंसी।
- भारतीय विधि के विशेष मंदर्भ में सामान विक्री विधि, माझेदारी विधि पराक्रामय उपकरण तथा बैंकिंग (सामान्य मिद्दांत)।
- समवाय विधि।

विधि III

अंतर्राष्ट्रीय विधि की प्रकृति और स्त्रोत। अंतर्राष्ट्रीय विधि का इतिहास अंतर्राष्ट्रीय विधि का संप्रदाय अंतर्राष्ट्रीय विधि और देश विधि।

अंतर्राष्ट्रीय विधि में व्यक्तियों के रूप में राज्य। अंतर्राष्ट्रीय अव्यक्तित्व का अधिग्रहण और हानि। राज्य मान्यता। राज्य उत्तराधिकार।

राज्य के अधिकार और कर्तव्य समानता का मिद्दात। राज्यों का क्षेत्राधिकार।

संधिया।

अंतर्राष्ट्रीय संसर्ग के ग्रेंट/राजनयिक एजेंटों के विशेषाधिकार और उन्मुक्ति व्यक्ति और अंतर्राष्ट्रीय विधि। अन्य देशीय विज्ञानी राष्ट्रिकता। देशीकरण। राष्ट्रीयनता। प्रस्तर्पण। युद्ध अपराधी।

अंतर्राष्ट्रीय विवादों को तय करने का ढंग।

युद्ध। घोषण। प्रभाव।

स्थल-जल और वायु-युद्ध के नियम।

आत्म रक्षा के लिये युद्ध: सामुहिक सुरक्षा। क्षेत्रीय समौक्ते। युद्ध को अवैध घोषित करना युद्धकारी दखल के नियम। युद्धकारिता और राज्य प्रतिरोध।

युद्ध के ढंग। युद्ध-कैशी। निरीक्षण और तसाशी का अधिकार।

मौजितमाल न्यायालय।

नाकाबन्दी और विनिष्ठित।

तटस्थता और तटस्थीकरण। युद्ध में तटस्थ देशों के अधिकार और कर्तव्य। अतटस्थ मेवा। संयुक्त राष्ट्र के चार्टर के अधीन तटस्थता।

संयुक्त राष्ट्र का चार्टर और राष्ट्र संघ का प्रतिज्ञापन संयुक्त राष्ट्र के प्रमुख अंग। विशिष्ट अंतर्राष्ट्रीय संगठन।

उच्चीदावरों से आगा की जाती है कि वे अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय में दिए गये फैसलों महित मामलों की जानकारी दे सकेंगे।

21. प्रयुक्त यांत्रिकी

निर्माण

छत्तकैची के मन्त्रिमाण में प्रयुक्त सामग्री पर विचार। इस्पात और इमारती लकड़ी। छत्तकैचियों के प्रतिथल का विभिन्न पद्धतियों में निर्धारण। अचल भार और वायु दाव क्षेम और काईकारी प्रतिबल के घटक।

छत्तकैचियों का डिजाइन: विभिन्न प्रकार के छत्तकैचियों और छत्तछाइन कालरबीम और अधगोल कैचियां। स्तम्भों के डिजाइन में यूलर गोरड़न रेकिन फिल्लर जान्सन और सरल रेखा के सूक्तों का उपयोग स्तम्भों का बहुकावकारक विभिन्न सूक्तों में प्राप्त स्तम्भों की तुलनात्मक सामर्थ्य को दर्शाने वाले ब्रेक। कॉटों के अधिकार का चयन। इस्पाती कार्य की परिसज्जा जोड़ एंड-वैरिएंगों का डिजाइन मिरों को जमाने के सहारे देने की पद्धतियां।

संरचनाओं के डिजाइनों में प्रतिकल के वृत्तों और दीर्घवृत्तों तथा क्लेयप्रान प्रमेय का अनुप्रयोग।

ढले लोहे और इस्पात से स्तम्भ: इस्पाती स्तम्भों के साथ लोज और बैव क्लेयप्रान: टोपियां आधार स्तम्भों की तिर्थक तान।

नींव: सुरक्षित दाव स्तम्भों की नींव। पटियां नींव, बाहुधरन नींव, भास्तरीदार नींव। कूप। स्थूण।

पुष्टा दीवार और मिट्टी के दावः : रेकिन सिद्धांत, बेज सिद्धांत, विकार और ठलाई की ग्राफीय रचनाएँ, संशोधनों सहित। चिनाई में विभिन्न प्रकार की पुष्टा दीवारों का डिजाइन।

अंची चिनाई और हस्पाती चिमनियाँ : सिद्धांत और डिजाइन।

हस्पाती और पक्के जलाशयों का डिजाइन : वायु दाव के विचार से।

ढांचेदार संरचनाओं के विकास और अतिरिक्तांगी ढांचों में प्रतिबल आदि का अवधारण।

कैचियों आबू धरणों और तीन पिनी परबलायिक, अर्ध-दीर्घ वृत्ताकार तथा अर्ध वृत्ताकार ढाटों पर समान रूप से वित्तन और अतिरिक्त भार के बकन धूर्णन और कर्तन के प्रभाव-आरेख।

गुम्बद डिजाइन के सामान्य सिद्धांत।

निर्माण, डिजाइन के सिद्धांत, निर्माणों पर भार का विचार हस्पात, कर्म गर्डर आदि।

पुल

ऊपरी ढांचे का डिजाइन। चरमारों और वायु दावों के कारण द्वारा बदलने का ग्राफीय और वैश्लेषिक पद्धतियों से निर्धारण। पक्के पुलों और पुलियों का डिजाइन।

प्लेट ब्रेव गर्डर। प्रतिबलों का विश्लेषण।

बारेन और जालदार गर्डर।

तीन पिनी डाट दो पिनी और दृढ़ डाट।

जूना, बाहुधारन और नलिकाकार पुलों के डिजाइन पर सामान्य विचार हस्पाती डाटदार पुल।

सूलना पुल।

प्रबलित कंक्रीट

कर्तन, बंध और विकर्ण तनाव, इसका स्वरूप, प्रबलन का मूल्यांकन और स्थान।

मरत और दोहरी प्रबलित धरन और अनुकालंब धरन का डिजाइन।

प्रबलित कंक्रीट स्तम्भों और स्थुनाओं का सिद्धांत और डिजाइन।

पटियाँ निवों का डिजाइन।

मरत बाहुधरन और पुलेदार धारक दीवारों का डिजाइन। प्रबलित कंक्रीट कारों के लिए तुल्य जड़ता-धर्ण।

प्रत्यास्थ विभाग का सिद्धांत और प्रबलित कंक्रीट डाटों में प्रतिबलों के अन्वेषण की रूप-रेखा।

सामान्य

प्रतिबल विश्लेषण, विकृति प्रत्यास्थता सीमा और चरम मामर्थ्य का विश्लेषण। प्रत्यास्थ स्थिरगकों में परम्पर मंबंध। किसी संरक्षन अवयव में कार्यकारी प्रतिबलों के लिए लानहार्ट-बेरोध सूत्र और उनके अनुप्रस्थ काट के थेत्र का अवधारण। प्रतिबलों

पुनरावृत्ति। अचल मरों के लिए बंकन धूर्णन और कर्तन-बल के आरेख ढांचों में प्रतिबलों का ग्राफीय अवधारण वायुदाब के प्रभाव, कांटों की पद्धति। बंकन (M/I-F/Y-E/R) के कारण धरन की अनुप्रस्थ काट में प्रतिबल, मिश्रित और संयुक्त प्रतिबल। मिट्टी के दाब का रैकीत सिद्धांत, नीबों को गहराई खस्तों की सामर्थ्य संभरीदार नीब, मिट्टी के दाब का कूलाम सिद्धांत रेबान के कारण परिवर्तन।

चलमारों के लिये बंकन धूर्णन कर्तन बल के आरेख। समान और समान रूप से बदलते हुए प्रतिबल का विश्लेषण धरनों के बंकन का प्रत्यास्थता-सिद्धांत धरनों में बंकन और कर्तन प्रतिबल, काट का मांपांक और सुल्य ध्रेत्र। उत्केंद्र भारता के कारण जोड़ में अधिकतम और अन्यतम प्रतिबल। बांधों और चिमनियों में प्रतिबल: ब्लाक की स्थिरता, कार्य संरचनाये। वाष्पित्र खोलों में प्रतिबलों और रिवेटदार जोड़ों का डिजाइन: थाम के संबंध में आयलर का सिद्धांत, रेकिन, गार्डर और अन्य सिद्धांत के कारण परिवर्तन ऐंठन, संयुक्त एठन और बंकन विशेष। आबू धरने, अनेकालंब धरने और त्रिपूर्ण प्रमेय। ढाटों का प्रत्यास्थता-सिद्धांत, पक्की डाटे।

22. समाज शाल

समाज-शास्त्र का स्वरूप तथा विषय क्षेत्र और अन्य सामाजिक विज्ञानों के साथ उसका संबंध, समाज, उसका स्वरूप तथा गठन; व्यक्ति और समाज, सामाजिक अन्योन्यक्रिया; समूह; समूह-व्यवहार; संस्कृति; संस्कृति और व्यवित्तव; मीड़ व्यवहार; नेतृत्व; समाजीकरण; सामाजिक परिवर्तन और आयोजन; सगरीकरण तथा नगरवाद; ग्रामीण समुदाय; सामाजिक परिवर्तन के सिद्धांत; संस्था और समितियाँ-परिवार और भगोत्तरा; सामाजिक स्तरीकरण-जाति और वर्ग; सामाजिक मान्यतापर्योग-परंपराये, रुदियों और लोकचार; सामाजिक धर्म नियंत्रण; सामाजिक विगत; समाज और समंजन; मानवीय परिस्थित शास्त्र और जनसंख्या—जनसंख्या की वृद्धि और जनसंख्या नियंत्रण।

उभीदवारों से यह अपेक्षा की जायेगी कि वे तथ्यों द्वारा सिद्धांतों का निरूपण करें तथा सिद्धांतों की सहायता से समस्याओं का विश्लेषण करें। उनसे भारतीय समस्याओं का विशेष जानकारी उपेक्षित होगी।

भाग—ग

परिशिष्ट के भाग II के उप भाग (ग) के अनुसार

1. (क) उच्चतर विषय गणित:—

इसमें ये विषय शामिल होंगे।

- (1) आधुनिक वीजगणित तथा स्थचन विज्ञान।
- (2) वास्तविक चरों के फलनों का विश्लेषण।
- (3) सम्मिश्र चरों के फलन।
- (4) ज्यामिति तथा
- (5) अब्कल समीकरण।

(1) आधुनिक वीजगणित—समूहों, जगमसूहों, प्रसामान्य उपसमूहों। खंड समूहों? समरूपता तथा एक समाकारिता। एकैक समाकारिता परमेय। क्रमय समूहों। रूपांतरण समूहों।

स्वसमाकृतिकता के समूहों। आंतरिक स्वसमाकृतिकता। प्रासाद-पूर्णकर्त्ता, केन्द्र तथा दिक् परिवर्तक। केले और सोलों के प्रमेय। परिमितीय जनक आवेली प्रुपों के लिये विधान प्रमेय। निष्वर्गों। प्रसामान्य थेणी, संयोजक थेणी, जार्डन—होल्डर प्रमेय। रिंग पूर्णकाय डोमेन। विभाजन रिंग। क्षेत्रों। आदर्श, प्रधाद, प्रारंभिक तथा भैविसमल आदर्श, आदर्श के धनराशि तथा गुणनफल। भागफल रिंग। रिंगों के लिये ऐकक समाकारिता प्रमेय। पणीकीय डोमेन के भागलों का क्षेत्र। यी विलडी डोमेन। मुख्य आदर्श डोमेन। अद्वितीय गुणनखंड मटोमेन। दिक् परिवर्तित रिंग के ऊपर बहुपद रिंग। अद्वितीय गुणनफल डोमेन से बहुपद गणांकों सहित। निवोथस्मिन रिंग। वेक्टर स्थानों। वेक्टर स्थान का आधार विप्रब्र। लांबिकता। आदेशगुणनफल। आर्थनिर्माल आधार।

क्षेत्र विस्तार। विभाजाकील्ड। पृथक् होने योग्य और पृथक् न होने योग्य विस्तार। परिमित विस्तारों का गोलोइस का प्रमेय। करणी द्वारा समीकरणों के हल का अनुप्रयोग। परिमित क्षेत्र।

स्थान वैज्ञानिक स्थान। मानविकों तथा आम-पास, बंद-समच्चय, स्वांतर समच्चय स्थान वैज्ञानक स्थान के लिये आधार उपस्थान, मागफल स्थान। स्थान विज्ञान तथा स्थान विज्ञानों के सामर्थ्य की परिभाषा के विभिन्न तरीके। मैट्रिक स्थान, यविलडी स्थान तथा मैट्रिक स्थानों के अन्य उदाहरण। दो स्थान वैज्ञानिक स्थानों के संयोजकों का तीय गुणनफल, स्थानीय संयोजन। पथ के अनुसार संयोजन। संहित स्थान, संहित स्थानों के गुणनफल, स्थानीय मंहित स्थानों। पार्थव्य-अभिगृहीत। हाइड्रोफ, प्रमाणान्य तथा नियमित स्थान।

(2) वास्तविक चरों के फलनों का विश्लेषण:

वास्तविक संख्याओं का डेकाइंड का प्रमेय। परिवर्धन और भीमायें। अनुकूलों। संतत तथा एक समान संतत। अवकालनीयता अन्पष्ट फलनों। फलनों के अधिकतम और न्यूनतम। रीमन समाचे कलन। भाष्यमान प्रमेयों? अनुचित पूर्णकीयों (रेखां, समतल तथा गणांक पूर्णकीयों)। रेखा समतल तथा गुणांक पूर्णकीय ग्रीन और स्टकों के प्रमेय।

एक समान अभिसारी श्रेणियों के एक समान अभिसरण की श्रेणियों और गुण। अपरिमित गुणनफलों का अभिकरण। समुच्चय के फलनों के आर्थोनामीलटी तथा सम्पूर्णता। फूरिये श्रेणियों तथा फूरिये प्रमेय। बायरस्ट्रोस सशिगणन प्रमेय। लबंस्यु का भाष। प्रबंधित फलनों के मापीय फलन तथा लेबेस्यु पूर्णकीय।

(3) मिश्रितचर के फलन—उस के समतल और रीमन के गोला परसंमिश्र संख्याओं का नलूपण। द्विचरएकथाती रूपांतरणों विश्लेषिक फलनों। कौची का प्रमेय तथा उसका विलोभ। कौची का पूर्णकीय सूत्र। टेलर तथा लारेंट की श्रेणियां। वियोड़-वाइल का प्रमेय। विचित्रतायें। शुन्ध्यों/अवशेषों का प्रमेय तथा पूर्णकीयों के मूल्यों के लिये इस का अनुप्रयोग। बीजगणित का मूल प्रमेय तथा बीजगणित के समीकरणों के मूल। अनुकौण निरूपण। विश्लेषिक संतत। मिटेगलेयर का प्रमेय। वाइरेस्ट्रास का गुणनखंड का प्रमेय। अधिकतम मापांक सिद्धांत। हैडामार्ड का विवृतीय प्रमेय।

(4) उच्चमिति : समतल परिच्छेदों तथा द्विघातियों की जन : रेखायें द्विघातीं पृष्ठ तथा इसका विश्लेषण। संतामि द्विघाती। द्विघाती की पैसिलों का प्रारंभिक प्रमेय। सोला में वर्क/वक्रता तथा ऐठन। फलेट के सूत्र। आवरण। विकास योग्य समतल। विकास-योग्य वक्र से संगुणित, रेखाज पृष्ठ। पृष्ठों की वक्रता। वक्रता की रेखाएं, संयुग्मी रेखायें। उपगमी रेखायें। अलांतरी।

(5) अवकल समीकरण

सामचररथअवध अवकल समीकरण : विकार्ड का अस्तित्व प्रमेय। प्रारंभिक तथा सीमांत प्रतिवर्ध। चरणांकों के साथ रेखाकार अवकल समीकरण। श्रेणियों में समाकलन व्हेसिल तथा लेगेंडर फलन। संपूर्ण तथा युगपत अवकल समीकरण।

आंशिक अवकल समीकरण

आंशिक अवकल समीकरणों की बनावट। आंतिक अवकल समीकरणों के पूर्णकीय के प्रकार। प्रथम क्रम के आंशिक अवकल समीकरण। चारपिट का तरीका। अचर गुणकों के साथ औशिक अवकल समीकरण। मांगे का तरीका। द्वितीय क्रम के औशिक अवकल समीकरणों का वर्गीकरण। आप्लेस समीकरण तथा इसकी सीमांतमान समस्यायें। तरंग समीकरण तथा ऊर्जावालन के समीकरण का हल।

1. (ख) उच्चतर अनुपयुक्त गणित:—

शामिल विषय ये होंगे:—

(1) गति विज्ञान

(2) द्रवगति विज्ञान

(3) प्रत्यास्थना

(4) विच्युत तथा चुम्कत्व

(5) आपेक्षिता का विशेष प्रमेय।

(1) गति-विज्ञान : कण तथा ऊर्जा। भूगतिमान से संबंधित गति। फौकाल्ट का लोलक। जनक निव्रेशांक। होलोनोमिक तथा अहोलोनोमिक प्रणालियां। छोटे-क्षेत्र। यूलर के ज्यामितीय तथा गतिक समीकरण। न्यूनतम कर्मका हैमिलटन का सिद्धांत। हैमिलटन के विहिट समीकरण तथा उनके समाकल निश्चर। संस्पर्श रूपांतरण।

(2) द्रवगति विज्ञान

सामान्य : सांतत्य का समीकरण संवेग तथा ऊर्जा।

इनविसिड प्रवाह प्रमेह : द्विविभगति। प्रवाही गति। स्वेत तथा अभिगम। प्रतिविस्व के तरीके तथा इसके अनुप्रयोग तरल में बेलन तथा गोला की गति। भ्रमिलगति। तरंगे।

विस्कोस प्रवाह प्रमेह :—प्रतिबल तथा विकृति विश्लेषण। नेवियर-स्ट-स्टोकेल समीकरण। भ्रमिलता। अर्जा-क्षय। समानांतर पद्धिकाओं के बीच प्रवाह। नली में होकर प्रवाह। गोला के पार धारी प्रवाह गति। सीमांतस्तर संकल्पना-हित्रिम प्रवाहों के लिए सीमांतस्तर। पृष्ठों के साथ सीमांतस्तर। ममखता हृष। संवर्ग तथा ऊर्जा समाकल। करमत तथा पोहलहौसेन का तरीका।

(3) प्रस्थास्थता: कार्य टेसर। प्रतिबन तथा विशेषण कार्य तथा ऊर्जा। सट वेनेट का सिद्धांत। दंड और पहिकाओं का मीड़ना। एठन।

(4) विद्युत तथा चुम्बकत्व: स्थिर वैद्युत चालक तथा संधारित चालकों की प्रणालियों। परवैद्युत। संकल्पनाओं के तरीके तथा इन के अनुप्रयोग। जालों में विद्युत धाराओं के प्रवाह चुम्बकत्व। चुम्बकत्व वैद्युत। प्रेरण। प्रत्यावर्तीधारायें। मैक्सवल के समीकरण। डोलनी परिपथ।

(5) अपेक्षिकता का विशेष प्रमेय: गलीलियन सिद्धांत। माइकल्सन-मोरलेय प्रयोग। आपेक्षिकता के प्रमेय के सिद्धांत। लोरेंज रूपांतरण तथा इस के परपद। मैक्सवल के समीकरणों में लोरेंज निश्चर। नियति का विद्युत गारंक। द्रव्य तथा ऊर्जा।

2. उच्च भौतिकी

द्रव्य और ध्वनि के सामान्य गुण धर्म:—विरूपणेय पिण्डों की यांत्रिकी। कुंडलिनी कमानी केशिका घटनायें। ध्वनिक मापन पराश्रियकी।

ऊष्मा और ऊष्मागतिकी—ग्राउनी गति। गैसों का अणुगति सिद्धांत। निम्न दाब पर गैसों में मिलने वाली अभिगमन-घटनायें ऊष्मागतिक कार्य और उनके अनुप्रयोग /धनाकृतियों और गैसों की विशिष्ट ऊष्मा। निम्न तापमान लाना और उन्हें मापना। विकिरण और ऊर्जा वितरण का लैक नियम।

प्रकाश विज्ञान:—समाक्ष सममित प्रकाशित तंत्रों का सिद्धांत प्रायोगिक स्पेक्ट्रम-विज्ञान। विद्युत चुम्बकीय सिद्धांत प्रकाश प्रकीर्णन। रामन-प्रभाव। विकर्तन। ध्रुवण।

विद्युत और चुम्बकत्व—गाउस-प्रमेय। विद्युतमापी। चुम्बकीय शैरित्य। स्थायी चुम्बकों का सिद्धांत। वैद्युत राशियों का मापन। प्रत्यावर्ती धारा सिद्धांत। साइक्लोट्रान और उच्च बोल्टटा के उत्पादन की अन्य विधियाँ। बेतार तरंगों का प्रेषण और अभिग्रहण। टेलीविजन।

आधुनिकता भौतिकी—आपेक्षिकता का विशेष सिद्धांत। प्रकाश और द्रव्यों की द्वित प्रकृति। शरीरडिजर समीकरण और माध्यारण भागलों में उसके हल। हाइड्रोजन और हीलियम स्पेक्ट्रा जीमन और स्टार्क प्रभाव। पोली नियम और तर्खों का आवर्ती वर्गीकरण। एक्स किरण और एक्स-किरण स्पेक्ट्रम-विज्ञान। कांप्सटन प्रभाव। धातुओं में चालन। अतिचालकता। तापायनिकी। तापीय आयनन परमाणु नाभिकों के गुणधर्म। द्रव्यमान स्पेक्ट्रम-विज्ञान। मूलकण और उसके गुणधर्म। नाभिकीय अभिक्रियायें। अंतरिक्ष-किरणें। नाभिकीय विद्युत और संलयन।

3. उच्च रसायन

अकार्बनिक रसायन—परमाणु संरचना। रेडियोऐक्टिवता, प्राकृतिक एवं क्रित्रिम। नामिकों का विष्वाड़न तथा संलयन। स्यास्थानिक। रेडियोऐक्टिवसूचक। रेडियोऐक्टिव श्रणियाँ। परायुरेनियम तत्व। तत्वों और उनके मुख्य यौगिकों, विशेषतः, Be, W, TI, V, MO, HF, ZV तथा दुर्लभ मूदा तत्वों और उनके मुख्य यौगिकों, का रसायन।

उपसहस्रयोगिता-यौगिक। अंतरावाशी तथा अतिव्योगमितीय यौगिक। मुक्त मूलक। विश्लेषण की पगत भौतिक-रासायनिक विधियाँ।

कार्बनिक रसायन—अनुवाद तथा हाइड्रोजनबन्ध विरचन सहित कार्बनिक रसायन के सिद्धांत। महत्वपूर्ण कार्बनिक अभिक्रियाओं की क्रियाविधि समतुल्यण सहित विन्यास-रसायन।

विभिन्न कार्बनिक यौगिकों के बगैं, विशेषतः निम्नलिखित वर्गों का रसायन: बहु-शर्कराइड, टर्पीन, प्राकृतिक रंजक द्रव्य एलेक्ट्रोइड, विटामिन, महत्वपूर्ण हामोन, मलेरिया रोबक, बलोरीन कीट-नाशी, मुख्य पतंजीविक, तथा संश्लिष्ट बहुलक।

भौतिक-रसायन—अणु-गतिक सिद्धांत, ऊप्रागति की विज्ञान के तीन नियम तथा भौतिक रसायनिक प्रत्रमों में उनका अनुप्रयोग आणविक संरचना से संबंधित तथा उसका स्पष्टीकरण करने वाले भौतिक-रासायनि गुणधर्म। क्वांटम-मिद्दांत तथा रसायन में इसका अनुप्रयोग।

रासायनिक तथा प्रकाश रासायनिक अभिक्रियाओं की प्रियाविधि तथा बलागतिकी। उत्प्रेरण। अधिलोषण। पृष्ठ-रसायन। कोलायड। विद्युत-रसायन।

4. उच्च वनस्पति शास्त्र

उम्मीदवारों को भारतीय वनस्पति समृद्ध पर विशेष ध्यान देने हुए, वर्तमान और विलुप्त दोनों प्रकार के वनस्पति-जगत् के मुख्य समूहों (अर्थात् शेवाल, कवक, ब्रयोफाइटा, टेरिडो-फाइटा, जिन्मोस्मर्म और एजिओस्मर्म) का उच्च ज्ञान होना चाहिए।

शरीर—प्रादृष्टपकों का उद्भव, स्वरूप और विकास और पारस्पर्यतिक तथा कार्यकीय दृष्टि से उनका वितरण।

पारस्पर्यतिकी—भारत की वनस्पति के मुख्य प्रकार, उनका वितरण और वनस्पति अध्ययन का महत्व।

कार्यकी—पादम कार्य के महत्वपूर्ण कार्यकीय प्रक्रम का उच्च ज्ञान।

पादप रोग विज्ञान:—जीवाणु, कवक, विषाणु द्वारा होने वाले महत्वपूर्ण पादप रोगों तथा आर्थिकी रोगों और उनके नियन्त्रण की विधियों का उच्च ज्ञान।

आर्थिक वनस्पति विज्ञान—भारत के आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण पौधों का अध्ययन और उनका वितरण।

सामान्य जीव विज्ञान:—विभिन्नता, आनुवंशिकता क्रम विकास, कोर्पिका—विज्ञान तथा आनुवंशिकी के भूल तत्वों और आधुनिक विकास एवं पादम प्रजनन के सिद्धांतों का ज्ञान।

5. उच्च प्राणिविज्ञान

आकाउटों और कार्डटों, विशेषकर भारतीय प्राणि समूहों, का वर्गीकरण, जीवपरिस्थिति की, आकारिकी, जीवनवृत्त तथा मंबंध।

अंग-तंत्र का क्रियात्मक आकृतिविज्ञान (रूप, संरचना तथा कार्य)। कशेरुकी भूषणविज्ञान की रूपरेखा।

प्राणियों का वर्गीकरण व्यक्तिवृत्त, अनुकर्णि; समाभिस्थाना तथा विषाभिस्थपना, पशु-परिम्बिति की, प्रवास तथा र्जन।

विकास प्रभाण, बाद और उनकी आधुनिक व्याख्या। अनुकूलन, अतिरिक्त में प्राणियों का वितरण।

कोशिका, कोशिका-विज्ञान, आनुवृशिकी, लिंग-निधारण तथा अर्त सावन्विज्ञान के ज्ञान में नवीन प्रगतिया।

भौतिक, रसायनिक तथा जैविक कारकों के समिश्र के स्पष्ट में वातावरण तथा व्यक्ति, जनस्थान और समुदाय के स्पष्ट में जीवों की आधुनिक सकल्पना।

निम्नलिखित विषयों में से विस्तीर्ण पर निबन्ध प्रोटोजोआ तथा रोग, कीट तथा मानव, परजीवी, विज्ञान, अलबण जल तथा समुद्रों जीव विज्ञान, सरोवर-विज्ञान तथा मत्त्य-जैवविज्ञान, ज्ञान तथा सभ्यता के लिए महान जीव-वैज्ञानिकों का योगदान।

6. उच्चभूविज्ञान

सामान्य भूविज्ञान—भूविज्ञान का इतिहास तथा विकास इसकी विभिन्न शाखाएँ तथा विज्ञान की अन्य शाखाओं से इसका सम्बन्ध। पृथ्वी का उद्भव, विकास, सरचना, रचना, गर्भ तथा आयु। भूआकृति-विज्ञान, रेडियोस्टेटिक्वता तथा भूविज्ञान, भूक्षेप, विज्ञान, ज्वालामुखों-विज्ञान, भू-अभिनियों समस्थनियों में उसका अनुप्रयोग। महाद्वीपों तथा महासागर द्वाणियों का विकास। पृथ्वी गजेन्सियों और ज्वालामुखों की भूवैज्ञानिक क्रिया महाद्वीपीय विस्थापन।

संरचना तथा क्षेत्रभूविज्ञान-पटल विरूपण—शैल विस्तृण, पर्वतों का उद्भव, स्थल-आकृति तथा खनन सम्बन्धी सरचनाएँ। भारत का विवरणिक इतिहास। भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण एवं भूमापन की विधिया।

स्तरिता-शैल-विज्ञान तथा जीवाश्म विज्ञान—स्तरित शैल-विज्ञान के नियम तथा महासम्बन्ध। भारतीय स्तरित शैल विज्ञान का विस्तृत अध्ययन तथा विश्व स्तरित शैल विज्ञान की स्परेंखा विभिन्न कालों में पृथ्वी, समुद्र, प्राणीं समूहों तथा वनस्पति समूहों का विभाजन। जैव-विकास के मिद्दात्त। जीवाश्म—उनका महत्व। प्रतिस्पृष्ठी इन्डेक्स जीवाश्म तथा महासम्बन्ध, भारत विशेष सदर्भ में अक्षेत्रकी का विस्तृत अध्ययन। और भूवैज्ञानिक इतिहास।

फ्रिस्टल विज्ञान तथा खनिज विज्ञान—फ्रिस्टल आकारिक फ्रिस्टल-विज्ञान के नियम, फ्रिस्टल तत्र तथा वर्ग, प्रकृति यमलन फ्रिस्टलों का कोपामाणी तथा एकम-किरण अध्ययन। परमाणु-सरचना। मैल कर तथा आर्थिक खनिजों का भारत में उनके अस्तित्व के विशेष सदर्भ में विस्तृत अध्ययन।

शैल-विज्ञान—आग्नेय अवसादी तथा कायान्तरित शैलों का उद्भव और विकास संरचना खनिज घटक, गठन तथा वर्गीकरण। कायान्तरण सहित शैलजनन। शैल रसायन। उल्का पिण्डों का अध्ययन। मुख्य भारतीय शैल प्रकारे।

आर्थिक भूविज्ञान—प्रयस्क-उत्पत्ति, आर्थिक खनिजों का वर्गीकरण तथा प्रयस्क-स्थान निधारण। भारत के विशेष सदर्भ में आर्थिक खनिज विक्षेपों का भूविज्ञान। खनिज उद्योगों का

स्थान निर्धारण। गुणधर्मों का मूल्याकान खनिज-आर्थिकास्त्र खनिजों का सरक्षण तथा उपयोग। राष्ट्रीय खनिज नीति स्ट्रेटेजिक खनिज भूवैज्ञानिक, भूभौतिकीय तथा भूरासायनिक पूर्वेक्षण तकनीके तथा उनके अनुप्रयोग। खनन प्रतिचयन अमस्कप्रमाण तथा अयस्क मजजीकरण की मुख्य विधिया। भूमि तथा भौम जल। सामान्य इजीनियरिंग समस्याओं से भूविज्ञान का अनुप्रयोग।

7. उच्च भूगोल

पञ्चों के दो भाग होंगे —पहले भाग के अन्तर्गत भारत के विशेष सदर्भ में भौतिक मानव तथा आर्थिक भूगोल का प्रगत अध्ययन होगा।

इस प्रथम भाग में निम्नलिखित विषयों का प्रगत अध्ययन शामिल होगा और उम्मीदवार में आगा की जाती है कि उसे कम-से-कम दो विषयों का ज्ञान होगा —

भूआकृति विज्ञान। जलवायु विज्ञान (सौम्य के पूर्वनिमान विश्लेषण की नई विधियों सहित)। मानचिकित्सा (ममकोणीय गोलीय तिकोण के हल, थियोडोलाइट के उपयोग, नियक विमध्य जल जैसे प्रगत प्रक्षेप, अदि सहित)। गंतिहार्मिक भगोल। गज-नैतिक भगोल। और्गोनिक विचार तथा खोजों का इतिहास।

8. अंग्रेजी साहित्य

प्रश्न पत्र अंग्रेजी साहित्य (1798-1935) के अध्ययन पर आधारित होगा, जिसमें निम्नलिखित रचनाकारों का विशेषाध्ययन अपेक्षित होगा —

वर्द्धस्वर्य कोलरिज, शैलो, कीटम, लैम्ब, जैन और्स्टन, कार्लाटन, गस्किन, थैकरे, गबर्ट ब्राउनिंग, जार्ज इलियट, जी.० एम० हौपकिन्स, शा, डब्ल्यू० वी० वीटम, गाल्वार्डी, जे० एम० सिज, ई० एम० फोस्टर तथा टी० एम० इलियट।

स्वयं पुस्तकों पढ़ने का प्रमाण अपेक्षित होगा।

प्रश्न पत्र इस प्रकार बनाए जायेंगे जिनमें इन अवधियों की प्रमुख साहित्यिक धाराओं का ज्ञान ही नहीं, अपितु उनके आलोचनात्मक मूल्याकान को जाच भी की जा सके। इसमें उम अवधि, की सामाजिक तथा सास्कृतिक पृथ्वभूमि से सम्बन्धित प्रश्न भी शामिल किये जा सकते हैं।

9. (क) भारतीय इतिहास—(चन्द्रगुप्त मौर्य स हर्ष तक)

मौर्य वंश—मामाज्य का अभ्युदय तथा दृष्टीकरण। प्रशासन तथा अर्थव्यवस्था। मामाज्य का पन्तन।

मगध का पत्तन

शृग तथा कण्व वंश—चौल, चेर तथा पाण्ड्य।

पश्चिम से सम्पर्क उत्तर भारत-भारत यूतान।

दक्षिण-भारत-रोमन व्यापार।

मध्य एशिया तथा भारत।

शक वंश। कुशान वंश।

शत्र्वानक वंश।

एशियाई देशों से भारत का सम्पर्क—बौद्ध मन का प्रसार।

गुप्त साम्राज्य

भारतीय शासकीय संस्कृति का निर्माण। भारत के और समूद्रपारीय सम्पर्क। गुप्त वंश का पतन। हृष्ण जाति।

उत्तर भारत बदली हुई अर्थ व्यवस्थाएँ तथा राजनीति पर उनका प्रभाव।

बाकटक तथा चालोक्य वंशों का अभ्युदय।

पल्लवों का अभ्युदय। हर्षवर्धन।

पल्लवों का अभ्युदय। हर्षवर्धन।

हर्षवर्धन

9. (क) भारतीय इतिहास (मुगल साम्राज्य 1526—1707 राजनीति इतिहास—

भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना, इसका दृढ़ीकरण तथा विस्तार। सूर राज्यान्तराव। मुगल साम्राज्य का चरमोत्कर्ष। अकबर, जहांगीर और शाहजहां। मुगलों के फारस तथा मध्य एशिया से सम्बन्ध। प्रशासनिक पद्धति का विकास। मुगल दरबार में यूरोप के लोग, प्रारम्भिक पूर्तगाली, फ्रांसीसी तथा अंग्रेजी बस्तियाँ। पतन का प्रारम्भ। औरंजेब, उनके युद्ध तथा नीतियाँ।

सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक तथा सामाजिक जीवन—

सांस्कृतिक जीवन तथा कला का विकास, वास्तुकला तथा साहित्य।

धार्मिक आनंदोलन: भक्ति आनंदोलन, सूफीयत, दीने-इलाही। मुगल बादशाहों की धार्मिक नीति।

आर्थिक जीवन, कृषि जीवन। भूधारण पद्धतियाँ। उद्योग। बाणिज्य तथा व्यवसाय। आयात तथा निर्यात। परिवहन व्यवस्था। भारत का ऐश्वर्य।

सामाजिक जीवन: दरबारी जीवन, नागरिक जीवन, ग्रामीण जीवन। वेण्टभूपा। रीति-रिवाज, द्वाद्य तथा पैदेय, मनोरंजन तथा मल, स्थौहार, स्त्रियों की सामाजिक स्थिति।

9. (ग) भारतीय इतिहास III '1772 से 1950)

बंगाल तथा दक्षिण भारत में त्रिपुरा सत्ता का दृढ़ीकरण भारत में त्रिपुरा सत्ता का विकास। ईस्ट इण्डिया कम्पनी तथा त्रिपुरा राज्य। सिविल सर्विस, न्याय पद्धति, पुलिस तथा सेना का विकास। नई भूमिकर पद्धति तथा भूधारण पद्धति का विकास। त्रिपुरा व्यवसाय नीति। भारत में त्रिपुरा राज्य का आर्थिक प्रभाव। 1857 का विद्रोह। भारतीय राज्यों के साथ सम्बन्ध विदेश नीति, तथा ब्रह्मा व अक्षगानिस्तान के साथ सम्बन्ध। आधुनिक उद्योग तथा संचार साधनों का विकास। आधुनिक शिक्षा का विकास, प्रेस का विकास।

भारतीय पुनःजागृति:—राजा राम मोहन राय, ब्रह्मसमाज और विद्यासागर, आर्य समाज, धियोसोफिस्ट, रामकृष्ण तथा विकेन्द्रनन्द, सैयद अहमद खां सामाजिक सुधार आधुनिक भारतीय माहित्य का विकास।

भारत के राष्ट्रीय आनंदोलन का अभ्युदय: इण्डियन नेशनल कॉंग्रेस (1885 से 1905) दादाभाई नारोजी, राणाडे, गोखले उग्र राष्ट्रवाद का विकास, विभाजन विरोधी आनंदोलन, स्वदेशी तथा बायकाट आनंदोलन, तिलक व अरबिन्द घोष, होमरूल लीग तथा लखनऊ समझौता।

सांविधानिक विकास—1861 तथा 1862 के अधिनियम, मिन्टो मालै सुधार, मौट कोर्ड सुधार, 1935 का अधिनियम।

महात्मा गांधी का राजनीति में प्रब्रेषण तथा स्वतन्त्रता संग्राम। सत्ता-हस्तान्तरण: त्रिपुरा मिशन, कैबीनेट मिशन, स्वतन्त्रता अधिनियम तथा विभाजन। 1950 का संविधान। स्वतन्त्र भारत: विदेश नीति, तटस्थला, धर्मनियन्त्रण का योजना।

9. (घ) त्रिपुरा संविधान का इतिहास (1601 से 1950 तक)।

ताज बनाम संसदः—

जम्स तथा संसद के बीच सम्बन्ध। अधिकारपात्रिका। चार्ल्स तथा परमाधिकार बनाम सामाज्य कानून। (गृह युद्ध)

संविधान प्रवर्तक—

लांग संसद की सरकार। लिट्रस संसद। प्रोटेक्टोरेट। पुनर्स्थापन। ग्लोरियम रिकॉल्यूशन। बिल आफ एंड्यूस।

ताज, कार्यपालिका तथा संसद।

राजा तथा उसके मंत्री। ताज का प्रभावाधिकार। मन्त्रिमंडल तथा संसद: 1936 का राजतन्त्रीय आपातकाल।

संसद का सुधार

सुधार अधिनियम तथा हाऊस आफ कामन्स। हाऊस आफ कामन्स तथा हाऊस आफ लार्ड्स। हाऊस आफ लार्ड्स का सुधार।

कामनवैल्थ (राष्ट्रमंडल).

कामनवैल्थ का उद्गम तथा विकास। वैभवस्टर का परिनियम। कामनवैल्थ सहयोग का कार्यव्यवयन। कामनवैल्थ में ताज की स्थिति।

9. (क) यूरोपीय इतिहास (1871—1945)

यूरोप का औद्योगिक विकास—राष्ट्रवाद तथा लोक तांत्रिक और समाजवादी आनंदोलन का विकास।

जर्मन साम्राज्य, "तृनीय फ्रांसीसी गणराज्य", हैडमवर्ग, राजवंश राजतंत्री रूप। संधियों और मैत्रियों की नीति।

पूर्व मंवंधी (इस्टर्न) प्रश्न।

साम्राज्यवाद का उत्थान तथा निकट पूर्व, मध्यपूर्व अफ्रीका और सुदूर पूर्व में यूरोप के साम्राज्यवादी हित।

प्रथम विश्वयुद्ध का उद्गम तथा परिणाम।

रूस की क्रान्ति तथा उसके परिणाम।

वर्साइ समझौता, राष्ट्र संघ (लीग आफ नेशंस), विश्व व्यापी नियन्त्रिकरण के प्रयत्न सुरक्षा की खोज, फासिज्म तथा नाजिज्म का उदय और उसके अंतर्राष्ट्रीय परिणाम।

ठितीय विश्व युद्ध।

10. (क) उच्च अर्थशास्त्र

आर्थिक विश्लेषण के क्रत्य।

मूल्य का सिद्धांत। खपत और मांग का सिद्धांत। उत्पादन का संगठन। एकाधिकार का सिद्धांत। एकाधिकार का नियंत्रण।

वितरण का सिद्धांत। किराया। पूँजी का सिद्धांत। घन तथा आधार का सिद्धांत। बचन तथा विनोदोजन। बैंकिंग तथा उधार सम्बन्धी नियम मञ्चदारी तथा नियोजन सम्बन्धी सिद्धांत। समूहिक सोदाबाजी तथा औद्योगिक शान्ति।

राष्ट्रीय आय। आर्थिक प्रगति तथा वितरणात्मक न्याय।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का सिद्धांत। विदेशमुदा। अदागियों का शेष।

व्यापारिक चक्र तथा उनका नियन्त्रण। सरकार का आर्थिक योग। आर्थिक कल्याण। लोक (हित) के सासन मूल्यांकन तथा नियमन।

10. (ब) उच्च भारतीय अर्थशास्त्र

युद्धकालीन तथा योद्धोत्तर अधिधि में आर्थिक विकास प्राकृतिक साधन सामाजिक संस्थाएं। कृषि उत्पादन तथा वितरण। भूमि सुधार। किसी विकासमयी अर्थव्यवस्था में कृषीकरण तथा लघु उद्योगों का स्थान। अधुनिक संगठित उद्योग का विकास। लोक कम्पनियों का नियमन। औद्योगिक सम्बन्ध तथा श्रम (दल) की समस्याएं। समिक्षित अर्थव्यवस्था। सार्वजनिक क्षेत्र का अधिकार, क्षेत्र तथा दक्षता। भारतीय पूँजी तथा प्रनय पद्धति। रिजर्व बैंक का योगदान। जन, संख्या, समस्याएं तथा जनसंख्या सम्बन्धी नीति। बंगोजगारी तथा अपूर्ण रोजगारी। भारतीय राष्ट्रीय आय का निर्धारण। विदेशी व्यापार का नियमन। अदायगियों का शेष भारतीय कागरोपण पद्धति। संघीय वितरण। आर्थिक विकास के लिए योजना। व्रमण योजनाओं का आकार तथा डांचा। योन तथा कार्यान्वयन की समस्याएं।

11. (क) हाइट से लेकर आज तक के राजनीतिक सिद्धांत
ठेका (कान्टेक्ट) तथा प्राकृतिक अधिकारों के सिद्धांत-हाइट्स, लोक, खस्मों। प्रभुता के मन्तव्य का विकास। इतिहासकार-बीको मौन्टेस्क तथा बर्क। उपयोगितावादी। विकासवादी। आदर्शवादी कान्ट, हेगल, ग्रीन, ड्राइले तथा बोसंक वे। रूढिकावाद तथा उदारवाद। मार्क्सवाद तथा समाजवाद व साम्यवाद की धाराएं। बहुलवाद। कासिज्म। मनोविज्ञान का प्रभवि क्षेत्र। पूर्वी देशों में बीसवीं शताब्दी का विवारधाराएं।

11. (ख) राजनीतिक तथा लोक प्रशासन

राजनीतिक संस्थाएं:—आधुनिक राष्ट्रों का विकास संसदीय तथा राष्ट्रपति सहित सरकारें। एक सत्ता तथा मंधीय सरकारें। विधानांग कार्यपालिका तथा न्यायपालिका। प्रतिनिधित्व के प्रचार सम्यवादी तथा एक सत्ताधारी सरकारें।

लोक प्रशासन:—आधुनिक सरकार में लोक प्रशासन। नीति-निर्धारित तथा उच्चतर नियन्त्रण न्यायपालिका तथा कार्यपालिका। संगठन, प्रबन्ध, प्रकार तथा माध्यम। नियामक आयोग तथा लोक नियम। कर्मचारी वर्ग प्रशासन-मिशन मेवा तथा इसकी समस्याएं बजट तथा वित्तीय प्रशासन। प्रशासनिक अधिकार। न्यायालयों द्वारा नियन्त्रण। लोक मेवाएं तथा जनता।

11. (ग) अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध

भाग 1

राष्ट्रीय शक्ति के आधार और सीमाएं।

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में शक्ति सिद्धांत सथा नीतिक का स्थान। अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में अंतर्राष्ट्रीय विधि का स्थान। विदेश नीति के निर्धारण में राष्ट्रीय हित का योग। शक्ति संतुलन का सिद्धांत।

अंतर्राष्ट्रीय संगठनों का स्वरूप और उनके कार्य। संयुक्त राष्ट्र संघ, उद्देश्य, संरचना और कार्य प्रणाली।

भाग 2

प्रथम विश्वयुद्ध के मूल कारण तथा शांति "समझौते" का स्वरूप।

राष्ट्र संघ (लीग ऑफ नेशंज) तथा दोनों युद्धों के बीच के वर्षों में समूहिक सुरक्षा प्रणाली की स्थापना के लिए किए गए प्रयत्न। द्विनीय विश्व युद्ध के मूल कारण।

परमाणु युग तथा परंपरागत अंतर्राष्ट्रीय संबंध पर इसके प्रभाव।

"शीन यूँड़" तथा विश्व राजनीति पर इसके प्रभाव।

नए राष्ट्रों का अध्युदय तथा अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर प्रतिमान में परिवर्तन।

संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत संघ, चीन, भारत तथा निम्नलिखित में से किसी एक देश की विदेश नीति:—

ग्रेट ब्रिटेन, जापान, जर्मनी तथा फ्रांस।

12. (क) उच्च अमूर्त विषय विज्ञान (शासमाल सहित

उम्मीदवारों में यह आशा की जाएगी कि वे कान्ट से लेकर आजतक के प्रमुख दर्शनिकों (नामतः कान्ट, हीगल, ड्राइले, रायस, ओचे, मूर, यसल, जेम्स, शिल्लर, झूरूर्झ, वगमन एलेक्साण्डर, ह्वाईटहैंड, विटगतस्थाईन, अवर हार्मन्डगर तथा फार्मुल।

निम्नलिखित विषयों में से किसी पर भी प्रश्न पूछे जा सकते हैं।

ज्ञान के स्रोत, तत्व, भिन्न-भिन्न रूप। उसकी सीमाएं सापड़ा तथा समाजविज्ञान।

सत्य मिथ्या, मूल।

वास्तविकता के मिद्दांत। वास्तविकता। जीवन और श्री अस्तित्व। एकत्रवाद, द्वैतवाद, बहुलवाद, प्रकृतिवाद, अनीश्वरवाद, ईश्वरवाद, मोक्षवाद और रहस्यवाद। हेगलोत्तर आदर्शवाद। नवीन यथार्थवाद। मौलिकवाद अनुभूतिवाद। उपयोगितावाद।

उपकरणवाद। मानववाद-प्रकृतिवादी और धार्मिक।

नार्किक प्रत्यक्षवाद, अस्तित्ववाद-अनीश्वरवादी और ईश्वरवादी। आगमन की समस्याएं, प्रकृतिक नियम, सार्वेक्षणिक, ईश्वर और अनिश्चयवाद के मन्बन्ध में दर्शन के क्षेत्र में नवीन विचारधाराएं।

12. (ख) उच्च मनोविज्ञान प्रयोगात्मक मनोविज्ञान सहित

मनोविज्ञान की विषय-वस्तु, क्षेत्र और पद्धतियां, अन्य विज्ञानों से इसका सम्बन्ध।

आनुवंशिकता और परिवेश सम्बन्धी विवाद-मानव के विकास पर हन दोनों के सामेक्षिक प्रभाव सम्बन्धी प्रयोगात्मक अध्ययन ।

अभिप्रेरण एवं संवेग की समस्याएँ। कुंठा और विश्रह ; विश्रह के प्रकार। आन्तरिकानन्त्र—अभिभवंजक गतिविधियों से संबंधित अध्ययन; मनोशाश्रानुशिक्षा (P.G.R.) असत्य परिचयन् ।

संवेदना और अनुभूति—मनोवैज्ञानिक पद्धतियाँ, देश-प्रत्यक्ष ज्ञान, शाश्वत, संगठन के कारक ; गत्यात्मक, व्यक्तित्व तथा सामाजिक कारकों का योग ; अंतर्वेयकितक अनुभूति ।

अधिगम, स्मृति, विस्मरण और चित्तन के अध्ययन की प्रायोगिक पद्धतियाँ—अधिगम और सिद्धांत—अर्थ का स्वभाव ।

व्यक्तित्व मनोविज्ञान—निर्धारक तत्व, गुण, किस्म, परिमाप, और सिद्धांत, व्यक्तित्व का मूल्यांकन—व्यक्तित्व के आचरण मूलक माप-क्षम निर्धारण-मान, नाम-निर्देशक तकनीकें प्रणालियाँ तथा तालिकाएँ, अभिवृत्ति-मान, प्रक्षेपीय परीक्षण ।

व्यक्तिगत भेद—प्रज्ञा और अभिवृत्तियों का स्वभाव एवं माप । परीक्षण त्रिव्याम-इकाई विश्लेषण । परीक्षण मान और मात्रक-मापों की विश्वमनीयता और वैधना-कारक विश्लेषण-मिट्ठांत ।

मनोविज्ञान के मत और संहृतियाँ—मनोविज्ञान के परंपरावादी मत और मूल्य समकालीन संहृतियाँ, फायडवादी, नव-फ्रायडवादी नव-आचरणवादी, पूर्णकार (गेरटाल) और प्रयोग-क्षेत्रीय सिद्धांत ।

13. (क) भारती की संविधान विधि

ऐतिहासिक पूष्टभूमि—भारत के संविधान का विकास जिसमें 1861 के इंडियन काउंसिल एकट से 1950 तक के भारतीय संविधान में प्रतिनिधि तथा उत्तरदायी सरकार के विकास का विशेष रूप से प्रश्न हो गे । समान्य तत्व ; कल्याणकारी राज्य का आदर्श भारतीय संविधान का प्राकथन तथा राज्य की नीति के मार्ग दर्शन मिट्ठांत, केन्द्रवर्ती तथा संघात्मक शासन पद्धतियों की मान्यताएँ, मन्त्रिमंडलीय पद्धति, विधिनियम की यथावत पद्धति, न्यायिक पुनरेक्षण, संवैधानिक प्रधारण, भारतीय संविधान के प्रमुख तत्वों का संयुक्तगण राज्य संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा तथा आरटेलिया के संविधानों से तुलना । अधिकारों का विभाजन, अधिकारों के पार्श्वक्य का सिद्धांत ।

विधानांग—

विधावी अधिकार, विधानांग को विशेषाधिकार, विधायी अधिकारों का प्रत्यायोजन ।

(ख) विधिशास्त्र

विधिशास्त्र—परिमावा तथा अंतर, विधिशास्त्र के विभिन्न मतवाद । विधिनियम, विधिनियम तथा आदर्श, विधि नियमों का विकास, प्राकृतिक नियम राज्य के विधिनियम ; विधिनियम की अनुवंशीनीयता का सिद्धांत ; विधिनियम की समाजकावादी सिद्धांत ; विधिनियम के प्रकार ; सिविल विधिनियम ; दण्डविधि-नियम ; स्थायी तथा प्रक्रिया संबंधी विधिनियम व्यक्तिगत विधि-नियम तथा सामाजिक विधिनियम, अंतर्राष्ट्रीय विधिनियम ;

विधिनियम तथा न्याय ; विधिनियम तथा समानता, विधिनियम के अनुसार न्याय ; न्याय-प्रशासन प्रभुत्व के बारे में मान्यताएँ तथा सिद्धांत ।

प्रथा, न्यायिक पूर्व निर्णय, विधान संहिताकरण विधि के तत्व न्यायिक मान्यताओं का विश्लेषण तथा वर्गीकरण ; व्यक्तित्व ; अधिकारी कर्तव्य, स्वतन्त्रता, शक्ति, उन्मुक्ति ; अयोग्यता, स्वर, कठजा, स्वामित्व ; पट्टा, न्यास, सुविधाधिकार मुरक्खा हानि, उत्तरदायित्व, दायित्व ; अधिनियम, नीति, उद्देश्य, लापरवाही ; स्वत्व, चिरमोगधिकार, उत्तराधिकारतया वसीयते । विधिनियम संबंधी मान्यताओं का विकास : संविदा का विकास, जिह्वा, अपराध सम्पन्न तथा वसीयत, न्यायिक विचाराधारा में वर्तमान विचार-धारा ।

14. (क) अरथी साहित्य में प्रतिविम्बित मध्यमुगीम सम्पत्ता (570 ₹० 1650 ₹०)

इस प्रश्नपत्र में उम्मीदवारों के भूगोल, इतिहास और सामाजिक राजनीतिक तथा धार्मिक क्रम-विकास और प्रगति विषयक ज्ञान की जाएगी ।

(ख) फारसी साहित्य में प्रतिविम्बित मध्यमुगीम सम्पत्ता (570 ₹० 1650 ₹०)

इस प्रश्नपत्र में उम्मीदवारों के भूगोल इतिहास और सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक क्रम-विकास और प्रगति विषयक ज्ञान की जाएगी ।

(ग) प्राचीन भारतीय सम्पत्ता और दर्शन शास्त्र

2000 ₹० प्र० से 1200 ₹० तक भारतीय सम्पत्ता, दर्शन और विचार धारा का इतिहास ।

टिप्पणी :—इस प्रश्नपत्र में उम्मीदवारों के भूगोल, इतिहास और सामाजिक राजनीतिक तथा धार्मिक क्रम-विकास और प्रगति विषयक ज्ञान की परीक्षा की जाएगी । ऐसे प्रश्न भी पूछे जा सकते हैं जिन में पुनरायत मन्त्रवन्धी खोजों की जानकारी अपेक्षित हो ।

15. मानव विज्ञान

(क) भौतिक मनव विज्ञान :—डसकी परिभाषा और क्षेत्र । भौतिक मानव-विज्ञान का अन्य विज्ञानों से सम्बन्ध । मानवजाति का क्रम विकास, वानरगणों में मानव का स्थान—उसका पैरेनिथैकस में लगाकर अस्ट्रा लाइथैकस तक प्रीहृष्ट मैत तथा प्रोटोलूमैन जातियों में सम्बन्ध-पैलैआन्ध्रामिक मानव-पिथैरैष्ट्रथोपम । मिनैन्थोपम तथा नीगिंडर्थल । नीन्थोपिक । मानव—कोमैगनन, प्रिमाल्डी तथा चान्मेलेड-होमोपिअन्स ।

मानव में जातिगत अन्तर तथा जातीय वर्गीकरण-शरीर रचना सम्बन्धी, ग्रन्त वर्गीय तथा बानुवंशिक । जातियों के निर्माण में अनुवंशिकता तथा परिवेश का प्रभाव । मानव की उत्पत्ति के सिद्धांत—पैडेनियन नियम जैसे कि वे मानव पर लागू होते हैं ।

मानव का शारीर विज्ञान :—अहार-पोषण, अन्त ; प्रजनन तथा वर्ण-संकरीकरण के प्रभाव पापाण काल से सिध्धाटी सम्पत्ता तथा मध्य और दक्षिण भारत की महापापाण संस्कृतियों तक भारत में मानव के प्रसार का इतिहास । जातीय वर्ग अधौर भारत में उनका वितरण ।

(ख) सामाजिक (सांस्कृतिक) समाज विज्ञानः—धेत्र तथा कर्म। समाज शास्त्र, सामाजिक मनोविज्ञान तथा पुरासत्त्वशास्त्र से सम्बन्ध। सांस्कृतिक, मानवविज्ञान के विभिन्न मत—विकासवादी, ऐतिहासिक, कार्यत्मक और सांस्कृतिक। मानव समाज का गठन तथा विकास।

आर्थिक संगठनः—प्रारम्भिक शिकार, तथा खाद्य-संग्रह की अवस्था, पशु-पालन, कृषि, पर्यावरण, संघर्ष कृषि, औजारों का प्रयोग।

राजनीतिक संगठनः—शल, जनजातियां तथा दुहरा संगठन, जनजाति-परिषदें, मुख्यों के कार्य।

सामाजिक संगठनः—विवाह तथा पारिवारिक रचना के प्रकार, मातृसत्ताक, पितृसत्ताक, बहुपत्नीत्व, बहुपतित्व, बर्हजातीय विवाह तथा संग्रहविवाह, स्त्रियों की स्थिति, उत्तराधिकारी तथा तलाक।

आद्य धर्मः—टोटमधार, निषेध, गर्भाधान के अधिकार, नर-हत्या तथा नर-बलि।

कला, संगीत, लोक नृत्य तथा खेलकूद। दलगत सम्बन्ध, विवाह निर्णय, न्याय तथा दण्ड-सम्बन्धी मान्यताएं।

बौद्धिक विकास का स्तर, विशेष रुचियां और योग्यताएं, आदि मानव के आचरण और प्रान्तपालों के केन्द्रीयतावाद की पृष्ठ-भूमि में भावात्मक आवश्यकताएं।

व्यक्तित्व का निर्माण तथा व्यक्तित्व और आदिम समाज में उसके योगदान का विकास।

आदिम जातियों का संस्कार तथा सम्पर्क का उन पर प्रभाव अस्तियों का उड़ाना और उसके कारण। आर्थिक तथा मनोविज्ञानिक कुण्ठन। अमरीका, अफ्रीका तथा ओशियाना में आदिम जनजातियों का ह्रास। भारतीय जनजातियों में जनसंख्या का ह्रास तथा उसको रोकने के उपाय।

(ग) जातिस्वरूप के आधार पर भारतीय जनजातियों में से किसी एक का गहन अध्ययन

1. भारत की उत्तर-पूर्वी सीमान्त वासी आदिम जनजातियां।
 2. नागा पहाड़ियों—तैवान सांग क्षेत्र की जनजातियां।
 3. आसाम की स्वायत्ता प्राप्त जनजातियां—खासिया, गारो, मिकिर तथा लुशाई।
 4. छोटा नागपुर तथा मध्य भारत की आष्टिक जनजातियां।
 5. दक्षिण भारत की, नीलगिरि पर्वत निवासी जनजातियों सहित, जनजातियां।
 6. अन्दमान तथा निकोबार द्वीप समूह की जनजातियां।
- टिप्पणी—उम्मीदवारों को भाग (ग) तथा (क) अथवा (ख) में से पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देना होगा।

16. उच्च समाजशास्त्र

समाज शास्त्रीय गवेषणा का स्वरूप, समाजशास्त्र और विज्ञान; समाज और व्यक्ति; मानवसमूह—उनकी प्रकृति, प्रकार रचना और कार्य; परिवार और संगोत्तता; संस्कृति और सांस्कृतिक लक्षण; भंस्कृति और व्यक्तित्व; समाज में संस्कृति की भूमिका; सामाजिकरण और सामाजिक विचलन; समाजव्यवस्था; सामाजिक

स्तरीकरण—जाति और वर्ग; संस्थाएं और समितियां; सामाजिक प्रक्रियाएं; सामाजिक नियन्त्रण—लोकमत्त, धर्म, धर्म और नैतिकता, कानून और शिक्षा; सामाजिक परिवर्तन; सामाजिक विकास; संस्कृति-करण; सामाजिक एकीकरण।

भीड़, लोकमत, प्रचार, संपर्क और नेतृत्व।

भारतीय सामाजिक पद्धतियों की सामाजिक संकल्पनाएं; भारतीय सामाजिक चितन का विकास (मनु, बुद्धि और गांधीके विशेष संदर्भ महित)।

सामाजिक सिद्धांतों की नवोन्तम प्रवृत्तियां; रचनामूलक-कार्यमूलक उपागम; ऐतिहासिक उपागम, तुलनात्मक उपागम।

प्रयुक्त समाजशास्त्र—समाजशास्त्र, सामाजिक नीति और सामाजिक आयोजन; सामाजिक जनांकिकी विकासशील समाजों में आर्थिक विकास के सामाजिक पक्ष; सामुदायिक विकास।

सामाजिक अनुसन्धान का रीतिविधान, सामाजिक अनुसन्धान तथा समाज कल्याण।

उम्मीदवारों से अपेक्षा की जाएगी कि वे तथ्यों द्वारा सिद्धांतों का निपुण करें तथा सिद्धांतों की सहायता से समस्याओं का विश्लेषण करें। उनसे भारतीय समस्याओं की विशेष जानकारी अपेक्षित होगी।

खण्ड (घ)

(परिशिष्ट 2 की धारा 1 की उपधारा (ख) के अनुसार)

व्यक्तित्व परीक्षा—एक बोर्ड उम्मीदवार का इंटरव्यू लेगा। इस बोर्ड के सामने उम्मीदवार के कैरियर का बृत्त होगा। उसमें सामान्य रुचि की बातों पर प्रश्न पूछे जाएंगे। यह इंटरव्यू इस उद्देश्य से होगा कि सक्षम और निष्पक्ष प्रेक्षकों का बोर्ड यह जान सके कि जिस सेवा या सेवाओं के लिए उम्मीदवारों ने आवेदन-पत्र दिया है, उसके/उसके लिए वह व्यक्तित्व की दृष्टि से उपयुक्त है या नहीं। यह परीक्षा उम्मीदवार की मानसिक धर्मता को जांचने के अभिप्राय से की जाती है। मोटे तौर पर इस परीक्षा का प्रयोजन वास्तव में न केवल उसके बौद्धिक गुणों का, अपितु उसके सामाजिक लक्षणों और सामाजिक घटनाओं में उसकी रुचि का भी मूल्यांकन करना है। इसमें उम्मीदवार की मानसिक सतर्कता, आलोचनात्मक ग्रहण-शक्ति, स्पष्ट और तर्कसंगत प्रतिपादन करने की शक्ति, सन्तुलित निर्णय की शक्ति, रुचि की विधिता और गहराई, नेतृत्व और सामाजिक संगठन की योग्यता, बौद्धिक और नैतिक ईमानदारी आदि की भी जांच की जाती है।

2. इंटरव्यू में पूरी तरह से प्रति परीक्षा (Cross Examination) की प्रणाली नहीं अपनाई जाती। उसमें स्वाभाविक वातालाप के माध्यम से उम्मीदवार के मानसिक गुणों का उद्घाटन करने का प्रयत्न किया जाता है, परन्तु यह वातालाप एक विशेष दिशा में और एक विशेष प्रयोजन से किया जाता है।

3. व्यक्तित्व परीक्षा उम्मीदवारों के विशेष या सामान्य ज्ञान की जांच करने के प्रयोजन से नहीं की जाती, क्योंकि इसकी जांच तो लिखित प्रश्न पत्रों में पहले ही हो जाती है। उम्मीदवारों से आशा की जाती है कि वे केवल अपने विद्यालय्यन के विशेष विषयों में ही समझ-भूज के साथ रुचि न लें, परन्तु वे उन घटनाओं में भी,

जो उनके चारों और अपने राज्य या देश के भीतर और बाहर घट रही है, तथा अधिकारिक विचारधाराओं में और उन नई खोजों में भी चिले जो कि एक सुणिक्षित युवक में जिज्ञासा उत्पन्न करती है।

परिशिष्ट 3

एम परीक्षा के द्वारा जिन भेवाओं में भर्ती की जा रही है उसका संक्षिप्त व्यौग—

1. भारजा सनिक सेवा—(क) नियुक्तियां परख पर की जाएँगी जिसकी अवधि दो वर्ष की होगी और उसे बढ़ाया भी जा सकेगा। सफल उम्मीदवार को परख की अवधि में, भारत सरकार के नियंत्रण के अनुसार निश्चित स्थान पर और निश्चित रीति से कार्य करना होगा और निश्चित परीक्षाएं पास करनी होंगी।

(ख) यदि सरकार की गय में, किसी परखाधीन अधिकारी का कार्य या आचरण संतोषजनक न हो या उसे देखते हुए उसके कार्य-कुशल होने की संभावना न हो, तो सरकार उसे तत्काल सेवामुक्त कर सकती है।

(ग) परख-अवधि के समाप्त होने पर, सरकार अधिकारी को सेवा के स्थायी कर सकती है या यदि सरकार की गय में उसका कार्य या आचरण संतोषजनक न रहा हो तो सरकार उसे या तो सेवामुक्त कर सकती है या उसकी परख-अवधि को, जितना उचित समझे, बढ़ा सकती है।

(घ) भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी¹ से केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार के अन्तर्गत भारत में या विदेश में किसी भी स्थान पर सेवाएँ ली जा सकती हैं।

(ङ) वेतनमान-

जूनियर—रु 400-400-500-40-700-कु ० रो०-30-1000 (18 वर्ष)।

(i) समय-मान—रु 900 (छठे वर्ष या पहले)—50-1000-60-1600-50-1800 (22 वर्ष)।

(ii) सलेक्शन ग्रेड—1800-100-2000।

इनके अतिरिक्त अधिसमय-मान पद भी होते हैं जिनका वेतन रु 2150 से रु 3500 तक होता है और जिन पर भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों की पदोन्नति हो सकती है।

महांगाई भत्ता समय-समय पर जारी किए गए आदेशों के अनुसार मिलेगा।

परखाधीन अधिकारियों की सेवा जूनियर समय में प्रारम्भ होगी और उन्हें परख पर बताई गई अवधि को समय-मान में वेतन-वृद्धि छुट्टी या पेंशन के लिए गिनते की अनुमति होगी।

(च) भविष्य निधि—भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी, अखिल भारतीय सेवा (भविष्य निधि) नियमावली, 1955 से शामिल होते हैं।

(घ) छुट्टी—भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी अखिल भारतीय सेवा (छुट्टी) नियमावली, 1955 से शामिल होते हैं।

(ज) डाक्टरी परिचर्या—भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों को अखिल भारतीय सेवा (डाक्टरी परिचर्या) नियमावली, 1964 के अन्तर्गत अनुमत्य डाक्टरी परिचर्या की सुविधाएं पाने का हक है।

(म) सेवा निवृत्त लाभ—प्रतियोगिना परीक्षा के अधार पर नियुक्त किए गए भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी, अखिल भारतीय सेवा (मृत्यु व सेवा-निवृत्त लाभ 71) नियमावली, 1958 द्वारा शासित होते हैं।

2. भारतीय विदेश सेवा—(क) नियुक्ति परख पर की जाएँगी जिसकी अवधि आम तौर पर 3 वर्ष में अधिक नहीं होती। सफल उम्मीदवारों को भारत में लगभग 21 मास तक प्रशिक्षण लेना होगा। इसके बाद उन्हें तृतीय सचिव या उप-कोंसुल बनाकर उन भारतीय मिशनों में भेज दिया जाएगा जिनकी भाषाएं उनके लिए अनिवार्य भाषाओं के रूप में नियन्त्रित होती हैं। प्रशिक्षण की अवधि में परखाधीन अधिकारियों को एक या अधिक विभागीय परीक्षाएं पास करनी होती है, इसके बाद ही वे सेवा में पक्के हो सकते हैं।

(ख) सरकार के लिए संतोषजनक रूप से परख-अवधि के गमन्त द्वारा और निर्धारित परीक्षाएं पास करने पर ही परखाधीन अधिकारी को उसकी नियुक्ति पर पक्का किया जाएगा। परन्तु यदि सरकार की राय में उसका कार्य या आचरण संतोषजनक न रहा हो तो सरकार उसे सेवा मुक्त कर सकती है या परख अवधि को, जितना उचित समझे, बढ़ा सकती है या यदि उसका कोई मूल पद हो तो उस पर वापस भेज सकती है।

(ग) यदि सरकार की राय में, किसी परखाधीन अधिकारी का कार्य या आचरण संतोषजनक न हो या उसे देखते हुए उसके विदेश सेवा के लिए उपयुक्त होने की संभावना न हो तो सरकार उसे तत्काल सेवा मुक्त कर सकती है या यदि उसका कोई मूल पद हो तो उस पर वापस भेज सकती है।

(घ) वेतन-मान--

जूनियर—रु 400-400-500-40-700-कु ० रो०-30-10000।

सीनियर—रु 900-(छठे वर्ष या पहले)—50-1000-60-1600-50-1800।

इनके अतिरिक्त अधिसमय-मान पद भी होते हैं जिनका वेतन रु 1800 से रु 3500 तक होता है और जिन पर भारतीय विदेश सेवा के अधिकारियों की पदोन्नति हो सकती है।

(ङ) परख अवधि में परखाधीन अधिकारी को इस प्रकार वेतन मिलेगा :—

पहले वर्ष—रु 400 प्रति मास।

दूसरे वर्ष—रु 400 प्रति मास।

तीसरे वर्ष—रु 500 प्रति मास।

टिप्पणी 1—परखाधीन अधिकारी को परख पर बिनाई गई अवधि, समय-मान, में वेतन वृद्धि, छुट्टी या पेंशन के लिए गिनते की अनुमति होगी।

टिप्पणी 2—परखाधीन अधिकारी की परख-अवधि में वैष्णव वेतन वृद्धि तभी मिलेगी जबकि वह निर्धारित परीक्षाएं (यदि कोई हों) पास कर लेगा और सरकार को मंतोप्रद प्रगति करके दिखाएगा। विभागीय परीक्षाएं पास करके अग्रिम वेतन वृद्धियां भी अर्जित की जा सकती हैं।

टिप्पणी 3—परवीक्षाधीन के तौर पर नियुक्ति से पूर्व सावधि पद के अतिरिक्त भूल रूप से स्थायी पद पर रहने वाले सरकारी कर्मचारी का वेतन एक० आर० 22-बी० (1) के अधीन दिया जाएगा।

(च) भारतीय विदेश सेवा के अधिकारी से भारत में या भारत के बाहर किसी भी स्थान पर सेवाएं की जा सकती हैं।

(छ) विदेश में सेवा करते समय, भारतीय विदेश सेवा के अधिकारियों को उनकी हैसियत (Status) के अनुसार विदेश-भत्ते मिलेंगे जिससे कि वे नौकर-चाकरों और जीवन-निर्वाह के खंडों को पूरा कर सकें और अतिथ्य (एन्टरटेनमेंट) सम्बन्धी अपनी विशेष जिम्मेदारियों को भी निभा सकें। इसके अतिरिक्त, विदेश में सेवा करते समय, भारतीय विदेश सेवा के अधिकारियों को निम्नलिखित रियायतें भी मिलेंगी :—

- (i) हैसियत के अनुसार मुक्त सुरक्षित मकान।
- (ii) सहायता प्राप्त डाक्टरी परिचर्या योजना (Assisted Medical Attendance Scheme) के अन्तर्गत डाक्टरी परिचर्या की सुविधाएं।
- (iii) भारत आने के लिए वापसी हवाई यात्रा का किराया, जो अधिक से अधिक दो बार और विशेष आपाती स्थितियां (emergencies) में ही दिया जाएगा, जैसे—भारत में स्थित किसी निकटतम सम्बन्धी की मृत्यु या सज्ज बीमारी अथवा पुत्री का विवाह।
- (iv) भारत में पढ़ने वाले 8 से 18 वर्ष तक की आयु वाले बच्चों के लिए वर्ष में एक बार वापसी हवाई यात्रा का किराया, ताकि वे लम्बी छुट्टियों में माता-पिता से मिल सकें। परन्तु इस रियायत पर कुछ शर्तें लागू होंगी।
- (v) 5 से 18 वर्ष तक की आयु वाले अधिक से अधिक दो बच्चों के लिए समय-समय पर सरकार द्वारा निर्धारित दरों पर, शिक्षा भत्ता।
- (vi) विदेश में प्रशिक्षण के लिए जाते समय और सेवा में पक्का होने पर मज्जा-भत्ता (Out fit Allowance) अधिकारी के सेवा काल को विभिन्न अवस्थाओं में भी निर्धारित नियमों के अनुसार दिया जाता है। साधारण मज्जा भत्ते के अतिरिक्त, विशेष सज्जा भत्ता भी उन अधिकारियों को दिया जा सकता है जिन्हें असाधारण रूप से कठोर जलवायू वाले देशों में तैनात किया जाए।
- (vii) विदेश में कम से कम दो वर्ष सेवा करने के बाद, अधिकारियों, उनके परिवारों और नौकरों के लिए छुट्टी पर घर जाने का किराया।

(ज) समय-समय पर संशोधित पुनरीक्षित छुट्टी नियमावली, 1933 कुछ तरमीमों के साथ, इस सेवा के सरस्यों पर लागू होगी। विदेश में की गई सेवा के लिए भारतीय विदेश सेवा अधिकारियों को भारतीय विदेश सेवा (PLCA) नियमावली, 1961 के अन्तर्गत अतिरिक्त छुट्टियां मिलेंगी, जो पुनरीक्षित छुट्टी नियमावली के अन्तर्गत मिलने वाले छुट्टी के 50 प्रतिशत तक होंगी।

(क्ष) भविष्य निधि—भारतीय विदेश सेवा के अधिकारी, सामन्य भविष्य निधि/(केन्द्रीय सरकार) नियमावली, 1960 द्वारा शासित होते हैं।

(क्ष) सेवानिवृत्त लाभ—प्रतियोगिता परीक्षा के आधार पर नियुक्त किए गए भारतीय विदेश सेवा के अधिकारी उदारीकृत (Liberalised) वेतन नियमावली, 1950 द्वारा शासित होते हैं।

(ट) भारत में रहने समय, अधिकारियों को वे ही रियायतें मिलेंगी जो उनके समकक्ष या समान हैंसियत (Status) वाले सरकारी कर्मचारियों को मिल सकती हैं।

2. भारतीय पुलिस सेवा—(क) नियुक्ति परख पर की जाएगी जिसकी अवधि दो वर्ष की होगी और उसे बढ़ाया भी जा सकेगा। सफल उम्मीदवारी को परख की अवधि में भारत सरकार के निर्णय के अनुसार निश्चित स्थान पर और निश्चित रीति से कार्य करना होगा और निश्चित परीक्षाएं पास करनी होंगी।

(ख) जैसा कि भारतीय प्रशासनिक सेवा के खण्ड (ख) और (ग) में दिया गया है।

(घ) भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी से केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार के अन्तर्गत, भारत में या विदेश में किसी भी स्थान पर सेवाएं ली जा सकती हैं।

(ङ) वेतन-भत्ता

जूनियर—र० 400-400-450-30-600-35-670-कु० रो०-35-950 (18 वर्ष)।

सीनियर—740 (छठे वर्ष या पहले)-40-1100-50-2-1250-50-1300 (22 वर्ष)।

सलेक्शन ग्रेड—र० 1400।

पुलिस उप महा निरीक्षक—र० 1600-100-2000।

पुलिस कमिशनर, कलकत्ता और बम्बई—र० 1800-100-2000।

पुलिस महा निरीक्षक—र० 2500-125/2—2750।

निदेशक, छुफिया ब्यूरो—र० 3000।

महंगाई भत्ता समय-समय पर जारी किए गये आदेशों के अनुसार मिलेगा।

(च) { (छ) } जैसा कि भारतीय प्रशासनिक सेवा के खण्ड (ज), (छ), (ज) और (झ) में दिया गया है।

4. पुलिस, और अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह पुलिस सेवा, घेणी-2

(क) नियुक्तियों दो वर्ष के लिए परिवीक्षाधीन रहेंगी जो सक्षम प्राधिकारी के निर्णय के अनुसार बढ़ाई भी जा सकती है परख पर नियुक्त उम्मीदवार को केन्द्रीय सरकार द्वारा निर्धारित प्रशिक्षण लेना होगा और विभागीय परीक्षाएं देनी होंगी।

(ख) यदि सरकार की राय में, किसी परखाधीन अधिकारी का कार्य या आचरण संतोषजनक न हो या उसे देखते हुए उसके कार्यकुशल होने की सम्भावना न हो, तो सरकार उसे तत्काल सेवा मुक्त कर सकती है।

(ग) जब वह घोषित कर दिया जाएगा कि अमुक अधिकारी ने संतोषजनक रूप से अपनी परख-अवधि समाप्त कर ली है तो उसे सेवा में पक्का कर दिया जाएगा। यदि सरकार की राय में उसका कार्य या आचरण संतोषजनक न रहा हो तो सरकार उसे या तो सेवा-मुक्त कर सकती है या उसकी परख-अवधि को, जितना उचित समझे, बढ़ा सकती है।

(घ) दिल्ली, अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह पुलिस सेवा के अधिकारी को दिल्ली-प्रशासन, हिमाचल प्रदेश या अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह की सरकार के अन्तर्गत सेवा करनी होगी। उससे भारत सरकार के किसी पुलिस खुफिया विभाग में सेवा भी ली जा सकती है।

(इ) वेतन-मान:-

ग्रेड-I (सलैक्शन ग्रेड) 1000 रु० स्थिर।

ग्रेड-II — समय मान — 350-25-500-30-
590-द० अ०-30-800 रु०।

किसी प्रतियोगिता परीक्षा के परिणामों के आधार पर भरती किये जाने वाले व्यक्ति को सेवा में नियुक्ति पर समय वेतनमान का न्यूनतम वेतन प्राप्त होगा, बार्टेर्ट यदि वह सेवा में नियुक्ति से पहले मूल रूप से सावधिक पद के अतिरिक्त स्थायी पद पर कार्य करता था, सेवा में परिवीक्षा का अवधि में उसका वेतन मूल-नियम 22-ख (1) के परन्तु के अधीन विनियमित विधा जायेगा। सेवा में नियुक्त किए गए अन्य व्यक्तियों के लिए वेतन और वेतन वृद्धियों मूल नियमों के अनुसार विनियमित होंगी।

(च) सेवा के अधिकारियों को परिणीति केन्द्रीय वेतन-मान प्राप्त करने वाले कर्मचारियों पर लागू केन्द्रीय सरकार की दरों पर महंगाई भत्ता प्राप्त करने का हक होगा।

(छ) महंगाई भत्ता और महंगाई वेतन के अतिरिक्त, इस सेवा के अधिकारियों को, प्रतिकर (नगर) भत्ता, मकान किराया भत्ता और पहाड़ी स्थानों तथा सुदूर स्थानों में रहन-सहन के बड़े खर्च को पूरा करने के लिए अन्य भत्ते दिये जाएंगे, यदि उन्हें छूटी पर या प्रशिक्षण के लिए ऐसे स्थानों पर भेजा जायेगा और उन स्थानों के लिये ये भत्ते अनुमत्य होंगे।

(ज) इस सेवा के अधिकारी दिल्ली, अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह पुलिस सेवा नियमावली, 1971 और इस नियमावली को लागू करने के प्रयोजन से केन्द्रीय सरकार द्वारा दी जाने वाली हिदायतें अथवा बनाये जाने वाले अन्य विनियम

लागू होंगे। जो मामले विशिष्ट रूप से उक्त नियमों या विनियमों अथवा उनके अन्तर्गत दिए गए आदेशों या विशेष आदेशों के अन्तर्गत नहीं आते, उनमें ये अधिकारी उस नियमों, विनियमों और आदेशों द्वारा शासित होंगे जो संघ के कार्यों से सम्बन्धित सेवा करने वाले तदनुरूप (Corresponding) अधिकारीयों पर लागू होते हैं।

5. केन्द्रीय सूचना सेवा (ग्रेड II, श्रेणी 1)

(क) केन्द्रीय सूचना सेवा में भारत भर में सूचना तथा प्रसारण मंदिलय के विभिन्न माध्यम संगठनों के पद शामिल हैं। जिनके लिए किसी समाचार पत्र, अथवा समाचार अभिकरण अथवा प्रचार संगठनों में कार्य के अनुभव सहित पत्रकारिता और समाज कार्य के अनुभव सहित पत्रकारिता और समाज व्यवसायिक अर्हताएं अपेक्षित हैं। इस सेवा का गठन 1 मार्च, 1960 से किया गया था।

(ख) इस समय इस सेवा में निम्नलिखित ग्रेड हैं:-

ग्रेड	वेतन मान
श्रेणी-1	
प्रवरण ग्रेड	रु० 2500-125/2-2750
वरिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड	
(वरिष्ठ वेतन मान)	रु० 1800-100-2000
(कनिष्ठ वेतन मान)	रु० 1600-100-1800
कनिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड	
(वरिष्ठ वेतन मान)	रु० 1300-60-1600
(कनिष्ठ वेतन मान)	रु० 1100-50-1400
ग्रेड 1	रु० 700-40-1100- 50/2-1250
ग्रेड 2	रु० 400-400-450- 30-600-35-670- द० रु०-35-950।
श्रेणी-II (राजपत्रित)	
ग्रेड 3	रु० 350-25-500-30- 590-द० रु०-30-800
श्रेणी-II (अराजपत्रित)	
ग्रेड 4	रु० 270-10-290-15- 410-द० रु०-15-485।

(ग) सेवा के निम्नलिखित ग्रेडों में नीचे निर्दिष्ट की गई रिक्तियों की प्रतिशतता के अनुसार सीधी भर्ती की व्यवस्था है:—

कनिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड

(कनिष्ठ वेतन मान)	12-1/2 प्रतिशत
ग्रेड 1	25 प्रतिशत
ग्रेड 2	स्थायी रिक्तियों का 50 प्रतिशत।
ग्रेड 4	शत प्रतिशत

विभागीय पदोन्नति समिति की सिफारिशों पर प्रबरण के अधिकार पर ग्रेड 3 की रिक्तियां पदोन्नति द्वारा ग्रेड 4 के अधिकारियों में से भरी जाती हैं।

ग्रेड 2 की 50 प्रतिशत स्थायी तथा सभी अस्थायी रिक्तियां, ग्रेड 1 की 75 प्रतिशत रिक्तियां और कनिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड (कनिष्ठ वेतन मान) की 82-1/2 प्रतिशत रिक्तियां उनसे निम्न प्रेडों के ड्यूटी पदों पर नियुक्त अधिकारियों में से प्रबरण द्वारा पदोन्नति से भरी जाती हैं।

प्रबरण ग्रेड, वरिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड (वरिष्ठ वेतन मान) और बरिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड (कनिष्ठ वेतन मान) और कनिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड (वरिष्ठ वेतन मान) में रिक्तियां सम्बद्ध ग्रेड में उससे निम्न प्रेड के ड्यूटी पदों पर नियुक्त अधिकारियों में से प्रबरण द्वारा भरी जाती हैं परन्तु कोई उपयुक्त अधिकारी एसी पदोन्नति के लिए उपलब्ध न होने की स्थिति में प्रबरण ग्रेड और वरिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड में एसी रिक्तियों के लिए भर्ती संघ लोक सेवा आयोग के परामर्श से की जायेगी। कनिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड (वरिष्ठ वेतन मान) की रिक्तियां उस ग्रेड के कनिष्ठ वेतनमान वाले ड्यूटी पदों पर नियुक्त अधिकारियों में से वरिष्ठता सहृदयता के आधार पर पदोन्नति द्वारा भरी जायेगी।

सरकार, किसी ग्रेड में उस ग्रेड की पद संख्या के 10 प्रतिशत में अनधिक पदों पर संघ लोक सेवा आयोग के परामर्श से राज्य प्रचार संगठनों के अधिकारियों की प्रतिनियुक्ति पर नियुक्ति द्वारा 5 वर्ष से अनधिक अवधि के लिए, सरकार द्वारा निर्दिष्ट किया गया हो, भार सकती है। इस प्रकार भरे गए पदों को पदोन्नति द्वारा अथवा सीधे भर्ती द्वारा भरे जाने वाले पदों की संख्या निर्धारित करते समय ध्यान में रखा जाता है।

(घ) ग्रेड 2 में सीधे भर्ती हुए अधिकारी दो वर्ष के लिए परिवीक्षा पर रहेंगे। परिवीक्षा के दौरान उन्हें भारतीय सामूहिक संचार संस्थान, किसी समाचार पत्र में अथवा समाचार अभिकरण में और सूचना तथा प्रसारण मंत्रालय के विभिन्न माध्यम यूनिटों में और राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी में प्रशिक्षण दिया जायगा। प्रशिक्षण की कुल अवधि लगभग 15 मास होगी। प्रशिक्षण की अवधि और स्वरूप में सरकार द्वारा परिवर्तन किया जा सकेगा। प्रशिक्षण के दौरान उन्हें राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी में ली जाने वाले पाठ्यक्रम-समाप्ति परीक्षा तथा भारतीय सामूहिक संचार संस्थान की पहली तथा दूसरी विभागीय परीक्षाएं पास करनी होंगी जिसमें एक भाषा परीक्षा भी जामिल होगी। प्रशिक्षण की अवधि के दौरान विभागीय परीक्षा में पास न होने पर उम्मीदवार को नौकरी से अलग किया जा सकता है। अथवा उसे उस मौलिक पद पर, यदि कोई हो, जिस पर उसका धारणाधिकार हो, प्रत्यावर्तित किया जा सकता है।

(II) परिवीक्षा की अवधि समाप्त होने पर सरकार सीधे मार्फी किये गये अधिकारियों को जागू नियमों के अनुसार उनकी नियुक्तियों पर स्थायी कर सकती। यदि किसी परिवीक्षाधीन अधिकारी का कार्य अथवा आचरण असंतोषजनक है तो उसे नौकरी से अलग किया जा सकता है अथवा उसकी परिवीक्षा की अवधि

को उतना बढ़ाया जा सकता है जितना सरकार उचित समझती है। यदि उसका कार्य अथवा आचरण ऐसा है कि उससे यह प्रकट हो कि उसके उस सेवा के ग्रेड 2 का कुशल अधिकारी बनने की संभावना नहीं है तो उसे उसी समय नौकरी से अलग किया जा सकता।

(III) परिवीक्षाधीन अधिकारियों का वेतन ग्रेड 2 के समय वेतन मान के न्यूनतम से शुरू होगा। पहली विभागीय परीक्षा पास करने पर परिवीक्षाधीन अधिकारी का वेतन, केन्द्रीय सूचना सेवा के ग्रेड 2 के वेतन मान में बढ़ाकर 450 रु. कर दिया जायेगा। दूसरी विभागीय परीक्षा पास करने पर वेतन 480 रु. की स्टेज के आगे वेतन तब तक अनुमत नहीं होगा जब तक कि उन्होंने 4 वर्ष की सेवा पूरी न करली हो, यह ऐसी अन्य शर्तों के अधीन होगा जो आवश्यक प्रतीत होंगी। ऐसे मामलों में जहाँ कोई परिवीक्षाधीन अधिकारी भारतीय प्रशासन अकादमी, मंसूरी में “पाठ्यक्रम-समाप्ति परीक्षा” पास नहीं करता तो उसकी पहली वेतन बृद्धि उसे पाने की तारीख से एक वर्ष तक के लिए अथवा विभागीय विनियमों के अधीन उस तारीख तक, जब दूसरी वेतन बृद्धि उपार्जित हो, दोनों में से जो भी पूर्ववर्ती हो, स्थगित कर दी जायेगी।

(IV) ऐसे सरकारी कर्मचारी का, जो परिवीक्षाधीन अधिकारी के रूप में उसकी नियुक्ति से पूर्व मौलिक कार्यकालिक पद को छोड़कर किसी स्थायी पद पर नियुक्त हो, वेतन एफ० आर० 22-बी० (I) के उपबन्धों के अधीन विनियमित होगा।

(ङ) सरकार सेवाके किसी सदस्य से निर्दिष्ट अवधि के लिए संघ गज्य क्षेत्र के प्रकार संगठन के किसी पद पर कार्य करने की अपेक्षा कर सकेगी।

(च) सरकार किसी अधिकार को सूचना तथा प्रसारण मंत्रालय के अधीन किसी संगठन क्षेत्रीय पद पर काम करने के लिए पदस्थ कर सकती है।

(छ) जहाँ तक छहूं, पैण्ड और सेवा की अन्य शर्तों का संबंध है, केन्द्रीय सूचना सेवा के अधिकारियों को श्रेणी 1 तथा श्रेणी 2 के अन्य अधिकारियों के समान माना जायेगा।

6. भारतीय लेखा परीक्षा और लेखा सेवा

7. भारतीय सीमा शुल्क कर केन्द्रीय उत्तापन शुल्क सेवा

8. भारतीय रक्षा लेखा सेवा

(क) नियुक्ति परख पर की जायेगी जिसकी अवधि 2 वर्ष की होगी। परन्तु यह अवधि बढ़ाई भी जा सकती है यदि परिवाधीन अधिकारी ने निर्धारित विभागीय परीक्षाएं पास करके, अपने को पक्का किये जाने (confirmation) के योग सिद्ध न किया हो। यदि कोई अधिकारी तीन वर्ष की अवधि में विभागीय परीक्षाएं पास करने में लगातार असफल होता रहा तो उसकी नियुक्ति खत्म कर दी जायेगी।

(ख) यदि यथास्थिति, सरकार या नियंत्रक और महालेखा परीक्षक की राग में, परिवाधीन अधिकारी का कार्य या आचरण संतोषजनक हो या उसे देखते हुए उसके कार्यकुशल होने की सम्भावना न हो तो सरकार उसे तत्काल सेवामुक्त कर सकती है।

(ग) परख-अवधि के समाप्त होने पर, यथास्थिति, सरकार, या नियंत्रक और महालेखा परीक्षक अधिकारी को उसकी नियुक्ति पर पक्का कर सकती है/सकता है या यदि यथास्थिति, सरकार या नियंत्रक और महालेखा परीक्षक की राय में उसका कार्य या आचरण असंतोषजनक रहा हो तो उसे या तो सेवा से मुक्त कर सकती/सकता है या उसकी परख-अवधि को, जितना उचित समझे, बढ़ा लकती/सकता है, परन्तु अस्थायी रूप से खाली जगहों पर की गई नियुक्तियों के संबंध में, पक्का करने का दावा नहीं किया जा सकेगा।

(घ) लेखा परीक्षा के लेखा सेवा में अलग किए जाने की संभावना को ध्यान में रखते हुए, भारतीय लेखा परीक्षा और लेखा सेवा में पर्यावरत हो सकते हैं और कोई उम्मीदवार जो इस सेवा के लिये चुना जाये इस परिवर्तन से होने वाले परिणाम के आधार पर कोई दावा नहीं करेगा और उस अलग किये गये केन्द्रीय और राज्य सरकार और नियंत्रक और महालेखा परीक्षक के अन्तर्गत सांविधिक लेखा परीक्षा कार्यालय में काम करता पड़ेगा और केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों के अन्तर्गत अलग किए गए लेखा कार्यालयों के संबंध के अंतिम रूप में रहना पड़ेगा।

(ङ) भारतीय रक्षा लेखा सेवा के अधिकारियों से भारत में कहीं भी सेवा ली जा सकती है और उन्हें धोके-सेवा फील्ड-सर्विस पर भारत में या भारत के बाहर भी भेजा जा सकता है।

(च) वेतन-मान—

भारतीय सेक्षां परीक्षां और सेक्षा सेवा—

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा का समय-मान—
रु 400—400—450—30—510—कु रु 0—700
—40—1100—50—2—1250।

जूनियर प्रशासनिक ग्रेड—रु 1300—60—1600।
महालेखापाल—रु 1800—100—2000—125—
2250।

अपर उप नियंत्रक और महालेखा परीक्षक का ग्रेड—
2,500—125/2—2,750 रुपये।

भारतीय उग नियंत्रक तथा महालेखा परीक्षक—
3000/- रुपये।

नोट 1—परखाधीन अधिकारियों की सेवा, भारतीय लेखा परीक्षा और लेखा सेवा के समय-मान में कम-से-कम वेतन में प्रारम्भ होगी और वेतन-वृद्धि के प्रयोजन में, उसकी सेवा कार्यग्रहण की तारीख से गिनी जायेगी।

नोट 2—परम्पारिन अधिकारियों को 400 रु. ग्रे अपर का वेतन तक नहीं भिन्नेगा जब तक कि वे समय-मान में पर विद्वित नियमों के अनुसार विभागीय परीक्षाएं पास नहीं कर लेंगे।

नोट 3—परखाधीन अधिकारियों की सेवा, ग्रेड II के समय-मान में कम-से-कम वेतन में प्रारम्भ होगी। यदि कोई परखाधीन अधिकारी राष्ट्रीय प्रशासनिक एकादमी मसूरी की पाठ्यत्रमात्र परीक्षा पास नहीं करता तो उसकी रु 450 तक ले जाने वाली वेतन-वृद्धि एक साल के लिए, उसकी वेतन-वृद्धि की तारीख स्थिरित कर दी जाएगी अथवा विभागीय नियमों के अनुसार उसकी दूसरी-वेतन-वृद्धि जब पड़ने वाली हो और उन दोनों में से जो पहले पड़े तब वह वेतन-वृद्धि स्थिरित रहेगी।

नोट 4—जो सरकारी कर्मचारी परिवीक्षा के आधार पर नियुक्ति से पूर्ब, मौलिक आधार पर साधारित पद के अन्तिरिक्ष किसी स्थायी पद पर नियुक्त था उसका वेतन मूल नियम 32-ख(1) की व्यवस्थाओं के अधीन विनियमित होगा।

भारतीय सीमा-गुल्क और केन्द्रीय-उत्पादन गुल्क सेवा

अधीक्षक, केन्द्रीय उत्पादन गुल्क	रु 400—400—450—30— कलाम 1, सहायक कलकटर,	510—द० रु 0—700— भारतीय उत्पादन गुल्क, महायक	40—1100—50/2 कलकटर, सीमा-गुल्क।
			1250।

डिप्टी कलकटर, सीमा-गुल्क, डिप्टी	रु 1300—60—1600। कलकटर, केन्द्रीय उत्पादन गुल्क, अन्तिरिक्ष, कलकटर अपिलेट कलकटर।
----------------------------------	---

कलकटर, सीमा-गुल्क कलकटर,	रु 1800—100—2000— केन्द्रीय उत्पादन-शुल्क
	125—2250।

(क) नियुक्तियों 2 वर्ष के लिए परिवीक्षा के आधार पर की जाएगी, किन्तु यदि परिवीक्षाधीन अधिकारी निर्धारित विभागीय परीक्षाएं उत्तीर्ण कर के स्थायी-करण का हकदार नहीं हो जाता तो उक्त अवधि को बढ़ावा भी जा सकती है। नीन वर्ष की अवधि में विभागीय प्रतियोगिताओं को उत्तीर्ण न कर लेने पर नियुक्ति रद्द भी की जा सकती है।

(ख) यदि सरकार की राय में किसी परिवीक्षाधीन अधिकारी का कार्य अथवा आचरण संतोषजनक नहीं है अथवा उसके सक्षम अधिकारी बनने की संभावना नहीं है तो सरकार उसे तुरन्त गेवा मुक्त कर सकती है।

(ग) परिवीक्षाधीन अधिकारी का परिवीक्षाकाल पूर्ण होने पर सरकार उसकी नियुक्ति को स्थायी कर सकती है अथवा यदि सरकार की राय में उसका कार्य या आचरण संतोषजनक नहीं रहा है तो सरकार या तो उसे सेवा युक्त कर सकती है अथवा उसके परिवीक्षाकाल में आगे उल्लंगण दृष्टि कर सकती है किन्तु अस्थायी प्रिक्षियों पर नियुक्ति किये जाने पर व्यापारी-करण सम्बन्धी उसका कोई दावा नहीं स्वीकार किया जाएगा।

(घ) भारतीय सीमांशुल्क तथा उत्पादन शुल्क सेवा, क्लास I के अधिकारी की भारत के किसी भी भाग में गेहूं करनी होगी तथा भारत में ही 'फील्ड मार्टिंग' भी करनी होगी।

नोट 1—एक परिवीक्षाधीन अधिकारी को प्रारम्भ में ₹० 400—400—450—30—510—द० ₹०—700—40 1100—50/2—1250 के समय बेतन में न्यूनतम बेतन मिलेगा तथा वार्षिक वृद्धि के लिए अपने सेवानाम को बढ़ कार्यभार प्रदूष नहीं की तारीख से भानेगा।

नोट 2—परिवीक्षाधीन अधिकारी को समय-बेतनमास में ₹० 400 से अधिक बेतन तब तक नहीं दिया जायेगा जब तक कि वह समय-समय पर निर्धारित किये जाने वाले नियमों के अनुसार निर्धारित विभागीय परीक्षाएं उत्तीर्ण नहीं कर लेना/नितै।

नोट 3—जो सरकारी कर्मचारी परीक्षा के आधार पर भारतीय सीमांशुल्क तथा केन्द्रीय उत्पादन कर सेवा श्रेणी 1 में नियुक्ति से पूर्व, मौलिक आधार पर सार्वाधिक पद के अतिरिक्त स्थायी पद पर नियुक्त था उसका बेतन मूल नियम 22-ब्ब (1) की व्यवस्थाओं के अधीन विनियमित होगा।

नोट 4—परीक्षा की अवधि में अधिकारी को विभागीय प्रशिक्षण के लिए केन्द्रीय उत्पादन शुल्क विभाग सीमा शुल्क विभाग मादक पदार्थ (नारकोटिक्स) विभाग में तथा बुनियादी पाठ्यक्रम प्रशिक्षण (फांडे-डेशलन कोस्ट ट्रेनिंग) के लिए राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी मसूरी में नियुक्त किया जाएगा। मसूरी में प्रशिक्षण समाप्त कर लेने पर उसे “पाठ्यक्रम संपूर्ति परीक्षा” उत्तीर्ण करनी होगी। उसे विभागीय परीक्षा के खण्ड I और खण्ड II में भी सफलता प्राप्त करनी होगी। पाठ्यक्रम संपूर्ति परीक्षा और विभागीय परीक्षा के किसी एक खण्ड में उत्तीर्ण हो जाने के बावजूद, उसका बेतन पहली अग्रिम बेतन-वृद्धि देकर ₹० 450 कर दिया जायेगा। विभागीय परीक्षा के दोनों खण्डों में उत्तीर्ण हो जाने पर उसका बेतन दूसरी अग्रिम बेतन-वृद्धि देकर ₹० 480 बार दिया जायेगा। बेतन में ₹० 480 से अधिक वृद्धि तब तक नहीं की जाएगी जब तक कि वह अपनी सेवा के चार वर्ष पूरे नहीं कर लेता अथवा अन्य आवश्यक समझी जानेवाली शर्तों को पूरा नहीं कर लेता।

यदि कोई परिवीक्षाधीन अधिकारी “पाठ्यक्रम संपूर्ति परीक्षा” उत्तीर्ण नहीं करता तो उसके प्रथम अग्रिम बेतन वृद्धि को, जिस तारीख से वह मिली होती उसके एक वर्ष के लिए अथवा विभागीय विनियमों के अधीन दूसरी अग्रिम बेतन-वृद्धि अंजिन होने की तारीख तक, दोनों में से जो भी पहले हो, गोपनीय दिया जायेगा।

नोट 5—परिवीक्षाधीन अधिकारियों को वह अच्छी तरह नेमज नेनी नाहिं फि उनकी नियुक्ति भारतीय सीमांशुल्क मध्य केन्द्रीय उत्पादन शुल्क सेवा क्लास I के गठन में समय-समय पर भारत गणराज द्वारा आवश्यक गमन कर किए जाने वाले प्रयोक्ता परिवर्तन के अदीन होगी और इस प्रकार के परिवर्तनों के प्रलस्वरूप उन्हें किसी प्रकार का मुआवजा नहीं दिया जाएगा।

भारतीय रक्षा सेवा रोप्ता

समय-मान—

₹० 400—400—450—480—कु० ₹०—700—40

1100—1100—1150—1150—1200—1250।

जूनियर प्रशासनिक ग्रेड—

₹० 1300—60—1600।

₹० 1600—100—1800 (सलेक्शन ग्रेड)।

सौनियर प्रशासनिक ग्रेड ₹० 2750 (नियत)

₹० 1800—100—2000—125—2250।

रक्षा सेवा महानियंदक ₹० 2750 (नियत)

नोट 1—परखाधीन अधिकारियों की सेवा, समय-मान में कम-से-कम बेतन से प्रारम्भ होगी और बेतन-वृद्धि के प्रयोजन से, उनकी कार्यग्रहण की तारीख से गिनी जायेगी।

जो सरकारी कर्मचारी परीक्षा के आधार पर नियुक्ति से पूर्व मौलिक आधार पर सार्वाधिक पद के अतिरिक्त किसी स्थायी पद पर नियुक्त था उसका बेतन मूल नियम 22-ब्ब (1) की व्यवस्थाओं के अधीन विनियमित होगी।

नोट 2—परखाधीन अधिकारियों को ₹० 400 से ऊपर का बेतन नब तक नहीं मिलेगा, जब तक कि समय-समय पर लागू होने वाले नियमों के अनुसार विभागीय परीक्षा पास नहीं कर लेंगे; इसके अलावा यदि कोई भी अधिकारी जो राष्ट्रीय प्रणालीनिक एकादमी, मसूरी की पाठ्यक्रमान्त परीक्षा नहीं पास करता उसकी पहली बेतन-वृद्धि जो उसे विभागीय परीक्षा का खण्ड पास कर लेने पर प्राप्त होती उसकी तिथि एक वर्ष के लिए स्थगित कर दी जाएगी अथवा खण्ड-II पास कर लेने के बाद जो उसे दूसरी बेतन-वृद्धि मिलती और इन दोनों में से जो भी अवधि पहले पड़े तब तक स्थगित रहेगी।

9. भारतीय आयकर सेवा, श्रेणी 1

(क) नियुक्ति परख पर की जाएगी जिसकी अवधि 2 वर्ष वही होगी। परन्तु यह अवधि बढ़ाई भी जा सकती है, यदि परखाधीन अधिकारी, निर्धारित विभागीय परीक्षाएं पास करके अपने आपको पक्का किए जाने (Confirmation) के मोम्प सिद्ध न कर सके। यदि कोई

अधिकारी तीन वर्ष की अवधि में विभागीय परीक्षाएं पास करने में लगातार असफल होता रहा तो उसकी नियुक्ति ख़न्म कर दी जाएगी।

(क्र) यदि सरकार की राय में, परखाधीन अधिकारी का कार्य या आचरण असन्तोषजनक हो गा उसे देखते हुए उसके कार्य कुशल होने की संभावना न हो तो सरकार उसे तकाल सेवा मुक्त कर सकती है।

(ग) गरम-अवधि के समाप्त होने पर, सरकार अधिकारी को उसकी नियुक्ति पर पक्का कर सकती है, या यदि सरकार की राय में उसका कार्य या आचरण असन्तोषजनक रहा हो तो उसे या तो सेवा मुक्त कर सकती है या उसकी परख-अवधि को, जितना उचित समझे, बढ़ा सकती है; परन्तु अस्थायी रूप से खाली जगहों पर की गई नियुक्तियों के सम्बन्ध में, पक्का करने का दावा नहीं किया जा सकेगा।

(घ) यदि सरकार ने सेवा में नियुक्तियां करने की अपनी शक्ति किसी अधिकारी को सौंप रखी है तो वह अधिकारी ऊपर के खण्डों में उल्लिखित सरकार की कीर्ति भी शक्ति का प्रयोग कर सकता है।

(इ) वेतनमात्रः—

आयकर अधिकारी, श्रेणी- I

रु० 400-400-450-30-510-क० रो०-700-
40-1100-50/2-1250।

आयकर सहायक आयुक्त—रु० 1300-60-1600।
आय कर के अपर आयुक्त।
रु० 1600-100-1800।

आयकर आयुक्त—रु० 1800-100-2000—125-
2250।

परखाधीन अवधि में अधिकारी को राष्ट्रीय प्रशासनिक एकादमी मसूरी तथा आयकर प्रशिक्षण कालेज नागपुर में प्रशिक्षण प्राप्त करना होगा। मसूरी में प्रशिक्षण समाप्त होने पर उसे पाठ्य-क्रमान्त परीक्षा पास करनी होगी। इसके अतिरिक्त परखाधीन अवधि में विभागीय परीक्षा खण्ड I और खण्ड II भी पास करने होंगे। पाठ्य-क्रमान्त परीक्षा तथा विभागीय परीक्षा खण्ड I पास कर लेने पर वेतन बढ़ाकर 450 रु० कर दिया जाएगा। विभागीय परीक्षा खण्ड II पास कर लेने पर वेतन बढ़ा कर रु० 480 कर दिया जाएगा। रु० 480 के स्तर के ऊपर वेतन तब तक नहीं दिया जाएगा। जब तक कि उस अधिकारी की सेवा 4 वर्ष पूरी न हो चुकी हो या दूसरी ऐसी शर्तों के अधीन होगा जो आवश्यक समझा जाये।

यदि वह एकादमी की पाठ्य-क्रमान्त परीक्षा पास नहीं कर लेना तो एक वर्ष के लिए उसकी वेतन वृद्धि स्थगित कर दी जाएगी अथवा उस तारीख तक जब कि विभागीय नियमों के अन्तर्गत उसे दूसरी वेतन वृद्धि मिलने वाली हो और इन दोनों में से जो भी अवधि पहले पड़े तब तक स्थगित रहेगी।

नोट 1—परखाधीन अधिकारी को 400 रु० से ऊपर का वेतन तब तक नहीं मिलेगा जब तक वह समय-सम्मेय पर विहित नियमों के अनुसार विभागीय परीक्षाएं पास नहीं कर लेगा।

नोट 2—परखाधीन अधिकारियों को भलीभांति समझ लेना चाहिये कि उनकी नियुक्ति भारत सरकार द्वारा आयकर सेवा श्रेणी-I के गठन में किये जाने वाले किसी भी ऐसे परिवर्तन में प्रभावित हो सकेगी जो कि समय-समय पर उचित समझे जाने के बाद भारत सरकार द्वारा किया जायेगा और वे उस प्रकार के परिवर्तनों के फलस्वरूप प्रतिकार का दावा नहीं कर सकेंगे।

10. भारतीय आयुध कारखाना सेवा, श्रेणी I

(अतकनीकी संबर्द्धी)

(क) चुने गए उम्मीदवारों को सहायक प्रबन्धकों (परिवीक्षा पर) के रूप में नियुक्त किया जाएगा। परिवीक्षा की अवधि दो वर्ष की होगी। इस अवधि को आयुद्ध कारखानों के महानिदेशक की सिफारिश से सरकार द्वारा घटाया या बढ़ाया जा सकता है। सहायक प्रबन्धक (परिवीक्षा पर) सरकार द्वारा दिया जाने वाला प्रशिक्षण प्राप्त करेगा और उसे सरकार द्वारा निर्धारित विभागीय तथा भाषा परीक्षाएं उत्तीर्ण करनी होंगी। भाषा परीक्षाओं में एक परीक्षा हिन्दी की होगी।

अधिकारी की परिवीक्षा की अवधि के समाप्त होने पर सरकार उसको उसकी नियुक्ति पर स्थायी करेगी, परन्तु यदि परिवीक्षा की अवधि में अथवा अन्त में उसका काम या आचरण, सरकार की राय में, असन्तोषजनक रहा है तो सरकार या तो उसको कार्यमुक्त कर सकती है या उसकी परिवीक्षा की अवधि उतने समय के लिए और बढ़ा सकती है जितना वह उचित समझे, परन्तु शर्त यह है कि कार्यमुक्त करने के आदेश देने से पहले अधिकारी को सक्षम प्राधिकारी द्वारा उन बातों से अवगत कराया जायेगा जिनके आधार पर उसको कार्यमुक्त किया जाने वाला है और उसको उस पर लगाये गए दोषों के कारण बनाने का अवमर दिया जायेगा।

(ख) भारतीय आयुद्ध कारखाने में सहायक प्रबन्धक (परिवीक्षा पर) को 400-400-450-30-600-35-670-द० रो०-35-950 स्पष्ट के निर्धारित वेतनमात्र में वेतन मिलेगा। परिवीक्षा की अवधि के समय उनको विभाग की विभिन्न शाखाओं में और राष्ट्रीय प्रशासन एकादमी मसूरी में प्रशिक्षण के आधारभूत पाठ्यक्रम का प्रशिक्षण लेना होगा। ‘गठ्यक्रम की अन्तिम परीक्षा’ और विभागीय परीक्षा पास करने पर वे अग्रिम वेतन वृद्धि पाने के पात्र होंगे जिससे उनका वेतन बढ़ कर 450 रुपए

प्रतिमाह तथा 480 रुपए प्रतिमाह होंगे जायेगा। उनकी यह वेतन-वृद्धि प्रथम व द्वितीय विभागीय परीक्षा के उस अन्तिम प्रश्न पत्र की तारीख से होगी जिसमें वे उत्तीर्ण हुए हैं। इसके बाद उनकी वेतन-वृद्धि समय वेतन मान में उसकी स्थिति के अनुसार तथा ग्रेड में उनके स्थायी होंगे जाने के बाद, नियमित-रूप में होती रहेगी।

यदि सहायक प्रबन्धकों (परिवीक्षा पर) में से कोई राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी में “अन्तिम पाठ्यक्रम परीक्षा” उत्तीर्ण नहीं होती तो उसकी वेतन-वृद्धि उस तारीख से एक वर्ष के लिए रोक दी जाएगी, जिस तारीख को उसे पहली वेतन-वृद्धि प्राप्त होनी अधिकारी विभागीय विनियमों के अधीन उसे जब दूसरी वेतन-वृद्धि प्राप्त होने वाली हो तब तक रुकी रहेगी, इनमें से जो भी पहले हो।

- (ग) (1) चुने गए उम्मीदवारों को आवश्यकता होने पर कम-से-कम चार वर्ष की अवधि के लिए सम्मन भेनाओं में कमीशन प्राप्त अधिकारियों के रूप में काम करना होगा। इस अवधि में प्रशिक्षण की अवधि भी, यदि हो तो, शामिल होगी, परन्तु शर्त यह है कि ऐसे अधिकारी के लिए (I) उसकी नियुक्ति की तारीख से 10 वर्ष के बाद कमीशन प्राप्त अधिकारी के रूप में सेवा करना आवश्यक नहीं होगा और (II) चालीस वर्ष की आयु हो जाने के बाद आमतौर से कमीशन-प्राप्त अधिकारी के रूप में काम करना आवश्यक नहीं होगा।
- (2) तारीख 9-3-1957 के साठे निः 90 आठ सं 92 के अधीन प्रकाशित, रक्षा सेवा में असैनिक वृद्धि (श्रेणीव सेवा दायिता) नियम, 1957 इन उम्मीदवारों पर भी लागू होंगे। उन नियमों में निर्धारित स्वास्थ्य-भ्नर के अनुसार इनकी स्वास्थ्य परीक्षा की जायेगी।

(ग) स्वीकार्य वेतन की दरे निम्नलिखित हैं—

सहायक प्रबन्धक तकनीकी कनिष्ठ वेतनमान :

स्टाफ अधिकारी	रुपये 400-400-450-30-600-35-670-द०	रुपये 35-950।
---------------	------------------------------------	---------------

उप-प्रबन्धक/उप-सहायक वरिष्ठ वेतनमान :—

महानिदेशक, आयुध कारखाना	रुपये 700-40-1100-50/2-1250।
-------------------------	------------------------------

प्रबन्धक-वरिष्ठ उप-सहायक रुपये 1100-50-1400।

सहायक, आयुध कारखाना।

उप-महाप्रबन्धक/सहायक महानिदेशक, आयुध कारखाना, श्रेणी-II	रुपये 1300-60-1600-100-1800।
---	------------------------------

सहायक महानिदेशक, आयुध कारखाना, श्रेणी I।

उप-महानिदेशक, आयुध कारखाना

रुपये 1800-100-2000।

रुपये 2000-125-2250।

भारतीय डाक सेवा

(क) चुने दुए उम्मीदवारों को इस विभाग में प्रशिक्षण लेना होगा जिसकी अवधि, आम तौर पर, दो वर्ष से अधिक नहीं होगी। इस अवधि में उन्हें निर्धारित विभागीय परीक्षा पास करनी होगी।

(ख) यदि सरकार की राय में, किसी प्रशिक्षणाधीन अधिकारी का कार्य या आचरण संतोषजनक न हो या उसे देखते हुए उसके कार्य कुशल होने की संभावना न हो तो सरकार उसे तत्काल सेवा मुक्त कर सकती है।

(ग) परखावधि के समाप्त होने पर, सरकार अधिकारी को उसकी नियुक्ति पर पक्का कर सकती है, या यदि सरकार की राय में उसका कार्य या आचरण संतोषजनक न रहा हो तो सरकार उसे या तो सेवा-मुक्त कर सकती है या उसकी परखावधि को, जितना उचित ममझे, बढ़ा सकती है, परन्तु अस्थायी रूप से खाली जगहों पर की गई नियुक्तियों के सम्बन्ध में, पक्का करने का दावा नहीं किया जा सकेगा।

(घ) यदि सरकार ने सेवा में नियुक्तियां करने की अपनी शक्ति किसी अधिकारी को सौंप रखी हो तो वह अधिकारी ऊपर के खण्डों में उल्लिखित सरकार की कोई भी शक्ति का प्रयोग कर सकता है।

(इ) वेतनमान :—

समय-मान रु० 400-400-450-30-510-कु० रो०-700-40-1100-50/2-1250।
(प्रशिक्षणाधीन अधिकारी इस समय-मान में वेतन लेंगे)

डाक सेवा निदेशक—र० 1300-60-1600।

महापोस्ट मास्टर—र० 1800-100-2000-125-2250।

सरस्य, डाक-नार-बोर्ड—र० 2250-125/2-2750।

Senior Members, Posts & Telegraphs Board Rs. 3000

(च) भारतीय डाक सेवा श्रेणी I के परखावधीन अधिकारी-र० 400-400-450-30-480-510-कु० रो०-700-40-1100-50/2-1250 के नियुक्ति मान में अपना वेतन प्राप्त करेंग। परखावधीन अवधि में उन्हें विभाग की विभिन्न शाखाओं तथा राष्ट्रीय प्रशासनिक एकादमी, मसूरी के आधारात्मक पाठ्यक्रम में प्रशिक्षण लेना पड़ेगा। मसूरी में प्रशिक्षण समाप्त होने पर उन्हें पाठ्यक्रमान्तर परीक्षा पास करनी होगी। विभागीय नियमों के अन्तर्गत विहित विभागीय परीक्षाएँ भी उन्हें पास करनी होंगी।

पाठ्यक्रमान्त परीक्षा तथा विभागीय परीक्षा पास कर लेने पर उनके बेतन बढ़ा कर रु० 450 कर दिया जायेगा । दो वर्ष की परखाधीन अवधि समाप्त कर लेने और स्थायी किये जाने के बाद उनका बेतन 480 रु० के स्तर पर निश्चित कर दिया जायेगा । समयमान के अन्तर्गत उनकी स्थिति के अनुसार इसके बाद उनका बेतन निश्चित होता रहेगा । यदि कोई परखाधीन अधिकारी गण्डीय प्रशासनिक एकादमी, मसूरी की पाठ्यक्रमान्त परीक्षा पास नहीं करता तो जिस तारीख को उसे पहली बेतन वृद्धि प्राप्त होगी उस तारीख से एक वर्ष के लिये स्थगित कर दी जायगी अथवा विभागीय नियमों के अन्तर्गत उसे जब दूसरी बेतन-वृद्धि प्राप्त होने वाली हो और इन दोनों में से जो भी अवधि पहले पड़े, तब तक स्थगित रहेगी ।

जो सरकारी कर्मचारी परिवीक्षा के आधार पर नियुक्ति में पूर्व, मौलिक आधार पर साधारित पद के अतिरिक्त किसी स्थायी पद पर नियुक्त था उसका बेतन मूल नियम 22-ख (1) की व्यवस्थाओं के अधीन विनियमित होगा ।

(छ) परखाधीन अधिकारियों को यह भलीभांति समझ लेना चाहिए कि उनकी नियुक्ति भारत सरकार द्वारा भारतीय डाक सेवा श्रेणी I के गठन में किये जाने वाले किसी भी ऐसे परिवर्तन में प्रभावित हो सकेंगी जो कि समय-समय पर उचित समझे जाने के बाद, भारत सरकार द्वारा किया जाएगा, और वे इस प्रकार के परिवर्तनों के फलस्वरूप प्रतिकार का दावा नहीं कर सकेंगे । चुने गये उम्मीदवारों को, सरकार के निदेशानुसार, सैन्य डाक सेवा के अन्तर्गत भारत अथवा विदेश में कार्य करना होगा ।

12. भारतीय रेलवे लेखा सेवा

(क) नियुक्ति परख पर की जाएगी जिसकी अवधि 2 वर्ष की होगी । इस अवधि में दोनों में से किसी भी ओर से तीन महीने का नौटिस देकर सेवा समाप्त की जा सकेगी । परख-अवधि बढ़ाई जा सकेगी, यदि परखाधीन अधिकारी निर्धारित विभागीय परीक्षाएं पास करके अपने आपको पक्का करने के योग्य सिद्ध नहीं करेगा ।

सरकार ऐसे परखाधीन अधिकारी की नियुक्ति खत्म कर सकती है जो अपनी नियुक्ति की तारीख से तीन वर्ष के भीतर सभी विभागीय परीक्षाएं पास नहीं कर लेता ।

(ख) भारतीय रेलवे सेवा सेवा के परखाधीन अधिकारियों को भी रेलवे स्टाफ कालेज, बड़ौदा में प्रशिक्षण लेना होगा और कालेज प्राधिकारियों द्वारा निर्धारित परीक्षा पास करनी होगी । इस कालेज में परीक्षा देना अनिवार्य है और एक बार अलगन होने पर दूसरा

अवसर तभी मिल सकता है जबकि अपवादिक परिस्थितियां हों और अधिकारी, का कार्य ऐसा हो कि उसे यह छूट दी जा सकती हो । हालांकि, दो वर्ष का प्रशिक्षण संतोषजनक रूप से पूर्ण करने पर, उन्हें किसी कार्यकारी पद (Working Post) पर लगाया जा सकता है परन्तु उन्हें तब तक पक्का नहीं किया जाता जब तक कि वे रेलवे स्टाफ कालेज, बड़ौदा की परीक्षा और ऊंची तथा नीची विभागीय परीक्षाएं पास नहीं कर लेते ।

(ग) परखाधीन अधिकारियों को देवनागरी लिपि में हिन्दी की अनुमोदित स्तर की एक परीक्षा पहले हो या परखा-अवधि में पास कर लेनी चाहिए । यह परीक्षा या तो गृह भन्नालय की ओर से शिक्षा निदेशालय, दिल्ली, द्वारा संचालित 'प्रधीण' हिन्दी परीक्षा हो या केन्द्रीय सरकार द्वारा मान्यता-प्राप्त कोई समकक्ष परीक्षा हो किसी भी परखाधीन अधिकारी को तब तक पक्का नहीं किया जा सकता या उसका बेतन 450 रु० नहीं किया जा सकता जब तक कि वह यह परीक्षा पास नहीं कर लेता । ऐसा न करने पर सेवा समाप्त की जा सकती है । इसमें कोई छूट नहीं दी जा सकती ।

(घ) इन नियमों के अनुमार भर्ती किए गए भारतीय रेलवे लेखा-सेवा के अधिकारी (परखाधीन) भी (क) पैशान के लाभों के पात्र होंगे, और (ख) समय-समय पर संशोधित राज्य रेलवे भविष्य निधि (अंशदान रहित) के नियमों के अन्तर्गत इस निधि में अभिवान कर सकेंगे ।

(ङ) इन नियमों के अधीन जो अधिकारी भर्ती किये जायेंगे वे समय-समय पर नागू होने वाले छुट्टियों के सुविधा-जनक नियमों के अनुसार छुट्टी लेने के पात्र होंगे ।

(च) यदि किसी ऐसे कारण से जो कि उसके बश के बाहर न हों, भारतीय रेलवे लेखा सेवा का कोई परखाधीन अधिकारी परख या प्रशिक्षण में ही छोड़ना चाहे तो उसे अपने प्रशिक्षण का सारा वर्च और परख-अवधि में उसे दी गई भव रकमें वापस करनी होंगी ।

(ङ) यदि सरकार की राय में, किसी परखाधीन अधिकारी का कार्य या आचरण संतोषजनक न हो या उसे देखते हुए उसके कार्यकुशल होने की संभावना न हो, तो सरकार उसे तरकाल सेवा-मुक्त कर सकती है ।

(ज) परख-अवधि के समाप्त होने पर, सरकार अधिकारी को उसकी नियुक्ति पर पक्का कर सकती है या यदि सरकार की राय में उसका कार्य या आचरण संतोषजनक न रहा हो तो सरकार उसे या तो सेवा-मुक्त कर सकती है या उसकी परख-अवधि को, जितना उचित समझे बढ़ा सकती है, परन्तु अस्थायी रूप से खाली जगहों पर की गई नियुक्तियों के सम्बन्ध में पक्का करने का दावा नहीं किया जा सकेगा ।

(अ) वेतनमान :

(क) कनिष्ठ वेतनमान:— 400—400—450—30—600—35—
670—द० रो०—35—950 र०
(प्राधिकृत वेतनमान)

वरिष्ठ वेतनमान:— 700 र० (छठा वर्ष और उससे कम) —
40—1,100—50/2—1,250
(प्राधिकृत वेतनमान) ।

कनिष्ठ प्रशासन ग्रेड:— 1,300—60—1,600 र० (प्राधिकृत वेतनमान) ।

इंटर्मीडिएट प्रशासन ग्रेड:— 1,600—100—1,800 र० ।
वरिष्ठ प्रशासन ग्रेड:—र० 2,000—100—2,500 ।

(ख) यदि परखाधीन अधिकारी अपनी दो वर्ष की परख-अवधि में, निर्धारित विभागीय परीक्षाएं पास नहीं कर सकेगा तो रु० 400 से रु० 450 तक की उसकी वेतनवृद्धि रोक दी जाएगी और परख-अवधि बढ़ा दी जाएगी। जब वह विभागीय परीक्षाएं पास कर लेगा और उसके बाद जब प्रक्रिया कर दिया जायेगा तो अन्तिम विभागीय परीक्षा समाप्त होने की तारीख के बाद अगले दिन से उसका वेतन समय मान में उम अवस्था (Stage) पर नियत कर दिया जायेगा जो उसे अन्यथा मिला होता पर उस वेतन का बकाया नहीं मिलेगा। ऐसे मामलों में भावी वेतन-वृद्धियों की तारीख पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा ।

परख-अवधि में परखाधीन अधिकारी ज्योही निर्धारित परीक्षाएं पास कर लेगा, त्यों ही उसको रु० 400—950 के जूनियर मान में रु० 400 से रु० 450 और रु० 450 से 480 की अग्रिम वृद्धियां मिल सकेंगी। अग्रिम वृद्धियां मिलने के बाद, सेवा के वर्ष को ध्यान में रखने हुए, अधिकारी का वेतन, वेतनमान में उसकी सामान्य स्थिति के अनुसार विनियमित कर दिया जायेगा ।

यदि कोई परखाधीन अधिकारी गण्डीय प्रशासनिक अकादमी, मसूरी की पाठ्यक्रमान्त परीक्षा पास नहीं करता तो जिस तारीख को उस पहली वेतन वृद्धि प्राप्त होती उम तारीख से एक वर्ष के लिये स्थगित कर दी जाएगी अथवा विभागीय नियमों के अन्तर्गत उसे जब दूसरी वेतन-वृद्धि प्राप्त होने वाली हो और इन दोनों में से जो भी अवधि पहले पड़े तब तक स्थगित रहेगी ।

नोट 1—परखाधीन अधिकारियों की सेवा जूनियर मान में कम-में-कम वेतन से प्रारम्भ होगी और वेतन वृद्धि के प्रयोजन से, वह उनकी कार्य-प्रहण की तारीख से गिनी जाएगी। परन्तु उन्हें निर्धारित विभागीय परीक्षा या परीक्षाएं पास करनी होंगी और उसके बाद ही उनका वेतन समय-मान में रु० 400 प्रतिमास से रु० 450 प्रतिमास किया जा सकेगा ।

नोट 2—तथापि, जो सरकारी कर्मचारी परिवीक्षाधीन के स्पष्ट में नियुक्ति से पहले सावधिक पद के अतिरिक्त अन्य स्थायी

पद पर मूल रूप में कार्य करता था, उसका वेतन नियम 2018क (1) नियम II [मू० नि० 22-ख(1)] 3 में दिए गए उपबन्धों के अनुसार विनियमित किया जाएगा ।

13. सेविक भूमि और छावनी सेवा (श्रेणी I और II)

(क) नियुक्ति के लिये चुना गया उम्मीदवार परख पर रखा जाएगा जिसकी अवधि आमतौर पर 2 वर्ष से अधिक नहीं होगी। इस अवधि में उसे छावनी और भूमि प्रशासन में सरकार द्वारा निर्धारित परीक्षण लेना होगा जिसकी अवधि छः महीने से कम नहीं होगी ।

(ख) परख अवधि में उम्मीदवार को निर्धारित विभागीय परीक्षाएं पास करनी होंगी ।

(ग) (i) यदि सरकार की राय में परखाधीन अधिकारी को कार्य या आचरण संतोषजनक न हो या उसे देखते हुए उसके कार्यकुशल होने की संभावना न हो तो सरकार उसे सेवा-मुक्त कर सकती है, परन्तु सेवा-मुक्ति का आदेश देने से पहले, उसे सेवा-मुक्ति के कारणों से अवगत कराया जाएगा और लिख कर “कारण बनाने” का अवसर भी दिया जाएगा ।

(ii) यदि परख-अवधि की समाप्ति पर, अधिकारी ने ऊपर उप-पैरा (ख) में उल्लिखित विभागीय परीक्षा पास न की हो तो सरकार अपने नियंत्रण से या तो उसे सेवा-मुक्त कर सकती है या यदि मामले की परिस्थितियों को देखते हुए, उसकी परख-अवधि बढ़ानी आवश्यक हो तो वह जितना उचित समझे, परख-अवधि को एक वर्ष तक बढ़ा सकती है ।

(iii) परख-अवधि के समाप्त होने पर, सरकार अधिकारी को उसकी नियुक्ति पर प्रक्रिया कर सकती है या यदि सरकार की राय में उसका कार्य या आचरण संतोषजनक न रहा हो तो सरकार उसे या तो सेवा-मुक्त कर सकती है या उसकी परख-अवधि को, जितना उचित समझे, बढ़ा सकती है। परन्तु सेवा-मुक्ति को आदेश देने से पहले, अधिकारी को सेवा-मुक्ति के कारणों से अवगत कराया जायेगा और लिख कर “कारण बनाने” का अवसर भी दिया जाएगा ।

(घ) यदि ऊपर उप-पैरा (ग) के अन्तर्गत, सरकार ने कोई कारवाई नहीं की तो निर्धारित परख-अवधि के बाद की अवधि में अधिकारी की नियुक्ति मास-प्रतिमास मानी जायेगी और दोनों में से किसी भी ओर से एक कैलेंडर मास का लिखित नॉटिस देकर समाप्त की जा सकेगी, रेख्यु अधिकारी पक्का करने का दावा नहीं कर सकेगा ।

(ङ) इस सेवा के सदस्य को उसकी परख-अवधि में वार्षिक वेतन-वृद्धि देय हो जाने पर भी, तब तक नहीं मिलेगी जब तक कि वह विभागीय परीक्षा पास न कर लेगा। जो वृद्धि इस प्रकार नहीं मिली होगी, वह विभागीय परीक्षा पास करने की तारीख से मिल जायेगी ।

(च) यदि कोई परखाधीन अधिकारी गल्टीय प्रशासनिक अकादमी, मसूरी की पाठ्यक्रमानुसार परीक्षा पास नहीं करता तो जिस तारीख को उसे पहली बेतन वृद्धि प्राप्त होती है उस तारीख से एक वर्ष के लिये स्थगित कर दी जाएगी। अथवा विभागीय नियमों के अन्तर्गत उसे जब इमरी बेतन वृद्धि प्राप्त होने वाली हो और इन दोनों में से जो भी अवधि पहले पड़े वब तक स्थगित रहेगी।

(छ) बेतन-मान इस प्रकार है—

प्रशासनिक पद

- (i) निदेशक सैनिक भूमि और छावनियां ।
रु 1800-100-2000 ।
- (ii) संयुक्त निदेशक, सैनिक भूमि और छावनियां ।
रु 1600-100-1800 ।
- (iii) उपनिदेशक, सैनिक भूमि और छावनियां ।
रु 1300-60-1600 ।
- (iv) सहायक निदेशक, सैनिक भूमि और छावनियां ।
रु 1100-50-1400 ।

श्रेणी-I

- | | |
|---|--|
| (v) उप-सहायक निदेशक, सैनिक भूमि और छावनियां, सैनिक संपदा अधिकारी और कार्यपालक अधिकारी । | रु 400-400-450-30-510-कु. ३०-700-40-1100-50/2-1250 । |
|---|--|

श्रेणी-II

- | | |
|------------------------------------|---|
| (vi) कार्यपालक अधिकारी । | रु 350-25-500-30-590-कु. ३०-800-कु. ८०-830-35-900 । |
| (vii) सहायक सैनिक सम्पदा अधिकारी । | रु 350-25-500-30-590-कु. ३०-800-कु. ८०-830-35-900 । |

(ज) (i) श्रेणी-I के अधिकारियों को, सामान्यता, उप-सहायक निदेशक, सैनिक सम्पदा अधिकारी, और श्रेणी-I और श्रेणी II की उन छावनियों में कार्यपालक अधिकारी के पदों पर नियुक्त किया जायेगा जिन पर छावनी अधिनियम 1924 की धारा 13 की उपधारा—(4) के खण्ड (इ) का उप खण्ड (i) लागू होता है।

(ii) श्रेणी II के कार्यपालक अधिकारियों को सामान्यता उन छावनियों में नियुक्त किया जायेगा जो ऊपर (i) में उल्लिखित नहीं हैं।

(झ) (i) मभी पदोन्नतियां, इस प्रयोजन के लिये सरकार द्वारा नियुक्त की गई विभागीय पदोन्नति समिति की सिफारिशों के अनुसार, सरकार द्वारा चुन कर (By Selection) की जाएगी। [वरीयता (संनियरिटी) पर तभी विचार किया जायेगा जबकि दो या अधिक उम्मीदवारों के बावें गुणों की दृष्टि से बराबर

होंगे]। श्रेणी-II में पदोन्नति होने पर, वेतन मूल नियमावली (Fundamental Rules) के अनुसार विनियमित किया जायेगा।

(ii) साधारणतया, किसी भी अधिकारी को श्रेणी-I में तब तक पदोन्नत नहीं किया जाएगा जब तक श्रेणी-II में उसकी तौत वर्ष की सेवा पूरी न हो गई हो।

(ज) समय-समय पर संशोधित पुनर्रक्षित छट्टी नियमावली, 1933 लागू होगी।

(ट) इस सेवा का कोई भी मदस्य, सरकार से पहले मंजूरी लिये बिना, कोई भी ऐसा काम अपने जिम्मे नहीं लेगा जोकि उसके सरकारी काम से संबंधित न हो।

(ठ) सैनिक भूमि और छावनी के अधिकारियों से भारत में कहीं भी सेवा ली जा सकती है, और उन्हें थेव-सेवा (Field Service) पर भी भारत के किसी भी भाग में भेजा जा सकता है।

14. भारतीय रेलवे यातायात सेवा

(क) नियुक्ति के लिये चुने गये उम्मीदवारों को भारतीय रेलवे यातायात सेवा में परखाधीन अधिकारियों के रूप में नियुक्त किया जायेगा। उनकी परख अवधि तीन वर्ष की होगी। इस अवधि में, उन्हें पैरा (ड) में उल्लिखित प्रशिक्षण लेना होगा और कम-से-कम एक वर्ष तक किसी कार्यकारी पद पर काम करना होगा यदि किसी मामले में, संतोषजनक रूप से प्रशिक्षण पूरा न करने के कारण, प्रशिक्षण की अवधि बढ़ाई जायेगी तो उसके अनुसार परख की कुल अवधि भी बढ़ जायेगी।

(ख) यदि किसी ऐसे कारण से, जो कि उसके वश के बाहर न हो, भारतीय रेलवे यातायात सेवा का परखाधीन अधिकारी, परख या प्रशिक्षण बीच में ही छोड़ना चाहे तो उसे अपने प्रशिक्षण का सारा खर्च और परख अवधि में उसे दी गई सब रकमें वापस करनी होगी।

(ग) इस सेवा में नियुक्तियां परख पर की जायेंगी जिसकी अवधि तीन वर्ष की होगी। इस अवधि में दोनों में से किसी भी और से तीन महीने का नोटिस देकर समाप्त की जा सकेगी। परखाधीन अधिकारियों को पहले दो वर्ष तक व्यावहारिक प्रशिक्षण लेना होगा। जो अधिकारी इस प्रशिक्षण को सफलतापूर्वक समाप्त कर लेंगे और अन्यथा भी उपयुक्त समझे जायेंगे, उन्हें कार्यकारी पद का कार्यभार मौप दिया जायगा, यदि उन्होंने निर्धारित विभागीय और अन्य परीक्षाएं पास कर ली हों। ध्यान रहें कि ये परीक्षाएं नियमित: प्रथम प्रयास में ही पास कर ली जाएं क्योंकि विशेष ('एक्सेप्यूनल') परिस्थितियों को छोड़, बाकी किसी भी हालत में, दूसरा अवमर नहीं दिया जायेगा। किसी परीक्षा में असफल होने के परिणामस्वरूप परखाधीन अधिकारी की सेवा समाप्त की जा सकती है और उसकी बेतन वृद्धि तो हर हालत में रुक ही जायेगी। किसी कार्यकारी पद पर एक वर्ष तक कार्य करने के बाद, परखाधीन अधिकारियों को एक अन्तिम परिशा पास करनी होगी। गढ़ परीक्षा व्यावहारिक और मैदानिक दोनों प्रकार की होगी। जब परखाधीन अधिकारी सब तरह से नियुक्ति के लिये उपयुक्त ममक लिये जायेंगे तो उन्हें पक्का कर दिया जायेगा। जिन मामलों में किसी कारण से परख अवधि बढ़ाई गई हो, उनमें विभागीय

परीक्षा पास करने और पक्का होने पर, समय-समय पर लागू होने वाले नियमों और आदेशों के अनुसार, पहली और बाद की वेतन-वृद्धियाँ ली जा सकती हैं।

(घ) परखाधीन अधिकारियों को, देवनागरी लिपि में अनु-मोदित स्तर की हिन्दी की एक परीक्षा पहले ही या परख अवधि में पास कर लेनी चाहिये। यह परीक्षा या तो यह संवालय की ओर से शिक्षा निदेशालय, दिल्ली, द्वारा संचालित “प्रबीण” हिन्दी परीक्षा हो या केंद्रीय सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त कोई समकक्ष परीक्षा हो।

किसी भी परखाधीन अधिकारी को तब तक पक्का नहीं किया जा सकता या उसका वेतन 450 रु. तकी किया जा सकता जब तक कि वह यह परीक्षा पास नहीं कर लेता। ऐसा न करने पर सेवा समाप्त की जा सकती है। इसमें कोई छूट नहीं दी जा सकती।

(ङ) इन नियमों के अनुसार भर्ती किये गये भारतीय रेलवे यातायात सेवा के अधिकारी (परखाधीन) भी :—

- (क) वेशन के लाभों के पात्र होंगे, और
- (ख) समय-समय पर संशोधित, राज्य रेलवे भविष्य नियमि (अंशदातरहित) के नियमों के अन्तर्गत इस नियमि में अधिकार कर सकेंगे।
- (च) कार्यग्रहण की तारीख में ही वेतन प्रारम्भ होगा। वेतन वृद्धि के प्रयोजन से भी सेवा उभी तारीख से गिनी जाएगी।

(छ) इन नियमों के अधीन जो अधिकारी भर्ती किये जायेंगे वे समय-समय पर लागू होने वाले छूटियों के मुविधाजनक नियमों के अनुसार छुट्टी लेने के पात्र होंगे।

(ज) अधिकारियों को, आमतौर पर, उनकी सेवा की अवधि पर उभी रेलवे में रखा जायेगा जिस में वे सर्वप्रथम नियुक्त कर दिये जायेंगे। और किसी अन्य रेलवे में स्थानान्तरित होने के निये साधिकार दावा नहीं कर सकेंगे। परन्तु भारत सरकार को यह अधिकार है कि वह उन अधिकारियों को, सेवा की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, भारत में या भारत से बाहर किसी परियोजना (Project) या रेलवे में स्थानान्तरित कर सके।

(झ) नियुक्त किये गए अधिकारियों को आपेक्षित वर्गिता (रिलेटिव सीनियरिटी) आमतौर पर, उन्हें प्रतियोगिता परीक्षा में हुए योग्यता क्रम (Order of merit) के अनुसार निश्चित की जाएगी। यदि प्रशिक्षण संतोषजनक रूप से पूरा न करने के कारण, किसी अधिकारी को प्रशिक्षण अवधि और उसके परिणामस्वरूप परख-अवधि बढ़ानी पड़े तो इसमें उसकी वरीयता (सीनियरिटी) भी घट सकेगी। वैसे भारत सरकार को व्यक्तिगत मामलों में अपने निर्णय के अनुसार वरीयता निश्चित करने का अधिकार है। उसको यह भी अधिकार है कि वह प्रतियोगिता परीक्षा से अन्यथा नियुक्त अधिकारियों को, अपने निर्णय के अनुसार वरीयता सूचि में कोड भी स्थान दे सकती है।

(ञ) वेतन-मान—

जूनियर—रु. 400-400-450-30-600-35-670
कु. रु०-35-950 (प्राधिकृत मान)।

सीनियर—रु. 700 (छठे वर्ष या पहले)-40-1100-
50/2-1250 (प्राधिकृत मान)।

जूनियर प्रशासनिक ग्रेड—रु. 1300-60-1600 (प्राधि-
कृत मान)।

माध्यमिक प्रशासनिक ग्रेड—रु. 1600-100-1800-
(प्राधिकृत मान)।
सीनियर प्रशासनिक ग्रेड—रु. 2,000-100-2,500
(प्राधिकृत मान)।

नोट 1—परखाधीन अधिकारियों की सेवा जूनियर मान में कम से कम वेतन से प्रारम्भ होगी और वेतन वृद्धि के प्रयोजन में, वह उनकी कार्यग्रहण की तारीख से गिनी जायेगी। परन्तु उन्हें निर्धारित विभागीय परीक्षा या परीक्षाएं पास करनी होंगी। और उसके बाद ही उनका वेतन मान रु. 400 प्रतिमास से रु. 450 प्रतिमास किया जा सकेगा।

यदि परखाधीन अधिकारी अपनी परख और प्रशिक्षण की अवधि के पहले दो वर्षों में, विभागीय परीक्षाएं पास नहीं कर सकेंगा तो रु. 400 से 450 तक की उसकी वेतन वृद्धि रोक दी जाएगी और परख अवधि बढ़ा दी जायेगी। जब यह विभागीय परीक्षाएं पास कर लेगा और उसके बाद जब पक्का हो जायेगा तो अंतिम विभागीय परीक्षा समाप्त होने की तारीख के बाद अगले दिन से उसका वेतन समय-मान में उस अवस्था पर नियत कर दिया जायेगा जो उसे अन्यथा मिला होता पर उसे वेतन का बकाया नहीं मिलेगा, ऐसे मामलों में, भावी वेतन-वृद्धियों की तारीख पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

परख-अवधि में, परखाधीन अधिकारी जो ही निर्धारित परीक्षाएं पास कर लेगा, ख्यों ही उसको रु. 400 से 950 के जूनियर मान में रु. 400 से रु. 450 और रु. 450 से रु. 480 की अग्रिम वृद्धियों मिल सकेगी। अग्रिम वृद्धियों मिलने के बाद, सेवा के वर्ष की ध्यान में रखने हुए, अधिकारियों को वेतन-मान में उसकी मामान्य स्थिति के अनुसार विनियमित कर दिया जायेगा।

यदि कोई परखाधीन अधिकारी राष्ट्रीय प्रशासनिक एकादमी, मसूरी की पाठ्यक्रमांत परीक्षा पास नहीं करता तो जिस तारीख को उसे पहले वेतन-वृद्धि प्राप्त होती उस तारीख से एक वर्ष के लिये स्थगित कर दी जायेगी अथवा विभागीय नियमों के अन्तर्गत उसे जब दूसरी वेतन-वृद्धि प्राप्त होने वाली हो और उन दोनों में से जो भी अवधि पहले पड़े तब तक स्थगित रहेगी।

नोट 2—तथापि, जो सरकारी कर्मचारी परिवाधीन के स्वप्न में नियुक्ति से पहले सावधिक पद के अतिरिक्त अन्य स्थायी पद पर मूल रूप से कार्य करता था, उसका वेतन नियम 2018क (i) निः—ii [मू. निः 22-ब्र (i)] में दिये गये उपर्युक्तों के अनुसार विनियमित किया जायेगा।

(ट) वेतन वृद्धियों के बाद अनुमोदित सेवा के लिये ही और विभाग के नियमों के अनुसार ही दी जायेगी।

- (ठ) प्रणालीक ग्रेडों में पदोन्नति, स्वीकृति स्थापना (establishment) में खाली जगहें होने पर ही की जायेंगी और पूर्णरूप से चुनाव (selection) के आधार पर ही की जायेंगी। एकमात्र वरीयता के आधार पर ही ऐसा पदोन्नति के लिये दावा नहीं किया जा सकता।
- (ड) भारतीय रेलवे यातायात सेवा के परखाधीन अधिकारियों के प्रशिक्षण का पाठ्यक्रम।

नोट 1—जिन उम्मीदवारों ने भारत में या और कही प्रशिक्षण या अनुभव पहले कभी प्राप्त कर रखा हो, उनके मामले में भारत सरकार को अपने निर्णय के अनुसार प्रशिक्षण-अवधि घटाने का अधिकार है।

नोट 2—परखाधीन अधिकारियों को भी रेलवे स्टाफ कालेज बड़ीदा में दो दौर में प्रशिक्षण लेना होगा। इस कालेज में परीक्षा देना अनिवार्य है और एक बार असफल होने पर दूसरा अवसर तभी मिल सकता है जबकि आपवादिक परिस्थितियाँ हीं और अधिकारी का कार्य अभिलेख ऐसा हो कि उसे वह छूट दी जा सकती है। परीक्षा में असफल होने पर परखाधीन अधिकारियों की सेवा समाप्त की जा सकती, उनके प्रशिक्षण और परख की अवधि आवश्यकतानुसार बढ़ा दी जायेगी और उन्हें किसी भी हालत में तब तक पक्का नहीं किया जायेगा जब तक कि वे परीक्षाएं पास नहीं कर लेंगे।

नोट 3—नीचे जो प्रशिक्षण का कार्यक्रम दिया गया है वह मुख्य रूप से मार्ग-दर्शन के प्रयोजन से बनाया गया है। इसमें महाप्रबंधकों द्वारा अपने निर्णय के अनुसार स्थिति-विशेष को ध्यान में रखते हुये परिवर्तन किये जा सकते हैं, परन्तु, सामान्यतया प्रशिक्षण की कुल अवधि घटाई नहीं जानी चाहिए।

नोट 4—प्रशिक्षण के दो रान परिवीक्षाधीन अधिकारी को, गार्ड, यार्ड मास्टर, महायक स्टेशन मास्टर, स्टेशन मास्टर, यार्ड फोरमैन, ट्रेन परीक्षक, सहायक लोको फोरमैन, सहायक नियंत्रक आदि की हैसियत से कार्य करना होगा जिसका विवरण नीचे दिया गया है। प्रशिक्षण की समाप्ति के बाद जब परिवीक्षाधीन अधिकारी को किसी कार्यकारी पद पर तैनात किया जाता है तो उसे अपना कार्य करने के लिये यात्रा करनी पड़ती है तथा यात्रा के दौरान रास्ते के स्टेशनों पर “पड़ाव” की कोई सुविधाएं उपलब्ध नहीं होती हैं। उसे दुर्बिन तथा जांच के लिये किसी भी समय जाना पड़ता है तथा नियंत्रण कार्यालयों (Control Offices) और स्टेशनों का नियंत्रण करना पड़ता है। इस सब के लिये बहुत परिश्रम अपेक्षित होता है तथा रात को भी काम करना पड़ता है।

पाठ्यक्रम की अवधि—बो वर्ष

मद	अवधि (सप्नाह)
1	2
1. राष्ट्रीय-प्रशिक्षण अकादमी, मसूरी	17
2. बड़ीदा स्टाफ कालिज (प्रथम प्रावस्था)	13
3. क्षेत्रीय स्कूल, के कर्तव्य	4, 5

1	2.
4. रक्षक के रूप में कार्य करते हुए	3
5. बुकिंग/पार्सल ऑफिस, गुड्ज शेड तथा यानांतरण शेड	4, 5
6. यातायात लेख तथा लेखाओं का यांत्रिक नियंत्रक	4
7. क्षेत्रीय स्कूल में सहायक स्टेशन मास्टर की अंहता प्राप्त करने के लिये	4, 5
8. यार्ड मास्टर, सहायक स्टेशन मास्टर, स्टेशन मास्टर, यार्ड फोरमैन तथा ट्रेन परीक्षक के रूप में कार्य	13
9. सहायक लोको फोरमैन के रूप में कार्य	2
10. सहायक नियंत्रक	9
11. (क) क्षेत्रीय कार्यालय में प्रशिक्षण (ख) विद्युत नियंत्रक का प्रशिक्षण	4, 5
12. बड़ीदा स्टाफ कालिज (द्वितीय प्रावस्था)	6, 5
13. रेलवे जिसमें आवंटित किया गया मुख्यालय (प्रचालन)	5
14. रेलवे जिसमें आवंटित किया गया मुख्यालय (वाणिज्य)	5
15. मंगणक कार्यक्रम मंबंधी और पद्धति डिजाइन का प्रशिक्षण	4, 5
प्रशिक्षण को विभिन्न मदों के लिये यात्रा के समय के लिये तथा अनिवार्य छूटी के लिये सुरक्षित रखी गयी अवधि	2
जोड़	104
सप्ताह	5
या 24	24
महीने	1

टिप्पणी—3 से 11 तक की मदें जिनका समय 1 वर्ष होगा आसन-सोल डिवीजन में होगी।

(2) यदि परखाधीन अधिकारी अपने बो वर्ष के प्रशिक्षण के अन्त में परीक्षा पास कर लेगा तो उसे अगले एक वर्ष के लिये किसी कार्यकारी पद का भार परख कर सौंप दिया जायेगा; परीक्षा, आवश्यकता अनुसार, पाठ्यक्रम पूरा होने पर तथा प्रशिक्षण अवधि में निष्पत्ति समय पर ली जायेगी।

नोट—किसी परखावधि अधिकारी को, स्वतन्त्र रूप से, गार्ड, महायक स्टेशन मास्टर, स्टेशन मास्टर, यार्ड फोरमैन, सहायक लोकोमोटिव फोरमैन या महायक नियंत्रक का काम सौंपने से पहले यह आवश्यक है कि प्रशासन के किसी जिम्मेदार अधिकारी द्वारा उक्त प्रत्येक पद के कार्य के संबंध में उसकी परीक्षा ली जाए और योग्य घोषित किया जाये।

15. केन्द्रीय सचिवालय सेवा, अनुभाग अधिकारी, प्रेड, श्रेणी II

(क) केन्द्रीय सचिवालय सेवा में इस समय निम्नलिखित ग्रेड हैं :—

ग्रेड	वेतनमान
मलैक्षण ग्रेड उप-सचिव या समकक्ष	रु 1100-50-1300-60-1600-100-1800
ग्रेड-I अवर मन्त्रिव	रु 900-50-1200।
अनुभाग अधिकारी ग्रेड-I	रु 350-25-500-30-590-कु० रु०-30-800-कु०रु० 30-830-35-900।
सहायक ग्रेड	रु 210-10-270-15-300-कु० रु० 15-450-कु०-रु० 20-530

मलैक्षण ग्रेड और ग्रेड का नियन्त्रण अखिल-सचिवालय आधार पर मंत्रीमण्डल (कार्मिक विभाग) करता है और अनुभाग अधिकारी/सहायक ग्रेड, मंत्रालयों द्वारा नियंत्रित किये जाते हैं।

केवल अनुभाग अधिकारी ग्रेड और सहायक ग्रेड में ही सीधी भर्ती की जाती है।

(ख) अनुभाग अधिकारी ग्रेड में सीधे भर्ती किये गये अधिकारियों को दो वर्ष तक परख पर रखा जायेगा। इस परख-अवधि में उनको सरकार के द्वारा निर्धारित प्रशिक्षण लेना होगा और विभागीय परीक्षाएं पास करनी होंगी, यदि परखाधीन अधिकारी प्रशिक्षण अवधि में पर्याप्त प्रगति न दिखा सके या परीक्षाएं पास न कर सके तो उन्हें मेवा-मुक्त कर दिया जायेगा।

(ग) परख अवधि समाप्त होने पर, सरकार अधिकारी को उसकी नियुक्ति पर पक्का कर सकती है या यदि सरकार की राय में उसका कार्य या आचरण मनोषजनक न रहा हो तो सरकार उसे या तो सेवा-मुक्त कर सकती है या उसकी परख अवधि को, जितना उचित समझे, बढ़ा सकती है।

(घ) यदि सरकार ने मेवा में नियुक्ति करने की अपनी शक्ति किसी अधिकारी को सौंप रखी हो तो वह अधिकारी उपर्युक्त ग्रेडों में वर्णित सरकार की किसी भी शक्ति का प्रयोग कर सकता है।

(ङ) अनुभाग अधिकारियों को सामान्यता “अनुभागों” का अध्यक्ष बनाया जायेगा और ग्रेड—I के अधिकारियों को, सामान्यतया शाखाओं का कार्यभार सौंपा जायेगा, जिनमें एक या अधिक अनुभाग होंगे।

(च) अनुभाग अधिकारी इस सम्बन्ध में समय-समय पर लागू होने वाले नियमों के अनुसार ग्रेड में पदोन्नति पा सकेंगे।

(छ) केन्द्रीय सचिवालय सेवा के ग्रेड—I के अधिकारी, केन्द्रीय मन्त्रिवाल में पर्याप्त ग्रेड की सेवा में और अन्य ऊंचे प्रशासनिक पर्याप्त नियुक्ति पाने के पात्र होंगे।

(ज) जहाँ तक केन्द्रीय सचिवालय सेवा के अधिकारियों की छूट्टी, पेशन और सेवा की अन्य शर्तों का सम्बन्ध है, वे अन्य श्रेणी-I और II के अधिकारियों के समान ही समझे जायेंगे।

16. शास्त्र सेवा मुख्यालय सिविल सेवा सहायक सिविल स्टाफ अधिकारी ग्रेड श्रेणी II

(क) मशस्त्र गोवा मुख्यालय सिविल सेवा में फिलहाल निम्नलिखित ग्रेड हैं :—

ग्रेड	वेतनमान
वरिष्ठ मिविलियन स्टाफ अधिकारी	1100-50-1400। रु०
मिविलियन स्टाफ अधिकारी	740-30-800-50-1150 रु०।
सहायक सिविल स्टाफ अधिकारी	350-25-500-30-590-द०अ०-30-800
सहायक ग्रेड	रु०-210-10-270-15-300-द०अ०-15-450-द०अ०-20-530।

उपरोक्त मेवा साशस्त्र मेवा मुख्यालय तथा प्रतिरक्षा मंत्रालय के अन्तर्सेवा संगठनों के लिये कर्मचारियों की आवध्यकता की पूर्ति करती है।

सीधी भर्ती केवल सहायक सिविल स्टाफ अधिकारी ग्रेड तथा सहायक ग्रेड में ही की जाती है।

(ख) सीधी भर्ती वाले व्यक्ति सहायक मिविल स्टाफ अधिकारी ग्रेड पर 2 वर्ष तक परिवीक्षा पर रहेंगे। इस अवधि में उन्हें सरकार द्वारा निर्धारित कोई भी प्रशिक्षण प्राप्त करना पड़ सकता है अथवा परीक्षाएं पास करनी पड़ सकती है। प्रशिक्षण के दौरान पर्याप्त प्रगति न होने अथवा परीक्षाओं में उत्तीर्ण न हो पाने के फलस्वरूप परिवीक्षाधीन व्यक्ति को सेवा से निकाल दिया जायेगा।

(ग) परिवीक्षा की अवधि समाप्त होने पर सरकार चाहे तो सम्बन्धित अधिकारी को उसकी नियुक्ति में स्थायी कर दे अथवा यदि उसका कार्य अथवा आचरण सरकार के विचार में संतोषजनक न रहा हो तो उसे मेवा से निकाल दे या परिवीक्षा की अवधि उतने काल तक के लिये बढ़ा दे जितना सरकार उचित समझे।

(घ) यदि मेवा में नियुक्तियां करने का अधिकार सरकार द्वारा किसी अधिकारी को प्रत्यायोजित किया जाये तो वह अधिकारी उपर्युक्त अनुच्छेदों में वर्णित सरकार की शक्तियों में से किसी का भी प्रयोग कर सकता है।

(ङ) रक्त मंत्रालय के साशस्त्र मेवा मुख्यालय तथा अन्तर्सेवा संगठनों में सहायक सिविल स्टाफ अधिकारी सामान्यतः अनुभागों के प्रमुख होंगे जबकि मिविलियन स्टाफ अधिकारी एक या एकाधिक अनुभागों के कार्यभारी होंगे।

(क) सहायक मिविल स्टाफ अधिकारी समय-समय पर तत्परता प्रचलित नियमों के अनुसार मिविलियन स्टाफ अधिकारी ग्रेड में पदोन्नति के हकदार होंगे।

(ख) मण्डल सेवा मुख्यालय गिविल सेवा के मिविलियन स्टाफ अधिकारी समय-समय पर तत्परता प्रचलित नियमों के अनुसार सेवा के वरिष्ठ मिविलियन स्टाफ अधिकारी ग्रेड में तथा अन्य प्रशासनिक पदों पर नियुक्ति के हकदार होंगे।

(ज) जहाँ तक छुट्टी, पैंगन तथा सेवा की अन्य शर्तों का सम्बन्ध है, उनका नियंत्रण सशस्त्र सेना मुख्यालय मिविल सेवा के अधिकारी, समय-समय पर रक्षा सेवाओं के व्यवहार में से वेतन पाने वाले अधिकारियों के लिए लागू विनियमों तथा आदेशों द्वारा शासित होंगे।

17. सीमा-शुल्क मूल्यांकक सेवा, क्लास II

(क) मूल्यांकक ग्रेड में ₹० 350-25-500-30-590-द० रो०-30-800-द० रो० 830-35-900 के वेतनमान में भर्ती की जाती है। नियुक्तियां दो वर्ष के लिए परिवीक्षा के आधारी पर की जाती हैं तथा परिवीक्षा की अवधि सक्षम प्राधिकारी, यदि चाहे तो, बढ़ा भी सकता है। परिवीक्षा काल में उम्मीदवारों को केन्द्रीय उत्पादन-शुल्क तथा सीमा-शुल्क बोर्ड द्वारा निर्धारित प्रशिक्षण लेना होगा तथा विभागीय परीक्षाएं पास करनी होंगी। उन्हें ₹० 375 के ऊपर का वेतन तब तक नहीं लेने दिया जायेगा जब तक वे निर्धारित विभागीय परीक्षा पूर्ण रूप में पास नहीं कर लेते।

(ख) यदि परिवीक्षा की मूल अथवा परिवर्द्धित अवधि की समाप्ति पर नियोक्ता प्राधिकारी यह समझता है कि चयन किया गया उम्मीदवार स्थायी नियुक्ति के योग्य नहीं है अथवा परिवीक्षा की उक्त मूल अथवा परिवर्द्धित अवधि के दौरान, प्राधिकारी इस बात से संतुष्ट हो जाता है कि उम्मीदवार परिवीक्षा की अवधि की समाप्ति पर स्थायी नियुक्ति के योग्य नहीं होगा तो वह उसे सेवा में अलग कर सकता है, अथवा जो उचित समझे, वह आदेश दे सकता है।

(ग) परिवीक्षा की अवधि को सफलतापूर्वक पूर्ण कर लेने पर तथा विभागीय परीक्षाएं पास कर लेने के बाद अधिकारियों को संबद्ध ग्रेड में स्थायी करने पर विचार किया जाएगा।

(घ) लागू नियमों के अनुसार भारतीय सीमा शुल्क और केन्द्रीय उत्पाद सेवा क्लास-I (400/1250 रु०) में महायक क्लक्टर के अगले उच्च ग्रेड में पदोन्नति के लिए मूल्य निरूपक (एप्रेजर) पात्र होंगे।

(इ) अवकाश, पैंगन आदि के मामले में इन अधिकारियों पर केन्द्रीय सरकार के अन्य क्लास-II अधिकारियों पर लागू होने वाले नियम ही लागू होंगे। जहाँ तक उनकी सेवा की अन्य शर्तों का प्रश्न है, उन पर सीमा-शुल्क मूल्यांकक सेवा, क्लास की भर्ती नियमावली की व्यवस्थाएं लागू होंगी। इन नियमों में यह विशेष रूप से निर्दिष्ट है कि इस सेवा अधिकारियों को “केन्द्रीय उत्पादन-शुल्क तथा सीमा-शुल्क बोर्ड” के अधीन किसी भी समान या उच्च पद पर भारत में कहीं भी तैनात किया जा सकता है।

18. बिल्ली, और अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह सिविल सेवा, श्रेणी-II

(क) नियुक्ति परख पर की जायेगी, जिसकी अवधि दो वर्ष की होगी और उसे सक्षम प्राधिकारी के निर्णय के अनुसार बनाया भी जा सकेगा। परख पर नियुक्ति उम्मीदवार को केन्द्रीय सरकार द्वारा निर्धारित प्रशिक्षण लेना होगा और विभागीय परीक्षाएं देनी होंगी।

(ख) यदि सरकार की राय में, किसी परखाधीन अधिकारी का कार्य या आचरण संतोषजनक न हो या उसे देखते हुए उसके कार्यकुशल होने की संभावना न हो, तो सरकार उसे तत्काल सेवा-मुक्त कर सकती है।

(ग) जब यह घोषित कर दिया जायेगा कि अमुक अधिकारी ने संतोषजनक रूप से अपनी परख अवधि समाप्त कर ली है तो उसे सेवा में पक्का कर दिया जायेगा। यदि सरकार की राय में उसका कार्य या आचरण संतोषजनक न रहा हो तो सरकार उसे या तो सेवा मुक्त कर सकती है या उसकी परख अवधि को, जितना उचित समझे, बढ़ा सकती है।

(घ) उस सेवा के अधिकारी को, दिल्ली प्रशासन, या अण्डमान निकोबार द्वीप समूह में इन क्षेत्रों में प्रशासन/सरकार के अन्तर्गत सेवा करनी होगी।

(इ) वेतनमान:—

ग्रेड-I (मिलेक्षण ग्रेड) ₹० 900-50-1250।

ग्रेड-II समयमान ₹० 400-25-500-30-590-द०

आ०-30-800-द० आ०-30-830-35-900।

किसी प्रतियोगिता परीक्षा के परिणामों के आधार पर भर्ती किए जाने वाले व्यक्ति, को सेवा में नियुक्ति पर समय वेतनमान का न्यूनतम वेतन प्राप्त होगा बशर्ते यदि वह सेवा में नियुक्ति से पहले मूल रूप से सवाधिक पद के अतिरिक्त स्थायी पद पर कार्य करता था, सेवा में परिवीक्षा की अवधि में उसका वेतन मूल नियम 22-वा (1) के परन्तु के अधीन विनियमित किया जाएगा। सेवा में नियुक्त किए गए अन्य व्यक्तियों के लिए वेतन और वेतनों-वृद्धिया मूल नियमों के अनुसार विनियमित होंगी।

(ज) सेवा के अधिकारियों को परिशोधित केन्द्रीय वेतनमान प्राप्त करने वाले कर्मचारियों पर लागू केन्द्रीय सरकार की दरों पर महंगाई भत्ता प्राप्त करने का हक होगा।

(झ) महंगाई भत्ता के अतिरिक्त, इस सेवा के अधिकारियों को, प्रतिकर (नगर) भत्ता, मकान किराया भत्ता और पहाड़ी स्थानों तथा मुद्रूर स्थानों में रहन-सहन के बड़े हुए खर्च को पूरा करने के लिए अन्य भत्ते दिए जाएंगे, यदि उन्हें ड्यूटी पर या प्रशिक्षण के लिए ऐसे स्थानों पर भेजा जाएगा और जिन स्थानों के लिए ये भत्ते अनुमत्य होंगे।

(ज) डम सेवा के अधिकारियों पर दिल्ली, और अण्डमान निकोबार द्वीप समूह सिविल सेवा नियमावली 1971 और इस नियमावली को लागू करने के प्रयोजन से केन्द्रीय सरकार द्वारा दी जाने वाली हिवायतें अथवा बनाए जाने वाले अन्य विनियम लागू होंगे। जो मामले विशेष रूप से उक्त नियमों या विनियमों

अथवा उनके अन्तर्गत दिए गए आदेशों या विषेष आदेशों के अन्तर्गत नहीं जाते, उनमें ये अधिकारी उन नियमों, विनियमों और आदेशों द्वारा शासित होंगे जो संघ के कार्यों से संबंधित सेवा करने वाले तदनुरूप (Corresponding) अधिकारियों पर लागू होते हैं।

19. गोआ, दमन तथा दियु सिविल सेवा ब्लास 2

(क) नियुक्तियां दो वर्ष की परिवीक्षा अवधि के आधार पर की जाएंगी तथा परिवीक्षा की अवधि समय प्राधिकारी चाहे तो बड़ा भी सकेगा। परिवीक्षा के आधार पर नियुक्त उम्मीदवारों की गोआ, दमन तथा दियु संघ राज्य के प्रशासन द्वारा निर्धारित प्रशिक्षण प्राप्त करना होगा तथा विभागीय परीक्षाएं पास करनी होंगी।

(ख) यदि प्रशासक की राय में किसी परिवीक्षाधीन अधिकारी का काम या आचरण संतोषजनक नहीं है अथवा उससे यह प्रकट होता है कि अधिकारी सुयोग्य मिठ्ठा होने की संभावना नहीं है, तो प्रशासक उसे सेवा से तुरन्त अलग कर सकता है।

(ग) जिस अधिकारी के लिए यह घोषित हो जाएगा कि उसने परिवीक्षा की अवधि संतोषजनक ढंग से पूर्ण कर ली है उसे सेवा में स्थायी कर दिया जाएगा। यदि प्रशासक की राय में उसका कार्य या आचरण संतोषजनक नहीं रहा है तो वह उसे सेवा से अलग कर सकता है अथवा परिवीक्षा की अवधि, जितनी ठीक समझे, बड़ा सकता है।

(घ) इस सेवा के अधिकारी को गोआ, दमन तथा दियु संघ राज्य क्षेत्र में किसी भी स्थान पर कार्य करना होगा।

(ङ) वेतनमानः—

ग्रेड I (चयन ग्रेड) रु 700-40-1100-50/2-1250/

ग्रेड II रु 350-25-500-30-590-द० रु० 30-800-

द० रु०-30-830-35-900 ।

किसी प्रतियोगिता परीक्षा के परिणामों के आधार पर भर्ती किए जाने वाले व्यक्ति, को सेवा में नियुक्ति पर समय वेतनमान का न्यूनतम वेतन प्राप्त होगा बशर्ते यदि वह सेवा में नियुक्ति से पहले मूल रूप से सावधिक पद के अतिरिक्त स्थायी पद पर कार्य करता था, सेवा में परिवीक्षा की अवधि में उसका वेतन मूल नियम 22-ख (1) के परन्तुके के अधीन विनियमित किया जाएगा। सेवा में नियुक्त किए गए अन्य व्यक्तियों के लिए वेतन और वेतन-वृद्धियां मूल नियमों के अनुसार विनियमित होंगी।

इस सेवा के अधिकारी भारतीय प्रशासन सेवा (पदोन्नति द्वारा नियुक्ति) विनियम, 1955 के अनुसार भारतीय प्रशासन सेवा के सीनियर वेतनमान के पदों पर पदोन्नति के पात्र न होंगे।

(च) इस सेवा के अधिकारियों पर गोगा, दमन तथा दियु सिविल सेवा नियमावली, 1967, तथा इन नियमों को कार्यान्वयन करने के लिए बनाए गए अन्य विनियम या प्रशासक द्वारा जारी किए गए आदेश लागू होंगे।

20. पांडिचेरी सिविल सेवा, ब्लास 2

(क) नियुक्तियां दो वर्ष की परीक्षा अवधि के आधार पर की जाएंगी तथा परिवीक्षा की अवधि समय प्राधिकारी चाहे तो बड़ा भी सकेगा। परिवीक्षा के आधार पर नियुक्त उम्मीदवारों की पांडिचेरी संघ राज्य के प्रशासक द्वारा निर्धारित प्रशिक्षण प्राप्त करता होगा तथा विभागीय परीक्षाएं पास करनी होंगी।

(ख) यदि प्रशासक की राय में किसी परिवीक्षाधीन अधिकारी का काम या आचरण संतोषजनक नहीं है अथवा उससे यह प्रकट होता है कि अधिकारी के सुयोग्य मिठ्ठा होने की संभावना नहीं है, तो प्रशासक उसे सेवा से तुरन्त अलग कर सकता है।

(ग) जिस अधिकारी के लिए यह घोषित हो जाएगा कि उसने परिवीक्षा की अवधि संतोषजनक ढंग से पूर्ण कर ली है उसे सेवा में स्थायी कर दिया जाएगा। यदि प्रशासक की राय में उसका कार्य या आचरण संतोषजनक नहीं रहा है तो वह उसे सेवा से अलग कर सकता है अथवा परीक्षा की अवधि जितनी ठीक समझे, बड़ा सकता है।

(घ) इस सेवा के अधिकारी को पांडिचेरी संघ राज्य क्षेत्र में किसी भी स्थान पर कार्य करना होगा।

(ङ) वेतनमानः—

ग्रेड 1—रु 375-25-800 ।

किसी प्रतियोगिता परीक्षा के परिणामों के आधार पर भर्ती किए जाने वाले व्यक्ति, को सेवा में नियुक्ति पर समय वेतनमान का न्यूनतम वेतन प्राप्त होगा बशर्ते यदि वह सेवा में नियुक्ति से पहले मूल रूप से सावधिक पद के अतिरिक्त स्थायी पद पर कार्य करता था, सेवा में परिवीक्षा की अवधि में उसका वेतन मूल नियम 22-ख (1) के परन्तुके के अधीन विनियमित किया जाएगा। सेवा में नियुक्त किए गए अन्य व्यक्तियों के लिए वेतन और वेतन-वृद्धियां मूल नियमों के अनुसार विनियमित होंगी।

इस सेवा के अधिकारी भारतीय प्रशासन सेवा (पदोन्नति द्वारा नियुक्ति) विनियम, 1955 के अनुसार भारतीय प्रशासन सेवा के सीनियर वेतनमान के पदों पर पदोन्नति के पात्र न होंगे।

(च) इस सेवा के अधिकारियों पर पांडिचेरी सिविल सेवा नियमावली, 1967, तथा इन नियमों को कार्यान्वयन करने के लिए बनाए गए अन्य विनियम या प्रशासन द्वारा जारी किए गए आदेश लागू होंगे।

परिशिष्ट IV

उम्मीदवारों की शारीरिक परीक्षा के बारे में विनियम

दिष्टणी—1. ये विनियम उम्मीदवारों की सुविधा के लिए प्रकाशित किए जाते हैं और इस लिए प्रकाशित किए जाते हैं ताकि ये यह मुनिनियत कर सकें कि उनका शारीरिक स्तर अपेक्षित तक का है। इन अधिनियमों का यह भी ध्येय है कि स्वास्थ्य परीक्षकों को ऐसे उम्मीदवारों को जो अधिनियमों में निर्धारित न्यूनतम आवश्यकताओं को पूर्ण न करता हो स्वास्थ्य परीक्षकों द्वारा अनोखे घोषित न हो जाए मार्ग दर्श सकें। तथापि, यह जाते हुए कि उम्मीदवार इन अधिनियम में दी हुई शर्तों के अनुसार अरोग्य नहीं है स्वास्थ्य बोर्ड की आज्ञा होगी कि भारत सरकार को स्पष्ट रूप से कारण मिकारिश करें जिस से वह विना अमुविधा के सेवा में भर्ती किया जा सकता है।

2. तथापि, यह भी स्पष्टतया समझ लेता चाहिए कि स्वास्थ्य बोर्ड की रिपोर्ट पर विचार करने के पश्चात भारत सरकार को किसी भी उम्मीदवार को स्वीकार करने तथा अस्वीकार करने का पूर्ण अधिकार है।

विभिन्न सेवाओं का वर्गीकरण दो श्रेणियों “तकनीकी तथा अतकनीकी” के अधीन इस प्रकार से होगा :—

(क) तकनीकी

- (1) भारतीय रेलवे यातायात सेवा,
- (2) भारतीय पुलिस सेवा।

(ख) अतकनीकी

आई० ए० एस०, आई० एफ० एस०, आई० ए० और ए० एस०, भारतीय सीमा-शुल्क सेवा, भारतीय रेलवे लेखा सेवा के सभी अन्य पद भारतीय रक्षा लेखा सेवा, आयकर अधिकारी (श्रेणी I) सेवा, भारतीय डाक सेवा, सैनिक भूमि और छावनी सेवा I और II, के तकनीकी अधिकारी।

1. नियुक्ति के योग्य ठहराएँ जाने के लिए यह जरूरी है कि उम्मीदवार का मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य ठीक हो और उम्मीदवार में कोई ऐसा शारीरिक दोष न हो जिससे नियुक्ति के बाद दक्षतापूर्वक काम करने में बाधा पड़ने की सम्भावना हो।

2. (क) भारतीय (एंग्लो-इंडियन समेत) जाति के उम्मीदवारों को आयु, कद और छाती के घेर के परस्पर सम्बन्ध के बारे में मेडिकल बोर्ड के ऊपर ही यह बात छोड़ दी गई है कि वह उम्मीदवारों की परीक्षा में मार्ग-दर्शन के रूप में जो भी परस्पर सम्बन्ध के आंकड़े सभी अधिक उपयुक्त समझे, व्यवहार में लाए। यदि वजन, कद और छाती के घेर में विवरण हो तो जांच के लिए उम्मीदवार को अस्पताल में रखना चाहिए और छाती का पक्षसे-लेना चाहिए। ऐसा करने के बाद ही बोर्ड उम्मीदवार की योग्य अथवा आयोग्य करेगा।

(ख) निश्चित सेवाओं के लिए कद और छाती के घेर का कम-से-कम मान नीचे दिया जाता है जिस पर पूरा न उतरने पर उम्मीदवार को मंजूर नहीं किया जा सकता।

कद	घेर (पूरा फैलाव (फैला कर))	छाती का
----	-------------------------------	---------

(1)	(2)	(3)	(4)
(1) भारतीय रेलवे	152	84	5 (पुरुषों के लिए)
यातायात सेवा	150	79	5 (लियों के लिए)
(2) भारतीय पुलिस सेवा तथा दिल्ली अंडमान, नकोबार द्वीप समूह	165	84	5 (पुरुषों के लिए)
पुलिस सेवा श्रेणी-II	150	79	5 (लियों के लिए)

“गोरखा, गढ़वाली” असमी, नागालैंड आदिम जातियों आदि से सम्बन्धित उम्मीदवारों के मामले में न्यूनतम निर्धारित कद-स्थीरम्बाई में छोट दी जा सकेगी जिनकी औसत कद की लम्बाई दूसरों से छोटी होती है।

3. उम्मीदवार का कद निम्नलिखित विधि में नापा जाएगा :—

वह अपने जूते उतार देगा और उसे माप-दण्ड (स्टेंडर्ड) से इस प्रकार सटा कर खड़ा किया जाएगा कि उसके पांव आपस में जुड़े रहें और उसका वजन, सिवाए एड़ियों के पांवों की उंगलियों या किसी और इससे पर न पड़े। वह बिना अकड़े सीधा खड़ा होगा और उसकी एड़ियां, पिंडलियां, नितम्ब, और कन्धे माप-दण्ड के साथ लगे रहेंगे। उसकी ठोड़ी नीची रखी जाएगी ताकि सिर का स्तर (बैट्स आफ दिहौड़ लेवल) हारिजेटल बार (आड़ी छड़ि) के नीचे आ जाए। कद सेंटीमीटरों और आधे-सेंटीमीटरों में नापा जाएगा।

(4) उम्मीदवार की छाती नापने का तरीका इस प्रकार है :—

उसे इस भांति सीधा खड़ा किया जाएगा कि उसके पांव जुड़े हों और उसकी भुजाएँ सिर से ऊपर उठी हों। फीते को छाती के गिर्द हम तरह से लगाया जाएगा कि पीछे की ओर हसका ऊपरी किनारा असफलक (शोल्डर ब्लैड) के निम्न कोणों (इक्टीरियर-एंगल्स) से लगा रहे और यह फीते को छाती के गिर्द ले जाने पर उसी आड़े समतल (हारिजेटल प्लेन) में रहे। फिर भुजाओं की नीचे किया जाएगा और उन्हें शरीर के साथ लटका रहते दिया जाएगा किन्तु इस बात का ध्यान रखा जाएगा कि कन्धे ऊपर या पीछे की ओर न किए जाएँ जिससे कि फीता न हिले। अब उम्मीदवार को कही बार गहरा सांस लेने के लिए कहा जाएगा और छाती का अधिक-से-अधिक फैलाव गौर से नोट किया जाएगा और कम-से-कम और अधिक-से-अधिक फैलाव सेंटीमीटरों में रिकार्ड किया जाएगा, 84-89, 86-93, 5 आदि। नाप को रिकार्ड करने समय आधे सेंटीमीटर से कम के भिन्न फ्रेशन को नोट नहीं करना चाहिए।

नोट :—अन्तिम निर्णय लेने से पहले उम्मीदवारों की ऊंचाई और छाती दो बार नापनी चाहिए।

5. उम्मीदवार का वजन भी लिया जाएगा और उसका वजन किलोग्रामों में रिकार्ड किया जाएगा। आधे किलोग्राम में कम के फ्रेशन को नोट नहीं किया जाएगा।

6. (क) उम्मीदवार की नजर की जांच निम्नलिखित नियमों के अनुसार की जाएगी। प्रत्येक जांच का परिणाम रिकार्ड किया जाएगा :—

(ख) चश्मे के बिना नजर (नेकेड आई विजन) की कोई न्यूनतम सीमा (मिनिमम लिमिट) नहीं होगी, किन्तु प्रत्येक केस में मेडिकल बोर्ड या अन्य मेडिकल प्राधिकारी द्वारा इसे रिकार्ड किया जाएगा क्योंकि इससे आंख की हालत के बारे में मूल सूचना (वैसिक इन्फोर्मेशन) मिल जाएगी।

(ग) विभिन्न प्रकार की सेवाओं के लिए चम्पे के साथ और खरबी के बिना दूर और नजदीक की नजर का मानक निम्ननियत होगा।

सेवा की श्रेणी	दूर की नजर	नजदीक की नजर
	{ अच्छी खरब आंख आंख (ठीक की हुई दृष्टि)	{ अच्छी खरब आंख आंख (ठीक की हुई दृष्टि)
अ० भा० से०, अ० पु० से० तथा केन्द्रीय सेवाएँ		
वर्ग I और II		
(i) तकनीकी	6/6 या 6/9	6/12 जे० I जे० II
(ii) अतकनीकी भारतीय आर्डिनेंस	6/9 6/6	6/12 जे० I जे० II 6/18 जे० 1/1 जे० 2/2 अथवा
फैक्टरी सेवा	6/9	6/9

उपर्युक्त तकनीकी सेवाओं और लोक सुरक्षा से सम्बन्धित कोई अन्य सेवाओं के मध्य में (सिलिंडर मिलाकर) मायोपिया कुल—4.00 डी० (प्लस) से अधिक नहीं हो। हाइपरमेट्रोपिया की कुल (सिलिंडर मिलाकर) 4.00 डी० (प्लस) से अधिक नहीं होना चाहिए।

(घ) आयोगिता के प्रत्येक मामले में, फंडस परीक्षा की जानी चाहिए, और उसका परिणाम रिकार्ड किए जाने चाहिए। व्याधिकृत दशा मौजूद होने पर जो कि बढ़ सकती है और उम्मीदवार की दक्षता पर प्रभाव डाल सकती है, उसे अयोग्य घोषित किया जाए।

(इ) दृष्टि थेव—सभी सेवाओं के लिए सम्मुख विधि (कन्फन्टेशन मैथड) द्वारा दृष्टि थेव की जांच की जाएगी। जब ऐमी जांच का नतीजा असन्तोषजनक या संविधान हो तब दृष्टि-थेव को परिस्थापी (पैरोमीटर) पर निर्धारित किया जाना चाहिए।

(च) रत्तौधी (भाइट ब्लाइंडनेस)—साधारणतया रत्तौधी दो प्रकार की होती हैं, (1) विटामिन 'ए' की कमी होने के कारण और (2) रेटीना के शारीरिक रोग के कारण रेटीनीटिस पिंग मेन्टोसा होता है। जिसका समान्य कारण ऊपर बताई गई (1) की स्थिति में फंडस में प्रसामान्य होता है, साधारणतया छोटी आयु वाले व्यक्तियों में और कम खुराक पाने वाले व्यक्तियों में दिखाई देता है और अधिक माला में विटामिन 'ए' के खाने से ठीक हो जाता है। ऊपर बताई गई (2) की स्थिति में फंडस में खराबी होती है और अधिकांश मामलों में केवल फंडस की परीक्षा से ही स्थिति का पता चल जाता है। इस श्रेणी का रोगी प्रौढ़ होता है और खुराक की कमी से पीड़ित नहीं होता है। सरकार में ऊंची नौकरियों के लिए प्रयत्न करने वाले व्यक्ति इस वर्ग में आते हैं।

उपर्युक्त (1) और (2) दोनों के लिए अधेरा अनुकूलन परीक्षा से स्थिति का पता चल जाएगा। उपर्युक्त (2) के लिए विशेषतया जब फंडस खराब न हो तो इलेक्ट्रो-रेटीनोग्राफी किए जाने की आवश्यकता होती है। इन दोनों जांचों में (अधेरा अनुकूलन और रेटीनोग्राफी) में समय अधिक लगता है और विशेष प्रबन्ध और सामान की आवश्यकता होती है और इसलिए साधारण चैकिटिस्क जांच के लिए यह समय नहीं है। अकनीकी बातों को ध्यान में रखते हुए मन्त्रालय/विभाग को चाहिए कि वे बताएं कि रत्तौधी के लिए इन जांचों का करना अनिवार्य है या नहीं। यह इस बात पर निर्भर होगा कि पद से सम्बन्धित काम की आवश्यकता क्या है और जिन व्यक्तियों को सरकारी नौकरी दी जाने वाली उनकी ड्यूटी जिस तरह की होगी।

कलर विजन—रंगों के संबंध में नजर की जांच जरूरी है।

नीचे दी गई तालिका के अनुसार रंग का प्रत्यक्ष ज्ञान उच्चतर (हायर) और निम्नतर (लोअर) ग्रेडों ने होना चाहिए जो लैटर्न के द्वारक (एपर्चर) के आकार पर निर्भर होते हैं।

ग्रेड	रंग के प्रत्यक्ष ज्ञान	रंग के प्रत्यक्ष का उच्चतर	ज्ञान का निम्नतर
ग्रेड	ग्रेड	ग्रेड	ग्रेड
1. लैम्प और उम्मीद-वार के बीच की दूरी	16/	16/	
2. द्वारक (एपर्चर) का आकार	1. 3 मि०मीटर	13 मि० मीटर	
3. दिखाने का समय	5 मैकंड	5 मैकंड	

लाल संकेत, हरे संकेत और सफेद रंग को आसानी से और हिक्किचाहट के बिना पहचान लेना संतोषजनक कलर विजन है। इशिहारा की प्लेटों के इस्तेमाल को जिन्हें एड्रिज ग्रीन की लैटर्न जैसी उपर्युक्त लैटर्न और अच्छे रोशनी में दिखाया जाता है, कलर विजन की जांच करने के लिए विश्वसनीय समझा जाएगा। वैसे तो दोनों में से किसी भी एक जांच की साधारणतया पर्याप्त समझा जा सकता है। नेकिन सङ्क, रेल और हवाई यातायात से सम्बन्धित सेवाओं के लिए लैटर्न से जांच करना लाजमी है। शक वाले मामलों में जब उम्मीदवार को किसी एक जांच करने पर अयोग्य पाया जाए तो दोनों ही तरीकों से जांच करनी चाहिए। तथापि कलर विजन की जांच के लिए इशिहारा प्लेट और एड्रिज की हरी लालटेन दोनों का प्रयोग भारतीय रेल यातायात सेवा में उम्मीदवारों की नियुक्ति के लिए किया जाएगा। जहाँ तक अतकनीकी सेवाओं/पदों का सम्बन्ध है, सम्बन्धित मन्त्रालय/विभाग को

चिकित्सा बोर्ड को यह सूचना भेजनी होगी कि उम्मीदवार ऐसी सेवा के लिए है जिसके लिए कलर विजन की जांच आवश्यक है या नहीं।

(ज) दृष्टि की पकड़ से मिश्न आंख की अवस्थाएं
(आप्पूलर फंडीशन्स) :—

- (i) आंख की उस बीमारी को या बढ़नी हुई वर्तन त्रुटि (प्रोग्रेसिव रिफेक्टेव एरर) को, जिसके परिणामस्वरूप दृष्टि की पकड़ के कम होने की संभावना हो, अयोग्यता का कारण समझना चाहिए।
- (ii) भेंगापन (स्टिकबट) — तकनीकी सेवाओं, में, जहां द्विनेत्री (बाहनाकुलर) दृष्टि का होना अनिवार्य हो, दृष्टि की पकड़ निर्धारित स्तर की होने पर भी भेंगापन को अयोग्यता का कारण समझना चाहिए। यह रेलवे सुरक्षा दल के उम्मीदवारों के लिए भी लागू होगा। दृष्टि की पकड़ निर्धारित स्तर की होने पर भेंगापन को अन्य सेवाओं के लिए अयोग्यता के कारण नहीं समझना चाहिए।
- (iii) यदि किसी व्यक्ति की एक ही आंख हो अथवा यदि उसकी एक आंख की दृष्टि सामान्य हो और दूसरी आंख की मन्द दृष्टि हो अथवा उप-सामान्य दृष्टि हो, जिसका प्रायः प्रभाव यह होता है कि व्यक्ति में गहराई बोध हेतु त्रिविभितीय दृष्टि का अभाव होता है। इस प्रकार की दृष्टि अनेक सिविल पदों के लिए अवश्यक नहीं है। इस प्रकार के व्यक्तियों को चिकित्सा बोर्ड योग्य के रूप में अनुमति सिविल पदों के लिए अवश्यक नहीं है। इस प्रकार के व्यक्तियों को बशर्ते कि सामान्य आंख का
- (i) दूर की दृष्टि 6/6 और निकट की दृष्टि जें-1, चम्पा लगाकर अथवा उसके बिना, हो, बशर्ते कि दूर की दृष्टि के लिए किसी मेंरिडियन में त्रुटि 4 डायोट्रेरिज से अधिक न हो।
- (ii) दृष्टि का पूरा क्षेत्र हो,
- (iii) सामान्य वर्ण दृष्टि, जहां अपेक्षित हो।

बशर्ते कि बोर्ड का यह समाधान हो जाये कि उम्मीदवार प्रश्नाधीन विशिष्ट कार्य से संबंधित सभी कार्यकलापों का निष्पादन कर सकता है।

दृष्टि तीक्ष्णता संबंधी उपरोक्त छूट प्राप्त मानक “तकनीकी” रूप में वर्गीकृत पदों/सेवाओं के लिए उम्मीदवारों पर लागू नहीं होंगी। सम्बद्ध संवालय विभाग को चिकित्सा बोर्ड को यह सूचित करना होगा कि उम्मीदवार “तकनीकी” पद के लिए है अथवा नहीं।

(2) कॉनटैक्ट लेंस (Contact Lenses) — उम्मीदवार की स्वास्थ्य परीक्षा के समय कॉन्टैक्ट लैंस के प्रयोग की ओर नहीं होती; आंख की जांच करते समय यह आवश्यक है कि दूर की नजर के लिए टाइप किए हुए अधर 15 फुट से प्रकाशित हों।

7. ब्लड प्रेशर :—

ब्लड प्रेशर के सम्बन्ध में बोर्ड अपने निर्णय से काम लेगा। नामंत उच्चतम सिस्टालिक प्रेशर के आकलन की काम चलाऊ विधि नीचे दी जाती है :—

- (i) 15 से 25 वर्ष के व्यक्तियों में औस्त ब्लड प्रेशर लगभग 100 + आयु होता है।
- (ii) 25 वर्ष से ऊपर की आयु वाले व्यक्तियों में ब्लड प्रेशर के आकलन का सामान्य नियम यह है कि 110 में आधी आयु जोड़ दी जाए। यह तरीका बिल्कुल संतोषजनक दिखाई पड़ता है।

ध्यान दीजिए—सामान्य नियम के रूप में 140 से ऊपर के सिस्टालिक प्रेशर को और 90 से ऊपर के जायस्टालिक प्रेशर को संदिग्ध मान लेना चाहिए, और उम्मीदवार को योग्य या अयोग्य ठहराने के सम्बन्ध में अपनी अन्तिम राय देने से पहले बोर्ड को चाहिए कि उम्मीदवार को अस्पताल में रखें। अस्पताल में रखने की रिपोर्ट से यह पता लगता चाहिए कि घबराहट (एक्साइटमेंट) आदि के कारण ब्लड प्रेशर थोड़े समय रहने वाला है या इसका कारण कोई कार्यिक (अर्गेनिक बीमारी) है (ऐसे सभी केसों में हृदय की एक्स-रे और विद्युत हॉलोखी (इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफिक) परीक्षाएं और रक्त युरिया निकास (लोयरेंस) की जांच भी नेमी रूप से की जानी चाहिए। फिर भी उम्मीदवार के योग्य होने या न होने के बारे में अन्तिम फैसला केवल भाइकल बोर्ड ही करेगा।

ब्लड प्रेशर (रक्त वाष्ठ) लेने का तरीका

नियमत: पारेवाले दबमारी (मर्करी मेनोमीटर) किस्म का आला (इन्स्ट्रमेंट) इस्तेमाल कराना चाहिए। किसी किस्म के व्यायाम या घबराहट के बाद पन्द्रह मिनट तक रक्त दाब नहीं लेना चाहिए। रोगी बैठा या लेटा हो अर्थात् कि वह और विशेषकर उसकी भुजा शिथिल और आराम से हो। कुछ-कुछ हारिंटल स्थिति में रोगी के पाश्व पर भुजा को आराम से सहारा दिया जाता है। भुजा पर से कंधे तक कपड़े उतार देने चाहिए। कफ में से पूरी तरह हवा निकाल कर बीच की रवड़ को भुजा के अन्दर की ओर रख कर और इसके निचले किनारे को कोहनी के मोड़ से एक या दो इंच ऊपर करके लगाना चाहिए। इसके बाद कपड़े की पट्टी को फैला कर समान रूप से लपेटना चाहिए ताकि हवा भरने पर कोई हिस्सा फुल कर बाहर को न निकले।

कोहनी के मोड़ पर प्रगांड धमनी (ब्रेकिंग आर्टरी) को दबा-दबा कर तूँड़ा जाता है और तब इसके ऊपर बीचों-बीच स्टैक्सोप को हल्के से लगाया जाता है जो कफ के साथ न लगे।

कफ में लगभग 200 m.m Hg. हवा भरी जाती है और इसके बदल इसमें से धीरे-धीरे हवा निकाली जाती है। हूँकी श्रमिक धनि सुनाई पड़ने पर जिस स्तर पर पारे का कालम टिका होता है वह सिस्टालिक प्रेशर दर्शता है। जब और हवा निकाली जाएगी तो धनियां तेज सुनाई पड़ेंगी। जिस स्तर पर ये साफ और अच्छी सुनाई पड़ने वाली धनियां हूँकी दबी हुई-सी लुप्त प्राय हो जाएं, वह डायस्टालिक प्रेशर है। ब्लड प्रेशर काफी थोड़ी अवधि में ही नेता चाहिए क्योंकि कपल के लम्बे समय कादवाव रोगी के लिए क्षेत्रकार होता है और इसमें रीडिंग गलत हो जाता है। यदि दोबारा पड़नाल कर्नी जरूरी हो तो कफ में से पूरी हवा निकाल कर कुछ मिनट के बाद ही ऐसा किया जाए। (कभी-कभी कफ में से हवा निकालने पर एक निश्चित स्तर पर धनियां सुनाई पड़ती हैं, वाब गिरने पर वे गायब हो जाती हैं और निम्न स्तर पर पुनः प्रकट हो जाती हैं। इस “साइनेट गप” से रीडिंग में गलती हो सकती है।)

8. परीक्षक की उपस्थिति में किए गए मूल की परीक्षा की जानी चाहिये और परिणाम रिकॉर्ड किया जाना चाहिये। जब मेडिकल बोर्ड को किसी उम्मीदवार के मूल में रासायनिक जांच द्वारा शक्कार का पता चले तो बोर्ड इसके द्वारा सभी पहलुओं की परीक्षा करेगा और मधुमेह (डायाबीटीज) के द्वातक चिह्नों और लक्षणों को भी विशेष रूप से नोट करेगा। यदि बोर्ड उम्मीदवार को ग्लूकोज मेह (ग्लाइकोसुलिरआ) के सिवाय, अपेक्षित मेडिकल फिटनेस के स्टेंडर्ड के अनुरूप पाए तो वह उम्मीदवार को इस शर्त के मात्र फिट घोषित कर सकता है कि ग्लूकोज मेह अमधु-मेही (नान डायबेटिक) हो और बोर्ड केम को मेडिमिन के किसी ऐसे निर्दिष्ट विशेषज्ञ के पास भेजेगा जिसके पास अस्पताल और प्रयोगशाला की सुविधाएं हैं। मेडिकल विशेषज्ञ स्टैण्डर्ड ब्लड शुगर टालरेंस टेस्ट मरमेंट जो भी क्लिनिकल या लेबरेटरी परीक्षाएँ जरूरी समझेंगे करेगा और अपनी रिपोर्ट मेडिकल बोर्ड को भेज देगा जिस पर मेडिकल बोर्ड की ‘फिट’ या ‘अनफिट’ की अन्तिम राय आधारित होगी। द्वारे अवसर पर उम्मीदवार के लिये बोर्ड के समाने स्वयं उपस्थित होना जरूरी नहीं होगा। अधिक के प्रभाव को समाप्त करने के लिए यह जरूरी हो सकता है कि उम्मीदवार को कई दिन तक अस्पताल में पूरी देख-रेख में रखा जाए।

9. जो स्त्री उम्मीदवार जांच के फलस्वरूप 12 सप्ताह या उससे अधिक अवधि की गर्भवती पाई जाए उसे तब तक के लिए अस्थाई रूप से अयोग्य घोषित कर दिया जाए। जब तक उसकी गर्भावस्था समाप्त न हो जाए। गर्भावस्था के समाप्त होने के 6 सप्ताह बाद यदि वह पंजीकृत चिकित्सक के स्वस्थता प्रमाण पत्र प्रस्तुत कर देतो आरोग्य प्रमाण-पत्र के लिए उसकी फिर से जांच की जाए।

10. निम्नलिखित, अतिरिक्त आतों का प्रेक्षण करना चाहिए :—

(क) उम्मीदवार को दोनों कानों से अच्छा सुनाई पड़ा है या नहीं और कान की बीमारी का कोई चिह्न है या नहीं। यदि

कोई कान की खराबी हो तो इसकी परीक्षा कान विशेषज्ञ द्वारा की जानी चाहिए। यदि सुनने की खराबी का इलाज शल्य-क्रिया (आपरेशन) या हियरिंग एड के इस्तेमाल से हो सके तो उम्मीदवार को इस आधार पर आयोग्य घोषित नहीं किया जा सकता बशर्ते कि कान की बीमारी बढ़ने वाली न हो। रेलवे से वाखों के लिए यह बात लागू नहीं है।

(ख) उम्मीदवार बोलने में हक्कलाता है या नहीं।

(ग) उसके दांत अच्छी हालत में हैं या नहीं, और अच्छी तरह चबाने के लिए जरूरी होने पर नकली दांत लगे हैं या नहीं। (अच्छी तरह भरे हुए दांतों को ठीक समझा जाएगा)।

(घ) उसकी छाती की बनावट अच्छी है या नहीं और छाती काकी फैलनी है या नहीं तथा उसका विल और फेफड़े ठीक हैं या नहीं।

(ङ) उसे पेट की कोई बीमारी है या नहीं।

(च) उसे रेफ्चर (हार्निया या फटन) है या नहीं।

(छ) उसे हाड़ोसीन, बढ़ी हुई बेरिकोसीन बेरिकोज शिरा (बेन) या बवासीर है या नहीं।

(ज) उसकी शाखाओं, हाथों और पैरों की बनावट और विकास अच्छा है या नहीं और उसकी संचिया भली भाँति स्वतन्त्र रूप से हिलती हैं या नहीं।

(ज्ञ) उसे कोई चिरस्थायी स्वचा की बीमारी है या नहीं।

(ज्ञ) कोई मजान कुरचना या दोष है या नहीं।

(ट) उसमें किसी उग्र या जीर्ण बीमारी के निशान हैं या नहीं। जिन से कमज़ोर गठन का पता लगे।

(ठ) कारगर टीके के निशान हैं या नहीं।

(ट्ट) उसे कोई संचारी (कम्यूनिकेबल) रोग है या नहीं।

11. दिल और फेफड़ों की किसी ऐसी विलक्षण का पता लगाने के लिये साधारण शारीरिक परीक्षा से ज्ञात न हो, सभी केतों में नेमी रूप से छाती की एकसेरे परीक्षा की जानी चाहिए।

जब कोई दोष मिले तो उसे प्रमाण पत्र में अवश्य ही नोट किया जाए। मेडिकल परीक्षक को अपनी राय लिख देनी चाहिए कि उम्मीदवार में अपेक्षित वक्षतापूर्ण ड्यूटी में इससे बाधा पड़ने की संभावना है या नहीं।

12. जहां तक मिली जुली प्रतियोगिता परीक्षा के उम्मीदवार का सम्बन्ध है, उसके लिए ऊपर पैरा 11 के नीचे की टिप्पणी में बताई गई अपील करने की कार्यविधि लागू नहीं होती। इस परीक्षा के उम्मीदवारों की अपील की शुल्क 50 रु. भारत सरकार के इस सम्बन्ध में निर्धारित ढंग से जमा करना होता है। यह कीस केवल उन उम्मीदवारों को वापस मिलेगी जो अपीलीय स्वास्थ्य परीक्षा बोर्ड द्वारा आरोग्य घोषित किए जाएंगे। शेष दूसरों के मामलों में यह जब्त कर ली जाएगी। यदि उम्मीदवार चाहे तो अपने आरोग्य होने के दावे के समर्थन में स्वस्थता प्रमाण पत्र संलग्न कर सकते हैं। उम्मीदवारों को प्रथम स्वास्थ्य परीक्षा बोर्ड द्वारा भेजे गए निर्णय के 21 दिन के अन्दर अपीलें पेश करनी चाहिए। अन्यथा दूसरी स्वास्थ्य परीक्षा के लिए अपीलीय स्वास्थ्य परीक्षा बोर्ड द्वारा दूसरी स्वास्थ्य परीक्षा केवल नई विली में ही होगी और इसका खर्च उम्मीदवारों को ही देना पड़ेगा। दूसरी स्वास्थ्य परीक्षा के सम्बन्ध में की जाने वाली यात्राओं के लिए कोई यात्रा-भत्ता या दैनिक-भत्ता नहीं दिया जाएगा। अपीलों के निर्धारित शुल्क के साथ प्राप्त होने पर अपीलीय स्वास्थ्य परीक्षा बोर्ड द्वारा की जाने वाली स्वास्थ्य परीक्षा के प्रबन्ध के लिए मंत्री मंडल (कार्मिक विभाग) द्वारा आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

मैडिकल बोर्ड की रिपोर्ट

मेडिकल परीक्षक के मार्गदर्शन के लिए निम्नलिखित सूचना दी जाती है :—

1. शारीरिक योग्यता (फिटनेस) के लिए अपनाएं जाने वाले स्टेंण्डर्ड में संबंधित उम्मीदवार की आयु और सेवा-काल (यदि हो) के लिए उचित गुजाइँकरणी चाहिए।

किसी ऐसे व्यक्ति को पब्लिक सर्विस में भर्ती के लिए योग्य नहीं समझा जाएगा जिसके बारे में यथास्थिति सरकार या नियुक्ति प्राधिकारी (अपांटिंग अथारिटी) को यह तसली नहीं होगी कि उसे ऐसी कोई बीमारी या शारीरिक दुर्बलता (बांडिली इनफर्मिटी) नहीं है जिससे वह उस सेवा के लिए अयोग्य हो या उसके अयोग्य होने की संभावना हो।

यह बात समझ लेनी चाहिए कि योग्यता का प्रश्न भविष्य से भी उतना ही सम्बद्ध है जितना वर्तमान से है और मेडिकल परीक्षा का एक मुख्य उद्देश्य निरन्तर कारगर सेवा प्राप्त करना और स्थायी नियुक्ति के उम्मीदवार के मामले में अकाल मृत्यु होने पर समय-पूर्व वेशन या अदायगियां को रोकना है। साथ ही यह भी नोट किया जाए कि यहां प्रश्न केवल निरन्तर कारगर सेवा की संभावना का है और उम्मीदवार को अस्वीकृत करने की सलाह उस हालत में नहीं दी जानी चाहिए जबकि उसमें कोई ऐसा दोष हो जो केवल बहुत कम स्थितियों में निरन्तर कारगर सेवा में बाधक पाया गया हो।

महिला उम्मीदवार की परीक्षा के लिए किसी लेडी डाक्टर को मेडिकल बोर्ड के सदस्य के रूप में सहयोगित किया जाएगा।

भारतीय रक्षा लेद्वा सेवा (इंडियन इफेंस अकाउंट्स सर्विस) के उम्मीदवारों को भारत में और भारत से बाहर क्षेत्र सेवा (फील्ड सर्विस) करनी होगी। ऐसे उम्मीदवार के मामले में मेडिकल बोर्ड को इस बारे में अपनी राय विशेष रूप से रिकार्ड करनी चाहिए कि उम्मीदवार क्षेत्र सेवा (फील्ड सर्विस) के योग्य है या नहीं।

डाक्टरी बोर्ड की रिपोर्ट को गोपनीय रखना चाहिए।

ऐसे मामलों में जब कि कोई उम्मीदवार सरकारी सेवा में नियुक्ति के लिए अयोग्य करार दिया जाता है तो भोटे तौर पर उसके अस्वीकार किए जाने के आधार उम्मीदवार को बताए जा सकते हैं किन्तु डाक्टरी बोर्ड ने जो खराबी बताई हो उनका विस्तृत व्यौरा नहीं दिया जा सकता।

ऐसे मामलों में जहां डाक्टरी बोर्ड का यह विचार हो कि सरकारी सेवा के लिए उम्मीदवार को अयोग्य बनाने वाली छोटी-मोटी खराबी चिकित्सा (औषध या शल्य) द्वारा दूर हो सकती है वहां डाक्टरी बोर्ड द्वारा इस आशय का कथन रिकार्ड किया जाना चाहिए। नियुक्त प्राधिकारी द्वारा इस बारे में उम्मीदवार को बोर्ड की राय सूचित किए जाने में कोई आपत्ति नहीं है और जब वह खराबी दूर हो जाए तो दूसरे डाक्टरी बोर्ड के सामने उस व्यक्ति को उपस्थित होने के लिए कहने में संबंधित प्राधिकारी स्वतंत्र हैं।

यदि कोई उम्मीदवार स्थाई तौर से अयोग्य करार दिया जाए तो दुबारा परीक्षा की अवधि साधारणतया कम-से-कम छः महीने से कम नहीं होनी चाहिए। मिश्रित अवधि के बाद जब दुबारा परीक्षा हो तो ऐसे उम्मीदवारों को और आगे की अवधि के लिए अस्थायी तौर पर अयोग्य घोषित न कर नियुक्ति के लिए उनकी योग्यता के सम्बन्ध में अथवा वे इस नियुक्ति के लिए अयोग्य हैं ऐसा निर्णय अतिम रूप से दिया जाना चाहिए।

(क) उम्मीदवार का कथन और घोषणा

अपनी मेडिकल परीक्षा से पूर्व उम्मीदवार को निम्नलिखित अपेक्षित स्टेटमेंट देना चाहिए और उसके साथ लगी हुई घोषणा (डिफलेरेशन) पर हस्ताक्षर करने चाहिए। नीचे दिए गए नोट में उल्लिखित चेतावनी की ओर उम्मीदवार को विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए।

1. अपना पूरा नाम लिखे
(साफ अक्षरों में)

2. अपनी आयु और जन्म स्थान बताएं

“2(क) क्या आप गोरखा, गढ़वाली, असमी, नागलैण्ड आदिम जातियों आदि से सम्बन्धित हैं जिनका औसत कद दूसरों से छोटा होता है। ‘हाँ’ या ‘नहीं’ में उत्तर दीजिए और यदि उत्तर ‘हाँ’ में है तो उस जाति का नाम बताइए।”

3. (क) क्या आपको कभी चेचक, रुक-रुक कर होने वाला या कोई दूसरा बुखार, ग्रंथियां (लैंग्वस) का बक्ता या इनमें पीप पड़ना, थूक में खून आना, दमा, दिल की बीमारी, फेफड़े की बीमारी मूर्छा के दौरे, रूमैटिज्स, एंपेंडिसाइटिस हुआ है ?

अथवा

(ख) दूसरी कोई भी बीमारी या दुर्घटना, जिसके कारण शय्या पर लेटे रहता पड़ा हो और जिसका मेडिकल या सर्जिकल इलाज किया गया हो, हुई है?

यदि पिता जीवित हो तो उनकी आयु और स्वास्थ्य की अवस्था

यदि पिता की मृत्यु हो चुकी हो तो मृत्यु के समय पिता की आयु और मृत्यु का कारण

4. आपको चेचक आदि का अन्तिम टीका कब लगा था?
5. क्या आपको अधिक काम या किसी दूसरे कारण से किसी किस्म की अधीरता (नर्वसनेस) हुई है?
6. अपने परिवार के सम्बन्ध में निम्नलिखित व्यंग दें।

आपके किनने भाई जीवित हैं, उनकी आयु और स्वास्थ्य की अवस्था

आपके किनने भाईयों की मृत्यु, हो चुकी है, मृत्यु के समय उनकी आयु और मृत्यु का कारण

यदि माता जीवित हो तो उनकी आयु और स्वास्थ्य की अवस्था

यदि माता की मृत्यु हो चुकी हो तो मृत्यु के समय उसकी आयु और मृत्यु का कारण

आपकी किननी बहनें जीवित हैं, उनकी आयु और स्वास्थ्य की अवस्था

आपकी किननी बहनों की मृत्यु हो चुकी है, मृत्यु के समय उनकी आयु और मृत्यु का कारण

7. क्या इससे पहले किसी मेडिकल बोर्ड ने आपकी परीक्षा की है?

8. यदि ऊपर के प्रश्न का उत्तर 'हाँ' हो तो वताइए, किस सेवा/सेवाओं के लिए आपकी परीक्षा की गई थी?

9. परीक्षा लेने वाला प्राधिकारी कौन था?

10. कब और कहाँ मेडिकल का परिणाम

11. मेडिकल बोर्ड की परीक्षा का परिणाम यदि आपको बताया गया हो अथवा आपको मालूम हो।

मैं घोषित करता हूँ कि जहाँ सक मेरा विश्वास है, ऊपर दिए गए सभी जवाब सही और ठीक हैं।

उम्मीदवार के हस्ताक्षर

मेरे मामने हस्ताक्षर किए।

बोर्ड के चेयरमैन के हस्ताक्षर

नोट—उपर्युक्त कथन की यथार्थता के लिए उम्मीदवार जिम्मेदार होगा। जिन बूझकर किसी सूचना को छपाने से वह नियुक्त खो देते की जोखिम लेगा और यदि वह नियुक्त हो भी जाये तो वार्धक्य निवृत्ति भत्ता (सुपरएनुएशन अलाउंस) या उपदान (प्रेन्चूटी) के सभी दावों से हाथ धो देंगा।

(ख) की शारीरिक परीक्षा की/ मेडिकल बोर्ड की रिपोर्ट

1. सामान्य विकास: अच्छा . . . बीच का . . . कम . . . पोषण: पतला औसत मोटा

कद (जुते उतार कर) बजन
अत्युत्तम बजन कब था?
बजन में कोई हाल ही में हुआ परिवर्तन
तापमान
छाती का घेर

(1) पूरा सांस खींचने पर
(2) पूरा सांस निकालने पर
2. त्वचा—कोई जाहिरी बीमारी
3. नेत्र
(1) कोई बीमारी
(2) रत्नधी
(3) क्लर विजन का दोष
(4) दृष्टि धेत्र (फील्ड आफ विजन)
(5) दृष्टि की पकड़ (विजुअल एक्सिवटी)

दृष्टि की पकड़ चश्मे के बिना चश्मे से चश्मे की पावर

गोल मिलि० अक्ष

दूर की नजर दा० ने०

वा० ने०

पास की नजर वा० ने०
वा० ने०

हाइपरमेट्रोपिया दा० ने०
(व्यक्त) वा० ने०

4. कान : निरीक्षण.....सुनना :
दायां कान.....बांया कान.....
5. ग्रंथियोंथाइराइड.....
6. दांतों की हालत.....
7. श्वसन तंत्र (रेस्पिरेटरी सिस्टम) क्या शारीरिक परीक्षा करने पर सांस के अंगों में किसी विलक्षणता का पता लगा है ? यदि पता लगा है तो विलक्षणता का पूरा व्यौरा है ?
8. परिचरण तंत्र (सर्क्यूलेरटी सिस्टम)
- (क) दृढ़य : कोई आंगिक क्षति (आग्निक लीजन) ?
.....
गति (रेट) :
खड़े होने पर :
- 25 बार कुदाए जाने के बाद.....
कुदाए जाने के 2 मिनट बाद.....
- (ख) बल्ड प्रेशर.....सिस्टालिक.....
आयस्टालिक.....
.....
9. उदर (पेट) : बेर.....दाढ़ वेदना (टैंडरनेस)
हृनिया.....
- (क) दवा कर मालूम पड़ना, जिगर.....तिल्ली....
गुड़.....ट्यूमर.....
- (ख) बवासीर के मस्सेफिस्कुला.....
10. तांकिक तंत्र (नर्वस सिस्टम) तांकिक या मानसिक अशक्तता का संकेत
11. घाल तंत्र (लोकोमोटर सिस्टम)
कोई विलक्षणता.....
12. जनन-मूत्र तंत्र (जेनिटो यूरिनरी सिस्टम) /हाइ-इंसोल वेरिकोमील आदि का कोई संकेत ।
मूत्र परीक्षा :
(क) कैसा दिखाई पड़ता है ?
(ख) स्पेमिफिक ग्रेविटी (अपेक्षित गुरुत्व)
(ग) एल्व्यमेन
(घ) शक्कर
(ङ) कास्ट
(च) केशिकाएं (सेल्स)
13. छाती की एक्स-रे परीक्षा की रिपोर्ट

14. क्या उम्मीदवार के स्वास्थ्य में कोई ऐसी बात है जिसमें वह उस सेवा को दक्षतापूर्वक निभाने के लिए अयोग्य ही मानता है जिसके लिए वह उम्मीदवार है ?

नोट :—महिला उम्मीदवार के मामले में, यदि यह पाया जाता है कि वह 12 सप्ताह की अवस्थिति अधवा उससे अधिक और गम्भीरी है तो उसे अस्थायी रूप से अयोग्य घोषित किया जाना चाहिए, देखें विनियम 9।

15. (i) उन सेवाओं का उल्लेख करें जिनके लिए उम्मीदवार की परीक्षा की गई :—
(क) भारतीय प्रणामनिक सेवा और भारतीय विदेश सेवा।
(ख) भारतीय पुलिस सेवा और दिल्ली और हिमाचल प्रदेश पुलिस सेवा,
(ग) केन्द्रीय सेवाएं श्रेणी I से II
(ii) क्या वह निम्नलिखित सेवाओं में दक्षतापूर्वक और निरन्तर काम करने के लिए सब तरह से योग्य पाया गया है :—
(क) भारतीय प्रणामनिक सेवा और भारतीय विदेश सेवा।
(ख) भारतीय पुलिस सेवा और दिल्ली और हिमाचल प्रदेश पुलिस सेवा, मणिपुर पुलिस सेवा (कद, छाती का घेर, नजर, रंग दिखाई न देना और चाल, खास तौर से देखें)।
(ग) भारतीय रेलवे के परिवहन (यातायात) और वाणिज्य विभाग (कद, छाती, नजर, रंग दिखाई न देना, खास तौर से देखें)।
(घ) दूसरी केन्द्रीय सेवाएं श्रेणी I/II
(iii) क्या उम्मीदवार धोत्र सेवा (फील्ड सर्विस) के लिए योग्य है ?
नोट—बोर्ड को अपना जांच परिणाम निम्नलिखित तीन वर्गों में से किसी एक वर्ग में रिकार्ड करना चाहिए।
(i) योग्य (फिट)
(ii) अयोग्य (अनफिट) जिसका कारण.....
(iii) अस्थायी रूप से अयोग्य, जिसका कारण.....
स्थान.....अध्यक्ष (प्रेसिडेंट).....
तारीख.....सदस्य.....
सदस्य.....

विधि और न्याय मंत्रालय

विधायी विभाग

नई दिल्ली, दिनांक 10 फरवरी 1972

सं० एफ० 22/4/69-पत्रि० (प्रशा०) :—भारत सरकार ने विधि और न्याय मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति की सिफारिश पर विनिश्चय किया है कि —

(i) हिन्दी भाषी क्षेत्रों के विश्वविद्यालयों की एन०एन०वी० की कक्षाओं में, और

(ii) 'हिन्दी भाषी क्षेत्रों' के न्यायालयों में विधि-व्यवसाय करने वाले विधिवेत्ताओं के लिए,

हिन्दी भाषा में पाठ्य-पुस्तकों या निर्देश पुस्तकों के रूप में उपयोग के लिए मानक विधि पुस्तक निखारने, उनका अनुवाद करने और उनके प्रकाशन के लिए एक स्कीम प्रारम्भ की जाए।

2. स्कीम की मुख्य बातें इस प्रकार हैं :—

(i) हिन्दी भाषा में लिखी गई उन सर्वोत्तम विधि पुस्तकों पर पारितोषिक प्रदान करने की पढ़नि प्रारम्भ करना जो या तो पहले ही से प्रकाशित की जा चुकी हों या जो किसी कलेंडर वर्ष के दौरान प्रकाशित की जाने के लिए प्रस्थापित हों;

(ii) संविदा के आधार पर प्रमुख लेखकों से जुने गए विषयों पर हिन्दी भाषा में मूल विधि-पुस्तकों निखारने के लिए विशेष समनुदेशन ; और

(iii) चुनी गई उन विधि पुस्तकों का जिन्होंने उनमें चर्चित विषयों पर उच्च कोटि का स्थान प्राप्त कर लिया है, हिन्दी भाषा में अनुवाद करना।

3. यह भी विनिश्चय किया गया है कि स्कीम के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए सरकार को सलाह देने के लिए एक मूल्यांकन समिति का गठन किया जाए। मूल्यांकन समिति की संरचना, उसके कृत्य, उसकी अवधि आदि इस प्रकार होगी :

(क) संरचना

(i) उच्चतम न्यायालय या भारत के किसी उच्चतर न्यायालय का आमीन या ऐवा निवृत्त न्यायाधीश जो केन्द्रीय सरकार द्वारा नामनिर्देशित किया जाएगा— अध्यक्ष

(ii) विधि और न्याय मंत्रालय के विधायी विभाग का सचिव — सदस्य

(iii) उच्चतम न्यायालय का अधिवक्ता जो केन्द्रीय सरकार द्वारा नामनिर्देशित किया जाएगा और जिसे हिन्दी का अच्छा ज्ञान होगा— सदस्य

(iv) राजभाषा (विधायी) आयोग का सदस्य जो केन्द्रीय सरकार द्वारा आयोग के अध्यक्ष की परम्परा से नामनिर्देशित किया जाएगा— सदस्य

(v) हिन्दी भाषी राज्यों के विश्वविद्यालयों के विधि शास्त्राध्यक्षों, उन्हीं राज्यों के विधि महाविद्यालयों के प्रधानाचार्यों

ऑरेसे विश्वविद्यालयों में विधि-विषय पढ़ाने वाले प्राचार्यों की सूची में से केन्द्रीय सरकार द्वारा नामनिर्देशित छह व्यक्ति—

सदस्य

(vi) विधि और न्याय मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति का सचिव—

सदस्य
(वह समिति का आयोजक द्वारा) ।

(द) कृत्य

(i) पारितोषिक प्रदान करने के लिए किसी कलेंडर वर्ष के दौरान हिन्दी भाषा में लिखी गई सर्वोत्तम विधि पुस्तकों का चयन करना और उनके सम्बन्ध में सिफारिश करना;

(ii) ऐसे सक्षम लेखकों के, जिन्हें चुने गए विषयों पर हिन्दी में मूल विधि पुस्तकों लिखने के लिए संविदा पर विशेष रूप से समनुदेशित किया जा सके, चयन के सम्बन्ध में विधि और न्याय मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति की सहायता करना और उसे सलाह देना तथा ऐसे लेखकों द्वारा भेजी गई पाण्डुलिपि का मूल्यांकन करना;

(iii) उन विधि पुस्तकों का चयन करना, जिन्होंने उनमें चर्चित विषयों पर उच्च कोटि का स्थान प्राप्त कर लिया है, और ऐसे यथायोग्य व्यक्तियों का चयन करना और उनके बारे में सिफारिश करना जिन्हें उन पुस्तकों का हिन्दी भाषा में अनुवाद करने का काम सौंपा जा सके और इस प्रकार अनुवादित पुस्तकों का मूल्यांकन करना ; और

(iv) ऊपर वर्णित स्कीम से सम्बन्धित ऐसे अन्य कृत्यों का पालन करना जो केन्द्रीय सरकार द्वारा समय-समय पर उसे सौंपे जा सके।

(e) अवधि

समिति की अवधि प्रथमतः दो वर्ष के लिए होगी।

(f) उप समितियां

मूल्यांकन समिति उतनी उप-समितियां गठित कर सकेगी जिननी वह अपने कृत्यों का निर्वहन करने के लिए आवश्यक समझे।

(g) गणपूर्ति

मूल्यांकन समिति के अधिवेशनों की गणपूर्ति पांच मे कम नहीं होगी।

(h) अधिवेशन और प्रक्रिया

समिति अपने कृत्यों का पालन करने के लिए स्वयं अपने लिए प्रक्रिया निर्धारित कर सकेगी। समिति और उसकी उप-समितियां जिननी बार आवश्यक हों उतनी बार अधिवेशन कर सकेंगी।

(i) मूल्यालय

समिति का मूल्यालय नई दिल्ली में होगा।

4. समिति के बे सदस्य, जो सरकारी सेवक हैं अपनी सदस्यता अपने पदों के आधार पर धारण करेंगे और उनके पद धारण न किए रहने पर उनके पद-उत्तरवर्ती स्वतः ही समिति के सदस्य हो जाएंगे।

ममिति के अणासकीय मदस्यों को यात्रा-भत्ते और मंहगाई-भत्ते की मंजूरी, पूरक नियम 190 के उपबन्धों और उसके अधीन भारत सरकार द्वारा समय-समय पर जारी किए गए आदेशों के अनुसार की जाएगी।

5. उपर्युक्त पैरा 2 में वर्णित स्कीम के ब्लौरों के सम्बन्ध में अनुदेश अलग से प्रकाशित किए जाएंगे।

आवेदन

आदेश किया जाता है कि संकल्प की एक प्रति सभी राज्यों मरकारों/संघ राज्यक्षेत्रों और भारत सरकार के सभी मंत्रालयों और विभागों को भेजी जाएँ।

यह और भी आदेश किया जाता है कि सर्वेमाधारण की जानकारी के लिए संकल्प भारत के गजपत्र में प्रकाशित किया जाएँ।

एन० डी० पी० नाम्बूदिरीपाद,
संयुक्त सचिव।

स्वास्थ्य और परिवार नियोजन मंत्रालय

(परिवार नियोजन विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 7 फरवरी, 1972

मं० 3-42/71-नीति:—यह निर्णय किया गया है कि सुख्य प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों के अलावा अन्य जगहों पर परिवार कल्याण नियोजन केन्द्रों की स्थापना के लिए कुछ राज्य सरकारों के प्रस्ताव के सम्बन्ध में जांच करने और सिफारिशें देने के लिए स्वास्थ्य और परिवार नियोजन मंत्रालय के संकल्प संख्या 5-8 (28)/69-नीति, दिनांक 28 अक्टूबर, 1971 के अन्तर्गत गठित ममिति अपनी रिपोर्ट 31 जनवरी, 1972 के बजाय 29 फरवरी, 1972 को प्रस्तुत कर सकती है।

आवेदन

आदेश है कि यह संकल्प आम सूचना के लिए भारत के गजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

आर० एन० मधोक,
अपर सचिव।

कृषि मंत्रालय

कृषि विभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
नई दिल्ली, 7 दिनांक 4 फरवरी 1972

मं० 34 (4)/71-सी० डी० प्र००:—भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के नियम 34 (3) और 34 (5) के उपबन्धों के अधीन, परिषद के अध्यक्ष (कृषि मंत्री) ने निम्नलिखित को प्रत्येक के समक्ष निर्दिष्ट अवधि के लिये भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के शामी-निकाय का सदस्य महर्ष मनोनीत करते हैं:—

1. डा० ए० आर० गोपालआयंगर अक्टूबर 61 से 4 अगस्त 72 तक सेवानिवृत्ति विज्ञानी,
भारतीय कृषि अनुसंधान
केन्द्र एवं सलाहकार।

परमाणु शक्ति विभाग,
ट्रॉय, बम्बई-85।

2. डा० ए० ए० स० पेटल निदेशक, पटेल चेस्ट इंस-
टीट्यूट दिल्ली विश्व-
विद्यालय, दिल्ली।
3. श्री अवधीश चन्द्र मिह, मदस्य, लोक सभा,
120, साऊथ एवेन्यु,
दिल्ली-11।

म० ल० ग्राम उपसचिव

शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय

(शिक्षा विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 2 फरवरी 1972

संकल्प

विषय:—अखिल भारतीय तकनीकी परिषद की स्थापना।

मंदर्भ:—संकल्प सं० एफ० 16-10/44-ई०-III दिनांक 30 नवम्बर, 45।

सं० एफ० 1-1/72-टी०-2—उपर्युक्त संकल्प में निम्नलिखित संशोधन किया जायगा:—

परिषद के गठन के बारे में संकल्प के पैरा-3 में (क) “अध्यक्ष” (ख) “उपाध्यक्ष” के बाद के केन्द्रीय प्रशासन के शिक्षा और समाज कल्याण राज्य मंत्री जोड़े।
(ख) से (फ) को (ग) से (ब) के रूप में उत्तरवर्ती सभी प्रविष्टियों को पुनः नम्बर दिया जाये।

संकल्प के पैरा 4 के पश्चात “उपाध्यक्ष उन सभी कार्यों का निष्पादन करेंगे, जो उन्हें सभ्य समय पर अध्यक्ष द्वारा सौंपे जायेंगे।

आदेश दिया जाता है कि संशोधन की एक एक प्रति सभी राज्य सरकारों, संघ शासित प्रशासनों, भारत सरकार के सभी मंत्रालयों को भेजी जाये।

यह भी आदेश दिया जाता है कि संशोधन को भारत के राजपत्र में सूचनार्थ प्रकाशित किया जाये।

एल० एम० चन्द्राकांत
शिक्षा सलाहकार (तक)

(समाज कल्याण विभाग)

नई दिल्ली-1, दिनांक 14 फरवरी, 1972

संकल्प

सं० 20-14/67-ए० डबलू-2—निम्नलिखित को इस विभाग के संकल्प संख्या 20-14/67-ए० डबलू-2 दिनांक 22 सितम्बर, 1971 के अधीन घटित की गई भारत में स्थियों की हैसियत से संबंध ममिति के सदस्यों के रूप में मनोनीत किया जाता है:

1. श्रीमति उमिला हकदार।
2. श्रीमति मीना स्वामीनाथन।
3. श्रीमति लीला द्वे।

अन्य शर्तें वही हैं।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि उक्त मंकल्प को माधारण सूचना के लिये भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

पी० पी० आई० वैद्यानाथन, अपर सचिव

रेल भवानस्थ

(रेलवे बोर्ड)

नई दिल्ली, दिनांक 17 फरवरी 1972

सं० 71/आर० ई०/161/9—उत्तर रेलवे के निम्नलिखित बांड पर पड़ने वाली रेलवे लाइनों तथा परिसरों के सभी उपयोग-कर्त्ताओं की आम जानकारी के लिये एतद्वारा अधिसूचित किया जाता

CABINET SECRETARIAT
(Department of Personnel)

RULES

New Delhi-1, the 4th March 1972

No. 20/1/72-AIS(1).—The rules for a combined competitive examination to be held, by the Union Public Service Commission in 1972, for the purpose of filling vacancies in the following services are with the concurrence of the Ministries concerned and the Comptroller and Auditor General of India in respect of the Indian Audit and Accounts Service, published for general information :—

Category I

- (i) The Indian Administrative Service, and
- (ii) The Indian Foreign Service.

Category II

- (i) The Indian Police Service, and
- (ii) The Delhi, and Andaman & Nicobar Islands Police Service, Class II.

Category III

(a) Class I Services :

- (i) The Central Information Service, (Grade II) Class I,
- (ii) The Indian Audit & Accounts Service,
- (iii) The Indian Customs and Central Excise Service,
- (iv) The Indian Defence Accounts Service,
- (v) The Indian Income-tax Service (Class I),
- (vi) The Indian Ordnance Factories Service, Class I (Assistant Managers—Non-Technical),
- (vii) The Indian Postal Service,
- (viii) The Indian Railway Accounts Service,
- (ix) The Indian Railway Traffic Service, and
- (x) The Military Lands and Cantonments Service, Class I.

(b) Class II Services :

- (i) The Central Secretariat Service, Section Officers, Grade, Class II,
- (ii) The Armed Forces Headquarters Civil Service, Assistant Civilian staff officers' Grade, Class II,
- (iii) The Customs Appraisers' Service, Class II,
- (iv) The Delhi, and Andaman & Nicobar Islands Civil Service, Class II,
- (v) The Goa, Daman and Diu Civil Service, Class II,
- (vi) The Pondicherry Civil Service, Class II, and
- (vii) The Military Lands and Cantonments Service, Class II.

है कि टूडला स्टेशन पर कि० मी० 1245/895. 80 से कि० मी० 1250/660. 75 तक (टूडला याँड़ सहित) 25,000 बोल्ट, 50 साइक्ल ए० सी० ऊपरी कर्षण तारों से 21 फरवरी, 1972 को और उसके बाद विजली संचारित कर दी जायेगी। उसी तारीख को और उसी तारीख से ऊपरी कर्षण तार हर समय विजली युक्त माने जायेंगे। अतः कोई भी अधिकृत व्यक्ति न तो उनके पास जाये और न उनके सामिध्य में काम करे।

वेद प्रकाश साहनी, सचिव
रेलवे बोर्ड

A candidate may compete in respect of any one or more of the categories of Services mentioned above (Please see Rule 4). He should clearly indicate in his application the Services covered by the category/categories concerned for which he wishes to be considered in the order of preference.

No request for alteration in the preferences indicated by a candidate in respect of Services covered by the category/categories for which he is competing would be considered unless the request for such alteration is received in the Cabinet Secretariat (Department of Personnel) within 10 days of the date of announcement of final result of the examination.

A candidate who, on the results of the written part of the examination, qualifies for the personality test for the Indian Administrative Service/Indian Police Service will be separately asked to communicate to the Cabinet Secretariat (Department of Personnel) the order of preference in which he would like to be considered for allotment to various States.

2. The number of vacancies to be filled on the results of the examination will be specified in the Notice issued by the Commission. Reservations will be made for candidates belong to the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes in respect of vacancies as may be fixed by the Government.

Scheduled Castes/Tribes mean any of the Castes/Tribes mentioned in the Constitution (Scheduled Castes) Order, 1950, the Constitution (Scheduled Castes) (Part C States) Order, 1951, the Constitution (Scheduled Tribes) Order 1950 and the Constitution (Scheduled Tribes) (Part C States) Order 1951 as amended by the Scheduled Castes and Scheduled Tribes Lists (Modification) Order 1956 read with the Bombay Reorganisation Act, 1960 and the Punjab Reorganisation Act, 1966; the Constitution (Jammu and Kashmir) Scheduled Castes Order, 1956, the Constitution (Andaman and Nicobar Islands) Scheduled Tribes Order 1959, the Constitution (Dadra and Nagar Haveli) Scheduled Castes 1962, the Constitution (Dadra and Nagar Haveli) Scheduled Tribes Order, 1962, the Constitution (Pondicherry) Scheduled Castes Order, 1964, the Constitution (Scheduled Tribes) (Uttar Pradesh) Order 1967, the Constitution (Goa, Daman and Diu) Scheduled Castes Order, 1968, the Constitution (Goa, Daman and Diu) Scheduled Tribes Order, 1968, and the Constitution (Nagaland), Scheduled Tribes Order, 1970.

3. The examination will be conducted by the Union Public Service Commission in the manner prescribed in Appendix II to these Rules.

The dates on which and the places at which the examination will be held shall be fixed by the Commission.

4. The combined competitive examination for recruitment to I.A.S. etc. is to be treated as comprising three separate and distinct examinations for three categories of Services viz., (I) I.A.S. and I.F.S. (II) I.P.S. and

Delhi, and Andaman & Nicobar Islands Police Service, and (III), Central Services, Delhi, and Andaman & Nicobar Islands Civil Service, Goa, Daman and Diu Civil Service and Pondicherry Civil Service.

5. No candidate who does not belong to a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe or is not a resident of the Union Territory of Pondicherry or is not a resident of the Union Territory of Goa, Daman and Diu or is not a migrant from Kenya, Uganda, and the United Republic of Tanzania (formerly Tanganyika and Zanzibar) shall be permitted to compete more than two times at the examination for each of the three categories of Services mentioned in Rule 4 above, but this restriction is effective from the examination held in 1961.

Provided that no candidate shall be permitted under the relaxation of the upper age limit admissible to released Emergency Commissioned/Short Service Commissioned Officers, *vide* Rule 7(b) below, to compete more than once at the combined competitive examination, a candidate being deemed to have competed at the combined examination once, if he competes for one or more categories.

NOTE.—If a candidate actually appears in *any* one or more subjects he shall be deemed to have competed at the examination for each of the categories of Services to which he is admitted by the Commission, a candidate permitted to appear under the proviso to this rule being deemed to have competed at the combined examination once.

6. (1) For the Indian Administrative Service and the Indian Police Service, a candidate must be a citizen of India.

(2) For other Services, a candidate must be either—

- (a) a citizen of India, or
- (b) a subject of Sikkim, or
- (c) a subject of Nepal, or
- (d) a subject of Bhutan, or
- (e) a Tibetan refugee who came over to India before the 1st January, 1962 with the intention of permanently settling in India, or
- (f) a person of Indian origin who has migrated from Pakistan, Burma, Ceylon and the East African Countries of Kenya, Uganda and the United Republic of Tanzania (formerly Tanganyika and Zanzibar) with the intention of permanently settling in India.

Provided that a candidate belonging to categories (c), (d), (e) and (f) above shall be a person in whose favour a certificate of eligibility has been issued by the Government of India.

Provided further that candidates belonging to categories (c), (d) and (e) above will not be eligible for appointment to the Indian Foreign Service.

A candidate in whose case a certificate of eligibility is necessary may be admitted to the examination and he may also provisionally be appointed subject to the necessary certificate being given to him by the Government.

7. (a) (i) A candidate for the Indian Administrative Service, the Indian Foreign Service and for all the remaining Services, excepting the Indian Police Service and Delhi, and Andaman & Nicobar Islands Police Service, mentioned in paragraph 1 above must have attained the age of 21 years and must not have attained the age of 24 years on the 1st August 1972 *i.e.*, he must have been born not earlier than 2nd August, 1948 and not later than 1st August 1951.

(ii) A candidate for the Indian Police Service and Delhi and Andaman & Nicobar Islands Police Service, must have attained the age of 20 years, and must not

have attained the age of 24 years on the 1st August, 1972 *i.e.*, he must have been born not earlier than 2nd August, 1948 and not later than 1st August 1952.

(b) The upper age limit of 24 years will be relaxable in the case of those released Emergency Commissioned/Short Service Commissioned Officers of the following categories who had discontinued their studies before their selection for the Armed Forces and who did not possess the prescribed educational qualification, *vide* Rule 8 below, on the date of release from the Armed Forces, to the extent of their total Commissioned service in the Armed Forces (including the period spent at pre-Commission/post-Commission training) rounded off to the next complete years :—

- (i) Emergency Commissioned/Short Service Commissioned Officers commissioned in the Armed Forces after 1st November, 1962 but before 10th January, 1968 who had not attained the age of 21 years on 1st August of the year preceding the year in which they joined the pre-Commission training or got the Commission (where there was only post-Commission training) provided that the course of training commenced on or before 31st July, of the relevant year,
- (ii) Emergency Commissioned/Short Service Commissioned Officers commissioned in the Armed Forces after 1st November, 1962 but before 10th January, 1968 who had not attained the age of 20 years on 1st August of the year preceding the year in which they joined the pre-Commission training or got the Commission (where there was only post-Commission training) provided that the course of training commenced on or after 1st August of the relevant year.

NOTE 1.—For the purpose of these Rules, “release” means—

- (i) release as per the scheduled year of release;
- (ii) invalidment owing to a disability attributable to or aggravated by military service, from the Armed Forces after a spell of service, and *not* during or at the end of training or during or at the end of Short Service Commission granted to cover the period of such training prior to being taken in actual service, nor does it cover cases of officers released on account of misconduct, or inefficiency or at their own means—

NOTE 2.—The expression “scheduled year of release” means—

- (i) in so far as it relates to the Emergency Commissioned Officers, the year in which they are due for release in accordance with the phased programme approved by the Government of India in the Ministry of Defence; and
- (ii) in so far as it relates to the Short Service Commissioned Officers, the year in which their normal tenure of three or five years as the case may be, as Short Service Commissioned Officers is to expire.

NOTE 3.—Engineers and Doctors employed under the Central Government or State Governments or Government owned industrial undertakings who are required to serve in the Armed Forces for a minimum prescribed period under the Compulsory Liability Scheme and who are granted short Service Commission under the relevant rules during the period of such service will not be eligible for this age relaxation.

NOTE 4.—Officers belonging to the Volunteer Reserve Forces of the Armed Forces and called upon for temporary service will not be eligible for this age relaxation.

(b) The upper age limit prescribed above will be further relaxable :—

- (i) up to a maximum of five years if a candidate belongs to a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe;
- (ii) up to a maximum of three years if a candidate is a *bona fide* displaced person from East Pakistan and has migrated to India on or after 1st January 1964;
- (iii) up to a maximum of eight years if a candidate belongs to a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe and is also a *bona fide* displaced person from East Pakistan and has migrated to India on or after 1st January, 1964;
- (iv) up to a maximum of three years if a candidate is a resident of the Union Territory of Pondicherry and has received education through the medium of French at some stage;
- (v) up to a maximum of three years if a candidate is a *bona fide* repatriate of Indian origin from Ceylon and has migrated to India on or after 1st November 1964, under the Indo-Ceylon Agreement of October, 1964;
- (vi) up to a maximum of eight years if a candidate belongs to a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe and is also a *bona fide*, repatriate of Indian origin from Ceylon and has migrated to India on or after 1st November, 1964, under the Indo-Ceylon Agreement of October, 1964;
- (vii) up to a maximum of three years if a candidate is a resident of the Union Territory of Goa, Daman and Diu;
- (viii) up to a maximum of three years if a candidate is of Indian origin and has migrated from Kenya, Uganda and the United Republic of Tanzania (formerly Tanganyika and Zanzibar);
- (ix) up to a maximum of three years if a candidate is a *bona fide* repatriate of Indian origin from Burma and has migrated to India after 1st June, 1963;
- (x) up to a maximum of eight years if a candidate belongs to a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe and is also a *bona fide* repatriate of Indian origin from Burma and has migrated to India on or after 1st June, 1963;
- (xi) up to a maximum of three years in the case of Defence Services personnel, disabled in operations during hostilities with any foreign country or in a disturbed area and released as a consequence thereof; and
- (xii) up to a maximum of eight years in the case of Defence Services personnel, disabled in operations during hostilities with any foreign country or in a disturbed area, and released as a consequence thereof, who belong to the Scheduled Castes or the Scheduled Tribes.

**SAVE AS PROVIDED ABOVE THE AGE LIMITS
PRESCRIBED CAN IN NO CASE BE RELAXED.**

8. A candidate must hold a degree of any of the Universities enumerated in Appendix I or must possess any of the qualifications mentioned in Appendix I-A.

NOTE I.—A candidate who has appeared at an examination the passing of which would render him eligible to appear at this examination but has not been informed of the result may apply for admission to the examination. A candidate who intends to appear at such a qualifying examination may also apply, provided the qualifying examination is completed before the commencement of this examination. Such candidates will be admitted to the examination, if otherwise eligible but the admission would be deemed to be provisional and subject to cancellation if they do not produce proof of having passed the examination, as soon as possible, and in any case not later than two months after the commencement of this examination.

NOTE II.—In exceptional cases the Union Public Service Commission may treat a candidate who has not any of the foregoing qualifications, as a qualified candidate provided that he has passed examinations conducted by other institutions, the standard of which in the opinion of the Commission, justifies his admission to the examination.

NOTE III.—A candidate who is otherwise qualified but who has taken a degree from a foreign university which is not included in Appendix I, may also apply to the Commission and may be admitted to the examination at the discretion of the Commission.

9. A candidate who is appointed to a Service in Category I (I.A.S. or I.F.S.) on the results of an earlier examination will not be eligible to compete at this examination.

A candidate who is appointed to a Service mentioned in col. (ii) below on the results of an earlier examination will be eligible to compete at this examination only for Services mentioned against that Service in col. (iii) below :

Sl. No.	Service to which appointed	Service for which eligible to compete
(i)	(ii)	(iii)
1.	Indian Police Service	(i) Category I (I.A.S. and I.F.S.). (ii) Central Services, class I, in Category III.
2.	Central Services, Class I	(i) Category I (I.A.S. and I.F.S.). (ii) I.P.S. in Category II.
3.	Central Services, (including Civil and Police Services in Union Territories). Class II	(i) Category I (I.A.S. and I.F.S.). (ii) I.P.S. in Category II. (iii) Central Service, class I, in Category III.

10. Candidates must pay the fee prescribed in Annexure I to the Commission's Notice.

11. A candidate already in Government Service whether in a permanent or a temporary capacity, must obtain prior permission of the Head of the Department to appear for the Examination.

12. The decision of the Commission as to the eligibility or otherwise of a candidate for admission to the examination shall be final.

13. No candidate will be admitted to the examination unless he holds a certificate of admission from the Commission.

14. Any attempt on the part of a candidate to obtain support for his candidature by any means may disqualify him for admission.

15. A candidate who is or has been declared by the Commission guilty of impersonation or of submitting fabricated documents or documents which have been tampered with or of making statements which are incorrect or false or of suppressing material information or otherwise resorting to any other irregular or improper means for obtaining admission to the examination, or of using or attempting to use unfair means in the examination hall or of misbehaviour in the examination hall, may, in addition to rendering himself liable to criminal prosecution,—

(a) be debarred permanently or for a specified period:—

(i) by the Commission, from admission to any examination or appearance at any interview held by the Commission for selection of candidates; and

(ii) by the Central Government from employment under them;

(b) be liable to disciplinary action under the appropriate rules, if he is already in service under Government.

16. Candidates who obtain such minimum qualifying marks in the written examination as may be fixed by the Commission in their discretion shall be summoned by them for an interview for a personality test.

17. After the examination, the candidates will be arranged by the Commission in the order of merit as disclosed by the aggregate marks finally awarded to each candidate and in that order so many candidates as are found by the Commission to be qualified by the examination shall be recommended for appointment up to the number of unreserved vacancies decided to be filled on the result of the examination.

Provided that candidates belonging to the Scheduled Castes or the Scheduled Tribes may, to the extent the number of vacancies reserved for the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes cannot be filled on the basis of the general standard, be recommended by the Commission by a relaxed standard to make up the deficiency in the reserved quota, subject to the fitness of these candidates for appointment to the Services irrespective of their ranks in the order of merit at the examination.

18. The form and manner of communication of the result of the examination to individual candidates shall be decided by the Commission in their discretion and the Commission will not enter into correspondence with them regarding the result.

19. Due consideration will be given, at the time of making appointments on the results of the examination, to the preferences expressed by a candidate for various Services at the time of his application.

Provided that a candidate who is appointed to a Service in Category I, (I.A.S. or I.F.S.), on the results of an earlier examination, will not be considered for appointment to any other Service on the result of this examination.

Provided further that a candidate who is appointed to a Service mentioned in col. (ii) below on the results of an earlier examination will be considered only for

appointment to Services mentioned against that Service in col. (iii) below, on the results of this examination.

Sl. No.	Service to which appointed	Service to which appointment will be considered	
		(i)	(ii)
1.	Indian Police Service	(i) Category I (I.A.S. and I.F.S.). (ii) Central Services, Class I in Category III.	
2.	Central Services, Class I	(i) Category I (I.A.S. and I.F.S.). (ii) I.P.S. in Category II.	
3.	Central Services (including Civil and Police Services in Union Territories) Class II.	(i) Category I (I.A.S. and I.F.S.). (ii) I.P.S. in Category II. (iii) Central Services, Class I, in Category III.	

20. Success in the examination confers no right to appointment unless Government are satisfied after such enquiry as may be considered necessary, that the candidate is suitable in all respects for appointment to the Service.

21. A candidate must be in good mental and bodily health and free from any physical defect likely to interfere with the discharge of his duties as an officer of the Service. A candidate who after such medical examination as Government or the appointing authority, as the case may be, may prescribe is found not to satisfy these requirements, will not be appointed. Any candidate called for the Personality Test by the Commission may be required to undergo medical examination. No fee shall be payable to the Medical Board by the candidate for medical examination.

NOTE.—In order to prevent disappointment candidates are advised to have themselves examined by a Government Medical Officer of the standing of a Civil Surgeon, before applying for admission to the examination. Particulars of the nature of the medical test to which candidates will be subjected before appointment and of the standards required are given in Appendix IV to these Rules. For the disabled ex-Defence Services personnel the standards will be relaxed consistent with the requirements of the Service(s).

22. No person

(a) who has entered into or contracted a marriage with a person having a spouse living, or

(b) who, having a spouse living, has entered into or contracted a marriage with any person,

shall be eligible for appointment to service.

Provided that the Central Government may, if satisfied that such marriage is permissible under the personal law applicable to such person and the other party to the marriage and there are other grounds for so doing, exempt any person from the operation of this rule.

23. It will be open to the Government of India, not to appoint to the Indian Administrative Service/Indian Police Service/Indian Foreign Service, a woman candidate who is married or to require such a candidate who is not married, to resign from the Service in the event of her marrying subsequently if the maintenance of the efficiency of the Service so requires.

24. Candidates are informed that some knowledge of Hindi prior to entry into service would be of advantage in passing departmental examinations which candidates have to take after entry into service.

25. Brief particulars relating to the Services to which recruitment is being made through this examination are given in Appendix III.

S. HABEEBULLAH,
Under Secy.

APPENDIX I

List of Universities approved by the Government of India (vide Rule 8)

INDIAN UNIVERSITIES

Any University incorporated by an Act of the Central or State Legislature in India and other education institutions established by an Act of Parliament, or declared to be deemed as Universities under Section 3 of the University Grants Commission Act, 1956.

UNIVERSITIES IN BURMA

The University of Rangoon.

The University of Mandalay.

ENGLISH AND WELSH UNIVERSITIES

The Universities of Birmingham, Bristol, Cambridge, Durham, Leeds, Liverpool, London, Manchester, Oxford, Reading, Sheffield and Wales.

SCOTTISH UNIVERSITIES

The Universities of Aberdeen, Edinburgh, Glasgow and St. Andrews.

IRISH UNIVERSITIES

The University of Dublin (Trinity College).

The National University of Ireland.

The Queen's University, Belfast.

UNIVERSITIES IN PAKISTAN

The University of Punjab.

The University of Sind.

UNIVERSITIES IN BANGLA DESH

The Dacca University.

The Dacca University.

UNIVERSITY IN NEPAL

The Tribhuvan University, Kathmandu.

APPENDIX I-A

List of qualifications recognised for admission to the examination (vide Rule 8).

1. Shastri of Kashi Vidyapith, Varanasi.
2. French Examination "Propedeutique".
3. Diploma in Rural Services of the National Council of Rural Higher Education.
4. Diploma in Rural Services of the Visva Bharati University.

5. National Diploma in Commerce of All India Council for Technical Education.

6. National Diploma in Engineering or Technology of the All India Council for Technical Education recognised by the Government for recruitment to superior Services and posts under the Central Government.

7. 'Higher Course' of Sri Aurobindo International Centre of Education, Pondicherry, provided that the Course has been successfully completed as a "full student".

8. Diploma in Mining Engineering of the Indian School of Mines, Dhanbad.

9. Diploma in the field of Humanities and Natural Sciences attesting graduation from a Higher Educational Establishment in the U.S.S.R. without defending first scientific thesis but having passed the State Examinations.

10. Shastri (with English) or Old Shastri or Sampurna Shastri examination with special examination in additional subjects with English as one of the subjects, i.e., Varishta Shastri of Varanaseya Sanskrit Vishwa Vidyalaya, Varanasi.

11. Alankar degree of Gurukul Vishwa Vidyalaya, Kangri, Hardwar.

APPENDIX II

SECTION I

Plan of the Examination

The competitive examination comprises :—

(A) Written examination in—

- (i) three compulsory subjects (for all Services). Essay, General English, and General Knowledge, each with a maximum of 150 marks [see Sub-Section (a) of Section II below];
- (ii) a selection from the optional subjects set out in Sub-Section (b) of Section II below. Subject to the provisions of that Sub-section, candidates may take optional subjects up to a total of 600 marks for all Services except the Services under Category II (cf. Rules 1 & 4) for which optional subjects up to a total of 400 marks only may be taken. The standard of these papers will be approximately that of an Honours Degree Examination of an Indian University; and
- (iii) a selection from the additional subjects set out in Sub-Section (c) of Section II below. Subject to the provision of that Sub-Section, candidates may take additional subjects up to a total of 400 marks for the Indian Administrative Service and Indian Foreign Service (Category I). The standard of these papers will be higher than that prescribed for the optional subjects under Sub-Section (A) (ii) above.

(B) Interview for Personality Test (vide Part D of the Schedule to this Appendix) of such candidates as may

be called by the Commission, carrying maximum marks as follows :

Category I:

Indian Foreign Service	400
Indian Administrative Service	300

Category II and III:

All Services	200
------------------------	-----

SECTION II

Examination Subjects

(a) *Compulsory Subjects* [vide Sub-Section A(i) of Section 1 above]—

Subject	Maximum Marks
(1) Essay	150
(2) General English	150
(3) General Knowledge	150

NOTE.—The syllabi of the Subjects mentioned above are given in part A of the schedule to this Appendix.

(b) *Optional subjects* [vide Sub-Section A(ii) of Section 1 above].

Candidates for Services under Category II (*cf.* Rules 1 and 4) may offer any two, and for all other Services any three of the following subjects :—

Subject	Maximum Marks
(1) Pure Mathematics	200
(2) Applied Mathematics	200
(3) Statistics	200
(4) Physics	200
(5) Chemistry	200
(6) Botany	200
(7) Zoology	200
(8) Geology	200
(9) Geography	200
(10) English Literature	200
(11) one of the following— Assamese, Bengali, Gujarati, Hindi, Kannada, Kashmuri, Malayalam, Marathi, Oriya, Punjabi, Sindhi, Tamil, Telugu and Urdu	200
(12) One of the following— Arabic, Chinese, French, German, Pali, Persian, Russian and Sanskrit	200
(13) Indian History	200
(14) British History	200
(15) European History	200
(16) World History	200
(17) General Economics	200
(18) Political Science	200
(19) Philosophy	200
(20) Psychology	200
(21) Law-I	200
(22) Law-II	200
(23) Law-III	200
(24) Applied Mechanics	200
(25) Sociology	200

Provided that the following restrictions shall apply to particular optional subjects :

(i) Of the subjects 1, 2 and 3, not more than two can be offered for any Service.

(ii) Candidates for Services other than the Indian Foreign Service may not offer more than one of the languages mentioned under item 12 above. For the Indian Foreign Service only, candidates are allowed to offer any two of these languages; but no candidate shall be allowed to offer both Pali and Sanskrit.

- (iii) Of the History subjects 13, 14, 15 and 16 not more than two can be offered for any Service but no candidate shall be allowed to offer both World History and European History.
- (iv) Of the subjects 19 and 20, not more than one can be offered for any Service.
- (v) Of the Law subjects 21, 22 and 23, not more than two can be offered for any Service.
- (vi) Subject 24 must not be offered for the Services under Category II.

NOTE.—The Syllabi of the subjects mentioned above are given in Part B of the Schedule to this Appendix.

(c) *Additional subjects* [vide Sub-Section A (iii) of Section 1 above].

Candidates competing for the Indian Administrative Service/Indian Foreign Service (Category I), must also select any two of the following subjects :—

Subject	Maximum marks
(1) (a) Higher Pure Mathematics OR (b) Higher Applied Mathematics	200
(2) Higher Physics	200
(3) Higher Chemistry	200
(4) Higher Botany	200
(5) Higher Zoology	200
(6) Higher Geology	200
(7) Higher Geography	200
(8) English Literature (1798—1935)	200
(9) (a) Indian History I (From Chandragupta Maurya to Harsha) OR (b) Indian History II (The Great Mughals (1526—1707)) OR (c) Indian History III (From 1772 to 1950)	200
(d) British Constitutional History (From 1603 to 1950) OR (e) European History (From 1871 to 1945)	200
(10) (a) Advanced Economics OR (b) Advanced Indian Economics	200
(11) (a) Political Theory from Hobbes to the present day OR (b) Political Organisation Public Administration	200
(c) International Relations	200
(12) (a) Advanced Metaphysics including Epistemology OR (b) Advanced Psychology including Experimental Psychology	200
(13) (a) Constitutional Law of India OR (b) Jurisprudence	200

Subject	Maximum Marks
(14) (a) Medieval Civilisation as reflected in Arabic Literature (570 A.D.—1650 A.D.) OR (b) Medieval Civilisation as reflected in Persian Literature (570 A.D.—1650 A.D.) OR (c) Ancient India Civilisation and Philosophy	200 200 200
(15) Anthropology	200
(16) Advanced Sociology	200

Provided that the following restrictions shall apply to particular additional subjects.

- (1) No candidate shall be allowed to offer both Indian History I [9(a)] and Ancient India Civilisation and Philosophy [14(c)].
- (2) No candidate shall be allowed to offer both European History [9(e)] and International Relations [11(c)].

NOTE.—The syllabi of the subjects mentioned above are given in Part C of the Schedule to this Appendix.

SECTION III

General

1. (a) The question papers in 'Essay' and 'General Knowledge', *vide* items (1) and (3) respectively on sub-section (a) of Section II above, may be answered in English, or in any one of the languages mentioned in the Eighth Schedule to the Constitution, *viz.*, Assamese, Bengali, Gujarati, Hindi, Kannada, Kashmiri, Malayalam, Marathi, Oriya, Punjabi, Sanskrit, Sindhi, Tamil, Telugu and Urdu. Candidates exercising the option to answer both the papers in a language other than English must choose the same language for both the papers. The option will apply to a complete paper and not to a part thereof.

(b) Question papers in all other subjects must be answered in English, except question papers in languages, *vide* items (11) and (12) of sub-section (b) of Section II above, which, unless specifically required otherwise, may be answered in English or in the language concerned.

NOTE I.—A candidate desirous of answering the question paper(s) mentioned in para 1(a) above in a language other than English must clearly indicate, in column 32 of the Application Form, the name of that language against the paper(s) concerned. If no entry is made in he said column in respect of either or both of the papers, will be assumed that the paper/papers will be answered in English. *The option once exercised shall be treated as final; and no request for alteration or addition in the said column shall be entertained.*

NOTE II.—Candidates exercising the option to answer the paper(s) in para 1(a) above in any of the languages mentioned in the Eighth Schedule to the Constitution will be required to write their answers in the respective script indicated below:

Language Script

1. Assamese—Assamese.
2. Bengali—Bengali.
3. Gujarati—Gujarati.
4. Hindi—Devanagari.
5. Kannada—Kannada.
6. Kashmiri—Persian.
7. Malayalam—Malayalam.

8. Marathi—Devanagari.
9. Oriya—Oriya.
10. Punjabi—Gurmukhi.
11. Sanskrit—Devanagari.
12. Sindhi—Devanagari or Arabic.
13. Tamil—Tamil.
14. Telugu—Telugu.
15. Urdu—Persian.

*Candidates exercising the option to answer the paper(s) referred to in para 1(a) above in Sindhi must also indicate in column 32 of the application form, the name of the *particular script* (Devanagari or Arabic) which they will adopt.

2. The duration of each of the papers referred to in Sub-Sections (a), (b) and (c) of Section II above will be 3 hours.

3. Candidates must write the papers in their own hand. In no circumstances, will they be allowed the help of a scribe to write the answers for them.

4. The Commission have discretion to fix qualifying marks in any or all the subjects of the examination.

5. For the Indian Administrative Service and the Indian Foreign Service (Category I), the two additional papers of only such candidates will be examined and marked as attain such minimum standard as may be fixed by the Commission in their discretion at the written examination in all the other subjects.

6. If a candidate's handwriting is not easily legible, a deduction will be made on this account from the total marks otherwise accruing to him.

7. Marks will not be allotted for mere superficial knowledge.

8. Credit will be given for orderly, effective and exact expression combined with due economy of words in all subjects of the examination.

9. Candidates are expected to be familiar with the metric system of weights and measures. In the question papers, wherever necessary, questions involving the use of metric system of weights and measures may be set.

SCHEDULE

PART A

[Vide Sub-Section (a) of Section II of Appendix II]

1. *Essay*.—Candidates will be required to write an essay. A choice of subjects will be given. They will be expected to keep closely to the subject of the essay to arrange their ideas in orderly fashion, and to write concisely. Credit will be given for effective and exact expression.

2. *General English*.—Candidates will be required to answer questions designed to test their understanding of English and workmanlike use of words. Some of the questions will be devised to test also their reasoning power, their capacity to perceive implications and their ability to distinguish between the important and the less important. Passages will usually be set for summary or precis. Credit will be given for concise and effective expression.

3. *General Knowledge*.—Including knowledge of current events and of such matters of everyday observation and experience in their scientific aspects as may be expected of an educated person who has not made a special study of any scientific subject. The paper will also include questions on History of India and Geography of a nature which candidates should be able to answer without special study, and questions on the teachings of Mahatma Gandhi.

PART B

[Vide Sub-Section (b) of Section II of Appendix II]

I. Pure Mathematics :

The subject included will be (1) Algebra, (2) Infinite Sequences and Series, (3) Trigonometry, (4) Theory of equations, (5) Analytic Geometry of two and three dimensions, (6) Analysis and (7) Differential Equations.

(1) *Algebra* : Sets, Union, Intersection, difference and complementation properties. Venn Diagram. Properties of natural numbers. Real numbers and their representation by decimals. Complex numbers. Argand Diagram. Cartesian Product, Relation, Mapping, Function as a mapping. Equivalence relation. Groups, Isomorphism of groups. Subgroups, Normal subgroups. Lagrange's Theorem. Frobenius theorem.

The definitions and illustrations of Rings and Fields. Divisors of Zero and Homomorphism. Vector spaces.

Determinants, Addition, subtraction, multiplication and inversion of matrix. Linear homogeneous and non-homogeneous equations. Cayley-Hamilton theorem.

Elementary number theory. Fundamental theorem of arithmetic. Congruences. Theorems of Fermat and Wilson.

Inequalities. Arithmetical and Geometrical means. Inequalities of Cauchy, Schwarz, Holder and Minkowsky.

(2) *Infinite Sequences and Series* : Concept of limit. Infinite series, Convergent, divergent and Oscillatory series. Cauchy's general principle of convergence. Comparison and ratio tests. Gauss' test. Absolute convergence and derangement of series.

(3) *Trigonometry* : De Moivre's theorem for rational index and its applications. Inverse Circular and hyperbolic functions. Expansions and summation of trigonometrical series. Expressions for sine and cosine in terms of infinite products.

(4) *Theory of Equations* : General properties of polynomial equations. Transformation of equations. Nature of the roots of cubic and biquadratic Cardan's solution of the cubic. Resolution of biquadratic into quadratic factors. Location of roots and Newton's method of divisors.

(5) *Analytic Geometry of two and three dimensions* : Straight line, Pair of straight lines, circle, system of circles, Ellipse, Parabola, Hyperbola, Reduction of a second degree equation to a standard form.

Planes, straight lines, sphere, cone, conicoids and their tangent and normal properties. (Vector method will be permissible.)

(6) *Analysis* : Concepts of Limit. Continuity. Derivation, differentiability of a function of one real variable. Properties of continuous functions. Characterisation of discontinuities. Mean value theorems. Evaluation of indeterminate forms. Taylor's and Maclaurin's theorems with Lagrange's and Cauchy's forms of remainders. Maxima and minima of function of one variable. Plane curves, singular points, curvature, curve tracing. Envelopes. Partial Differentiation. Differentiability of a function of more than one real variable.

Standard methods of Integration. Riemann's definition of definite integral of continuous function. Fundamental theorem of integral calculus. First mean value theorem of integral calculus. Rectification, quadrature, volumes and surfaces of solids of revolution and their applications.

(7) *Differential Equations* : Formation of ordinary differential equation. Order and degree. Geometrical

demonstration of the existence theorem for $\frac{dy}{dx} = f(x, y)$. First order linear and non-linear equations. Singular points. Singular solutions. Linear differential equations and their important properties. Linear Differential Equations with constant coefficients. Cauchy-Euler type of equations. Exact differential equations and equations admitting integrating factor. Second order equations. Changing of dependent and independent variables. Solution when one integral is known. Variation of parameters.

2. Applied Mathematics :

The subjects included will be (i) Vector Analysis (2) Statics (3) Dynamics and (4) Hydrostatics.

(1) *Vector Analysis* : Vector Algebra, Differentiation of vector function of a scalar variable. Gradient, divergence and curl in cartesian, cylindrical and spherical coordinates and their physical interpretation. Higher order derivatives. Vector identities and Vector equations. Gauss and Stokes theorems.

(2) *Statics* : Fundamental laws of Newtonian Mechanics. Theory of Dimensions. Plane statics. Equilibrium of system of particles. Work and Potential Energy. Centre of mass and centre of gravity. Friction. Common Catenary. Principle of virtual work. Stability of equilibrium. Equilibrium of forces in three dimensions.

Attraction and Potential of rods, rectangular and circular discs, spherical shells, sphere. Equipotential surfaces and their properties, properties of potentials. Green's equivalent stratum. Laplace's and Poisson's equations.

(3) *Dynamics* : Velocity vector. Relative velocity. Acceleration. Angular velocity. Degrees of freedom and constraints. Rectilinear motion. Simple harmonic motion. Motion in a plane. Projectiles. Constrained motion. Work and energy. Motion under impulsive forces. Kepler's laws. Orbits under central forces. Motion of varying mass. Motion under resistance. Moments and products of inertia. Two dimensional motion of a rigid body under finite and impulsive forces. Compound pendulum.

(4) *Hydrostatics* : Pressure of heavy fluids. Equilibrium of fluids under given system of forces. Centre of pressure. Thrust on curved surfaces. Equilibrium of floating bodies. Stability of equilibrium. Pressure of gases and problems relating to atmosphere.

3. Statistics :

I. Probability

Classical and Statistical definitions of probability. Simple theorems on probability with examples. Conditional probability and statistical independence. Baye's theorem. Random variables—Discrete and Continuous. Probability functions and probability density functions. Probability distributions in one or more variates. Mathematical expectations. Chebycheff's inequality. Weak law of large numbers. Simple form of Central Limit theorem.

II. Statistical Methods

Compilation, classification, tabulation and diagrammatic representation of various types of statistical data.

Concepts of statistical population, and frequency curve. Measures of Central tendency and dispersion. Moments and cumulants. Measures of skewness and Kurtosis. Moment-generating functions.

Study of standard probability distributions—Binomial, Poisson, Hypergeometric, Normal, Negative-Binomial, Rectangular and log normal distributions. General description of the Pearsonian system of curves.

General properties of a bivariate distribution, bivariate normal distribution. Measures of association and contingency. Correlation and Linear regression involving two or more variables. Correlation ratio. Intraclass correlation. Rank correlation. Nonlinear regression analysis.

Curvefitting by methods of free-hand curves, moving averages, group averages, least squares and moments. Orthogonal polynomials and their uses.

III. Sampling distribution and statistical inference.

Random sample, statistics, concepts of sampling distribution and standard error.

Derivation of sampling distribution of mean of independent normal varieties, x^2 , t and F Statistics; their properties and uses. Derivation of sampling distributions of sample means, variances and correlation coefficient from a bivariate normal population. Derivation (in large samples) and uses of Pearsonian x^2 .

Theory of Estimation: Requirements of a good estimate—unbiasedness, consistency, efficiency and sufficiency. Cramer-Rao lower bound to variance of estimates. Best linear unbiased estimates.

Methods of estimation—general descriptions of the methods of moments, method of maximum likelihood, method of least squares and method of minimum x^2 . Properties of maximum likelihood estimators (without proof). Theory of confidence intervals—simple problems (large samples) and uses of Pearsonian x^2 .

Theory of Testing of Hypotheses: Simple and composite hypotheses. Statistical tests and critical regions. Two kinds of error, level of significance and power of a test.

Optimum critical regions for simple hypotheses concerning one parameter. Construction of such regions for simple hypotheses relating to a normal Population.

Likelihood ratio tests. Tests involving mean, variance correlation and regression coefficients in univariate and bivariate normal populations. Simple non-parametric tests—sign, run, median, rank and randomisation tests.

Sequential test of a simple hypotheses against a simple alternative (without derivation).

IV. Sampling techniques

Sampling versus complete enumeration. Principles of sampling. Frames and sampling units. Sampling and non-sampling errors. Simple random sampling. Stratified sampling. Cluster sampling. Systematic sampling. Description of multi-stage and multiphase sampling. Ratio and regression methods of estimation. Designing of sample surveys with reference to recent large-scale surveys in India.

V. Design of Experiments

Analysis of variance and covariance with equal number of observations in the cells.

Transformation of variates to stabilise variance.

Principles of experimental designs. Completely randomised, randomised block and Latin square designs. Missing plot technique. Factorial experiments with confounding in $2^s \times 2(1)^{s-2}$, 3^2 and 3^3 designs. Splitplot design. Balanced incomplete designs and simple lattice.

4. Physics :

General Properties of Matter and Mechanics: Units and dimensions. Rotational motion and moments of inertia. Gravity, Gravitation, planetary motion. Stress and Strain relationship, elastic moduli and their interrelations. Surface tension, capillarity. Flow of incompressible fluids. Viscosity of liquids and gases.

Sound: Forced vibrations and resonance. Wave motion. Doppler effect. Vibration of strings and air columns. Measurement of frequency, velocity and

intensity of sound. Musical scales. Acoustics of halls. Ultrasonics.

Heat and Thermodynamics: Elements of the kinetic theory of gases. Brownian motion. Van der Waals equation of state. Measurement of temperature, specific heat and thermal conductivity. Joule-Thomson effect and liquefaction of gases. Laws of thermo-dynamic. Heat engines. Black body radiation.

Light: Geometrical optics, and simple optical systems. Telescope and microscope. Defects in optical images and their corrections. Wave theory of light. Measurement of velocity of light. Interference diffraction and polarization of light. Simple interferometers. Elements of spectroscopy. Raman effect.

Electricity and Magnetism: Calculation of field and potential in simple cases. Gauss's theorem. Electro-meters. Electrical and magnetic properties of matter and their measurement. Magnetic field due to electric current. Galvanometers. Measurement of current and quantity of electricity. Potentiometer. Resistance, inductance and capacitance; and their measurement. Thermoelectricity. Elements of alternating currents. Dynamos and motors. Electrolysis, Electro-magnetic waves. Radio valves and their simple applications, transmission and reception of wireless waves. Television.

Elements of Modern Physics: Elementary properties of electron, proton and neutron. Planck's constant and its measurement. Bohr's theory of the atom. X-rays and their properties. Elements of radio-activity and properties of alpha, beta and gamma rays. Nuclei of atoms. Elements of the special theory of relativity, mass and energy. Fission and fusion. Cosmic rays.

5. Chemistry :

Inorganic Chemistry: Structure of the atom. The Periodic Law. Radioactivity. Isotopes. Artificial transmutations of elements. Nuclear fission. Nature of chemical bonds. The inert gases of the atmosphere. Chemistry of the more common and useful elements and their compounds. Rare earth elements. Hydrides, oxides, oxyacids, peracids and persalts, and carbides. Inorganic complexes. Basic principles of chemical analysis.

Organic Chemistry: Petroleum and petroleum products. Chemistry of the following classes of aliphatic compounds : Saturated and unsaturated hydrocarbons, alcohols, ethers, aldehydes. Ketones, mono and dicarboxylic acids esters, substituted carboxylic acids; thio, nitro and cyano compounds; amines urea and urcides, organometallic compounds, monosaccharides (including structures) carbohydrates and proteins (general ideas). Simple acyclic compounds. Strain theory.

Aromatic: Benzene, naphthalene and anthracene and their principle derivatives; coal-tar distillation, phenols, aromatic alcohols, aldehydes, ketones. Aromatic acids and hydroxy-acids. Steric hindrance, Arylamines, Diazo, azo and hydrazone compounds. Quinones. Heterocyclic compounds. Pyrole, pyridine, quinoline, indole and indigo. Azo, triphenylmethane and phthalein dyes.

Simple molecular rearrangements. Isomerism, stereoisomerism and tautomerism polymerisation.

Physical Chemistry: The kinetic theory. Properties of gases. Equations of state (Van der Waals, Dicterici). The critical state. Liquefaction of gases. Physical properties of liquids in relation to their chemical constitution. Elementary Crystallography.

The first and second law of thermodynamics and their application to simple physical and chemical processes. Chemical equilibrium and Law of Mass Action. Le Chatelier's Principle. The Phase Rule and its application to one-component systems and to the iron-carbon system.

Rate and order of a reaction. First and second order reactions. Chain reactions. Photochemical reactions. Catalysis. Adsorption.

Electrolytic dissociation, Ionic equilibria, Acid-base equilibria and indicators. Study of electrolytic conductance and its applications. Electrode potentials. E.M.F. of cells. Measurements of E.M.F. and their applications.

6. Botany :

Form, structure, habit, economic importance, life histories and inter-relationships of the important representatives of the various groups and sub-groups or families and sub-families of cryptogams (including bacteria with viruses) and phanerogams, with special reference to Indian plants.

The fundamental principles and processes of plant physiology.

A general knowledge of important diseases of crop plants in India and methods of their control and eradication.

The basic facts relating to ecology and plant geography, with special reference to Indian flora and the botanical regions of India.

Basic knowledge about evolution, cytology, genetics and plant breeding.

Economic uses of plants, specially flowering plants, in relation to human welfare, particularly with reference to such vegetable products as food-grains, pulses, fruits, sugars and starches, oil-seeds, spices, beverages, fibres, woods, rubber, drugs and essential oils.

A general familiarity with the development of knowledge relating to the botanical science.

7. Zoology :

The classification, bionomics, morphology, life-history, and relationship of nonchordates and chordates, with special reference to Indian forms.

Functional morphology (form, structure and function) of the integument endoskeleton, locomotion, feeding, blood-circulation, respiration, osmoregulation, nervous system, receptors and reproduction. Elements of vertebrate embryology.

Evolution : evidences, theories and their modern interpretations, Mendelian inheritance; mutation. Structure of animal cells; basic principles of cytology & genetics. Adaptation and distribution.

8. Geology :

Physical Geology and Geomorphology.—Origin, structure, interior and age of the Earth. Geosynclines and mountains. Isostasy. Origin of continents and oceans. Continental drift. Seismology, Volcanology. Geological action of surface agencies.

Structural and Field Geology.—Common structures of igneous, sedimentary and metamorphic rocks. Study of folds, faults, unconformities, joints and thrusts. Elementary ideas of methods of geological Surveying and Mapping.

Crystallography and Mineralogy.—Elements of crystal forms and symmetry. Laws of Crystallography; Crystal systems and classes; Crystal habits; twinning. Stereographic projections. Physical, chemical and optical properties of minerals. Study of more important rock-forming and economic minerals regarding their chemical and physical properties, crystallographic and optical characters, alterations, occurrence, and commercial uses.

Stratigraphy and Palaeontology.—Principles of Stratigraphy. Indian Stratigraphy. Lithological and Chronological sub-divisions of Geological record. Fossils—

nature and mode of preservation; bearing on Organic evolution. Invertebrate and plant fossils.

Economic Geology.—Theories of Ore genesis; Classification, geology, occurrence, localities and resources of chief metallic and non-metallic minerals of India. Mineral industries in India. Principles of Geophysical prospecting and ore dressing.

Petrology.—Origin, constitution, structure and classification of igneous, sedimentary and metamorphic rocks. Study of common Indian Rock types.

9. Geography.—Physical and Human Geography of the world with special reference to India. Principles of Physical Geography comprising a detailed study of the lithosphere; hydrosphere and atmosphere leading up to the modern views regarding cycle concepts, isostasy, processes of mountain formation, weather phenomena, surface and subsurface movement of ocean waters, etc.

Principles of Human Geography comprising a detailed study of the distribution of man on the basis of culture, race, religion, etc. environment and mode of life, population trends, population movements.

Candidates are expected to have a detailed knowledge of physical, human and economic geography of India.

10. English Literature.—Candidates will be expected to show a general knowledge of the history of English Literature from the time of Chaucer to the end of the reign of Queen Victoria, with special reference to the works of the following authors :—

Shakespeare, Milton, Dryden, Johnson, Wordsworth, Keats, Dickens, Tennyson, Arnold and Hardy.

Evidence of first-hand reading will be required. The paper will be designed also to test the candidates' critical ability.

11. Assamese, Bengali, Gujarati, Hindi Kannada, Kashmiri, Malayalam, Marathi, Oriya, Punjabi, Sindhi, Tamil, Telugu and Urdu.—Candidates will be expected to show a knowledge of the language and its literature. They must have first-hand knowledge of the best known works with which they deal though questions on works of lesser importance may also be set. They will also be expected to possess such knowledge of the historical and cultural background, of intellectual and artistic movements, and of linguistic developments as will enable them to understand the literature. Questions may be set on literary history and on language. Candidates will be required to translate/explain, and may be asked to comment on passages.

NOTE—A candidate offering any of the subjects mentioned under item (11) may be required to answer some or all the questions in the language concerned. The scripts required to be used for these languages are indicated below :

Language Script

1. Assamcse—Assamese.
2. Bengali—Bengali.
3. Gujarati—Gujarati.
4. Hindi—Devanagari.
5. Kannada—Kannada.
6. Kashmiri—Persian.
7. Malayalam—Malayalam.
8. Marathi—Devanagari.
9. Oriya—Oriya.
10. Punjabi—Gurmukhi.
11. Sindhi—Devanagari or Arabic.
12. Tamil—Tamil.
13. Telugu—Telugu.
14. Urdu—Persian.

12. Arabic, Chinese, French, German, Pall, Persian, Russian and Sanskrit.—Candidates will be expected to show a knowledge of the principal classical authors and to be able to translate from and compose in the language.

NOTE.—Candidates for Arabic, Persian and Sanskrit may be asked to answer some questions in Arabic, Persian or Sanskrit as the case may be. Answers required to be written in Sanskrit must be written in the Devanagari script.

13. Indian History.—From the beginning of the reign of Chandragupta Maurya to the establishment of Indian Republic. The paper will include questions on political, constitutional, economic and cultural developments.

14. British History.—The period of study will be from 1485 to 1945. The paper will include questions on political, constitutional, economic and cultural developments.

15. European History.—The period of study will be from 1789 to 1945. The paper will include questions on political, diplomatic, economic and cultural developments.

16. World History.—(From 1789 to 1945) Candidate will be expected to possess sound knowledge of the major political and economic developments in world, with special reference to Europe, the U.S.A., the Far East, the Middle East and the African continent. There will be special emphasis on international events of world importance.

Candidates will also be expected to be familiar with cultural developments as reflected in contributions to civilization as a whole, in the fields of science, literature and art.

17. General Economics.—Candidates will be expected to have a general knowledge of (a) the principles of economic analysis; and (b) the history of economic doctrines.

They should be able to apply their knowledge of theory to an analysis of the current economic problems of India.

18. Political Science.—Candidates will be expected to show a knowledge of political theory and its history, political theory being understood to mean not only the theory of legislation but also the general theory of the State. Questions may also be set on constitutional forms, (Representative Government, Federalism, etc.) and Public Administration, Central and Local. Candidates will be expected to have knowledge of the origin and development of existing institutions.

19. Philosophy.—The candidates will be expected to be familiar with History and Theory of Ethics, Eastern and Western, with special reference to the problems of Moral Standards and their application. Moral judgement, Determinism and Free Will, Moral Order and Progress, relation between Individual, Society and the State, theories of Crime and Punishment, and relation of Ethics to Religion.

They will also be expected to be familiar with History of Western Philosophy, with special reference to nature of philosophy and its relation to Science and Religion, theories of Matter and Spirit, Space and Time, Causation and Evolution, and Value and God, and with History of Indian Philosophy (including orthodox and heterodox systems), with special reference to theories of God, Self and Liberation, and Causation, Evolution and Appearance.

20. Psychology.—

Psychology : its nature, scope and methods; experimental method in psychology.

Factors in human development heredity and environment.

Motivation, feelings and emotions; their nature and development; theories of emotions; development of character.

The cognitive processes, sensation, perception, learning, memory and forgetting, and thinking.

Intelligence and abilities—concepts and measurement. Personality—nature, determinants, theories and assessment.

Group processes and group effect; crowd behaviour; leadership and morale; attitudes and prejudice; social change.

Concept of abnormality, symptoms and etiology of the main forms of psychoneurotic and psychotic disorders, social pathology and juvenile delinquency—causes and prevention; Main forms of therapeutic techniques.

21. Law I.—

1. Jurisprudence; Concept of Law; Kinds of law; Positive law; Administration of justice; Sources of law; Elements of law including legal rights, and duties; Liability Ownership, possession; Legal personality; Property.
2. Constitutional Law; Constitutional Law of India including Administrative Law; basic principles of the English Constitution.
3. Law of Torts including State liability for Torts.
4. Law of Crimes (Indian Penal Code).
5. Law of evidence : Relevancy and presumptions; Kinds of Evidence—oral and documentary evidence, primary and secondary evidence; Burden of proof; Estoppel; Judicial notice.

22. Law II.—

1. General Principles of the Law of Contract (Sec. 1 to 75 of the Indian Contract Act).
2. Law of Indemnity, Guarantee, Bailment, Pledge and Agency, with special reference to the Indian Contract Act.
3. Law of Sale of Goods, Law of Partnership, and Negotiable Instruments and Banking (General Principles), with special reference to the Indian Law.
4. Company Law.

23. Law III.—

Nature and Sources of International Law. History of International Law. The School of International Law. International Law and Municipal Law.

States as persons of International Law. Acquisition and loss of international personality. State recognition. State succession.

Rights and duties of States. Principle of equality. Jurisdiction of States.

Treaties,

Agents of International intercourse. Privileges and immunities of diplomatic agents. The individual and International Law. Aliens. Nationality. Naturalisation. Statelessness. Extradition, War Criminals.

Modes of settlement of International disputes.

War : Declaration : effects.

Laws of land, sea and aerial warfare.

War in self-defence. Collective security. Regional pacts. Outlawry of war. Laws of belligerent occupation. Belligerency and insurgency.

Methods of warfare. Prisoners of war. Right of visit and search. Prize courts.

Blockade and contraband.

Neutrality and neutralisation. Rights and duties of neutral states in war. Unneutral service. Neutrality under the Charter of the U.N.

The Charter of the U.N. and covenant of the League of Nations. Principal organs of the United Nations. Specialised International Organisations.

Candidates will be expected to show familiarity with cases, including the pronouncements of the International Court of Justice.

24. Applied Mechanics.—

BUILDINGS

Consideration of materials used in the construction of roof-trusses. Steel and Timber. Determination of stresses in trusses by various methods. Dead-loads and wind pressure. Factors of safety and working stresses.

Designs of roof-trusses. Various types of roof-trusses and roof-coverings; collar beam and hammer beam trusses.

Use of Euler's, Gordon's, Rankine's Fidler's, Johnson's and straight line formulae in the design of struts. Bucking factor of struts; curves showing comparative strength of struts obtained by various formulae. Choise of size of Sections. Finish of Steel work. Joints, Designs of end-bearings; methods of fixing and supporting ends.

Application of circles and ellipse of stress and Clayperon's theorem to design of structures.

Cast Iron and Steel Columns.—Flange and web connections to steel Columns; caps, bases; transverse bracing of columns.

Foundations.—Safe pressures; foundations for columns. Slab foundations, cantilever foundations; grillage foundations. Wells. Piles.

Retaining Walls and Earth Pressures.—Rankine's theory. Wedge theory. Winkler's and Blight's graphical constructions, with corrections. Design of various types of retaining walls in masonry.

Tall Masonry and Steel Chimneys.—Theory and design.

Design of Steel and Masonry Reservoirs; with considerations of wind-pressure.

Deflection of framed structures and determination of stresses etc., in redundant frames.

Influence diagrams for bending moment and shear for uniformly distributed and irregular loads on trusses, built in beams, and three pinned parabolic; semi-elliptic and semi-circular arches.

General principles of dome design.

Principles of Building Design; consideration of loads on buildings; Steel-works, girders, etc., for buildings.

BRIDGES

Design of superstructure. Determination by graphical and analytical methods of bending moment due to moving loads, wind pressures.

Design of masonry bridges and culverts.

Plate-webb girders. Analysis of stresses.

Warren and lattice girders.

Three pinned arches; doubly pinned and rigid arches.

General considerations on the design of suspension, cantilevers and tubular bridges.

Steel arched bridges.

Swing bridges.

REINFORCED CONCRETE

Shear, bond and diagonal tension, its nature, evaluation and location of reinforcement.

Design of simple and doubly reinforced beams and continuous beams.

Theory and design of reinforced concrete columns and piles.

Design of slab foundations.

Design of simple cantilever and counterfort retaining walls.

Equivalent moments of inertia for reinforced concrete sections.

Theory of elastic deflections and outline of investigation of stresses in reinforced concrete arches.

GENERAL

Analysis of stress, analysis of strain, elastic limit and ultimate strength. Relation between the elastic constants. Launhardt-Weyrauch formula for working stresses in a Structural member and determination of its cross sectional area. Repetition of stresses. Bending moment and shearing force diagrams for dead loads. Graphical determination of stresses in frames; effect of wind pressure; method of sections. Stress in the cross-section of a beam due to bending ($M/I-F/Y-E/R$); compound and conjugated stresses. Rankine's theory of earth-pressure; depth of foundations strength of footings. Grillage foundations; Coulomb's theory of earth-pressure, modification due to Rebahn.

Bending moment and shearing force diagrams for live loads. Analysis of uniform and uniformly varying stress; Elastic theory of bending of beams, bending and shear stresses in beams. Modulus of section and equivalent areas. Maximum and minimum stresses in a joint due to eccentric loading. Stresses in dams and chimneys. Stability of block work structures. Design of riveted joints and stresses in boiler shells. Euler's theory concerning struts, modifications due to Rankine, Gordon and others. Torsion, Combined torsion and bending deflections. Encastre Masonary, arches beams. Continuous beams and theorem of three moments. Elastic theory of arches.

25. Sociology :

Nature and Scope of Sociology and its relation to other, social sciences; Society, its nature and structure; Individual and Society; Social inter-action, Groups; Group behaviour; Culture; Culture and Personality; Crowd Behaviour; Leadership; Socialisation, Social Change and Planning; Urbanisation and Urbanism; Village Community; Theories of Social Change; Institutions and Associations—Family and Kinship, Social Stratification—Caste and Class; Social Values—Traditions. Customs and Mores: Religion; Social Control; Social Disorganisation; Society and Adjustments, Human Ecology and Population—Growth of Population and Population Control.

The candidates will be expected to illustrate theory by facts, and to analyse problems with the help of theory. They will be expected to be particularly conversant with Indian problems.

PART C

[Vide Sub-Section (c) of Section II of Appendix II]

1. (a) Higher Pure Mathematics :

The subjects included will be (1) Modern Algebra and Topology, (2) Analysis of functions of real variables, (3) Functions of a complex variable, (4) Geometry and (5) Differential Equations.

(1) *Modern Algebra*: Groups, Sub-groups, Normal Sub-groups. Factor groups. Homomorphism and isomorphism. Theorems on isomorphism. Permutation groups. Groups of transformation. Groups of automorphism.

Inner automorphism. Normaliser, Centre and Commutator. Theorems of Cayley and Sylow. Decomposition theorem for finitely generated abelian groups. Invariants. Normal series. Composition series. Jordan-Hölder theorem. Rings. Integral domains. Division ring. Fields. Ideals. Prime, primary and maximal ideals, sums and products of ideals. Quotient ring. Isomorphism theorems for rings. The field of quotients of an integral domain. Euclidean domains. Principal ideal domains. Unique factorisation domains. Ring of polynomial over a commutative ring. Polynomials with co-efficients from a unique factorisation domain. Neotherian rings.

Vector spaces. Basis of a vector space. Dimension. Orthogonality. Scalar product. Orthonormal basis.

Field extension. Splitting fields. Separable and inseparable extension. Galois theory of finite extensions. Application to solution of equations by radicals. Finite fields.

Topological space, maps and neighbourhoods, closed sets, open sets base for a topological space, subspaces, quotient spaces. Different ways of defining a topology and strength of topologies. Metrics spaces. Euclidean spaces, and other examples of metric spaces. Connectively. Cartesian product of two topological spaces. local connectivity. Pathwise connectivity. Compact spaces. Product of compact spaces, locally compact spaces. Separation axioms. Hausdorff, normal and regular spaces.

(2) *Analysis of functions of real variables* : Dedekind's theory of real numbers. Bounds and limits. Sequences. Continuity and uniform continuity. Differentiability. Implicit functions. Maxima and minima of functions. Riemann integration. Mean value theorems. Improper integrals. Line, surface and multiple integrals. Green's and Stokes theorems.

Uniform convergence of series and properties of uniformly convergent series. Convergence of infinite products. Orthonormality and completeness of sets of functions. Fourier series and Fourier theorem. Weierstrass approximation theorem. Lebesgue measure. Measurable functions and Lebesgue integral of bounded functions.

(3) *Functions of a complex variable* : Representation of complex numbers on Gauss' plane and on Riemann's sphere. Bilinear transformations. Analytic functions. Cauchy's theorem and its converse. Cauchy's integral formula. Taylor's and Laurent's series. Liouville's theorem. Singularities. Zeros. Theory of Residues and its application to evaluation of integrals. Fundamental theorem of algebra and roots of algebraic equations. Conformal representation. Analytic continuation. Mittag-Leffler's theorem. Weierstrass' factorisation Theorem. The maximum modulus principle. Hadamard's three-circle theorem.

(4) *Geometry* : Plane sections and generating lines of quadrics. The quadric surface and its analysis. Confocal quadrics. Elementary theory of pencils of quadrics. Curves in space. Curvature and torsion. Frenet's formulae. Envelopes. Developable surfaces. Developable associated with a curve. Ruled surfaces. Curvature of surfaces. Lines of curvature. Conjugate lines. Asymptotic lines. Geodesics.

(5) *Differential Equations* :

Ordinary differential Equations : Picard's existence theorem. Initial and Boundary conditions. Linear differential equations with variable coefficients. Integration in series. Bessel and Legendre functions. Total and simultaneous differential equations.

Partial Differential Equations : Formation of partial differential equations. Types of integrals of partial differential equations. Partial differential equations of first order. Charpit's method. Partial differential equations with constant coefficients. Monge's methods. Classification of partial differential equations of second order. Laplace Equation and its boundary value problems. Solution of wave equation and equation of heat conduction.

1. (b) *Higher Applied Mathematics* :

The subjects included will be (1) Dynamics, (2) Hydrodynamics, (3) Elasticity, (4) Electricity and Magnetism, (5) Special theory of Relativity.

(1) *Dynamics* : Particle Dynamics : Motion in three dimensions. Rigid Dynamics : Motion in two dimensions. Momentum and Energy. Motion relative to the moving earth. Foucault's pendulum. Generalized coordinates. Holonomic and non-holonomic systems. Lagrange's equations of motion for holonomic systems. Small oscillations. Euler's geometrical and dynamical equations. Motion of a top. Hamilton's principle of least action. Hamilton's canonical equations and their integral invariants. Contact transformations.

(2) *Hydrodynamics* :

General : Equation of continuity, momentum and energy.

Inviscid Flow Theory : Two-dimensional motion. Streaming motion. Sources and sinks. Method of images and its application. Motion of cylinder and sphere in a fluid. Vortex motion. Waves.

Viscous Flow Theory : Stress and Strain analysis. Navier-Stokes Equations. Vorticity. Dissipation of energy. Flow between parallel plates. Flow through pipe. Slow streaming motion past a sphere. Boundary layer concept. Boundary layer equations for two dimensional flows. Boundary layer along a plate. Similarity solutions. Momentum and energy integrals. Method of Karman and Pohlhausen.

(3) *Elasticity* : Cartesian Tensors. Stress and strain analysis. Work and energy. Saint Venant's principle. Bending of beams and plates. Torsion.

(4) *Electricity and Magnetism* : Electrostatics. Conductors and condensers. Systems of conductors. Dielectrics. Method of images and its application. Flow of electric currents in networks. Magnetism. Electromagnetism. Induction. Alternating currents. Maxwell's equations. Oscillatory circuits.

(5) *Special Theory of Relativity* : Galilean principle. Michelson-Morley experiment. The principles of theory of relativity. Lorentz transformation and its consequences. Lorentz invariance of Maxwell's equations. Electrodynamics of a Vacuum. Matter and energy.

2. *Higher Physics* :

General Properties of Matter and Sound : Mechanics of deformable bodies. Helical springs. Capillary phenomena. Viscosity. Acoustical measurements. Ultrasonics.

Heat and Thermodynamics : Brownian motion. Kinetic theory of gases. Transport phenomena in gases at low pressures. Thermodynamic functions and their applications. Specific heat of solids and gases. Production and measurement of low temperatures. Radiation of Planck's law of energy distribution.

Optics : Theory of co-axial symmetrical optical systems. Experimental spectroscopy. Electro-magnetic theory. Scattering of light. Raman effect. Diffraction. Polarisation.

Electricity and Magnetism: Gauss's theorem. Electrometers' Magnetic hysteresis. Theory of permanent magnets. Measurement of electrical quantities. Alternating current theory. Cyclotron and other methods for production of high voltages. Transmission and reception of wireless waves. Television.

Modern Physics: Special theory of relativity. Dual nature of light and matter. Schrödinger's equation and its solution in simple cases Hydrogen and helium spectra Zeeman & Stark effects. Pauli's principle and periodic classification of elements. X-Rays and X-Ray spectroscopy. Compton effect. Conduction in metals. Supraconductivity. Thermonuclear Thermal ionization. Properties of atomic nuclei Mass spectroscopy. Elementary particles and their properties. Nuclear reactions. Cosmic rays. Nuclear fission and fusion.

3. Higher Chemistry :

Inorganic Chemistry.—The structure of the atom, Radio-activity, natural and artificial. Fission and fusion of nuclei. Isotopes. Radioactive indicators. Radioactive series. Transuranic elements.

Chemistry of the elements and their principle compounds, with special reference to Be, W Ti, V, Mo, Hf, Zr and rare earth elements.

Co-ordination compounds. Interstitial and non-stoichiometric compounds. Free radicals. Advanced Physico-chemical methods of analysis.

Organic Chemistry.—Theories of organic chemistry, including resonance and hydrogen bond formation. Mechanism of important organic reaction. Stereo chemistry, including conformation.

Chemistry of different classes of organic compounds with special reference to the following : Polysaccharides, terpenes, natural colouring matters, alkaloids vitamins, important hormones, antimalarials, chlorine insecticides principal antibiotics, and synthetic polymers.

Physical Chemistry.—The kinetic molecular theory. The three laws of thermodynamics and their application to physical chemical processes. Physico-chemical properties in relation to and elucidating molecular structure. Quantum theory and its application to chemistry.

The mechanism and kinetics of chemical and photochemical reactions. Catalysis. Adsorption. Surface chemistry. Colloids. Electrochemistry.

4. Higher Botany :

Plant kingdom.—Advanced knowledge of the main groups of the vegetable kingdom both living and extinct (viz. Algae, Fungi, Bryophyta, Pteridophyta, Gymnosperms and Angiosperms) with special reference to the Indian flora.

Systematic botany.—Principles of classification and a general knowledge of the more important families of angiosperms.

Anatomy.—Origin, nature and development of plant tissues and their distribution from the ecological and physiological points of view.

Plant pathology.—An advanced knowledge of the important diseases of plants caused by bacteria, fungi, viruses and physiological diseases. Methods of control.

Physiology.—An advanced knowledge of the important physiological processes in plants, including plant biochemistry.

Ecology.—Principal types of vegetation of India, their distribution and the importance of eco-physiological studies. Principles of plant geography.

Economic botany.—A study of the important economic plants of tropical and sub-tropical areas, with special reference to India.

General Biology.—Knowledge of the fundamentals of and recent developments in variation, heredity, evolution, cytology, genetics and principles of plant breeding.

5. Higher Zoology :

The classification, bionomics, morphology, life-history and relationships of non-chordates and chordates, with special reference to Indian fauna.

Functional morphology (form, structure and function) of the organ systems. Outlines of vertebrate embryology.

The classification, ontogeny, phylogeny adaptive divergence and convergence of animals, animal ecology, migration and colouration.

Evolution : evidences, theories, and their modern interpretations. Adaptation; distribution of animals in space.

Recent advances in the knowledge of the cell, cytology, genetics, sex determination and endocrinology.

Modern concept of the environment as a complex of physical, chemical and biological factors, and of the organisms as individuals, populations and communities.

An essay relating to any of the following topics : Protozoa and disease; Insect and man; Parasitology Freshwater and marine biology; Limnology and fishery biology; Contribution of great biologists to knowledge and civilization.

6. Higher Geology :

General Geology.—History and development of the Science of Geology, its different branches and contacts with other sciences. Origin, evolution, structure constitution, interior and age of the Earth. Geomorphology; Radioactivity and its applications to Geology; Seismology; Volcanology; Geosynclines; Isostasy. Evolution of continents and ocean basins. Geological action of surface and subterranean agencies. Continental drift.

Structural and Field Geology.—Diastrophism; Rock deformation; Origin of mountains; Structures in relation to topography and mining. Tectonic history of India. Methods of Geological Surveying and Mapping.

Stratigraphy and Palaeontology.—Principles of Stratigraphy, and correlation. Detailed study of Indian Stratigraphy and outline of World Stratigraphy. Distribution of land, sea, faunas and floras in different periods. Theories of organic evolution. Fossils—their importance. Index fossils and correlation. Detailed study and geological history of the invertebrate fossils and the principal groups of vertebrate and plant fossils with special reference to India.

Crystallography and Mineralogy.—Crystal morphology : Laws of crystallography; crystal systems and classes; habits, twinning. Goniometric and X-ray study of crystals. Atomic structure. Detailed study of rock-forming minerals and of economic minerals with special reference to their occurrence in India.

Petrology.—Origin and evolution, structure, mineral constituents, texture and classification of igneous, sedimentary and metamorphic rocks. Petrogenesis including metamorphism. Petrochemistry. Study of meteorites. Important Indian rock-types.

Economic Geology.—Ore-genesis; classification of economic minerals and controls of ore localization. Geology of economic mineral deposits with particular reference to India. Location of mineral industries. Evaluation of properties; Mineral economics; conservation and utilisation of minerals. National mineral policy. Strategic minerals. Geological, geophysical and geochemical prospecting techniques and their applications. Principal methods of mining, sampling, ore dressing and ore beneficiation. Soils and ground water. Application of Geology to common engineering problems.

7. Higher Geography.—The paper will consist of two parts :—

The first part will comprise an advanced study of Physical Human and Economic Geography, with special reference to India.

The second part will comprise advanced study of the following special subjects, and a candidate will be expected to have knowledge of at least two of these subjects :

Geomorphology. Climatology (including modern methods of weather forecasting and analysis). Cartography (including solution of right-angled spherical triangles, use of Theodolite, advance projections like the oblique zenithal nets, etc.) Historical geography. Political geography. History of geographical thought and discoveries.

8. English Literature (1798—1935).—The paper will cover the study of English Literature from 1798 to 1935, with special reference to the works of Wordsworth; Coleridge, Shelley, Keats, Lamb, Jane Austen, Carlyle, Ruskin, Thackeray, Robert Browning, George Eliot, G. M. Hopkins, Shaw, W. B. Yeats, Galsworthy, J. M. Synge, E. M. Forster and T. S. Eliot.

Evidence of first hand reading will be required. The paper will be designed to test not only the knowledge but also critical evaluation of the main literary trends during the period. Questions having a bearing on the social and cultural background of the period may be included.

9. (a) Indian History I (From Chandra Gupta Maurya to Harsha).—

The Mauryas. The rise and consolidation of the empire. Administration and economy. Decline of the empire.

The eclipse of Magadha. The Shungas and the Kanvas.

The Cholas, Cheras and Pandiyas.

Contacts with the West. North India—the Indo-Greeks. South India—Roman trade.

Central Asia and India. The Shakas. The Kushanas.

The Satavahans.

Indian contacts with Asian countries—The spread of Buddhism.

The Imperial Guptas—The Creation of Classical Indian Culture. Further Indian contacts overseas. The decline of the Guptas. The Hunas.

Changing economic patterns in north India and their impact on politics.

The rise of the Vakatakas and the Chalukyas.

The emergence of the Pallavas.

Harshvardhana.

9(b). Indian History II [The Great Mughals (1526—1707)].—

Political History

Establishment of the Mughal Empire in India; its consolidation and expansion. The Sur interregnum. Mughal Empire at its zenith. Akbar. Jahangir and Shahjehan. Mughal relations with Persia and Central Asia. The development of administrative system. Europeans at the Mughal Court: early Portuguese. French and English settlements. The beginning of the decline. Aurangzeb, his wars and policies.

Cultural, Religious, Economic and Social Life.

Cultural life, and promotion of art, architecture and literature.

Religious movements: Bhakti Movement. Sufism. Din-i-Ilahi. Religious policy of the Mughal Emperors.

Economic life: Agrarian life. Systems of land tenure. Industry. Trade and Commerce. Exports, imports. Means of transport. Wealth of India.

Social life: Court life; Urban life; Rural life. Dress, manners, customs, food and drink; amusements, recreations and festivals. Position of women.

9(c). Indian History III (From 1772 to 1950).—

Consolidation of British power in Bengal and South India. Expansion of British power in India. The East India Company and the British state. Evolution of the Civil Service, Judicial system, the police, and army. Development of new land revenue system and agrarian relations. British Commercial policy. Economic impact of British rule in India. The revolt of 1857. Relations with Indian States. Foreign policy, and relations with Burma and Afghanistan. Development of modern industry, and means of communication. Development of modern education. Growth of the Press.

Indian Re-awakening : Raja Rammohan Roy, Brahmo Samaj and Vidya Sagar; the Arya Samaj, the Theosophists : Ramakrishna and Vivekananda; Syed Ahmed Khan. Social Reform. Development of modern Indian literature. The rise of National Movement : The Indian National Congress (1885-1905), Dadabhai Naroji, Ranade, and Gokhale. Growth of militant nationalism, anti-partition agitation. Swadeshi and Boycott, Tilak and Aurobindo Ghosh : at Home Rule League and the Lucknow Pact.

Constitutional Development : Acts of 1861 & 1892; Minto-Morley Reforms; the Montford Reforms, the 1935 Act.

Emergence of Mahatma Gandhi and the struggle for freedom. Transfer of Power : The Cripps Mission : the Cabinet Mission ; Independence Act and Partition. The Constitution of 1950. Independent India : Foreign Policy, Non-alignment; Secularism; and Planning.

9(d). British Constitutional History (From 1603 to 1950).—

Crown versus Parliament

Relations between James I and Parliament. Petition of Rights. Charles I and the issue of prerogative *versus* common Law. Civil war.

The Constitution makers.—

Government by Long Parliament. The Little Parliament. The Protectorate. The Restoration. The Glorious Revolution. The Bill of Rights.

The Crown, the Executive and Parliament.—

The King and his Ministers. Influence of the Crown. The Cabinet and Parliament. The Monarchical Crisis of 1936.

The Reform of Parliament.—

Reforms Acts and the House of Commons. The House of Commons and the House of Lords. The Reforms of the House of Lords.

The Commonwealth.—

Origin and growth of the Commonwealth. The Statute of Westminster. The Machinery of Commonwealth Co-operation. The position of the Crown in the Commonwealth.

9(e). European History (1871—1945).—

The Industrial Development of Europe—Growth of nationalism, and democratic and socialist movement.

The German Empire; the Third French Republic; the Habsburg Monarchy. Imperial Russia.

The policy of alignment and ententes.

The Eastern Question.

The rise of imperialism, and European imperial interests in the Near East, the Middle East, Africa and the Far East.

The origin and consequences of the First World War.
The Russian Revolution and its consequence.

The Versailles settlement; the League of Nations; efforts at World Disarmament; the search for security; rise of Fascism and Nazism and their international implications.

The Second World War.

10(a). Advanced Economics.—

Functions of economic analysis.

The theory of price. The theory of consumption and demand. Organization of production. Theory of the firm and industry. Imperfect competition. Theory of monopoly. Control of monopoly.

The theory of distribution. Rent. The theory of capital. The theory of money and interest. Savings and investments. Banking and credit regulation. The theory of wages and employment. Collective bargaining and industrial peace.

National income. Economic progress and distributive justice.

The theory of international trade. Foreign exchanges. Balance of payments.

Business cycles and their control. Economic role of Government. Economic welfare. Public utilities, pricing and regulation.

Theory of taxation. Incidence of taxation. Effects of Government taxation and expenditure. Deficit financing and inflation.

Planning for economic development.

10(b). Advanced Indian Economics.—

Economic developments during the War and Post-War period. Natural resources. Social institutions. Agricultural Production and finance. Pricing and distribution of foodgrains and other agricultural products. Land reform. Place of cottage and small scale industries in developing economy. Growth of modern organized industry. Regulation of public companies. Industrial relations and problems of labour. Mixed economy. Scope and efficiency of the public sector. Indian monetary and credit system. Role of the Reserve Bank. Population problems and population policy. Unemployment and under-employment. Constitution of Indian national income. Regulation of foreign trade. Balance of payments. Indian taxation system. Federal finance. Planning for economic development. Size and structure of successive plans. Problems of resources and of implementation in the East.

11(a). Political Theory from Hobbes to the present day.—

Theories of Contract and Natural Rights—Hobbes, Locke and Rousseau. Development of the Idea of Sovereignty. The Historians—Vico, Montesquieu and Burke. The Utilitarians. The Evolutionists. The Idealists—Kant, Hegel, Green, Bradley and Bosanquet. Conservatism and Liberalism. Marxism and Schools of Socialism and Communism. Pluralism. Fascism. The Impact of Psychology. Trends in twentieth century thought in the East.

11(b). Political Organisation and Public Administration.—

Political Institutions. The rise of Modern National States. Parliamentary and Presidential forms of Government. Unitary and Federal Governments. The Legislature. The Executive and the Judiciary. Methods of Representation. The Communistic and Totalitarian forms of Government.

Public Administration. Public Administration in the Modern State. The formulation of policy and higher control—the Legislature and the Executive. Organisation, Management, Methods and Tools. Regulatory Commissions and Public Corporations. Personnel Administration—The Civil Service and its Problems. The Budget and Financial Administration. Administrative Powers Control by the Courts. The Public Services and the Public.

11(c). International Relations.—

Part I

Foundations and limitations of national power.

The place of power, ideology and ethics in International Relations.

The role of International Law in International Relations.

The role of national interest in the formulation of foreign policy

The theory of Balance of Power.

The nature and functions of International Organisation.

The United Nations: purposes, structure and functioning.

Part II

The origins of the First World War and the nature of the peace Settlement.

The League of Nations and the efforts for the establishment of a collective security system in the inter-war years.

The origins of the Second World War.

The Nuclear age and its impact on traditional International Relations.

The Cold War and its effect on World Politics.

The Birth of New Nations and the changes in the pattern of International Relations.

The Foreign Policies of the United States, the U.S.S.R., China, India and one of the following :

Great Britain, Japan, Germany and France.

12(a). Advanced Metaphysics Including Epistemology.—

Candidates will be expected to be familiar with the views of prominent philosophers from Kant to the present day e.g. Kant, Hegel, Bradley, Royce, Coote, Moore, Russel, James, Schiller, Dewey, Bergson, Alexander Whitehead, Wittgenstein, Ayer, Heidegger and Marcel.

Questions may be set on any of the following topics.

The sources, materials, varieties, limits criteria and sociology of knowledge.

Truth, falsehood, error.

Theories of reality. Reality, subsistence and existence. Monism, dualism and pluralism. Naturalism, agnosticism, theism, absolutism and mysticism. Post-Hegelian idealism. New realism, Radical empiricism, Pragmatism.

Instrumentalism. Humanism—naturalistic and religious.

Logical positivism. Existentialism—atheistic and theistic. Recent trends of the philosophy of science in regard to the problems of induction, laws of nature, relativity, indeterminacy and God.

12(b). Advanced Psychology including Experimental Psychology.—

Subject-matter scope and methods of psychology; its relation with other sciences.

Heredity and environment controversy—Experimental studies on the relative influence of the two on human development.

Problems of motivation, and emotion. Frustration and conflict; types of conflict; defence mechanism—Studies in expressive movements; P.G.R., lie detection.

Sensation and Perception—Psychophysical methods; space perceptions, factors of perceptual organization; role of dynamic personality and social factors; inter-personal perception. Experimental methods in the study of learning, memory, forgetting and thinking—Theories of learning and forgetting; theories of sign-process→ nature of meaning.

Psychology of personality—determinants, traits, types, dimensions, and theories; assessment of personality—behavioural measures of personality—rating scales, nominating techniques, questionnaires and inventories, attitude scales, projective tests.

Individual differences: nature and measurement of intelligence and aptitude. Test construction—Item analysis, Test scales and norms—Reliability and validity of measures—Factor analysis—Theories.

Schools and systems of psychology—Traditional Schools and the main contemporary systems of psychology; Freudians, neo-Freudians, neo-Behaviourists, Gestalt and field theories.

13(a). Constitution Law of India.—

Historical Background: The growth of the Indian Constitution with special reference to the development of representative and responsible Government from the Indian Councils Act of 1861 down to the Indian Constitution of 1950.

General Features: Welfare State Ideal : Preamble to the Indian Constitution and Directive Principles of State Policy : Concepts of Unitary and Federal Government, Cabinet System, Due Process of Law, Judicial Review, Constitutional Conventions; Comparison of the Salient Features of the Indian Constitution with those of the U.K. and the U.S.A., Canada and Australia.

Division of Powers : Theory of separation of powers.

The Legislature—Legislative procedure; Privileges of Legislature; Delegation of legislative power.

The Executive.—Presidential and Parliamentary Executives; Provisions relating to Services and Public Service Commissions; The doctrine of Rule of Law.

The Judiciary.—Judicial control of administrative and quasi-judicial authorities; Scope of Writ Jurisdiction; Independence of the Judiciary.

Distribution of Legislative Powers : Principles of distribution of powers with special reference to Treaty Power; Commerce Power, Taxing Power, Constituent (Constitution-Amending) Power and Residual Power, Judicial doctrines relating to distribution of powers.

Fundamental Rights : Nature and scope of the various fundamental rights guaranteed under the Constitution.

NOTE.—Candidates will be expected to be conversant with the text of the Indian Constitution amendments thereto, and leading decisions of the Supreme Court.

13(b). Jurisprudence.—

Jurisprudence : Definition and scope; various Schools of Jurisprudence; Concepts and doctrine regarding Sovereignty.

Law : Law and Morals; Evolution of Law; Law of Nature, Law of the State; Imperative theory of Law; Pure theory of Law, Sociological theory of Law; Kinds of Law; Civil Law; Criminal Law; Substantive Law and Adjective Law; Private Law and Public Law; International Law; Law and Justice; Law and Equity; Justice according to Law; Administration of Justice.

Sources of Law : Customs, Judicial Precedent, Legislation; Codification.

Elements of Law : Analysis and classification of juristic concepts : Personality; Right, Duty, Liberty, Power, Immunity, Disability; Status, Possession, Ownership; Lease, Trust, Easement, Security; Wrong Liability, Obligation; Act, Intention, Motive, Negligence; Title ; Prescription; Inheritance and Wills.

Evolution of Legal Concepts; Evolution of Contract Tort, Crime, Property, and Wills. Current trends in Juristic thought.

14(a). Medieval Civilisation as Reflected in Arabic Literature (570 A.D.—1650 A.D.)—

The paper will test the candidate's knowledge of geography, history and social, political and religious evolution and developments.

14(b). Medieval Civilisation as Reflected in Persian Literature (570 A.D.—1650 A.D.)—

The paper will test the candidate's knowledge of geography, history and social, political and religious evolution and developments.

14(c). Ancient Indian Civilization and Philosophy.—

The history of the Civilisation, Philosophy and Thought of India from 2000 B.C. to 1200 A.D.

NOTE.—The paper will test the knowledge of geography, history and social, political and religious evolution and developments. Questions may be set which require an acquaintance with archeological discoveries.

15. Anthropology :

(A) **Physical Anthropology**. Definition and scope. The relation of Physical Anthropology to other sciences. The evolution of Man, his exact place among the Primitive Group—his relationship to Prehuman and Protohuman forms from Parapithecus to Australopithecus.

Early types of Man—Palaeonthropic man—Pithecanthropus. *Synanthropus* and Neanderthal. Neanthropic man—*Cro Magnon*, *Grimaldi* and *Chancelade*—*Homo Sapiens*.

Racial differentiation of Man and bases of racial classification—Morphological, serological and genetic. Role of heredity and environment in the formation of Races. Principles of human genetics—Mendelian laws as applicable to Man.

Human Biology—The effects of nutrition, inbreeding and hybridisation

History of distribution of Man in India from the lithic ages to the Indus Valley civilization and Megalithic cultures of Central and Southern India. Racial types and their distribution in India.

(B) Social (Cultural) Anthropology.—Scope and functions. Relation with Sociology, Social Psychology and Archaeology. Different schools of Cultural Anthropology—Evolutionary Historical, Functional and Kultur Kreis. The structure and development of Human Society.

Economic Organisation—Early stage of hunting and food gathering, domestication of animals, agriculture shifting cultivation, terracing, intensive cultivation, implements used.

Political Organization—Clan, tribe, and dual organization, tribal council, function of headman or chief.

Social Organization—Marriage and kinship forms, matriarchy, patriarchy, polygyny, polyandry, exogamy and endogamy. Position of women, inheritance and divorce.

Primitive religion—Totemism, Taboo, magical and fertility rites, head hunting and human sacrifice.

Art, Music, Folk dance and sports.

Group relationship, adjudication of disputes, concept of Justice and punishment.

Intelligence level, special aptitudes and abilities, emotional needs underlying primitive behaviour and ethnocentrism.

Structure of personality and development of personality and its role in primitive society.

Acculturation and the effects of contact on primitive tribes. Depopulation and its causes. Economic and psychological frustration. Decline of primitive tribes in America, Africa and Oceania. Depopulation among Indian tribals and remedial measures.

(C) Intensive study of any one of the ethnic divisions of tribal India :

1. The tribes of the N.E.F.A. or North Eastern Frontiers of India.
2. The tribes of the Naga Hills—Tewansang Area.
3. The autonomous tribes of Assam—the Khasis, the Garos, Mikirs and the Lushai.
4. The Australoid tribes of Chotanagpur and Central India.
5. The tribes of Southern India including the tribes of the Nilgiri Hills.
6. The tribes of the Andaman and Nicobar Islands.

NOTE.—Candidatas will be required to answer questions on (C) and (A) or (B).

16. Advanced Sociology :

Nature of Sociological Inquiry : Sociology and Science; Society and Individual; Human Groups—their nature, types, formation and functions; Family and Kinship; Culture and Culture Traits; Culture and Personality; Role of Culture in Society; Socialisation and Social Deviation; Social Order, Social Stratification—caste and class; Institutions and Associations; Social Processes; Social Control—Public opinion, religion and morality, law, and education; Social Change; Social Evolution; Sanskritisation; Social Integration.

Crowd, Public Opinion, Propaganda, Communication and Leadership.

Sociological Concepts of Indian Social System; Development of Indian Social Thought with special reference in Manu, Buddha and Gandhi.

Recent Trends in Sociological Theory : Structural-Functional Approach; Historical Approach; Comparative approach.

Applied Sociology—Sociology, Social Policy and Social Planning; Social Demography; Social aspects of economic development in developing societies; Community Development.

Methodology of Social Research; Social Research and Social Welfare.

The candidates will be expected to illustrate theory by facts, and to analyse problems with the help of theory. They will be expected to be particularly conversant with Indian problems.

PART D

[Vide Sub-Section (B) of Section 1 of Appendix II]

Personality test.—The candidate will be interviewed by a Board who will have before them a record of his career. He will be asked question on matters of general interest. The object of the interview is to assess the personal suitability of the candidate for the Service or Services for which he has applied by a Board of competent and unbiased observers. The test is intended to judge the mental calibre of a candidate. In broad terms, this is really an assessment of not only his intellectual qualities but also social traits and his interest in current affairs. Some of the qualities to be judged are mental alertness, critical powers of assimilation, clear and logical exposition, balance of judgement, variety and depth of interest, ability for social cohesion and leadership, intellectual and moral integrity.

2. The technique of the interview is not that of a strict cross examination but of a natural, though directed and purposive conversation which is intended to reveal the mental qualities of the candidate.

3. The personality test is not intended to be a test either of the specialised or general knowledge of the candidates which have been already tested through his written papers. Candidates are expected to have taken an intelligent interest not only in their special subject of academic study but also in the events which are happening around them both within and without their own state or country, as well as in modern currents of thought, and in new discoveries which should rouse the curiosity of well educated youth.

APPENDIX III

Brief particulars relating to the Services to which recruitment is being made through this Examination.

1. *Indian Administrative Service.*—(a) Appointments will be made on probation for a period of two years which may be extended. Successful candidates will be required to undergo probation at such place and in such manner and pass such examinations during the period of probation as the Government of India may determine.

(b) If, in the opinion of Government, the work or conduct of an officer on probation is unsatisfactory or shows that he is unlikely to become efficient, Government may discharge him forthwith.

(c) On the conclusion of his period of probation, Government may confirm the officer in the Service or if his work or conduct has in the opinion of Government been unsatisfactory, Government may either discharge him from the Service or may extend his period of probation for such further period as Government may think fit.

(d) An officer belonging to the Indian Administrative Service will be liable to serve anywhere in India or abroad either under the Central Government or under a State Government.

(e) Scales of pay :—

Junior Scale—Rs. 400—400—500—40—700—EB—30—1,000 (18 years).

Senior Scale :

(i) Time Scale—Rs. 900 (6th year or under)—50—1,000—60—1,600—50—1,800 (22 years).

(ii) Selection Grade—Rs. 1,800—100—2,000.

In addition there are super-time scale posts carrying pay between Rs. 2,150 and Rs. 3,500 to which Indian Administrative Service Officers are eligible for promotion.

Dearness allowance will be admissible in accordance with the orders issued from time to time.

A probationer will start on the junior time scale and be permitted to count the period spent on probation towards leave, pension or increment in the time scale.

(f) *Provident Fund*.—Officers of the Indian Administrative Service are governed by the All India Services (Provident Fund) Rules, 1955.

(g) *Leave*.—Officers of the Indian Administrative Service are governed by the All India Services (Leave) Rules, 1955.

(h) *Medical Attendance*.—Officers of the Indian Administrative Service are entitled to medical attendance benefits admissible under the All India Services Medical Attendance Rules, 1954.

(i) *Retirement Benefits*.—Officers of the Indian Administrative Service appointed on the basis of Competitive Examination are governed by the All India Services (Death-cum-Retirement Benefits) Rules, 1958.

2. *Indian Foreign Service*.—(a) Appointment will be made on probation for a period which will not ordinarily exceed 3 years. Successful candidates will be required to pursue a course of training in India for approximately twenty-one months. Thereafter they may be posted as Third Secretaries or Vice-Consuls in Indian Missions whose languages are allotted to them as compulsory languages. During their period of training the probationers will be required to pass one or more departmental examination before they become eligible for confirmation in Service.

(b) On the conclusion of his period of probation to the satisfaction of Government and on his passing the prescribed examinations, the Probationer is confirmed in his appointment. If, however, his work or conduct has, in the opinion of the Government, been unsatisfactory, Government may either discharge him from the Service or may extend his period of probation for such period as they may think fit or may revert him to his substantive post, if any.

(c) If, in the opinion of Government, the work or conduct of an officer on probation is unsatisfactory or shows that he is not likely to prove suitable for the Foreign Service, Government may either discharge him forthwith or may revert him to his substantive post, if any.

(d) Scales of pay :—

Junior Scale—Rs. 400—400—500—40—700—EB—30—1,000.

Senior Scale—Rs. 900 (6th year or under)—50—1,000—60—1,600—50—1,800.

In addition there are super-time scale posts carrying pay between Rs. 1,800 and Rs. 3,500 to which I.F.S. Officers are eligible for promotion.

(e) A probationer will receive the following pay during probation :—

First Year—Rs. 400 per mensem.

Second Year—Rs. 400 per mensem.

Third Year—Rs. 500 per mensem.

NOTE 1.—A probationer will be permitted to count the periods spent on probation towards leave, pension or increment in the time-scale.

NOTE 2.—Annual increments during probation will be contingent on the probationer passing the prescribed test, if any, and showing progress to the satisfaction of Government. Increments can also be earned in advance by passing the departmental examinations.

NOTE 3.—The pay of a Government servant who held a permanent post other than a tenure post in a substantive capacity prior to his appointment as a probationer will be regulated subject to the provision of F.R. 22-B(1).

(f) An officer belonging to the Indian Foreign Service will be liable to serve anywhere inside or outside India.

(g) During Service abroad I.F.S. officers are granted foreign allowances according to their status to compensate them for the increased cost of living and of servants and also to meet their special responsibilities in regard to entertainment. In addition, the following concessions are also admissible to I.F.S. officer during service abroad :—

(i) Free furnished accommodation according to status.

(ii) Medical attendance facilities under the Assisted Medical Attendance Scheme.

(iii) Return air passage to India up to a maximum of two, for special emergencies such as the death or serious illness of an immediate relation in India or marriage of daughter.

(iv) Annual return air passage for children between the ages of 8 and 21 studying in India to visit the parents during the long vacations, subject to certain conditions.

(v) An allowance for the education of children up to a maximum of two children between the ages of 5 and 18 at rates prescribed by Government from time to time.

(vi) Outfit allowance at the time of departure for training abroad and on confirmation in the service. Outfit allowance is also granted at various stages of an officer's career in accordance with the prescribed rules. Special outfit allowance is admissible in addition to the ordinary outfit allowance to officers posted in countries where abnormally hard climatic conditions exist.

(vii) Home leave passages for officers, their families and servants after a minimum of 2 years service abroad.

(h) The Revised Leave Rules, 1933, as amended from time to time will apply to Members of the Service subject to certain modifications. For Service abroad I.F.S. Officers are entitled under the I.F.S. (PLCA) Rules, 1961; to an additional credit of leave to the extent of 50 per cent of leave admissible under the Revised Leave Rules.

(i) *Provident Fund.*—Officers of the Indian Foreign Service are governed by the General Provident Fund (Central Services) Rules, 1960.

(j) *Retirement Benefits.*—Officers of the Indian Foreign Service appointed on the basis of competitive examination are governed by the Liberalised Pension Rules, 1950.

(k) While in India officers are entitled to such concessions as are admissible to other Government servants of equal and similar status.

3. *Indian Police Service.*—(a) Appointment will be made on probation for a period of two years which may be extended. Successful candidates will be required to undergo probation at such place and in such manner and pass such examinations during the period of probation as Government may determine.

- (b) As in clauses (b) and (c) for the Indian
- (c) Administrative Service.

(d) An officer belonging to the Indian Police Service will be liable to serve anywhere in India or abroad either under the Central Government or under a State Government.

(e) Scales of pay :—

Junior Scale :—Rs. 400—400—450—30—600—35—670—EB—35—950. (18 years).

Senior Scale :—Rs. 740 (6th year or under)—40—1100—50/2—1250—50—1,300. (22 years).

Section Grade—Rs. 1,400.

Deputy Inspector General of Police.—Rs. 1,600—100—2,000.

Commissioners of Police, Calcutta and Bombay.—Rs. 1,800—100—2,000.

Inspector General of Police.—Rs. 2,500—125/2—2,750.

Director, Intelligence Bureau.—Rs. 3,000.

Dearness allowance will be admissible in accordance with the orders issued from time to time.

(f)

- (g) As in clauses (f), (g), (h) and (i) for the
- (h) Indian Administrative Services.

(i)

4. *Delhi and Andaman & Nicobar Islands Police Service Class II.*—(a) Appointments will be made on probation for a period of two years which may be extended at the discretion of the competent authority. Candidates appointed on probation will be required to undergo such training and pass such departmental tests as the Central Government may prescribe.

(b) If in the opinion of Government the work or conduct of an officer on probation is unsatisfactory or shows that he is unlikely to become efficient, Government may discharge him forthwith.

(c) The officer who has been declared to have satisfactorily completed his period of probation may be confirmed in the service. If his work or conduct has in the opinion of Government been unsatisfactory, Government may either discharge him from the Service or may extend his period of probation for such further period as Government may think fit.

(d) An officer belonging to the Service will be required to serve in Delhi or Andaman and Nicobar Islands under the Administration/Government of any of these territories. He may also be required to serve in any police-intelligence organisation of the Government of India.

(e) Scales of pay :—

Grade I (Selection Grade)—Rs. 1,000 (fixed).

Grade II—Time Scale—Rs. 350—25—500—30—590—EB—30—800.

A person recruited on the results of competitive examination shall, on appointment to the Service, draw pay at the minimum of the time-scale, provided that if he held a permanent post, other than a tenure post in a substantive capacity prior to his appointment to the Service, his pay during the period of his probation in the Service shall be regulated under the proviso of Fundamental Rule 22 B(I). The pay and increments in the case of other persons appointed to the Service shall be regulated in accordance with the Fundamental Rules.

(f) Officers of the Service are entitled to get dearness allowance at the Central Government rates applicable to employees drawing pay in revised Central scales of pay.

(g) In addition to dearness allowance officers of the Service are entitled to draw compensatory (city) allowance, house rent allowance and allowances to compensate for higher cost of living in hill stations, expensiveness incidental in remote localities etc. if they are posted at places, either for training or on duty, where such allowances are admissible.

(h) Officers of the Service are governed by the Delhi and Andaman & Nicobar Islands Police Service Rules, 1971, and such other regulations as may be made or instructions issued by the Central Government for the purpose of giving effect to those Rules. In regard to matters not specifically covered by the aforesaid Rules or by regulations or orders issued thereunder or by special orders, they are governed by the rules, regulations and orders applicable to corresponding officers serving in connection with the affairs of the Union.

5. *Central Information Service, (Grade II Class I).*—

(a) The Central Information Service consists of posts all over India, in various media organisations of the Ministry of Information and Broadcasting, requiring journalistic and similar professional qualifications with previous experience of work on a newspaper or news agency or publicity organisations. The service was constituted with effect from 1st March, 1960.

(b) The Service has at present the following grades:—

Grade	Scale of pay
Class I	
Selection Grade . . .	Rs. 2, 500—125/2—2,750.
Senior Administrative Grade . . .	
(Senior Scale) . . .	Rs. 1,800—100—2,000.
(Junior Scale) . . .	Rs. 1,600—100—1,800.
Junior Administrative Grade . . .	
(Senior Scale) . . .	Rs. 1,300—60—1,600.
(Junior Scale) . . .	Rs. 1,100—50—1,400.
Grade I . . .	Rs. 700—40—1,100 50/2 —1,250.
Grade II . . .	Rs. 400—400—450—30— 600—35—670—EB—35— —950.
Class II (Gazetted)	
Grade III . . .	Rs. 350—25—500—30—590 —EB—30—800.
Class II (Non-Gazetted)	
Grade IV . . .	Rs. 270—10—290—15— —410 FB —15—485.

(c) Direct recruitment is provided to the percentage of vacancies, as specified below, in the following grades of the service :—

Junior Administrative Grade (Junior Scale) . . .	12½ %
Grade I . . .	25%
Grade II . . .	50% of permanent vacancies
Grade IV . . .	100%

Vacancies in Grade III are filled by promotion, on selection basis, on the recommendations of Departmental Promotion Committee from amongst Grade IV officers.

50% permanent and all temporary vacancies in Grade II, 75% vacancies in Grade I and 87½% vacancies in the Junior Administrative Grade (Junior Scale) are filled by promotion by selection from amongst officers holding duty posts in the next lower grades.

Vacancies in the Selection Grade, Senior Administrative Grade (Senior Scale), and Senior Administrative Grade (Junior Scale), and Junior Administrative Grade (Senior Scale) are filled by selection from amongst officers holding duty posts in the respective next lower grade, in case no suitable officer is available for such promotion, recruitment to such vacancies in the Selection Grade and Senior Administrative Grade is to be made in consultation with the Union Public Service Commission. Vacancies in the Junior Administrative Grade (Senior Scale), are filled by promotion on the basis of seniority-cum-fitness from amongst officers holding duty posts in the Junior Scale of that Grade.

The Government can fill, in consultation with the Union Public Service Commission, in any grade a number of posts and exceeding 10% of the strength of that grade, by the appointment of officers of State Publicity Organisation on deputation, for such period not exceeding five years, as the Government may specify. The posts so filled are taken into account in determining the number of posts to be filled by promotion or by direct recruitment.

(d) (i) Direct recruits to Grade II will be on probation for two years. During probation they will be given training in the Indian Institute of Mass Communication, on a news-paper or news agency, in different media units of the Ministry of Information and Broadcasting and at the National Academy of Administration. The total period of training will be about 15 months. The period and nature of training will be liable to alteration by Government. During the training, they will have to pass the 'end-of-the-course-test' at the National Academy of Administration and first and second departmental tests at the Indian Institute of Mass Communication, which will include a language test. Failure to pass the departmental test during the training period involves liability to discharge from service or reversion to substantive post, if any, on which the candidate may hold lien.

(ii) On the conclusion of period of probation Government may confirm the direct recruits in their appointments in accordance with the rules in force. If the work or conduct of an officer on probation is unsatisfactory, he may be discharged from service or his period of probation extended for such period as the Government may deem fit. If his work or conduct is such as to show that he is unlikely to become an efficient Grade II officer of the Service, he may be discharged forthwith.

(iii) Probationers shall start on the minimum of the time scale of Grade II. On passing the first departmental test, the pay of probationers will be raised to Rs. 450/- in the scale of pay of Grade II of the Central Information Service. On passing the second departmental test the pay will be fixed at the stage of Rs. 480/-. The pay beyond the stage of Rs. 480/- will not be allowed unless they have completed 4 years of service, subject to other conditions as may be found necessary. In case any of the Probationers does not pass the 'end-of-the-course-test' at the National Academy of Administration, Mussoorie, his first increment will be postponed by one year from the date on which he would have drawn it or up to the date on which under the departmental regulations, the second increment accrues, whichever is earlier.

(iv) The pay of a Government servant who held a permanent post other than a tenure post in a substantive capacity prior to his appointment as probationer, will, however, be regulated subject to the provisions of F.R. 22-B(I).

(e) Government may require any member of the Service to hold for a specified period a post in the publicity organisation of a Union Territory.

(f) Government may post an officer to hold a field post in any organisation under the Ministry of Information and Broadcasting.

(g) As regards leave, pension and other conditions of service officers of the Central Information Service will be treated like other Class I and Class II officers.

NOTE.—It should be clearly understood by probationers that their appointment would be subject to any change in the constitution of the Central Information Service which the Government of India may think proper to make from time to time and that they would have no claim for compensation in consequence of any such changes.

6. Indian Audit and Accounts Service.
 7. Indian Customs and Central Excise Service.
 8. Indian Defence Accounts Service.

(a) Appointments will be made on probation for a period of 2 years, provided that this period may be extended if the officer on probation has not qualified for confirmation by passing the prescribed departmental examinations. Repeated failure to pass the departmental examinations within a period of 3 years will involve loss of appointment.

(b) If, in the opinion of Government or the Comptroller and Auditor General, as the case, may be, the work or conduct of an officer on probation is unsatisfactory, or shows that he is unlikely to become efficient, Government may discharge him forthwith.

(c) On the conclusion of his period of probation Government or the Comptroller and Auditor General as the case may be, may confirm the officer in his appointment or if his work or conduct has, in the opinion of Government or the Comptroller and Auditor General, as the case may be, been unsatisfactory, Government may either discharge him from the service or may extend his period of probation for such further period as Government may think fit, provided that in respect of appointments to temporary vacancies there will be no claim to confirmation.

(d) In view of the possibility of the separation of Audit from Accounts and other reforms the constitution of the Indian Audit and Accounts Service is liable to undergo changes and any candidate selected for that Service will have no claim for compensation in consequence of any such changes and will be liable to serve either in the separated Accounts Offices under the Central or State Government or in the Statutory Audit Offices under the Comptroller and Auditor General and to be absorbed finally if the exigencies of service require it in the cadre on which posts in the separated Accounts Offices under the Central or State Governments may be borne.

(e) The Indian Defence Accounts Service carries with it a definite liability for service in any part of India as well as for field Service in or out of India.

(f) Scales of Pay :—

Indian Audit and Accounts Service :

Time Scale of I.A. & A.S. Rs.—400—400—450—
 —30—510—EB—700—40—1,100—50/2—1,250

Junior Administrative Grade.—Rs. 1,300—60—
 1,600.

Accountants General.—Rs. 1,800—100—2,000—125—
 —2,250.

Additional Deputy Comptroller & Auditor General's Grade.—Rs. 2,500—125/2—2,750.

Deputy Comptroller & Auditor General of India—
 Rs. 3000/-.

NOTE 1.—Probationary Officers will start on the minimum of the time scale of I.A. & A.S. and will count their service for increments from the date of joining.

NOTE 2.—The Officers on probation will not be allowed the pay above the stage of Rs. 400 unless they pass the departmental examination in accordance with the rules which will be prescribed from time to time.

NOTE 3.—In the case of probationers who do not pass the End-of-the-Course-Test at the National Academy of Administration, Mussoorie, the first increment raising their pay to Rs. 450 shall be postponed by one year from the date on which they would have drawn

it or upto the date on which, under the Departmental regulations, the second increment accrues to them, whichever is earlier. The failed candidates will not be required to take the test again.

NOTE 4.—The pay of a Government servant who held a permanent post, other than a tenure post, in a substantive capacity prior to his appointment as probationer will, however, be regulated subject to the provisions of F.R.-22(B)(1).

Indian Customs and Central Excise Service :

Time Scale :—

Superintendent of Central Excise, Class I.	Rs. 400—400—450—
Assistant Collector of Central Ex- cise.	30—510—EB—700—
Assistant Collector of Customs	40—1,100—50/2— 1,250.

Deputy Collector of Customs	Rs. 1,300—60—1,600.
Deputy Collector of Central Excise	
Additional Collector Appellate Collector	
Collector of Customs	Rs. 1,800—100—2,000
Collector of Central Excise	—125—2,250.

(a) Appointments will be made on probation for a period of 2 years, provided that this period may be extended if the officer on probation has not qualified for confirmation by passing the prescribed departmental examinations. Repeated failures to pass the departmental examinations within a period of two years will involve loss of appointment.

(b) If, in the opinion of the Government, the work or conduct of an officer on probation is unsatisfactory, or shows that he is unlikely to become efficient, Government may discharge him forthwith.

(c) On the conclusion of his/her period of probation, Government may confirm the officer in his/her appointment or if his/her work or conduct has in the opinion of Government been unsatisfactory, Government may either discharge him/her from the service or may extend his/her period of probation for such further period as Government may think fit, provided, that in respect of appointments to temporary vacancies there will be no claim to confirmation.

(d) The Indian Customs and Central Excise Service, Class I carries with it a definite liability for service in any part of India.

NOTE 1.—A probationary officer will start on the minimum of the time scale of pay of Rs. 400—400—450—30—510—EB—700—40—1,100—50/2—1,250, and will count his/her service for increments from the date of joining.

NOTE 2.—An Officer on probation will not be allowed pay in the time scale above the stage of Rs. 400/- unless he/she passes the prescribed departmental examinations in accordance with the rules which will be prescribed from time to time.

NOTE 3.—The pay of a Government servant who held a permanent post, other than a tenure post in a substantive capacity prior to his appointment as a probationer in the Indian Custom and Central Excise Service, class I will be regulated subject to the provisions of F.R. 22-B(1).

NOTE 4.—During the period of probation, an officer will be posted to Central Excise Department/Customs Department/Narcotics Department for departmental training and to the National Academy of Administration,

Mussoorie for a Foundational course training. At the end of the training at Mussoorie he/she will have to pass the 'end-of-the-course' test. He/she will have to pass part I and part II of the Departmental Examination. On passing the 'end-of-the-course' test and one of the parts of the Departmental Examination, he/she will be granted a first advance increment raising his/her pay to Rs. 450. On passing both the parts of the Departmental Examination he/she will be granted the second advance increment raising his/her pay to Rs. 480/- His/Her pay beyond the stage of Rs. 480/- will not be allowed unless he/she has completed 4 years of service, subject to such other conditions as may be found necessary.

In case, a probationer does not pass the 'end-of-the-course' test at the Academy, his/her first advance increment will be postponed by one year from the date on which he/she would have drawn it or upto the date on which under the departmental regulations, the second advance increment accrues, whichever is earlier.

NOTE 5.—It should be clearly understood by the probationers that their appointment would be subject to any change in the constitution of the Indian Customs and Central Excise Service, Class I which the Government of India may think proper to make from time to time and that they would have no claim for compensation in consequence of any such change.

Indian Defence Accounts Service :

Time Scale :—

Rs. 400—400—450—480—510—EB—700—40—
1,100—1,100—1,150—1,150—1,200—1,200—1,250.

Junior Administrative Grade.

Rs. 1,300—60—1,600.

Rs. 1,600—100—1,800 (Selection Grade).

Senior Administrative Grade.

Rs. 1,800—100—2,000—125—2,250.

Controller General of Defence Accounts—Rs. 2,750 (fixed).

NOTE 1.—Probationary officers will start on the minimum of the time scale and will count their service for increments from the date of joining. The pay of a Government servants who held a permanent post, other than a tenure post in a substantive capacity prior to his appointment as a probationer will, however, be regulated subject to the provisions of F.R. 22-B(1).

NOTE 2.—The Officers on probation will not be allowed the pay above the stage of Rs. 400 unless they pass the departmental examination in accordance with the rules in force from time to time; provided further that in the case of an officer who does not pass the 'end-of-the-course' test at the National Academy of Administration, Mussoorie, his first increment shall be postponed by one year from the date on which he would have drawn it on passing Part I of the Departmental Examination or up to the date on which the second increment accrues to him on passing Part II of the aforesaid examination, whichever is earlier.

9. Indian Income-tax Service, Class I.—(a) Appointments will be made on probation for a period of 2 years provided that this period may be extended if the officer on probation has not qualified for confirmation by passing the prescribed departmental examinations. Repeated failures to pass the departmental examinations within a period of 3 years will involve loss of appointment.

(b) If, in the opinion of Government, the work or conduct of an officer on probation is unsatisfactory or shows that he is unlikely to become an efficient Income-tax Officer, the Government may discharge him forthwith.

10—481 GI/71

(c) On the conclusion of his period of probation, Government may confirm the officer in his appointment or if his work or conduct has in the opinion of Government been unsatisfactory Government may either discharge him from the service or may extend his period of probation for such further period as Government may think fit, provided that in respect of appointment to temporary vacancies there will be no claim to confirmation.

(d) If the power to make appointments in the service is delegated by Government to any officer, that officer may exercise any of the powers of Government described in the above clauses.

(e) Scales of pay :—

Income-tax Officer, Class I.

Rs. 400—400—450—30—510—EB—700—40—
1,100—50/2—1250.

Assistant Commissioner of Income-tax.

Rs. 1,300—60—1,600.

Additional Commissioner of Income-tax.

Rs. 1,600—100—1,800.

Commissioners of Income-tax.

Rs. 1,800—100—2,000—125—2,250.

(f) During the period of probation, an officer will undergo training at the National Academy of Administration, Mussoorie and the Indian Revenue Service (Direct Taxes) Staff College, Nagpur. At the end of training at Mussoorie, he/she will have to pass the 'end-of-the-course' test. In addition, I and II departmental examinations will also have to be passed during the period of probation. On passing the end-of-the-course test and the I Departmental Examination, his/her pay will be raised to Rs. 450. On passing the 2nd departmental examination, the pay will be raised to Rs. 480. The pay beyond the stage of Rs. 480 will not be allowed unless he/she is confirmed and has completed 4 years of service subject to such other conditions as may be found necessary.

In case he/she does not pass the end of the course test at the Academy, the first increment will be postponed by one year from the date on which he/she would have drawn it or up to the date on which under the departmental regulations, the second increment accrues, whichever is earlier.

NOTE 1.—The officer on probation will not be allowed the pay above the stage of Rs. 400 unless he passes the departmental examinations in accordance with the rules which will be prescribed from time to time.

NOTE 2.—It should be clearly understood by probationers that their appointment would be subject to any change in the constitution of the Income-tax Service, Class I, which the Government of India may think proper to make from time to time and that they would have no claim for compensation in consequence of any such changes.

10. Indian Ordnance Factories Service, Class I (Non-Technical Cadre)

(a) Selected candidates will be appointed as Assistant Managers (On Probation). The period of probation will be two years which may be reduced or extended by the Government on the recommendation of the Director General, Ordnance Factories. An Assistant Manager (on probation) will undergo such training as shall be provided by Government and may be required to pass such departmental and language tests as Government may prescribe. The language tests will include a test in Hindi.

On the conclusion of his period of probation, Government will confirm the officer in his appointment. If, however, during or at the end of the period of probation his work or conduct has, in the opinion of Government, been unsatisfactory Government may either discharge him or extend his period of probation for such period as Government may think fit, provided that before orders of discharge are passed, the officer shall be apprised by competent authority of the grounds on which it is proposed to discharge him and be given an opportunity to show cause against it.

(b) The Assistant Managers (On probation) in the Indian Ordnance Factories Service would draw pay in the prescribed scale of pay of Rs. 400—400—450—30—600—35—670—EB—35—950. During the period of probation, they will be required to undergo training in the various branches of the Department and in the National Academy of Administration, Mussoorie, in a foundational course of training. On passing the 'end-of-the-course-test' and the Departmental Examination they will be entitled to grant of advance increment raising their pay to Rs. 450/- per month and 480/- per month from the date following the date on which the last paper of the 1st and 2nd Departmental examination, in which they pass, is held. Grant of further increment will be regulated according to their position in the time scale and after they have been confirmed in the grade.

In case any of the Assistant Managers (On probation) does not pass the 'end-of-the-course-test' at the National Academy of Administration, Mussoorie, his first increment will be postponed by one year from the date on which he would have drawn it or up to the date on which under the Departmental regulations, the second increment accrues, whichever is earlier.

(c) (i) Selected candidates shall, if so required, be liable to serve as Commissioned Officers in the Armed Forces for a period of not less than four years including the period spent on training, if any; provided that such person (i) shall not be required to serve as aforesaid after the expiry of ten years from the date of appointment and (ii) shall not ordinarily be required to serve as aforesaid after attaining the age of forty years.

(ii) The candidates shall also be subject to Civilians in Defence Services (Field Service Liability) Rules 1957, published under S.R.O. No. 92, dated 9th March, 1957. They will be medically examined in accordance with the medical standards laid down therein.

(d) The following are the rates of pay admissible :—

Assistant Manager	}	Junior Scale :
Technical Staff Officer	}	—Rs. 400—400—450—30— 600—35—670—EB— 35—950.

Senior Scale ;

Deputy Manager/Deputy Assistant Director General, Ordnance Factories.—Rs. 700—40—1,100—
50/2—1,250.

Manager/Senior Deputy Assistant Director General, Ordnance Factories.—Rs. 1,100—50—1,400.

Deputy General Manager/Assistant Director General, Ordnance Factories, Grade II.—Rs. 1,300—60—1,600—
1800.

Assistant Director General, Ordnance Factories, Grade I.—Rs. 1,800—100—2,000.

Deputy Director General, Ordnance Factories.—Rs. 2,000—125—2,250.

11. *Indian Postal Service.*—(a) Selected candidates will be under training in this department for a period which will not ordinarily exceed two years. During this period they will be required to pass the prescribed departmental test.

(b) If in the opinion of Government, the work or conduct of an officer under training is unsatisfactory or shows that he is unlikely to become efficient, Government may discharge him forthwith.

(c) On the conclusion of his period of training Government may confirm the officer in his appointment or, if his work or conduct has in the opinion of Government been unsatisfactory Government may either discharge him from the service or may extend his period of training for such further period as Government may think fit, provided that in respect of appointment to temporary vacancies there will be no claim to confirmation.

(d) If the power to make appointments in the Service is delegated by Government to any officer, that officer may exercise any of the powers of Government described in the above clauses.

(e) Scales of Pay:—

Time Scale :—Rs. 400—400—450—30—510—EB—
700—40—1,100—50/2—1,250 (Officers under training
will draw pay in this time scale).

Directors of Postal Services : Rs. 1,300—60—1,600.

Postmasters-General : Rs. 1,800—100—2,000—125—
2,250.

Members, Posts and Telegraphs Board : Rs. 2,500—
125/2—2,750.

Senior Member, Posts and Telegraphs Board :
Rs. 3,000.

(f) The probationers in the Indian Postal Service, would draw pay in the prescribed pay scale of Rs. 400—400—450—30—480—510—EB—700—40—1,100—50/2—1,250. During the period of probation, they will be required to undergo training in the various branches of the Department and in the National Academy of Administration, Mussoorie, in a foundational course of training. At the end of training at Mussoorie, they will have to pass the 'end-of-the-course-test'. They will also have to pass the Departmental examination as prescribed under the Departmental Rules. On passing the 'end-of-the-course-test' and the Departmental examination, their pay will be raised to Rs. 450. On confirmation, if they are confirmed on completion of the probationary period of two years their pay will be fixed at the stage of Rs. 480. Further regulation of their pay will, however, be determined by their position in the time scale.

In case, any of the probationers does not pass the 'end-of-the-course-test' at the National Academy of Administration, Mussoorie, his first increment will be postponed by one year from the date on which he would have drawn it or upto the date on which under the Departmental regulations, the second increment accrues, whichever is earlier.

Provided that the pay of a Government servant who held a permanent post other than a tenure post in a substantive capacity prior to his appointment as probationer will be regulated subject to the provisions of F.R. 22-B(1).

(g) It should be clearly understood by the officers on probation that their appointment would be subject to any change in the constitution of the Indian Postal Service, which Government of India may think proper to make from time to time and that they would have no claim for compensation in consequence of any such changes.

(h) Selected candidates will be liable to serve in the Army Postal Service in India or abroad as required by Government.

12. *Indian Railway Accounts Service.*—(a) Appointments will be made on probation for a period of 2 years during which the service will be liable to termination on three months' notice on either side. The period of probation may be extended if the officer on probation has not qualified for confirmation by passing the prescribed departmental examinations.

Government may terminate the appointment of a Probationary Officer who fails to pass all the Departmental Examinations within three years of the date of appointment.

(b) Probationers of the Indian Railway Accounts Service will also be required to undergo training in two phases at the Railway Staff College, Baroda, and to pass the tests prescribed by the College authorities. The tests in the College are compulsory and a second chance, in the event of failure will not be given except in exceptional circumstances and provided the record of the officer, is such that such relaxation may be made. They may, however, be put on to a working post on satisfactory completion of two years' training but they may not be confirmed till they have passed the tests at the Railway Staff College, Baroda, and passed the higher and lower departmental examinations.

(c) Probationers should have already passed or should pass during the period of probation an examination in Hindi in the Devanagari script of an approved standard. This Examination may be the 'Praveen' Hindi Examination conducted by the Directorate of Education, Delhi, on behalf of the Ministry of Home Affairs or one of the equivalent Examinations recognized by the Central Government.

No probationary officer can be confirmed or his pay in the time scale raised to Rs. 450 p.m. unless he fulfils this requirement; and failure to do so will involve liability to termination of service. No exemption can be granted.

(d) Officers (including probationers) of the Indian Railway Accounts Service recruited under these rules—

- (a) will be governed by the Railway Pension Rules; and
- (b) shall subscribe to the State Railway Provident Fund (non-contributory) under the rules of that Fund;

as amended from time to time.

(e) Officers recruited under these rules shall be eligible for leave in accordance with the liberalised leave rules as in force from time to time.

(f) If for any reason not beyond his control, a probationer in the Indian Railway Accounts Service wishes to withdraw from training or probation, he will be liable to refund the whole cost of his training and any other moneys paid to him during the period of his probation.

(g) If, in the opinion of Government, the work or conduct of an officer on probation is unsatisfactory, or shows that he is unlikely to become efficient, Government may discharge him forthwith.

(h) On the conclusion of his period of probation, Government may confirm the officer in his appointment or if his work or conduct has, in the opinion of Government, been unsatisfactory, Government may either discharge him from the service or may extend his period of probation for such further period as Government may think fit.

(i) Scales of pay :—

- (a) Junior Scale :—Rs. 400—400—450—30—500—35—670—EB—35—950. (Authorised Scale).

Senior Scale:—Rs. 700 (6th year and under)—40—1,100—50/2—1250. (Authorised Scale).

Junior Administrative Grade:—Rs. 1,300—60—1,600, (Authorised Scale).

Intermediate Administrative Grade :—Rs. 1,600—100—1,800.

Senior Administrative Grade :—Rs. 2,000—100—2,500.

(b) Increment from Rs. 400 to Rs. 450 will be stopped if they fail to pass the prescribed Departmental Examination within the two years' probationary period. The probationary period will be extended and on their passing the prescribed Departmental tests and being subsequently confirmed, their pay will, from the date following that on which the last departmental examination ends, be fixed at the stage in the time scale which they would have otherwise attained but no arrears of pay would be allowed to them. In such cases the date of future increments will not be affected.

Advance increments from Rs. 400 to Rs. 450 and from Rs. 450 to Rs. 480 in the Junior Scale of Rs. 400—950 may, however, be granted during the period of probation as soon as the probationary officer passes the prescribed examinations. After the grant of advance increments, the pay of the officer will be regulated according to his normal position in the pay scale with reference to the year of service.

In case, any of the probationers does not pass the 'end-of-the-course-test' at the National Academy of Administration, Mussoorie, his first increment will be postponed by one year from the date on which he would have drawn it or up to the date on which under the departmental regulations, the second increment accrues, whichever is earlier.

NOTE 1.—Probationary officers will start on the minimum of the Junior Scale and will count their service for increments from the date of joining. They will, however, be required to pass any departmental examination or examinations that may be prescribed before their pay can be raised from Rs. 400 p.m. to Rs. 450 p.m. in the time scale.

NOTE 2.—The pay of a Government servant who held a permanent post, other than a tenure post in a substantive capacity prior to his appointment as probationer, will however, be regulated subject to the provisions of Rule 2018A-(1)R.II.[F.R. 22-B(1)].

13. *Military Lands and Cantonments Service (Class I and Class II).*

(a) (i) A candidate selected for appointment shall be required to be on probation for a period which shall not ordinarily exceed 2 years. During this period he shall be required to undergo such course of training as may be prescribed by Government.

(ii) The pay of a Government servant who held a permanent post, other than a tenure post in a substantive capacity prior to his appointment as probationer will, however, be regulated subject to the provisions of F.R. 22-B(1).

(b) During the period of probation a candidate will be required to pass the prescribed departmental examination.

(c) (i) If in the opinion of Government, the work or conduct of an Officer on probation is unsatisfactory or shows that he is unlikely to become efficient, Government may discharge him after apprising him of the grounds on which it is proposed to do so, and after giving him an opportunity to show cause in writing before such order is passed.

(ii) If at the conclusion of the period of probation an Officer has not passed the Departmental Examination mentioned in sub-para (b) above Government may, in its discretion either discharge him from service, or if the circumstances, of the case so warrant, extend the period of probation for such period not exceeding one year as Government may consider fit.

(iii) On the conclusion of the period of probation Government may confirm an officer in his appointment, or if his work or conduct has in the opinion of Government been unsatisfactory, Government may either discharge him after apprising him of the grounds out of which it is proposed to do so and after giving him an opportunity to show cause in writing before such order is passed or extend the period of probation for such further period as Government may consider fit.

(d) If no action is taken by Government under Sub-para (c) above, the period after the prescribed period of probation shall be treated as an engagement from month to month, terminable on either side on the expiration of one calendar month's notice in writing, provided that the Officer shall have no claim to confirmation.

(e) No annual increment which may become due will be admissible to a member of the Service during his probation unless he has passed the departmental examination. An increment which was not thus drawn will be allowed from the date of passing of the departmental examination.

(f) In case, any of the Probationers does not pass the 'end-of-the-course-test' at the National Academy of Administration, Mussoorie, his first increment will be postponed by one year from the date on which he would have drawn it or upto the date on which under the departmental regulations, the second increment accrues, whichever is earlier.

(g) The scales of pay are as under.—

Administrative Posts

(i) Director, Military Lands and Cantonments.	Rs. 1,800—100— 2,000—125— 2,250.
(ii) Joint Director, Military Lands and Cantonments.	Rs. 1,600—100— 1,800.
(iii) Deputy Director, Military Lands and Cantonments.	Rs. 1,300—60— 1,600.
(iv) Assistant Director, Military Lands and Cantonments.	Rs. 1,100—50— 1,400.

Class I

(v) Deputy Assistant Directors, Military Lands and Cantonments, Military Estates Officer and Executive Officers.	Rs. 400—400—450— 30—510—EB— 700—40— 1,100—50/2— 1,250.
--	--

Class II

(vi) Executive Officers	Rs. 350—25—500— 30—590—EB— 30—800—EB— 830—35—900.
(vii) Assistant Military Estates Officers	Rs. 350—25—500— 30—590—EB— 30—800—EB— 830—35—900.

(b) (i) Class I Officers will normally be appointed as Deputy Assistant Directors, Military Estates Officers, and as Executive Officer to Class I Cantonments and Class

If Cantonments to which sub-clause (i) of clause (e) of sub-section (4) of Section 13 of the Cantonments Act, 1924 is applicable.

(ii) Class II Executive Officer will normally be appointed to Cantonments other than those mentioned in (i) above.

(i) (i) All promotions will be made by selection (seniority being considered only when the claims of two or more candidates are equal on merits) by Government on the recommendations of a Departmental Promotion Committee appointed in this behalf by the Government. On promotion from Class II to Class I, pay will be regulated under the Fundamental Rules.

(ii) No officer will normally be promoted to Class I unless he has completed three years of service in Class II.

(j) The Revised Leave Rules, 1933, as amended from time to time will apply.

(k) No member of the Service shall undertake any work not connected with his official duties without the previous sanction of Government.

(l) The Military Lands & Cantonments Service carries with it a definite liability for service in any part of India as well as for Field Service in India.

14. Indian Railway Traffic Service,

- (a) Candidates selected for appointment will be appointed as probationary officers in the Indian Railway Traffic Service for a period of three years during which they will undergo the training as indicated in para. (m) and put in a minimum period of one year's probation in a working post. If the period of training has to be extended in any case due to the training having not been completed satisfactorily, the total period of probation will be correspondingly extended.
- (b) If for any reasons not beyond his control a probationer in the Indian Railway Traffic Service wishes to withdraw from training or probation, he will be liable to refund the whole cost of his training and any other moneys paid to him during the period of his probation.
- (c) Appointments to the service will be on a probation for a period of three years during which the service of the officers will be liable to termination by three months notice on either side. Probationary Officers will be required to undergo practical training for the first two years. Those who complete this training successfully and are otherwise considered suitable will be placed in charge of a working post, provided they have passed the prescribed departmental and other examinations. It must be noted that these examinations should, as a rule, be passed at the first chance and that save under exceptional circumstances a second chance will not be allowed. Failure to pass any of the examinations may result in the termination of service and will, in any case, involve stoppage of increment.

At the end of one year in a working post the Probationary Officers will be required to 'pass final examination, both practical and theoretical, and will as a rule, be confirmed if they are considered fit for appointment in all res-

pects. In cases where the probationary period is extended for any reason, the drawal of the first and subsequent increments on their passing the departmental examinations, and on being confirmed, will be subject to the rules and orders in force from time to time.

(d) Probationers should have already passed or should pass during the period of probation an examination in Hindi in the Devanagari script of an approved standard. This examination may be the 'Praveen' Hindi Examination conducted by the Directorate of Education, Delhi, on behalf of the Ministry of Home Affairs or one of the equivalent examinations recognised by the Central Government.

No probationary Officer can be confirmed or his pay in the time scale raised to Rs. 450 p.m. unless he fulfils the requirements; and failure to do so will involve liability to termination of service. No exemption can be granted.

(e) Officers (including probationers) of the Indian Railway Traffic Service recruited under these rules :—

- (a) will be governed by the Railway Pension Rules; and
- (b) shall subscribe to the State Railway Provident Fund (non-contributory) under the rules of that Fund;

as amended from time to time.

(f) Pay will commence from the date of joining service. Service for increments will also count from that date.

(g) Officers recruited under these rules shall be eligible for leave in accordance with the liberalised leave rules as in force from time to time.

(h) Officers will ordinarily be employed throughout their service on the railway to which they may be posted on first appointment and will have no claim as a matter of right to transfer to some other Railway. But the Government of India reserve the right to transfer such officers in the exigencies of service to any other railway or project in or out of India.

(i) The relative seniority of officers appointed will ordinarily be determined by their order of merit in the competitive examination; if the period of training and consequently the period of probation has to be extended in any particular case due to the training having not been completed satisfactorily, the officer will be liable to lose in seniority. The Government of India, however reserve the right of fixing seniority at their discretion in individual cases. They also reserve the right of assigning to officers appointed otherwise than by a competitive examination positions in the seniority list at their discretion.

(j) Scales of pay :—

Junior Scale : Rs. 400—400—450—30—600—35—670—EB—35—950. (Authorised Scale).

Senior Scale : Rs. 700—(6th year and under)—40—1,100—50/2—1,250. (Authorised Scale).

Junior Administrative Grade : Rs. 1,300—60—1,600. (Authorised Scale).

Intermediate Administrative Grade: Rs. 1,600—100—1,800. (Authorised Scale).

Senior Adiministrative Grade : Rs. 2,000—100—2,500. (Authorised Scale).

NOTE 1.— Probationary officers will start on the minimum of the Junior Scale and will count their service for increments from the date of joining. They will, however, be required to pass any departmental examination or examinations that may be prescribed before their pay can be raised from Rs. 400 p.m. to Rs. 450 p.m. in the time scale.

Increment from Rs. 400 to Rs. 450 will be stopped if they fail to pass the Departmental Examination within the first two years of the training and probationary period. The probationary period will be extended and on their passing the prescribed Departmental tests and being subsequently confirmed, their pay will from the date following that on which the last departmental examination ends be fixed at the stage in the time scale which they would have otherwise attained but no arrears of pay would be allowed to them. In such cases the date of future increments will not be affected.

Advance increments from Rs. 400 to Rs. 450 and from Rs. 450 to Rs. 480 in the Junior Scale of Rs. 400—950 may, however, be granted during the period of probation as soon as the probationary officer passes the prescribed examinations. After the grant of advanced increments the pay of the officer will be regulated according to his normal position in the pay scale, with reference to the year of service.

In case any of the probationers does not pass the 'end-of-the-course-test' at the National Academy of Administration, Mussoorie, his first increment will be postponed by one year from the date on which he would have drawn it or up to the date on which under the departmental regulations, the second increment accrues, whichever is earlier.

NOTE 2.—The pay of a Government Servant who held a permanent post, other than a tenure post in a substantive capacity prior to his appointment as probationer, will, however, be regulated subject to the provisions of Rule 2018A(1)-R.II.[F.R.22-B(1)].

(k) The increments will be given for approved service only and in accordance with rules of the Department.

(l) Promotions to the administrative grades are dependent on the occurrence of vacancies in the sanctioned establishment and are made wholly by selection; mere seniority does not confer any claim for such promotion.

(m) Courses of training for probationers in the Indian Railway Traffic Service.

NOTE 1.—The Government of India reserve the right to reduce at their discretion, the period of training in the case of candidates who have had previous training or experience either in India or elsewhere.

NOTE 2.—Probationers will also have to undergo training at the Railway Staff College, Baroda, in two phases. The test in the Staff College is compulsory and a second chance in the event of failure will not be given except in exceptional circumstances and provided the record of the Officer is such that such a relaxation may be made. Failure to pass the test may involve the termination of service and in any case, the officers will not be confirmed till they pass the tests, their period of training and/or probation being extended as necessary.

NOTE 3.—The programme of training given below has been drawn up chiefly for the purpose of guidance; it may be varied at the discretion of General Managers to

suit particular cases provided that the total aggregate period of training is not ordinarily curtailed.

NOTE 4.—During the period of training, the probationer has to work as a Guard, Yard Master, Assistant Station Master, Station Master, Yard Foreman, Train Examiner, Assistant Loco Foreman, Assistant Controller etc. as detailed below. After completion of training when the probationer is posted against a working post, his duties involve travelling with no facilities for camping at way-side stations. He has to visit sites of accidents at odd hours and inspect Control offices and stations. The work is arduous and will involve night duties.

(1) Length of course—Two years.

S. No.	Item	Period (Weeks)
(1)	National Academy of Administrations, Mussoorie	17
(2)	Baroda Staff College (First Phase)	13
(3)	Area School, Guard's duties	4.5
(4)	Working as Guard	3
(5)	Booking/Parcel Office, Goods Shed and Transhipment Shed	4.5
(6)	Traffic Accounts and Travelling Inspector of Accounts.	4
(7)	Area School to qualify as Asstt. Station Master	4.5
(8)	Working as Yard Master, Asstt. Station Master, Station Master, Yard Foreman and Train Examiner	13
(9)	Working as Asstt. Loco Foreman	2
(10)	Assistant Controller	9
(11) (a)	Training in Divisional Office	4.5
	(b) Training as Power Controller	2
(12)	Baroda Staff College (Second Phase).	6.5
(13)	Railway to which allotted—Headquarters Office (operating)	5
(14)	Railway to which allotted—Headquarters Office (Commercial)	5
(15)	Training in Computer Programming and System Design	4.5
	Period set apart for Journey time for taking up various items for training and inescapable leave	2
	Total	104 weeks or 24 months

NOTE.—Item (3) to (11) which will cover 1 year will be in Asansol Division.

(2) Provided he passes the examination at the end of his two years' training, a probationer will be given charge of a working post on probation for a further year.

(3) Examination will be held as may be required at the close of courses as well as at intervals during the period of training.

NOTE.—Before a probationer is put to work independently as a Guard, Assistant Station Master, Station Master, Yard Foreman, Assistant Locomotive Foreman or Assistant Controller, he must be examined by a responsible officer of the administration in the respective duties for each of these posts and declared qualified.

15. *The Central Secretariat Service, Section Officers' Grade, Class II*—

(a) The Central Secretariat Service has, at present, the following grades :—

	Grade	Scale of Pay
Selection Grade—Deputy	Rs. 1,100—50—1,300—	
Secretary or equivalent	60—1,600—100—1,800.	
Grade I Under Secretary	Rs. 900—50—1,250—	
Section Officer's Grade	Rs. 350—25—500—30— 590—EB—30—800—EB 30 830—35—900.	
Assistant's Grade	Rs. 210—10—270—15— 300—EB—15—450— EB—20—530.	

Selection Grade and Grade I are controlled by the Cabinet Secretariat (Department of Personnel) on an all-Secretariat basis. Section Officers/Assistants' Grades, however are controlled by the Ministries.

Direct recruitment is made to the Section Officers' Grade and to the Assistants' Grade only.

(b) Direct recruits to the Section Officers' Grade will be on probation for 2 years during which they will undergo such training and pass such departmental tests as may be prescribed by Government. Failure to show sufficient progress in the course of training or to pass the tests will result in the discharge of the probationers from service.

(c) On the conclusion of his period of probation Government may confirm the officer in his appointment or if his work or conduct has in the opinion of Government been unsatisfactory, Government may either discharge him from the Service or may extend his period of probation for such further period as Government may think fit.

(d) If the power to make appointments in the Service is delegated by Government to any officer, that officer may exercise any of the powers of Government described in the above clauses.

(e) Section Officers will normally be heads of 'Sections' while officers of Grade I will normally be incharge of Branches consisting of one or more sections.

(f) Section Officers will be eligible for promotion to Grade I in accordance with the rules in force from time to time in this behalf.

(g) Officers of Grade I of the Central Secretariat Service will be eligible for appointment to the Selection Grade of the Service and to other higher administrative posts in the Central Secretariat.

(h) As regards leave, pension and other conditions of service officers of the Central Secretariat Service will be treated similarly to other Class I and Class II Officers.

16. *The Armed Forces Headquarters Civil Service, Assistant Civilian Staff Officer's Grade, Class II*—(a) The Armed Forces Head-quarters Civil Service, has at present the following grades :—

	Grade	Scale of Pay
Senior Civilian Staff Officer	Rs. 1,100—50—1,400.	
Civilian Staff Officer	Rs. 740—30—800—50— 1,150.	
Assistant Civilian Grade	Rs. 350—25—500—30— 509—EB—30—800.	
Staff Officer		
Assistants Grade	Rs. 210—10—270—15— 300—EB—15—450— EB—20—530.	

The above Service caters for the Armed Forces Headquarters and Inter-Services Organisations of the Ministry of Defence.

Direct recruitment is made to the Assistant Civilian Staff Officer's Grade and to the Assistants' Grade only.

(b) Direct recruits to the Assistant Civilian Staff Officer's Grade will be on probation for 2 years during which they will undergo such Training and pass such department tests as may be prescribed by Government. Failure to show sufficient progress in the course of training or to pass the tests will result in the discharge of the probationers from service.

(c) On the conclusion of his period of probation, Government may confirm the officer in his appointment, or if his work or conduct has, in the opinion of Government, been unsatisfactory, Government may either discharge him from the service or may extend his period of probation for such further periods as Government may think fit.

(d) If the power to make appointments in the Service is delegated by Government to any officer, that officer may exercise any of the powers of Government described in the above clauses.

(e) In the Armed Forces Headquarters and Inter-Service Organisations of the Ministry of Defence, Assistant Civilian Staff Officers will normally be heads of Sections while Civilian Staff Officers will normally be incharge of one or more Sections.

(f) Assistant Civilian Staff Officer's will be eligible for promotion to the Grade of Civilian Staff Officer in accordance with the rules in force from time to time in this behalf.

(g) Civilian Staff Officers' of the Armed Forces Headquarters Civil Service will be eligible for appointment to the Grade of Senior Civilian Staff Officer of the Service and to other administrative posts in accordance with the rules in force from time to time in this behalf.

(h) As regards leave, pension and other conditions of service, officers of the Armed Force Headquarters Civil Service will be governed by the rules, regulations and orders in force from time to time, in respect of civilians paid from the Defence Services Estimates.

17. Customs Appraisers' Service, Class II—

(a) Recruitment is made in the grade of Appraiser in the scale of Rs. 350—25—500—30—590—EB—30—800—EB—830—35—900. Appointments are made on probation for a period of two years which may be extended at the discretion of the competent authority. During the period of probation, the candidates will be required to undergo such training and pass such departmental tests as the Central Board of Excise and Customs may prescribe. They will not be allowed to draw pay above the stage of Rs. 375 unless they pass the prescribed departmental Examination in full.

(b) If on the expiration of the period of probation or any extension thereof the appointing authority is of the opinion that the selected candidate is not fit for permanent employment or if at any time during such period of probation or extension thereof he is satisfied that the candidate will not be fit for permanent appointment on the expiration of such period of probation he may discharge him from the service or pass such orders as he thinks fit.

(c) On the successful completion of the period of probation and after passing of the departmental examination the officers will be considered for confirmation in the grade.

(d) Appraisers will be eligible for promotion to the next higher grade of Assistant Collector in the Indian Customs and Central Excise Service Class I (Rs. 400/1250) in accordance with the rules inforce.

(e) Regarding leave and pension the officers will be treated like other Class II officers in Central Government department. As regards other terms and conditions of their service they will be governed by the provisions in the Recruitment Rules for the Custom Appraisers' Service, Class II. These rules particularly provide that the members of the Service will be liable to posting in any equivalent or higher posts under the Central Board of Excise and Customs anywhere in India.

18. Delhi and Andaman & Nicobar Islands Civil Service Class II—

(a) Appointments will be made on probation for a period of two years which may be extended at the discretion of the competent authority. Candidates appointed on probation will be required to undergo such training and pass such departmental tests as the Central Government may prescribe.

(b) If in the opinion of Government the work or conduct of an officer on probation is unsatisfactory or shows that he is unlikely to become efficient Government may discharge him forthwith.

(c) The officer who has been declared to have satisfactorily completed his period of probation may be confirmed in the Service. If his work or conduct has in the opinion of Government been unsatisfactory, Government may either discharge him from the Service or may extend his period of probation for such further period as Government may think fit.

(d) An officer belonging to the Service will be required to serve in Delhi or Andaman and Nicobar Islands under the Administration/Government of any of these territories

(e) Scales of pay

Grade I (Selection Grade) Rs. 900-50-1250.

Grade II—Time Scale—Rs. 400—25—500—30—590—EB—30—800—EB—30—830—35—900.

A person recruited on the results of competitive examination shall, on appointment to the Service, draw pay at the minimum of the time-scale, provided that if he held a permanent post, other than a tenure post in a substantive capacity prior to his appointment to the Service, his pay during the period of his probation in the Service shall be regulated under the provisions of Fundamental Rule 22-B(1). The pay and increments in the case of other persons appointed to the Service shall be regulated in accordance with the Fundamental Rules.

(f) Officers of the Service are entitled to get dearness allowance at the Central Government rates applicable to employees drawing pay in revised Central scales of pay.

(g) In addition to dearness allowance officers of the Service are entitled to draw compensatory (city) allowance, house rent allowance and allowances to compensate for higher cost of living in hill stations, expensiveness incidental in remote localities etc. if they are posted at places either for training or on duty where such allowances are admissible.

(h) Officers of the Service are governed by the Delhi and Andaman & Nicobar Islands Civil Service Rules, 1971 and such other regulations as may be made or instructions issued by the Central Government for the purpose of giving effect to those Rules. In regard to matters not specifically covered by the aforesaid Rules or by regulations or orders issued thereunder or by special orders they are governed by the rules, regulations and orders applicable to corresponding officers serving in connection with the affairs of the Union.

19. Goa, Daman and Diu Civil Service, Class II—

(a) Appointments will be made on probation for a period of two years which may be extended at the dis-

cretion of the competent authority. Candidates appointed on probation will be required to undergo such training and pass such departmental tests as the administrator of the Union territory of Goa, Daman and Diu may prescribe.

(b) If in the opinion of the administrator the work or conduct of an officer on probation is unsatisfactory or shows that he is unlikely to become efficient, the administrator may discharge him forthwith.

(c) The officer who has been declared to have satisfactorily completed his period of probation may be confirmed in the Service. If his work or conduct has in the opinion of the administrator been unsatisfactory he may either discharge him from the Service or may extend his period of probation for such further period as the administrator may think fit.

(d) An officer belonging to the Service will be required to serve at any place in the Union Territory of Goa, Daman and Diu.

(e) Scales of pay—

Grade I (Selection Grade)—Rs. 700—40—1,100—
50/2—1,250.

Grade II—Rs. 350—25—500—30—590—EB—30—
800—EB—30—830—35—900.

A person recruited on the results of competitive examination shall on appointment to the Service, draw pay at the minimum of the time-scale :

Provided that if he held a permanent post, other than a tenure post in a substantive capacity prior to his appointment to the Service, his pay during the period of his probation in Service shall be regulated under the provisions of sub-rule (1) of rule 22-B of the Fundamental Rules. The pay and increments in the case of other persons appointed to the Service shall be regulated in accordance with the Fundamental Rules.

Officers of the Service will be eligible for promotion to posts in the senior scale of the Indian Administrative Service in accordance with the Indian Administrative Service (Appointment by Promotion) Regulations, 1955.

(f) Officers of the Service are governed by Goa, Daman and Diu Civil Service Rules, 1967, and such other regulations as may be made or instruction issued by the administrator for the purpose of giving effect to those rules.

20. Pondicherry Civil Service, Class II—

(a) Appointments will be made on probation for a period of two years which may be extended at the discretion of the competent authority. Candidates appointed on probation will be required to undergo such training and pass such departmental tests as the administrator of the Union territory of Pondicherry may prescribe.

(b) If in the opinion of the administrator the work or conduct of an officer on probation is unsatisfactory or shows that he is unlikely to become efficient, the administrator may discharge him forthwith.

(c) The officer who has been declared to have satisfactorily completed his period of probation may be confirmed in the Service. If his work or conduct has in the opinion of the administrator been unsatisfactory, he may either discharge him from the Service or may extend his period of probation for such further period as the administrator may think fit.

(d) An officer belonging to the Service will be required to serve at any place in the Union Territory of Pondicherry.

(e) Scales of pay—Rs. 375—25—800.

A person recruited on the results of competitive examination shall, on appointment to the Service, draw pay at the minimum of the time-scale;

Provided that if he held a permanent post, other than a tenure post in a substantive capacity prior to his appointment to the Service his pay during the period of his probation in service shall be regulated under the provisions of sub-rule (1) of the rule 22-B of the Fundamental Rules. The pay and increments in the case of other persons appointed to the Service shall be regulated in accordance with the Fundamental Rules.

Officers of the Service will be eligible for promotion to posts in the senior scale of the Indian Administrative Service in accordance with the Indian Administrative Service (Appointment by Promotion) Regulations, 1955.

(f) Officers of the Service are governed by Pondicherry Civil Service Rules, 1967 and such other regulations as may be made or instruction issued by the administrator for the purpose of giving effect to those rules.

APPENDIX IV

REGULATIONS RELATING TO THE PHYSICAL EXAMINATION OF CANDIDATES

[These regulations are published for the convenience of candidates and in order to enable them to ascertain the probability of their coming up to the required physical standard. The regulations are also intended to provide guide lines to the medical examiners and a candidate who does not satisfy the minimum requirements prescribed in the regulations, cannot be declared fit by the medical examiners. However, while holding that a candidate is not fit according to the norms laid down in these regulations it would be permissible for a Medical Board to recommend to the Government of India for reasons specifically recorded in writing that he may be admitted to service without disadvantage to Government.

2. It should, however, be clearly understood that the Government of India, reserve to themselves absolute discretion to reject or accept any candidate after considering the report of the Medical Board].

The classification of various Services under the two categories, namely "Technical" and "Non-technical" will be as under :—

A. TECHNICAL

(1) Indian Railway Traffic Service.

(2) Indian Police Service and other Central Police Services, Class II.

B. NON-TECHNICAL

IAS, IPS, II & AS, Indian Customs Service, Indian Railway Accounts Service, Indian Defence Accounts Service, Income Tax Officers (Class I), Indian Postal Service, Military Lands and Cantonments Service Class J and II, and other Central Civil Services Class I & II.

1. To be passed as fit for appointment a candidate must be in good mental and bodily health and free from any physical defect likely to interfere with the efficient performance of the duties of his appointment.

2. (a) In the matter of the correlation of age, height and chest girth of candidates of Indian (including Anglo-Indian) race it is left to the Medical Board to use whatever correlation figures are considered most suitable as a guide in the examination of the candidates. If there be any disproportion with regard to height, weight and chest girth, the candidate should be hospitalised for investigation and X-ray of the chest taken before the candidate is declared fit or not fit by the Board.

(b) However, for certain services the minimum standard for height and chest girth without which candidates cannot be accepted, are as follows :—

	Height	Chest girth fully expanded	Expansion
Indian Railway	152 cm	84 cm	5 cm (for men)
Traffic Service	150 cm	79 cm	5 cm (for women)
(2) Indian Police Service, and Delhi, and Andaman & Nicobar Islands Police Service Class II.	165 cm 150 cm	84 cm 79 cm	5 cm (for men) 5 cm (for women)

The minimum height prescribed is relaxable in case of candidates belonging to races such as Gorkhas, Garwalis, Assamese, Nagaland Tribals, etc., whose average height is distinctly lower.

3. The candidate's height will be measured as follows :—

He will remove his shoes and be placed against the standard with his feet together and the weight thrown on the heels and not on the toes or other sides of the feet. He will stand erect without rigidity and with the heels, calves, buttocks and shoulders touching the standard; the chin will be depressed to bring the vertex of the head level under the horizontal bar and the height will be recorded in centimetres and parts of a centimetre to halves.

4. The candidate's chest will be measured as follows :—

He will be made to stand erect with his feet together, and to raise his arms over his head. The tape will be so adjusted round the chest that its upper edge touches the inferior angles of the shoulder blades behind and lies in the same horizontal plane when the tape is taken round the chest. The arms will then be lowered to hang loosely by the side, and care will be taken that the shoulders are not thrown upwards or backwards so as to displace the tape. The candidate will then be directed to take a deep inspiration several times and the maximum expansion of the chest will be carefully noted and the minimum and maximum will then be recorded in centimetres, 84—89, 86—93.5 etc. In recording the measurements fractions of less than half a centimetre should not be noted.

N.B.—The height and chest of the candidates should be measured twice before coming to a final decision.

5. The candidate will also be weighed and his weight recorded in kilograms; fractions of half a kilogram should not be noted.

6. (a) The candidate's eye-sight will be tested in accordance with the following rules. The result of each test will be recorded.

(b) There shall be no limit for minimum naked eye vision but the naked eye vision of the candidates shall, however, be recorded by the Medical Board or other medical authority in every case, as it will furnish the basic information in regard to the condition of the eye.

(c) The following standards are prescribed for distant and near vision with or without glasses for different types of Services.

Class of Service	Distant vision		Near vision	
	Better eye	Worse eye	Better eye	Worse eye
I.A.S., I.P.S. and Central Services	(Corrected vision)			
Class I & II				
(i) Technical	6/6 or 6/9	6/12 6/9	J.I	J.II
(ii) Non-Technical	6/9	6/12	J.I	J.II
I.O.F.S.	6/6 or 6/9	6/18 6/9	J.I	J.II

(d) (i) In respect of the Technical Services mentioned above and any other Services concerned with the safety of public, the total amount of Myopia (including the cylinder) shall not exceed—4.00 D. Total amount of Hypermetropia (including the cylinder) shall not exceed +4.00 D.

(ii) In every case of myopia fundus examination should be carried out and the results recorded. In the event of pathological condition being present which is likely to be progressive and affect the efficiency of the candidate, he/she should be declared unfit.

(c) *Field of Vision* : The field of vision shall be tested in respect of all services by the confrontation method. When such test gives unsatisfactory or doubtful results, the field of vision should be determined on the perimeter.

(f) *Night Blindness* : Broadly there are two types of night blindness : (1) as a result of vit. A deficiency and (2) as a result of Organic disease of Retina—a common cause being Retinitis pigmentosa. In (1) the fundus is normal, generally seen in younger age group and ill nourished persons and improves by large doses of Vit. A. In (2) the fundus is often involved and mere fundus examination will reveal the condition in majority of cases. The patient in this category is an adult and may not suffer from malnutrition. Persons seeking employment for higher posts in the Government will fail in this category. For both (1) and (2), dark adaptation test will reveal the condition. For (2) specially when fundus is not involved electro-Retinography is required to be done. Both these tests (dark adaptation and retinography) are time-consuming and require specialized set up, and equipment; and thus are not possible as a routine test in a medical check up. Because of these technical considerations, it is for the Ministry/Department to indicate if these tests for night blindness are required to be done. This will depend upon the job requirement and nature of duties to be performed by the prospective Government employees.

(g) *Colour Vision* : The testing of colour vision shall be essential in respect of the Technical Services mentioned above. As regards the non-Technical Services/posts, the Ministry/Department concerned will have to inform the Medical Board that the candidate is for a service requiring colour vision examination or not.

Colour perception should be graded into a higher and lower grade depending upon the size of aperture in the lantern as described in the table below :—

Grade	Higher Grade of Colour perception	Lower Grade of Colour Perception
1. Distance between the lamp and candidate	16'	16"
2. Size of aperture	1.3 m.m.	1.3 m.m.
3. Time of exposure	5 seconds	5 seconds

For the Indian Railway Traffic Service and for other Services concerned with the safety of the public, higher grade of colour vision is essential but for others lower grade of colour vision should be considered sufficient.

Satisfactory colour vision constitutes recognition with ease and without hesitation of signal red, signal green and white colours. The use of Ishihara's plates, shown in good light and a suitable lantern like Edridge Green's shall be considered quite dependable for testing colour vision. While either of the two tests may ordinarily be considered sufficient in respect of the Services concerned with road, rail and air traffic, it is essential to carry out the lantern test. In doubtful cases where a candidate fails to qualify when tested by only one of the two tests, both the tests should be employed. However, both the Ishihara's and Edridge Green's lantern shall be used for testing colour vision of candidates for appointment to the Indian Railway Traffic Service.

(h) *Ocular conditions other than visual acuity* :—

(i) Any organic disease or a progressive refractive error, which is likely to result in lowering the visual acuity, should be considered a disqualification.

(ii) *Squint* : For technical services where the presence of binocular vision is essential, squint, even if the visual acuity in each eye is of the prescribed standard, should be considered a disqualification. For other services the presence of squint should not be considered as a disqualification if the visual acuity is of the prescribed standard.

(iii) If a person has one eye or if he has one eye which has normal vision and the other eye is amblyopic or has subnormal vision, the usual effect is that the person lacks stereoscopic vision for perception of depth. Such vision is not necessary for many civil posts. The medical board may recommend as fit, such persons provided the normal eye has :—

(i) 6/6 distant vision and J1 near vision with or without glasses, provided the error in any meridian is not more than 4 dioptres for distant vision.

(ii) has full field of vision.

(iii) normal colour vision wherever required.

Provided the board is satisfied that the candidate can perform all the functions for the particular job in question.

The above relaxed standards of visual acuity will NOT apply to candidates for posts/services classified as 'TECHNICAL'. The Ministry/Department concerned will have to inform the medical board that the candidate is for a 'TECHNICAL' post or not.

(i) *Contact Lenses* : During the medical examination of a candidate, the use of contact lenses is not to be allowed. It is necessary that when conducting eye test the illumination of the type letters for distant-vision should have an illumination of 15 foot-candles.

7. Blood Pressure

The Board will use its discretion regarding Blood Pressure. A rough method of calculating normal maximum systolic pressure is as follows :—

- (i) With young subjects 15—25 years of age the average is about 100 plus the age.
- (ii) With subjects over 25 years of age the general rule of 110 plus half the age seems quite satisfactory.

N.B.—As a general rule any systolic pressure over 140 mm. and diastolic over 90 mm should be regarded as suspicious and the candidate should be hospitalised by the Board before giving their final opinion regarding the candidate's fitness or otherwise. The hospitalization report should indicate whether the rise in blood pressure is of a transient nature due to excitement etc., or whether it is due to any organic disease. In all such cases X-ray and electrocardiographic examinations of heart and blood urea clearance test should also be done as a routine. The final decision as to the fitness or otherwise of a candidate will, however, rest with the medical board only.

Method of taking Blood Pressure

The mercury manometer type of instrument should be used as a rule. The measurement should not be taken within fifteen minutes of any exercise or excitement. Provided the patient, and particularly his arm is relaxed, he may be either lying or sitting. The arm is supported comfortably at the patient's side in a more or less horizontal position. The arm should be freed from the clothes to the shoulder. The cuff completely deflated should be applied with the middle of the rubber over the inner side of the arm, and its lower edge an inch or two above the bend of the elbow. The following turns of cloth bandage should spread evenly over the bag to avoid bulging during inflation.

The brachial artery is located by palpitation at the bend of the elbow and the stethoscope is then applied lightly and centrally over it below, but not in contact with the cuff. The cuff is inflated to about 200 m.m. Hg. and then slowly deflated. The level at which the column stands when soft successive sounds are heard represents the Systolic Pressure. When more air is allowed to escape the sounds will be heard to increase in intensity. The level at which the well-heard clear sounds change to soft muffled fading sounds represents the diastolic pressure. The measurements should be taken in a fairly brief period of time as prolonged pressure of the cuff is irritating to the patient and will vitiate the readings. Rechecking, if necessary, should be done only a few minutes after complete deflation of the cuff. (Sometimes, as the cuff is deflated sounds are heard at a certain level, they may disappear as pressure falls and reappear at a still lower level. This 'Silent Gap' may cause error in reading.)

8. The urine (passed in the presence of the examiner) should be examined and the results recorded. Where a Medical Board finds sugar present in a candidate's urine by the usual chemical tests the Board will proceed with the examination with all its other aspects and will also specially note any signs or symptoms suggestive of diabetes. If except for the glycosuria the Board finds the candidate conforms to the standard of medical fitness required they may pass the candidate "fit subject to the glycosuria being non-diabetic" and the Board will refer the case to a specified specialist in Medicine who has hospital and laboratory facilities at his disposal. The Medical Specialist will carry out whatever examinations clinical and laboratory, the considers necessary including a standard blood sugar tolerance test, and will submit his opinion to the Medical Board, upon which the Medical Board will base

its final opinion "fit" or "unfit". The candidate will not be required to appear in person before the Board on the second occasion. To exclude the effects of medication it may be necessary to retain a candidate for several days in hospital under strict supervision.

9. A woman candidate who as a result of tests is found to be pregnant of 12 weeks standing or over, should be declared temporarily unfit the confinement is over. She should be re-examined for fitness certificate six weeks after the date of confinement, subject to the production of a medical certificate of fitness from a registered medical practitioner.

10. The following additional points should be observed :—

- (a) that the candidate's hearing in each ear is good and that there is no sign of disease of the ear. In case it is defective the candidate should be examined by the ear specialist. Provided that if the defect in hearing is remediable by operation or by use of a hearing aid a candidate cannot be declared unfit on that account provided he has no progressive disease in the ear. This provision is not applicable in the case of Railway Services;
- (b) that his speech is without impediment;
- (c) that his teeth are in good order and that he is provided with dentures where necessary for effective mastication (well filled teeth will be considered as sound);
- (d) that the chest is well formed and his chest expansion sufficient; and that his heart and lungs are sound;
- (e) that there is no evidence of any abdominal disease;
- (f) that he is not ruptured;
- (g) that he does not suffer from hydrocele, a severe degree of varicocele, varicose veins or piles;
- (h) that his limbs, hands and feet are well formed and developed and that there is free and perfect motion of all his joints;
- (i) that he does not suffer from any inveterate skin disease;
- (j) that there is no congenital malformation or defect;
- (k) that he does not bear traces of acute or chronic disease pointing to an impaired constitution;
- (l) that he bears marks of efficient vaccination; and
- (m) that he is free from communicable disease.

11. Radiographic examination of the chest should be done as a routine in all cases for detecting any abnormality of the heart and lungs, which may not be apparent by ordinary physical examination.

When any defect is found it must be noted in the certificate and the medical examiner should state his opinion whether or not it is likely to interfere with the efficient performance of the duties which will be required of the candidate.

12. The candidate filing an appeal against the decision of the Medical Board have to deposit an appeal fee of Rs. 50.00 in such manner as may be prescribed by the Government of India in this behalf. This fee would be refunded if the candidate is declared fit by the Appellate Medical Board. The candidates may, if they like enclose medical certificate in support of their claim of being fit. Appeals should be submitted within 21 days of the date of the communication in which the

decision of the Medical Board is communicated to the candidates; otherwise, requests for second medical examination by an Appellate Medical Board, will not be entertained. The medical examination by the Appellate Medical Boards would be arranged at New Delhi only and no travelling allowance or daily allowance will be admissible for the journeys performed in connection with the medical examination. Necessary action to arrange medical examination by Appellate Medical Boards would be taken by the Cabinet Secretariat (Department of Personnel) on receipt of appeals accompanied by the prescribed fee.

MEDICAL BOARD'S REPORT

The following intimation is made for the guidance of the Medical Examiner :—

1. The standard of physical fitness to be adopted should make due allowance for the age and length of service, if any of the candidate concerned.

No person will be deemed qualified for admission to the Public Service who shall not satisfy Government, or the appointing authority as the case may be, that he has no disease constitutional affection, or bodily infirmity, unfitting him or likely to unfit him for that service.

It should be understood that the question of fitness involves the future as well as the present and that one of the main objects of medical examination is to secure continuous effective service, and in the case of candidates for permanent appointment to prevent early pension or payments in case of premature death. It is at the same time to be noted that the question is one of the likelihood of continuous effective service, and that rejection of a candidate need not be advised on account of the presence of a defect which in only a small proportion of cases is found to interfere with continuous effective service.

A lady doctor will be co-opted as a member of the Medical Board whenever a woman candidate is to be examined.

Candidates appointed to the Indian Defence Accounts Service are liable for field service in or out of India. In the case of such a candidate, the Medical Board should specially record their opinion as to his fitness or otherwise of field service.

The report of the Medical Board should be treated as confidential.

In case where a candidate is declared unfit for appointment in the Government Service the grounds for rejection may be communicated to the candidate in broad terms without giving minute details regarding the defects pointed out by the Medical Board.

In cases where a Medical Board considers that a minor disability disqualifying a candidate for Government service can be cured by treatment (medical or surgical) a statement to that effect should be recorded by the Medical Board. There is no objection to a candidate being informed of the Board's opinion to this effect by the appointing authority and when a cure has been effected it will be open to the authority concerned to ask for another Medical Board.

In the case of candidates who are to be declared "Temporarily Unfit" the period specified for re-examination, should not ordinarily exceed six months at the maximum. On re-examination

after the specified period these candidates should not be declared temporarily unfit for a further period but a final decision in regard to their fitness for appointment or otherwise should be given.

(a) *Candidate's statement and declaration*

The candidate must make the statement required below prior to his Medical Examination and must sign the Declaration appended thereto. His attention is specially directed to the warning contained in the Note below:—

1. State your name in full (in block letters)
- 2.(a) Do you belong to races such as Gor-khas, Garwals Assamese, Nagaland Tribals etc. whose average height is distinctly lower ? Answer "Yes" or "No" and if the answer is "Yes", state the name of the race.
- 3.(a) Have you ever had small-pox intermittent or any other fever enlargement or suppuration of glands, spitting of blood, asthma, heart disease, lung disease, fainting attacks, rheumatism, appendicitis ?
- (b) any other disease or accident requiring confinement to bed and medical or surgical treatment ?
4. When were you last vaccinated
5. Have you suffered from any form of nervousness due to over work or any other causes ?
6. Furnish the following particulars concerning your family:

Father's age if living and state of health	Father's age at death and cause of death	No. of brothers living, their ages and state of health	No. of brothers dead, their ages at and cause of the death.
--	--	--	---

Mother's age, if living and state of health	Mother's age at death and cause of death	No. of sisters living, their ages and state of health	No. of sisters dead, their ages at and cause of death
---	--	---	---

7. Have you been examined by a medical Board before ?
8. If answer to the above is 'Yes', please state what Service/Services you were examined for ?
9. Who was the examining authority ?
10. When and where was the Medical Board held ?
11. Result of the Medical Board's examination, if communicated to you or if known ?

I declare all the above answer to be ,to the best of my belief true and correct.

Candidate's Signature

Signed in my presence.

Signature of the Chairman of the Board.

NOTE—The candidate will be held responsible for the accuracy of the above statements. By wilfully suppressing any information he will incur the risk of losing the appointment and, if appointed, of forfeiting all claims to Superannuation Allowance or Gratuity.

(d) Report of Medical Board on (name of candidate) physical examination.

- | | |
|-------------------------------------|--------------|
| 1. General development : Good | Fair |
| Poor | |
| Nutrition: Thin | Obese |
| Height (Without shoes) | Weight |
| Best Weight | When ? |
| Any recent change in weight | |
| Girth of Chest. | |
| (1) After full inspiration) | |
| (2) After full expiration) | |
| 2. Skin: Any obvious disease | |
| 3. Eyes : | |
| (1) Any disease | |
| (2) Night blindness | |
| (3) Defect in colour vision | |
| (4) Field of vision | |
| (5) Visual acuity | |
| (6) Fundus examination | |

Acuity of vision	Naked with eye glasses	Strength of glass ph.	Cyl. Axis
Distant vision	R.E. L.E.		
Near vision	R.E. L.E.		
Hypermetropia (Manifest)	R.E. L.E.		

4. Ears : Inspection..... Hearing Right Ear
Left Ear
5. Glands..... Thyroid
6. Condition of teeth
7. Respiratory System : Does physical examination reveal anything abnormal in the respiratory organs? if yes, explain fully :
8. Circulatory System :
- (a) Heart : Any organic lesions ?
- Standing
- After hopping 25 times
- 2 minutes after hopping
- (b) Blood pressure : Systolic .. Diastolic ..
9. Abdomen & Girth
- Hernia
- (a) Palpable : Liver .. Spleen ..
Kidneys Tumours ..
- (b) Hemorrhoids .. Fistula
10. Nervous System : Indication of nervous or mental disabilities
11. Loco-Motor System : Any abnormality

12. Genito Urinary System : Any evidence of Hydrocoele varicocele etc.

Urine Analysis :

- (a) Physical appearance
- (b) Sp. Gr
- (c) Albumen
- (d) Sugar
- (e) Castes
- (f) Cells

13. Report of X-ray Examination of Chest.

14. Is there anything in the health of the candidate likely to render him unfit for the efficient discharge of his duties in the service for which he is a candidate ?

NOTE :—In the case of a female candidate, if it is found that she is pregnant of 12 weeks standing or over, she should be declared temporarily unfit, *vide* Regulation 9.

15. (i) State the Service for which the candidate has been examined :

(a) I.A.S. & I.F.S.

(b) I.P.S. and Delhi, and Andaman & Nicobar Islands Police Service,

(c) Central Services, Class I & II....

(ii) Has he been found qualified in all respects for the efficient and continuous discharge of his duties in:

(a) I.A.S.P.I & F.S.

(b) I.P.S. and Delhi and Andaman & Nicobar Islands Police Service. (*see* especially height, chest girth, eye sight, colour blindness and locomotive system).

(c) Indian Railway Traffic Service. (*see* especially height, and chest, eye sight, colour blindness).

(d) Other Central Services Class I/II

(iii) Is the candidate fit for FIELD SERVICE.

NOTE.—The Board should record their findings under one of the following three categories:—

- (i) Fit.
- (ii) Unfit on account of
- (iii) Temporarily unfit on account of

Place

Date

Chairman.....
Member
Member

MINISTRY OF LAW AND JUSTICE
(Legislative Department)

New Delhi, the 10th February 1972

RESOLUTION

No. F.22/4.69-JL(Admn.).—On the recommendations of the Hindi Advisory Committee for the Ministry of Law & Justice, the Government of India has decided to institute a scheme for writing, translating and publication of standard law books in the Hindi language for use as text books or reference books in the—

- (i) LL.B. classes of the Universities of the Hindi-speaking areas; and
- (ii) for the use of lawyers practising in law courts in the Hindi-speaking areas.

2. The main features of the scheme are as follows :

- (i) the institution of a system of awarding prizes for the best law books written in the Hindi language and either already published or proposed to be published in any calendar year;
- (ii) special assignments for getting original law books written in the Hindi language on selected subjects by selected authors on contract basis; and
- (iii) getting selected law books which have acquired the status of classics on the subjects dealt with therein translated in the Hindi language.

3. It has also been decided to set up an Evaluation Committee for rendering advice to the Government for the effective implementation of the scheme. The composition, functions, tenure, etc. of the Evaluation Committee will be as follows :

(a) *Composition*

Chairman

- (i) A sitting or retired Judge of the Supreme Court or of a High Court in India to be nominated by the Central Government.

Members

- (ii) Secretary, Legislative Department, Ministry of Law & Justice.
- (iii) An advocate of the Supreme Court to be nominated by the Central Government and well-versed in Hindi.
- (iv) A member of the Official Language (Legislative) Commission to be nominated by the Central Government after consultation with the Chairman of the Commission.
- (v) Six persons nominated by the Central Government from out of a list of Deans of Law Faculties of the universities in the Hindi-speaking States, Principals of Law Colleges in those States and Professors imparting instruction in law in such universities.
- (vi) Secretary, Hindi Advisory Committee for the Ministry of Law & Justice. (He will be the convener of the Committee.)

(b) *Functions*

- (i) To select and make recommendations regarding the best law books written in the Hindi language in any calendar year for awarding of prizes;
- (ii) to assist and advise the Hindi Advisory Committee for the Ministry of Law & Justice in the selection of competent authors who may be given special assignments on contract basis for writing original law books in Hindi on selected subjects and to evaluate the manuscripts submitted by such authors;
- (iii) to select law books which have acquired the status of classics on the subjects dealt with therein, to select and recommend suitable persons who may be assigned the task of translating them in the Hindi language and to evaluate the books so translated; and
- (iv) to perform such other functions pertaining to the above-mentioned scheme as may be assigned to it from time to time by the Central Government.

(c) *Tenure*

The term of the Committee will be for a period of two years in the first instance.

(d) *Sub-Committees*

The Evaluation Committee may set-up Sub-Committees as it may deem necessary for the discharge of its functions.

(e) *Quorum*

The quorum for the meetings of the Evaluation Committee shall be not less than five.

(f) *Meetings & Procedure*

The Committee may devise its own procedure for its functioning. The Committee and its Sub-Committees may meet as often as may be necessary.

(g) *Headquarters*

The headquarters of the Committee will be New Delhi.

4. The Members of the Committee, who are Government servants, will hold office by virtue of the posts held by them and on their ceasing to hold the posts, their successors in office will automatically become members of the Committee. The grant of T.A. & D.A. to the non-official Members of the Committee will be regulated in accordance with the provisions of S.R. 190 and orders issued thereunder by the Government of India from time to time.

5. Instructions regarding the details of the scheme mentioned in Para 2 above will be published separately.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all State Governments/Union Territories and all the Ministries and Departments of the Government of India.

ORDERED further that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

N. D. P. NAMBOODIRIPAD, Jt. Secy.

MINISTRY OF HEALTH AND FAMILY PLANNING**(Department of Family Planning)**

New Delhi, the 7th February 1972

RESOLUTION

No. 3-42/71-PLY.—It has been decided that the Committee constituted vide Ministry of Health and Family Planning resolution No. 5-VIII(28)/69-Ply, dated the 28th October, 1971 to examine and make recommendations regarding the proposal of certain State Governments for the location of Family Welfare Planning Centres at places other than the main Primary Health Centres may submit its report by the 29th February, 1972 instead of 31st January, 1972.

ORDER

ORDERED that the resolution be published in the Gazette of India for general information.

R. N. MADHOK, Addl. Secy.

MINISTRY OF AGRICULTURE**(Department of Agriculture—ICAR)**

New Delhi, the 4th February 1972

No. 34(4)/71-Cdn-1.—Under the provisions of Rule 34(iii) & Rule 34(iv) of the Rules of Indian Council of Agricultural Research, the President of the Council (Minister of Agriculture) has been pleased to nominate the following to be members of the Governing Body of Indian Council of Agricultural Research for the period shown against each :—

1. Dr. A. R. Gopal Ayengar, Emeritus Scientist, Bhabha Atomic Research Centre and Adviser, Department of Atomic Energy, Trombay, Bombay-85.—4-10-'71 to 4-8-'72.
2. Dr. A. S. Paintal, Director, Patel Chest Institute, University of Delhi, Delhi.—4-10-71 to 4-8-72.
3. Shri Awadhesh Chandra Singh, Member, Lok Sabha, 120, South Avenue, New Delhi-11.—4-6-'71 to 3-6-'74.

M. L. RAY, Dy. Secy.

MINISTRY OF EDUCATION & SOCIAL WELFARE**(Department of Education)**

New Delhi-1, the 2nd February 1972

RESOLUTION

SUBJECT :—Establishment of an All India Council of Technical Education.

Reference : Resolution No. F. 16-10/44-E.III, dated the 30th November, 1945.

No. F.1-1/70-T.2.—The following amendment shall be made to the Resolution cited above :

In para 3 of the Resolution regarding the constitution of the Council add after (a) "Chairman", (b) "Vice-Chairman"—Minister of State for Education and Social Welfare in the Central Government".

Re-number all the subsequent entries from (b) to (v) as (c) to (w).

After para 4 of the Resolution add "Vice-Chairman shall perform such functions as may be assigned to him by the Chairman, from time to time".

ORDER

ORDERED that a copy of this amendment be communicated to all State Governments, Administration of Union Territories and all Ministries of the Government of India.

ORDERED also that the amendment be published in the Gazette of India for information.

L. S. CHANDRAKANT, Educational Adviser (Tech.)

(Department of Social Welfare)

New Delhi, the 14th February 1972

RESOLUTION

No. F. 20-14/67-S.W.2.—The following are nominated as members of the Committee on the Status of Women in India constituted under this Department Resolution No. 20-14/67-S.W.2, dated the 22nd September, 1971 :—

1. Smt. Urmila Haksar.
2. Smt. Meena Swaminathan.
3. Smt. Leela Dubey.

Other terms and conditions remain the same.

ORDER

ORDERED that a copy of the above Resolution be published in the Gazette of India for General information.

P. P. I. VAIDYANATHAN, Addl. Secy.

MINISTRY OF RAILWAYS**(Railway Board)**

New Delhi, the 17th February 1972

No. 71/RE/161/9.—It is hereby notified for the general information of all users of Railway lines and premises on the undernoted section of the Northern Railway, that 25,000 Volts 50 Cycles AC overhead traction wires will be energised on and after 21-2-1972 at Tundla Station from KM 1245/895.80 to 1250/660.75 (including Tundla Yards). On and from the same date, the overhead traction lines shall be treated as live at all times and no unauthorised person shall approach or work in the proximity of it.

V. P. SAWHNEY, Secy

Railway Board